





हिम स्पर्श

उपन्यास



व्रजेश दवे



उस स्पंदन को

जो प्रत्य कन्या के हृदय से

निरंतर प्रवाहित होता रहता है

“वह मौन गहन था, बिना व्यवधान वाला था। वह सागर सा गहन, गगन सा विशाल, पर्वत सा ऊंचा, धूप सा तेजोमय, चाँदनी सा शुध्ध, पुरातन वृक्ष की भांति स्थिर, झरने की भांति निर्बाध, हिम की भांति शीतल, रेत की भांति उष्ण, पवन की भांति मधुर, घाटी की भांति तीव्र, मयूर की भांति नृत्यमय, कोयल की भांति संगीतमय, जीत के चित्र की भांति रंगीन था।”

इस उपन्यास से

प्रकरण -1

“हम रंग एवं प्रकाश को पसंद करते हैं, स्नेह भी करते हैं। मैं और आप, हर स्थान पर सदैव रंगों की अपेक्षा करते हैं, प्रकाश की अपेक्षा करते हैं। हम में से कोई भी अंधकार को पसंद नहीं करता। एक ऐसा अंधकार जहां कुछ भी ना हो। सब कुछ खाली हो। प्रकाश विहीन वह क्षण, रंग विहीन वह क्षण।

अंधकार।

केवल अंधकार।

गहन अंधकार।

जहां हम आँखें खुल्ली रखकर भी कुछ ना देख सकें ....।” एक भीड़, जो खुली हुई आँखों के साथ अंधेरे में धीरे धीरे बह रही थी, के कानों पर यह शब्द पड रहे थे।

वह भीड़ समुद्र तल से 14000 फिट ऊंचाई पर हिमालय की किसी अज्ञात चोटी पर अस्थायी रूप से बनाई गई कला दीर्घा के बाहर खड़ी थी, अंदर घुसने की चेष्टा कर रही थी। दीर्घा का द्वार खुल तो चुका था किन्तु चारों तरफ फैले अंधकार में किसी को कुछ भी समज नहीं आ रहा था। केवल वह शब्द उनके कानों तक जा रहे थे।

यह भीड़, जो अंधकार से त्रस्त थी, रंगों से वंचित थी और खालीपन से भरपूर थी, को यह भी ज्ञात नहीं था कि हिम और सूरज साथ मिलकर कैसे कैसे रंगों का सर्जन कर चुके थे।

सूरज अभी पूरी तरह से निकला भी नहीं था, हिम तब भी था।

हिम। श्वेत हिम!

और कोई रंग नहीं। केवल श्वेत रंग छाया हुआ था पहाड़ के कण कण में। जैसे अंधकार को कोई रंग नहीं होता, हिम का भी कोई रंग नहीं था। कहने को तो था श्वेत रंग, किन्तु हिम रंग विहीन था।

सूर्योदय और सूर्यास्त इस पहाड़ी चोटी के लिए दुर्लभ घटनाएँ है। किन्तु उस दिन सूरज निकला था, काले और बड़े बादलों को चीरकर निकला था। सूरज अपनी प्रचंड शक्ति से प्रज़्वलित था। उसकी किरणें गाढ़े श्वेत हिम को पूरी तीव्रता और निष्ठा से प्रताड़ित कर रही थी। किन्तु, हिम जो था, निस्पृह और अप्रभावित।

हिम की बाहरी परत पर कुछ, सब कुछ स्थिर था, युगों से खड़े इस पर्वत की भांति।

हिम की परत के नीचे छिपा पानी सदैव प्रतीक्षा में रहता है, हिम के पीघलने की। पानी उत्सुक भी रहता है – हिम की दीवार को तोड़कर बह जाने के लिए। किन्तु हिम की दीवार सशक्त थी अथवा सूरज की किरणें दुर्बल थी, मैं नहीं जानता क्या कारण था, किन्तु सूरज की किरणें हिम की दीवार को तोड़ नहीं पाई, हिम के नीचे छिपे पानी से मिल नहीं पाई।

सूरज की किरणें फिर भी निराश नहीं हुए। हिम को तोड़ने की योजना छोडकर अन्य योजना पर काम करने लगी। किरणें हिम की सतह को स्पर्श करके परावर्तित होने लगी, हवा मे व्याप्त होने लगी। हवा में इंद्रधनुष रच गया। एक, दो, तीन, चार... देखते ही देखते अनेकों इंद्रधनुष रच गए। दायें भी, बाएँ भी, पूरब में भी, पश्चिम में भी, उत्तर में भी, दक्षिण में भी, ऊपर भी, नीचे भी, दिशाओं में भी और क्षितिज में भी। जहां भी द्रष्टि जा सकती थी वहाँ तक इंद्रधनुष ही दिखाई पड़ते थे।

कुछ क्षण पहले जहां केवल श्वेत रंग ही था, वहाँ रंगों की वर्षा होने लगी थी। दसों दिशाओं में रंग व्याप्त थे। श्वेत हिम अनेक रंगों से भर गया था। श्वेत, हरा, नीला, लाल, नारंगी, पीला, ... जैसे प्रत्येक रंग अपनी अपनी लय में नृत्य कर रहे हो। श्वेत हिम स्वयं ही टूटने लगे, उसने अपना श्वेत रंग त्याग दिया। सूरज के किरणों की योजना सफल हो गई।

ऐसे रंगों से अनभिज्ञ भीड़ अंधकार में बहती हुई उन शब्दों के सहारे आगे बढ़ रही थी। भीड़ उत्सुक थी कला के रंगों को देखने के लिए। वफ़ाई एवं जीत के द्वारा रचे गए चित्रों में इस भीड़ की रुचि थी। भीड़ को जिज्ञासा थी रंगो के आपसी संयोजन को देखने की, रंगों से उभरते हुए द्रश्यों से होने वाली अनुभूति की।

दो सौ से कुछ अधिक व्यक्तियों से बनी इस भीड़ में बड़े बड़े नाम सम्मिलित थे। विश्व के कई प्रसिध्ध चित्रकार, कला के बड़े सौदागर,

कला के बड़े माफिया, बड़े उद्योगपति, खेल एवं फिल्मों की बड़ी हस्तियाँ उस भीड़ का भाग थे।
नहीं। भीड़ में सम्मिलित व्यक्तियों की भांति वफ़ाई कोई बड़ी व्यक्ति नहीं थी और ना ही जीत। वफ़ाई और जीत सामान्य व्यक्ति थे। कुछ दिवस तक यह दोनों चित्रकार भी नहीं थे।
कुछ दिवस पहले वफ़ाई एक तसवीरकार थी, किन्तु चित्रकार तो बिलकुल नहीं थी। सन्मान पूर्वक हम उसे तस्वीरी पत्रकार कह सकते हैं, किन्तु वफ़ाई को चित्रकार कहना उचित नहीं होगा।
चित्र प्रदर्शनी का समय प्रत: ग्यारह बजे का था। प्रवेश द्वार पर रखी घड़ी जब 10.52 मिनिट का समय बता रही थी, अभी भी आठ मिनिट का समय शेष था, तब भीड़ अपना धैर्य खो रही थी। प्रतीक्षा कर रही भीड़ अधीर हो गई।
पूरी भीड़ अधीर थी अथवा भीड़ का कुछ हिस्सा अधीर था? बात तो एक ही है। भीड़ को अधीर कौन बनाता है? एक एक व्यक्ति, जो भीड़ का हिस्सा होता है, भीड़ को अधीर बना देता है, दिशा विहीन बना देता है।
भीड़ सदैव अधीर होती है, दिशा विहीन होती है, विचित्र होती है। जब कोई व्यक्ति भीड़ से अलग होता है तब वह मनुष्य की भांति अभिव्यक्त होता है। किन्तु जैसे ही वह भीड़ के अंदर पिघल जाता है, ना जाने उसे क्या हो जाता है, वह अपना व्यक्तित्व खो देता है। यह कैसी विडम्बना है?
सभी आमंत्रित गण्य मान्य व्यक्ति अपना अपना धैर्य खोने लगे। वह सब भीड़ की भांति व्यक्त होने लगे। क्यों नहीं? अंतत: वह सब अब, व्यक्ति ना रहकर, भीड़ का हिस्सा जो बन गए थे। ऐसा कहो कि स्वयं भीड़ ही बन गए थे। भीड़ कभी शांत नहीं होती। वह भीड़ भी शांत नहीं थी।
भीड़ में शब्द जन्म लेने लगे। धीमी धीमी ध्वनि जंगल की आग की भांति व्याप्त होने लगी, जो हिम के मार्ग से पूरे पहाड़ पर व्याप्त हो गई।
भीड़ चित्रों से आकर्षित होकर नहीं जुटी थी। और ना ही कोई वफ़ाई एवं जीत की चित्रकारी से प्रभावित था। वह तो केवल प्रदर्शनी के अनूठे स्थल के विस्मय से प्रभावित हो कर आई थी।
घड़ी ने ग्यारह बजे की सूचना दी। अंधकार ने दीर्घा पर अपना आधिपत्य जमा दिया था। सब की बातें बंध हो गई। सर्वत्र स्वयंभू मौन छा गया। जैसा गहरा मौन, वैसा ही गहन अंधकार। ऐसे गहन काले मौन में प्रवेश करने का साहस किया इन शब्दों ने....
“रंग एवं प्रकाश को हम पसंद करते हैं, स्नेह भी करते हैं। मैं और आप, हर स्थान पर सदैव रंगों की अपेक्षा करते हैं, प्रकाश की अपेक्षा करते हैं। हम में से कोई भी अंधकार को पसंद नहीं करता। एक ऐसा अंधकार जहां कुछ भी ना हो। सब कुछ खाली हो। प्रकाश विहीन वह क्षण, रंग विहीन वह क्षण।
अंधकार। केवल अंधकार। गहन अंधकार। जहां हम आँखें खुल्ली रखकर भी कुछ ना देख सकें ....।”
भीड़ के कानों पर यह शब्द पड रहे थे। इस गहन अंधकार में दिशाहिन भीड़ शब्दों की दिशा में गति कर रही थी। एक निरुद्देश्य भीड़।
“हम अंधकार को पसंद नहीं करते। वास्तव में हम अंधकार से धृणा करते हैं। हां, यह स्वाभाविक है, सहज है। किन्तु, क्या आप जानते हो कि अंधकार का रंग होता है? वह भी रंगों से भरपूर होता है? केवल एक नहीं अपितु अनेक रंग होते हैं इस अंधकार में। अंधकार अनेक रंगों को धारण करता है, अपने अंदर उन्हें समा लेता है।
रंगों को जानने से पहले, प्रकाश को जानने से पहले, हमें अंधकार का अनुभव करना होगा। तत्पश्चात ही रंगों कि अनुभूति कर पाएंगे। मुझे ज्ञात है कि इन शब्दों पर आप संदेह करोगे। यह स्वाभाविक है। मैं आपके इस संदेह का सन्मान करती हूँ। किन्तु मेरा विश्वास कीजिये, मेरे यह शब्द संदेह से परे हैं। यह सत्य है कि अंधकार एक रंग है। अंधकार में भी जीवन के रंग होते हैं। आप को अपनी खुली आँखें बंद करनी है और अपने भीतर देखना है। रंग निखर उठेंगे। जीवन के इन रंगों का आनंद लें।”
उन शब्दों को सुनकर भीड़ और भी व्याकुल हो गई।
अनेक संदेह भीड़ में प्रकट हो गए।
एक, अंधकार में आँखें कैसे बंध की जा सकती है? और यदि आँखें खुली रख भी ली तो क्या अंतर पड़ेगा?
दो, अंधकार के रंग होते हैं क्या?
तीन, यदि अंधकार के रंग हैं तो वह कौन से है? उसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है?
चार, कौन है जो इन शब्दों से भीड़ को दिशा दे रहा है?
पाँच, अंधकार के इस सौन्दर्य को तुम कैसे जानते हो?
ऐसे अनेक प्रश्नों से घिर गई वह भीड़।
“मैं दे सकता हूं इन सभी प्रश्नों के उत्तर, यदि आप में इसे सुनने और जानने की उत्कंठा हो, धैर्य हो, साहस हो। आप के ह्रदय में इसके लिए तीव्र मनसा हो तो मैं आप को सब कुछ बता दूंगा। पूरी कथा मैं प्रारम्भ से बताऊंगा। प्रत्येक क्षण, प्रत्येक घटना एवं प्रत्येक द्रश्य आप के सम्मुख रख दूंगा।” मैंने कहा॥
“हाँ, हाँ, हमें सब सुनना है, सब देखना है, सब जानना है।” भीड़ ने समूहगान में अपनी इच्छा प्रकट की।” मुझे यह समूहगान कर्णप्रिय नहीं लगा।
“किन्तु मेरी एक बात मनानी होगी आपको।” मैंने भीड़ के सम्मुख मेरी बात रखी।
“हमें आपकी सभी बातें स्वीकार्य है।” भीड़ ने उत्तर दिया।

"ठीक है। सुनो। आप को एक वचन देना होगा कि इस पूरी कहानी के समय आप भीड़ का हिस्सा ना बनकर एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में मेरे साथ रहोगे।"
"तुम मुझे भीड़ से भिन्न स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में क्यूँ चाहते हो?" भीड़ में से एक स्वर उठा।
"भीड़ के विचार नहीं होते, ना ही भावनाएं होती है। ना ही मस्तिष्क होता है और ना ही ह्रदय। यह सब केवल एक स्वतंत्र व्यक्ति में ही होता है।"
"ओह, अब समजा।" सभी व्यक्ति ने कहा, "अब मैं एक व्यक्ति हूँ, किसी भीड़ का हिस्सा नहीं।"
भीड़ टूट गई, अनेक व्यक्तियों में बिखर गई। किन्तु अभी भी कोई भीड़ तो वहाँ थी ही।
मैं हंस पड़ा, 'कितनी तुच्छ होती है भीड़, कितना समृध्ध होता है प्रत्येक व्यक्ति।'
मैं भी भीड़ को छोड़ आया। चलिये, आपके साथ यात्रा का प्रारम्भ करते हैं। हाँ, हाँ, आपके साथ, केवल आपके साथ, अकेले में। मैं और आप, केवल दो व्यक्ति।
"तुम कौन हो?" आपने पूछा।
"मेरे अधरों पर आए स्मित को देखो, जो तुम्हारे कारण जन्मा है। मुझे तुम्हारा प्रश्न पूछना अच्छा लगा। व्यक्ति सदैव प्रश्न पूछता है, भीड़ नहीं। मुझे आनंद और संतोष है कि अब तुम स्वतंत्र व्यक्ति बन चुके हो। तुम अभिनंदन के पात्र हो। आशा करता हूँ कि कथा के अंत तक व्यक्ति ही बने रहोगे।" मैंने कहा।
"मुझे तुम्हारे अधरों पर आए स्मित का अनुभव हो रहा है। मेरा वचन है कि मैं कहानी के अंत तक भीड़ का हिस्सा नहीं ....।"
"कहानी सुनने के बाद, मुझे विश्वास है कि तुम फिर कभी भीड़ में घुल नहीं जाओगे।"
"मैं खुश हूँ कि मैं एक व्यक्ति हूँ, पूर्ण रूप से स्वतंत्र व्यक्ति।" तुम्हारे मुख पर स्मित है।
"स्वागत है, हे व्यक्ति। किन्तु रुक जाओ, चित्रों कि तरफ नहीं जाना। कथा सम्पन्न होने के पश्चात तुम प्रदर्शनी में जा सकते हो। चलो तुम्हें मैं कथा की तरफ ले चलूँ।" मैंने आँखें बंध कर ली।
प्रकाश का एक पुंज मंच पर उभरने लगा जिसमें वफ़ाई दिखाई दे रही थी। वह शांत थी। वह वातायन से दूर गगन की तरफ देख रही थी। भीड़ का टुकड़ा एवं प्रत्येक व्यक्ति वफ़ाई को देख रहे था।
मैं और आप भी शांत हो जाते हैं। चलो दूर क्षितिज में देखते हैं। कोई कथा वहाँ हमारी प्रतीक्षा कर रही है।

2

फरवरी का महिना कुछ क्षण पहले ही विदा ले चुका था। तामस रात्रि ने मार्च का स्वागत हिम की वर्षा से किया। वह ग्रीष्म के आगमन की पगरव का महिना था, किन्तु तेज हिम वर्षा हो रही थी।
एक युवती अपने कक्ष में थी। पर्वत सुंदरी थी वह। आयु चोबिस वर्ष के आसपास। पतली सी, पहाड़ी सौंदर्य से युक्त, पारंपरिक पहाड़ी मुस्लिम लड़की के वस्त्र में थी वह।
उसकी पीठ दिख रही थी। पीठ पर लंबे, काले, घने, खुले और सीधे केश लहरा रहे थे। खुले केश उड़ते थे और बार बार उसकी आँखों के सामने आ जाते थे, वह उसे पीछे धकेलती रहती थी। किन्तु केश जो थे नटखट, बार बार आँखों के सामने आ जाते थे। फिर भी उस युवति की अपने उड़ते केश को बांधने की इच्छा नहीं थी और ना ही उसने ऐसी कोई चेष्टा की। उसे खुले केश पसंद थे। मुझे भी खुले केश में वह पसंद थी। आपको भी?
सहसा वह घूम गई।
उसका मुख दिखने लगा। यही मनसा थी ना आप की?
पहाड़ी घाटी की भांति गहन और तेज उसकी दो आँखें। सौन्दर्य की भांति सुंदर थी वह। चुस्त काले कपड़ों मे सज्ज थी वह। उस के शरीर के प्रत्येक घुमाव सौन्दर्य से पूर्ण थे, लावण्य से भरे थे।
उसके अधरों पर मीठा सा स्मित था, कोई गीत था। उस के अधर, सहज ही गुलाबी थे। नहीं, उसने कभी लिपस्टिक का प्रयोग नहीं किया था। वह सदैव सभी शृंगार प्रसाधनों से दूर ही रहती थी। वह जन्मी ही सुंदर थी और बड़ी भी सुंदर ही हुई थी। उसने अपने सौन्दर्य को अखंडित रखा था। वह अभी भी सुंदर थी।
उस के शरीर का रंग बहते रक्त के कारण लाल, अपितु गुलाबी सा लगता था। उसके गाल गुलाबी थे। कोई चिंता उसके मुख पर दिख रही थी जो उस मुख को और भी लाल बनाती थी, उसके सौन्दर्य में अभिवृध्धी करती थी।
वफ़ाई नाम था उस यौवना का।
वह अपना सामान जुटाने में व्यस्त थी। कल उसे दो हजार किलो मीटर से अधिक दूरी की यात्रा पर निकलना था। वफ़ाई को वह यात्रा जीप से करनी थी, स्वयं गाड़ी चलकर।
कुछ दिनों के लिए वह अपना सब कुछ- अपना गाँव, अपना पहाड़, पति बशीर, बॉस यूसुफ़, साथी सहयोगी--- सब को भूलकर कहीं एकांत में रहना चाहती थी अथवा कुछ समय स्वयं के साथ व्यतीत करना चाहती थी? जो भी हो, वफ़ाई ने इस पूरे लंबे मार्ग पर स्वयं



ही जीप चलाकर यात्रा करने का साहसी निश्चय कर लिया था।
घड़ी में आधी रात के साढ़े बारह बज चुके थे। वफ़ाई की यात्रा की सज्जता अभी भी अपूर्ण थी। वफ़ाई सब काम शीघ्रता से कर रही थी किन्तु समय वफ़ाई से अधिक गतिमान था।
घर के अंदर ठंड थी तो घर के बाहर ठंडी हवाएँ चल रही थी। वफ़ाई ने भी ठंडी हवाओं का कडा सामना किया। अंतत: अपनी तैयारी पूर्ण कर ली।
एक गहरी सांस ली और वफ़ाई ने वातायन से बाहर देखा। मार्ग किसी मृत शरीर की भांति शांत था। काली अंधेरी निशा में किसी घर से आनेवाले मंद प्रकाश की किरणों में कहीं कहीं हिम चमक रहा था। हिम अनराधार बरस रहा था। उसने अपनी दायीं हथेली खिड़की से बाहर धर दी। ठंडे हिम से उसकी हथेली भर गई। एक शीतल लहर शरीर में प्रवाहित हो गई। वह कंपित हो गई। वफ़ाई ने हथेली अंदर खींच ली, वातायन बंध कर दीया।
शीतल रात्रि व्यतीत हो गई। वफ़ाई जाग चुकी थी, अपनी यात्रा के लिए तैयार थी। उसने द्वार खोला और गगन की तरफ देखा। कल रात की तुलना में वह स्वच्छ लग रहा था। हिम थक गया था अथवा गगन के पास धरती पर गिराने के लिए हिम बचा ही न था। गहरा नीला आकाश पूरी तरह से स्वच्छ नहीं था। बिखरे हुए खाली बादल गगन के मैदान पर दौड़ रहे थे। प्रकाश न तो तेज था न धुंधला था। पहाड़ों पर सूरज को उगने के लिए संघर्ष करना होगा।
वफ़ाई अपनी यात्रा के लिए तैयार थी, नई यात्रा को लेकर उत्तेजित भी थी, उत्साहित भी थी।
वफ़ाई का शरीर कोई भिन्न ही भाषा बोल रहा था, कुछ भिन्न अनुभव कर रहा था। उस ने पारंपरिक वस्त्रों को त्याग दिया। जींस और टॉप पहन लिया। काले जींस पर मदिरा सा लाल रंग का टी शर्ट और खिलाड़ियों वाले जूते थे। उसने एक नयी उमंग और नया स्मित भी पहन लिया था।
उस ने अपना सामान संभाला और जीप में डाल दिया। अम्मा उस की सहायता कर रही थी। उस ने अम्मा की तरफ एक स्मित किया। अम्मा ने मौन, जवाबी स्मित दिया।
वफ़ाई ने अपने कक्ष को बंध किया, उसे एक मीठी नजर से देखा और मोहक स्मित दिया। द्वार से छुटकर हिम का एक टुकड़ा नीचे गिरा। वफ़ाई नीचे झुकी और हिम के उस टुकड़े को उठा लिया, उसे हथेली पर रख दिया। हिम पिघल गया, पानी में परिवर्तित हो गया, वफ़ाई के शरीर को ठंडी लहर दे गया। उसे वह मनभावन लगा। वह हंस पड़ी।
“तुम हंस क्यूँ रही हो?” अम्मा ने पूछा।
“समय भी इस हिम की भांति है, अम्मा। यह समय शीघ्र ही पिघल जाएगा और मैं लौट आऊँगी। इस प्यारी सी धरती के पास, इस ऊंचे पहाड़ों के पास मैं लौट आऊँगी। मैं शीघ्र ही लौट आऊँगी, मेरी प्रतीक्षा करना।” वफ़ाई ने हथेली पर पिघल चुके हिम के पानी की कुछ बूंदें पी। वफ़ाई तृप्त हो गई।
वफ़ाई ने जीप चालू कर दी, हाथ हिलाकर, स्मित देकर अम्मा से विदाय ली। अम्मा स्थिर सी खड़ी रही, जाती हुई वफ़ाई को शून्य भाव से देखती रही।
वफ़ाई की कच्छ यात्रा प्रारम्भ हो गई।
सारा नगर शांत था, सो रहा था। मार्ग पर ना कोई पुरुष था न कोई स्त्री थी। कुछ पंखी थे जो गिरकर टूटे हुए हिम के साथ खेल रहे थे, मधुर ध्वनि रच रहे थे, गीत गा रहे थे। एक मधुर स्मित वफ़ाई के अधरों पर आ गया। मन और शरीर में आनंद व्याप्त हो गया।
वफ़ाई की जीप अपने मार्ग पर चलने लगी।
अम्मा, घर, गलियाँ, लोग, मकान और नगर धीरे धीरे पीछे छूटते जा रहे थे। जीप के दर्पण में वफ़ाई को यह सब कुछ दिखाई दे रहा था। वफ़ाई ने जीप रोक दी, चाबी घुमाई और जीप का एंजिन शांत हो गया। समय भी रुक गया। वफ़ाई जीप से बाहर निकल आई।

3

वफ़ाई ने घूमकर अपने नगर को देखा। पूरा नगर हिम की चादर में लपेटा हुआ था। पूरी तरह से श्वेत था नगर। केवल श्वेत रंग, बाकी सभी रंग अद्रश्य हो गए थे। मकानों के मूल रंग हिम की श्वेत चादरों में कहीं छुप गए थे। लंबे क्षणों तक वह नगर को देखती रही। उसने अपनी आँखें क्षण भर बंध की और फिर खोल दी।

उसने केमरे को निकाला और नगर की असंख्य तस्वीरें लेने लगी। कभी दूर से, कभी समीप से, कभी इस कोने से तो कभी उस कोने से, संभवित प्रत्येक कोने से तस्वीरें ली। एक विडियो उतारा। पूरे नगर की 360 डिग्री वाली तस्वीरें खींची।

वफ़ाई ने अपने मोबाइल फोन से भी पहाड़ों के साथ, नगर के साथ, मार्ग के साथ, जम सी गई नदी के साथ, बहते बहते अटक से गए झरनों के साथ और जीप के साथ स्वयं की असंख्य तस्वीरें ली। किन्तु वफ़ाई का मन अभी भी भरा नहीं था। उसे लग रहा था कि इस नगर में लौटने में उसे लंबा समय लग सकता है। संभव है कि वह फिर कभी लौटे ही नहीं।

नगर के पास बहती नदी स्थिर थी। किन्तु वफ़ाई का मन स्थिर नहीं था।

यह स्थल, नगर, पहाड़, घाटी, नदी, झरने, हिम, इन सभी को वह ह्रदय से स्नेह करती थी। इन सब को छोडने पर वह विचलित थी। अपने अंदर इन सबको समेट कर वह जीप में बैठ गई।

वफ़ाई ने अपनी यात्रा प्रारम्भ कर दी। उसकी आँखों से निकले कुछ अश्रुओं ने भी अपनी यात्रा चालू कर दी। जीप का मार्ग हिम के कारण शीतल था किन्तु वफ़ाई के गालों पर चल रहे अश्रु उष्ण थे।

एक घंटे की यात्रा के पश्चात वफ़ाई को रुकना पड़ा। अश्रु तो कब के रुक गए थे। गगन स्वच्छ था। किन्तु मार्ग स्वच्छ नहीं था। हिम से मार्ग अवरुध्ध था।

नगर से घाटी की तरफ जाने का यही एक मार्ग था, जो हिम से आच्छादित था और बंध था। हिम के उस सागर को पार करना संभव नहीं था, अत: वफ़ाई ने जीप रोक ली और स्थिति को समझने का प्रयास करने लगी।

हिम को काट कर दूर करने में सेना के अनेक जवान लगे हुए थे।

वफ़ाई ने एक सैनिक से पूछा, “मार्ग कब तक साफ हो जाएगा?”

“अभी भी एक से डेढ़ घंटा लग सकता है।” सैनिक ने उत्तर दिया।

वफ़ाई ने घड़ी देखि, 7.37।

“एक घंटा अथवा अधिक समय तक प्रतीक्षा करनी होगी।” वफ़ाई मन ही मन बोली।

वह घाटी को देखने लगी। जन्म से वह घाटी को देखती आई थी। और अब वह चोबिस की हो गई थी। इतने वर्षों से घाटी कहीं नहीं गई थी, बस वहीं खड़ी थी।

वफ़ाई इधर उधर घूमती रही। जीप को, मार्ग को और घड़ी को देखती रही। इस बार घड़ी में बज रहे थे 7:48।

समय गति नहीं कर रहा था। वफ़ाई चिंतित हो गई।

वफ़ाई के कानों पर किसी के हंसने की ध्वनि पड़ी। उसने चारों दिशाओं में देखा किन्तु वहाँ कोई नहीं था। उसने पुन: उस हास्य की तरफ ध्यान केन्द्रित किया, उसे पुन: वही हास्य सुनाई दीया।

“किस के हास्य की प्रतिध्वनि है यह?” वफ़ाई ने स्वयं से पूछा। बार बार हास्य की प्रतिध्वनि घाटियों में गूंजने लगी।

“कौन हो तुम? कहाँ हो? इस प्रकार से हंस क्यूँ रहे हो?” वफ़ाई विचलित हो गई।

“हा॰॰॰ हा॰॰॰” उस हास्य की प्रतिध्वनि पुन: गूंजने लगी।
“छुपे मत रहो, यदि साहस हो तो सामने आओ…।” वफ़ाई ने आव्हान किया।
“वफ़ाई, मैं तो तुम्हारे सामने ही हूँ, मुझे पहचानो।” उसने कहा।
“मैं तुम्हें देख नहीं पा रही हूं। कौन हो तुम? कहाँ हो तुम?” वफ़ाई चारों तरफ उसे ढूँढने लगी।
“मैं पहाड़ हूँ, तुम्हारा मित्र।” उसने कहा।
वफ़ाई ने पर्वत की तरफ देखा। उसे अनुभव होने लगा कि पर्वत हंस रहा है।
“ओ॰॰॰ह॰ तो तुम हो…।” वफ़ाई ने स्मित किया, पहाड़ को नीचे से ऊपर तक देखा। उस पर देवदार के वृक्ष खड़े थे। देवदार की शाखाओं पर एवं पत्तों पर हिम थी। देवदार श्वेत हो गए थे। बहती शीतल पवन देवदार की शाखाओं को कंपित कर रही थी। ऐसा लगता था कि कोई वृध्ध ठंड से कांप रहा हो। “मन करता है कि दौड़ जाऊं और सभी देवदार पर कंबल ओढा दूँ।”
अपने ही विचार पर वह हंस पड़ी। “एक ही कंबल इतने सारे देवदार को मैं कैसे ओढा पाउंगी?”
बादलों से सूरज निकल आया। श्वेत तथा उष्ण सूर्य किरणें पूरे पहाड़ पर बिखर गई। चारों दिशाओं में सौदर्य निखर उठा। श्वेत हिम पर श्वेत सूर्य किरणें पर्वत को प्रकाशवान करने लगी।
श्वेत रंग के साम्राज्य में वफ़ाई की आँखों ने किसी और रंग को पकड़ लिया। वह उसे ध्यान से देखने लगी।
“अरे… यह तो नीला फूल है, कितना सुंदर है?” वह स्वयं से बातें करने लगी, “वाह… यह तो केसर का फूल है…. नीला पौधा… केसर का पौधा… वसंत ऋतु का पहला पुष्प।” वह आनंद से उछल पड़ी, “मित्र पर्वत, तेरे ह्रदय पर वसंत ने आगमन कर दिया है।”
वफ़ाई को लगा कि पहाड़ उसके शब्दों का प्रतिभाव दे रहा है, जैसे वह वफ़ाई से बातें करना चाहता हो, जैसे वह वफ़ाई को स्मित दे रहा हो।
“यह समय तो वसंत के स्वागत का है और तुम मुझे छोडकर जा रही हो? हे सखी, कहाँ जा रही हो?” पर्वत ने पूछा।
“मित्र, मुझे किसी कार्यवश जाना पड रहा है, किन्तु मैं शीघ्र लौट आऊँगी।”
“ओह, कब तक लौट आओगी?” पर्वत ने गहरी सांस ली।
“अति शीघ्र। तब हम खूब बातें करेंगे।”
“तुम्हारी यह यात्रा, यात्रा में मिलने वाले व्यक्ति, यात्रा के अनुभव, घटनाएँ…. आदि सब सुनने के लिए मैं उत्सुक हूं।” पहाड़ ने कहा।
“तब हम घंटों तक बातें करेंगे। तुम तो जानते हो कि तुम ही मेरे एक मात्र मित्र हो जो सदैव मेरे शब्दों को सुनते रहते हो, कभी भी, कहीं भी, लंबे समय तक। मैं बोलती रहती हूँ और तुम सुनते रहते हो।”
“हाँ, मुझे अभी भी याद है जब तुम पहली बार मुझ से बातें करने आई थी तब तुम चार पाँच साल की थी। तब तुम्हारे पास शब्द थे, भाव भी थे किन्तु भाषा नहीं थी।”
“तब तो मैं शब्दों से पूरा वाक्य भी नहीं बना सकती थी।”
“फिर भी मैं तुम्हारे भावों को समज जाता था।”
“किन्तु अब मैं बच्ची नहीं हूँ, तुम्हें ज्ञात है ना?”
“मुझे ज्ञात है, वफ़ाई। अब तुम एक यौवना हो, बड़ी हो गई हो। अब तुम्हारे पास शब्द भी है, विचार भी है, वाक्य भी है और भाव भी है। बस थोड़ा सा अंतर हो गया है इन भावों में। अब तुम शृंगारिक बातें भी सोचती हो, है ना?” पर्वत ने कहा।
“हे पुरुष, क्या मनसा है तुम्हारी? तुम तो नटखट से होते जा रहे हो। क्या तुम मेरे प्रेमी हो?” वफ़ाई ने एक तरफ तो पर्वत को अपने शब्दों से छेड़ा तो स्वयं ही लज्जा से प्रेमिका की भांति लाल हो गई। पहाड़ ने उस भावों को पकड़ लिया।
“मेरी मनसा तुम्हें इस यात्रा पर जाने से रोकना है।”
“क्यूँ? तुम मुझे कैसे रोकोगे?” वफ़ाई ने थोड़ा रोष दिखाया।
“तुमने इस यात्रा का आयोजन तीन चार दिनों से कर के रखा है किन्तु मुझे वह बताने का कष्ट तक नहीं किया है तुमने। इस बात पर मैं गुस्सा हूँ।”
“प्रत्येक बात तुम्हें बताना आवश्यक है क्या?”
“हां। मैं ही तो एक मात्र मित्र हूँ तुम्हारा। मुझे ज्ञात है कि इस अभियान को लेकर तुम गुस्से में हो। ठीक कह रहा हूँ ना मैं?”
“हां हूं। और यही कारण है कि मैंने इस विषय पर किसी से बात नहीं की है। तुम से भी नहीं। मैं गुस्सा हूँ।”
“इमरान से? तुम्हारे मुख पर के रोष को मैं देख भी सकता हूँ और अनुभव भी कर सकता हूँ। मैं भी तो रोष में हूँ। उसे भी तो देख लो।”
“हे श्रीमान, आप क्यूँ गुस्सा हो? और मैं उसे कैसे देखूँ?” वफ़ाई ने प्रश्नार्थ मुद्रा में अपने दोनों हाथ पहाड़ की तरफ फैला दिये।
“पिछले दो तीन दिनों से हो रही हिम वर्षा ही मेरे रोष का रूप है। वास्तव में मेरे रोष के कारण भारी हिम ने तुम्हारा मार्ग रोके रखा है। यह मेरी योजना है, प्रिय सखी वफ़ाई।” पहाड़ ने कहा।
“तो यही कारण है इस मौसम में इतनी तीव्र हिम वर्षा की? मैं नहीं मानती तुम्हारी यह बात।”
“वह तुम्हारी समस्या है। किन्तु जब तक मैं नहीं चाहुं तुम यहाँ से जा नहीं सकती।”

“वह कैसे? तुम मुझे किसी भी तरह रोक नहीं सकते।” वफ़ाई ने रोष दिखाया।
“मार्ग पर की हिम जब तक हटेगी नहीं, तुम जा नहीं सकोगी।”
“सैनिक लगे हुए हैं उसे हटाने में और शीघ्र ही वह मार्ग साफ हो जाएगा। फिर तुम कुछ नहीं कर पाओगे, मित्र।”
“तुम देखना चाहोगी कि मैं क्या कर सकता हूँ?”
“हाँ, मैं तुम्हारा आव्हान करती हूँ। जो करना हो करके दिखाओ।”
“ठीक है, पीछे घूमकर मार्ग को देखो।”
वफ़ाई मार्ग की तरफ घूमी। सहसा ताजी और तीव्र हिम वर्षा होने आगी। मार्ग जो कुछ साफ किया गया था वह भी फिर से हिम से ढंक गया। सैनिकों ने काम रोक दिया। मार्ग पुन: बंध हो गया।
वफ़ाई रोषित हो गई। वह नीचे झुकी और एक बड़े पत्थर को उठाया, अपनी तमाम शक्ति एकत्र की और पहाड़ की तरफ उस पत्थर को उछाल दिया।
“यह सब रोक लो। मेरे साथ, मेरी भावनाओं के साथ मत खेलो।” वफ़ाई के हाथ से छूटा पत्थर उपत्यका की गहराइयों में जा गिरा।
“शांत हो जाओ। मैं तुम्हें यात्रा पर जाने दूंगा किन्तु मेरी एक शर्त है।” पहाड़ ने प्रस्ताव रखा।
“क्या है?” वफ़ाई ने शुष्कता से जवाब दिया।
“इमरान ने तुम्हारे साथ जो भी किया वह तुमे मुझे बताना होगा। उसके बाद तुम जा सकती हो।”
“ठीक है, तो सुनो।” वफ़ाई ने सहमति दी।

4

वफ़ाई पर्वत को सब कुछ बताने लगी, “तीन दिन पहले, मैं अपने काम में व्यस्त थी तबइमरान ne मुझे बुलाया।और कहा कि, “वफ़ाई, तुम्हारे लिए एक महत्वपूर्ण अभियान है। इस दैनिक पत्र के तस्वीर विभाग की तुम प्रमुख हो, तुम सक्षम हो और ऊर्जा से भरपूर हो। मेरा विश्वास तुम पर है।” इमरान के अधरों पर स्मित था।
“कैसा अभियान है? क्या योजना है?” वफ़ाई उत्साहित हो गई।
“तुम सदैव कुछ नया करती रहती हो। तुम्हारे भीतर कुछ विशेष बात है। तुम सामान्य सी लग रही बात को भी भिन्न एवं विशेष रूप से प्रस्तुत करती हो।”
“मेरे लिए यह केवल व्यवसाय ही नहीं अपितु मेरा प्रेम है, मेरी धुन है।”
“तभी तो, इतने अल्प समय में कई वरिष्ठ लोगों को पीछे छोड़ कर चोबिस साल की आयु में ही इस विभाग की प्रमुख बन चुकी हो।”

“ठीक है, जी। चलिये, हम जो बात...।” वफ़ाई को इमरान द्वारा उनकी आयु बताना उचित नहीं लगा। वह कुर्सी से उठी और खिड़की के पास जाकर खड़ी हो गई।
“मुझे विश्वास है कि तुम उस कार्य को पसंद करोगी। तुम उसका पूर्ण आनंद उठाओगी। इस कार्य के लिए मैंने तुम्हें पसंद किया है।” इमरान ने वफ़ाई को प्रोत्साहित किया।
वफ़ाई ने जवाबी स्मित दिया।
“देश के पश्चिम भाग में कच्छ नामक क्षेत्र है। विस्तार की द्रष्टि से देश का सबसे विशाल जिल्ला है। वहाँ विशाल मरुभूमि भी है। मरुभूमि का भी अपना सौन्दर्य होता है।” ललित ने वफ़ाई की तरफ देखा।
वफ़ाई शांत थी, खिड़की से बाहर दूर सुदूर पहाड़ियों को देख रही थी, स्थिर थी।
“वहाँ एक अदभूत घटना होती है जो विरल भी है। उसे देखना, उस अनुपम क्षण को अपने केमरे में कैद करना, कुछ अनन्य ही अनुभव होता है। जब तुम यह काम कर लोगी तो वह मनभावन कविता बन जाएगी। तुम यह सब करने जा रही हो।” इमरान ने कहा, “हाँ, वफ़ाई, तुम ही वह व्यक्ति हो जो यह सब करने जा रही हो।”
वफ़ाई अभी भी किसी प्रकार से आंदोलित नहीं हुई। उसने इमरान को भाव शून्य द्रष्टि से देखा। वफ़ाई की इस मुद्रा को देखकर इमरान विचलित हो गया।
“वफ़ाई, तुम कोई प्रतिक्रिया क्यूँ नहीं दे रही हो? तुम हो कहाँ?” इमरान ने उसका ध्यान खींचने की चेष्टा की।
“मैं यहीं हूं। आप के शब्दों को ध्यान से सुन रही हूँ।”
“तो क्या तुम उस घटना के विषय में जानने को उत्सुक नहीं हो? उस यात्रा के विषय में, उस अभियान के विषय में?”
“जब सब कुछ निश्चित हो गया है, मुझे केवल उस पर कार्य करना है, तो मेरे पास प्रतिक्रिया के लिए अवसर बचा ही नहीं है।” वफ़ाई निस्पृह हो गई।
इमरान ने कॉफी के दोनों कप टेबल से उठाए और वफ़ाई के समीप गया। एक कप वफ़ाई को दिया।
“ऐसी बात नहीं है। वास्तव में तुम इस कार्य के लिए सबसे योग्य हो, इसीलिए मैंने तुम्हें पसंद किया है।”
“मा न लेती हूं।” वफ़ाई ने कॉफी का पहला घूंट पिया। इमरान का तनाव कम हुआ।
“चलो मैं विस्तार से बताता हूँ।” इमरान ने कॉफी टेबल पर छोड़ दी और खुला हुआ लेपटोप उठा लाया।
”ठंड की ऋतु में पुर्णिमा के दिन वहाँ एक अनुपम घटना होती है। पश्चिम की तरफ सूर्यास्त होता है तब सूर्य पूरे कद का होता है, बड़ा एवं विशाल। पूर्व में चंद्रोदय होता है। चन्द्र भी सूर्य की भांति पूर्ण और विशाल। इन दोनों को हम एक साथ देख सकते हैं। एकपश्चिम में, पूर्ण लाल। दूसरा पूर्व में, पूर्ण श्वेत। सूर्य क्रोधित एवं उष्ण तो चन्द्र शांत एवं शीतल। दोनों का एक ही समय पर, एक ही स्थान पर अस्तित्व होता है, किन्तु एक दूसरे से विपरीत। एक अदभूत, विस्मय से पूर्ण, मनोरम्य द्रश्य।” इमरान उत्साह से भरा था।
व फ़ाई शांत खड़ी सब देख रही थी, सुन रही थी। वफ़ाई एवं इमरान दोनों एक साथ थे, एक सूर्य था तो दूसरी चंद्रमा।
“तुम उस क्ष णकी तस्वीरें खींचोगी। अपनी कला से कैमरे में कैद करोगी। तुम उसकी कहानी बनाओगी।” इमरान अत्यंत उत्साहित था।
“हाँ, यह अदभूत है, मुझे पसंद आया।” वफ़ाई ने कॉफी पूरी कर ली। इमरान ने गहरी सांस ली।
“तो तुम्हें कल निकलना होगा। दो हवाई टिकिट तैयार है। एक तुम्हारे लिए, दूसरी अंकुश के लिए।” इमरान ने बताया।
“यह कार्य के लिए आपने मुझे ही क्यूँ चुना, जो इतनी दूरी पर है?” वफ़ाई ने संदेह किया।
“मैं पहले ही बता चुका हूँ कि तुम में प्रतिभा है और तुम यह कर सकती हो।”
“आप पक्षपाती हैं। आप मुझे दूर भेज कर दंडित करना चाहते हो जिसका कारण सर्व विदित है।”
कुछ दिन पहले घटी घटना, इमरान और वफ़ाई दोनों को, याद आ गई।
इमरान ने एक पार्टी रखी थी। अनेक जाने माने व्यक्तियों को आमंत्रित किया गया था जिसमें सोहेल भी था। सोहेल प्रभावशाली स्थानीय व्यक्ति था।
पार्टी में वफ़ाई तस्वीरें ले रही थी। वफ़ाई अपने कार्य में मग्न थी, अपने कार्य को समर्पित थी। उत्तम से उत्त म तस्वीर के लिए वह जमीन तक झुक भी जाती थी जिससे उसके कपड़े मलिन हो गए थे, किन्तु वह अपने कार्य पर ही ध्यान दे रही थी।
सोहेल की द्रष्टि वफ़ाई को, वफ़ाई के सौन्दर्य को देख रह थी। वफ़ाई के शरीर के प्रत्येक घुमाव का पीछा कर रही थी। वफ़ाई को भी यह ज्ञात था कि सोहेल की द्रष्टि का लक्ष्य कहाँ था। किन्तु वह अपना काम करती रही।
पार्टी सम्पन्न हो गई। सभी अतिथि जाने लगे। कुछ विशेष अतिथि, सोहेल सहित, ही वहाँ थे।
वफ़ाई ने इमरान और सोहेल की विशेष तस्वीरें भी खींची।
सोहे ल वफ़ाई के समीप आया, “आपने जो तस्वी रें ली है उसे मैं देख सकता हूँ?” सोहेल ने पूछा।
“श्रीमान, यह सब देखने के लिए आप को कल तक प्रतीक्षा करनी होगी। कल की आवृति में यह सब...।” वफ़ाई ने सस्मित कहा और दो चरण पीछे हट गई।
सो हेल समझ गया कि वफ़ाई उसे टाल रही है।

“हाँ, मैं कल देख लूँगा। आओ एक सेल्फी लेते हैं।” सोहेल ने प्रस्ताव रखा।
वफ़ाई ने सोहेल का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। सोहेल निराश हो गया। वफ़ाई चली गई।
सोहेल को वह स्वयं का अपमान लगा। उसने यह बात इमरान को बताई। इमरान ने वफ़ाई की तरफ से क्षमा मांग ली।
उस दिवस से इमरान वफ़ाई पर क्रोधित था।
“वफ़ाई, मैं पक्षपाती नहीं हूँ। यह कार्य तुम्हें तुम्हारी क्षमता के आधार पर ही दिया गया है।” इमरान ने कहा।
“यदि ऐसा ही है तो मेरी कुछ बातें माननी पड़ेगी।”
“कौन सी बातें?”
“प्रथम, मैं यह कार्य अकेली ही पूर्ण करूंगी। दूसरी, मैं हवाई यात्रा नहीं करूंगी किन्तु मेरी जीप से करूंगी। तीसरी, मेरी जीप मैं ही चलाऊँगी, मुझे कोई साथी नहीं चाहिए। चौथी, यह कार्य के पूर्ण करने के लिए कोई समय सीमा नहीं रहेगी।” वफ़ाई ने इमरान की तरफ देखा।
“यह सभी अस्वीकार्य है। तुम नहीं जानती कि तुम क्या मांग रही हो। तुम...।”
“मैंने मेरी बात रख दी है। निर्णय आप को करना होगा।” वफ़ाई इमरान के कक्ष से बाहर निकल गई।
इमरान वफ़ाई को जाते हुए देखता रहा। खुलकर बंध हुए द्वार ने अनेक संकेत दे दिये, जिससे इमरान विचलित हो उठा।
इमरान उस कार्य को पूरा करवाना चाहता था जो व्यावसायिक नीति का भाग था। उस ने स्थिति की समीक्षा की। वरिष्ठ सहयोगियों के साथ सारी बातों पर चर्चा की। सभी ने साथ मिलकर निर्णय किया। वफ़ाई को बुलाया गया।
“वफ़ाई तुम्हारी सभी बातें मान ली गयी है। किन्तु स्मरण रहे कि मुझे श्रेष्ठ परिणाम चाहिए।” इमरान ने कुछ कागज वफ़ाई को सौंपे, “अभियान की सफलता के लिए शुभकामना।”
“और देख लो मैं इस यात्रा पर निकल चुकी हूँ, मित्र पर्वत।” वफ़ाई ने पानी पिया, गहरी सांस ली।
सामने खड़ा पर्वत वफ़ाई की बातें बड़े ध्यान से सुन रहा था।
“तो यह बात है।” पर्वत ने कहा।
“हाँ, यही बात है। अब तो मुझे जाने दो।” वफ़ाई ने बिनती की।
“सखी वफ़ाई, अब तुम जा सकती हो। तुम्हारा मार्ग खुला गया है।” पर्वत की एक ठंडी लहर वफ़ाई को छु गई।
“बहन जी, मार्ग आंशिक रूप से खोल दिया गया है। आप आगे जा सकती हो।” एक सैनिक ने आकर वफ़ाई को सूचना दी।
“जय हिन्द।” वफ़ाई ने सैनिक का अभिवादन किया।
“वफ़ाई, मुझे तुम्हारा पुरुष मित्र बना लो।” पर्वत ने कहा।
“अवश्य। आज से तुम मेरे पुरुष मित्र और मैं तेरी स्त्री मित्र। किन्तु अभी मुझे जाना होगा, लौटकर आने पर खूब रोमांस करेंगे।” वफ़ाई ने पर्वत को शृंगारिक स्मित दिया।
वफ़ाई जीप की तरफ बढ़ी।
“तुम कई दिनों के पश्चात लौटोगी। हो सकता है कि तुम्हें कोई पुरुष मित्र मिल जाए। यदि कोई मिल जाए तो...।”
“क्या तुम्हें ईर्ष्या हो रही है?” वफ़ाई ने मुड़कर पर्वत की तरफ देखा। वफ़ाई की आँखों में लज्जा थी। उसने अपने अंदर कुछ अनुभव किया। उसके ह्रदय की घाटी में कुछ प्रतिध्वनित हुआ। उसकी नसों में मीठी लहर दौड़ने लगी। उसका ह्रदय कोई अज्ञात सा गीत गाने लगा।
“नहीं तो। मैं कामना करता हूँ कि तुम्हें इस यात्रा में कोई मित्र मिल जाय।”
“धन्यवाद, मित्र।” वफ़ाई भावुक हो गई।
“मेरा एक काम करोगी?”
“अब क्या चाहिए?”
“सुंदर नीले केसर के फूलों के साथ मेरी कुछ तस्वीरें ले लो।”
वफ़ाई ने पर्वत की मांग मान ली, अनेक तस्वीरें ली। पर्वत के साथ बीते सुंदर क्षणों को अपने अंदर समेटे हुए वफ़ाई यात्रा पर निकल पड़ी।

5

वफ़ाई सावधानी से पहाड़ी मार्ग, जो अभी भी हिम से भरा था, पर जीप चला रही थी। मार्ग घुमावदार और ढलान वाला था। हिम के कारण फिसलन भी थी। फिर भी वह अपने मार्ग पर चलती रही।

पाँच घंटे की यात्रा के पश्चात वह सीधे और साफ मार्ग पर थी। आकाश साफ था, धूप निकल आई थी। हिम कहीं पीछे छूट गया था। हवा में उष्णता थी। उसे यह वातावरण अच्छा लगा।

कोने की एक होटल पर वह रुकी। दूध के साथ थोड़ा कुछ खाना खाया। गरम दूध ने वफ़ाई में ताजगी भर दी, थकान कहीं दूर चली गई।

वफ़ाई ने जीप के दर्पण में स्वयं को देखा, स्वयं को स्मित दिया। उसे अपना ही स्मित पसंद आया। इस यात्रा में वफ़ाई का यह प्रथम स्मित था जो सुंदर था, मनभावन था।

वफ़ाई ने स्वयं को वचन दिया, "इस यात्रा के प्रत्येक मोड पर मैं स्वयं को स्मित देकर प्रसन्न रखूंगी।"

वफ़ाई फिर से चल पड़ी।

पाँच दिनों में दो हजार किलो मीटर से भी लंबी यात्रा के पश्चात वफ़ाई कच्छ के द्वार पर आ पहुंची। वफ़ाई ने चाबी घुमाई, जीप शांत हो गई। उस ने घड़ी देखि, वह शाम के 04:07 का समय दिखा रही थी। उस ने गाड़ी की खिड़की का काच खोल दिया। हवा का एक टुकड़ा जीप के अंदर कूद पड़ा। पहाड़ की ठंडी हवा की तुलना में यहाँ की हवा उष्ण थी। वसंत ऋतु यहाँ आगमन कर चुकी थी। अत: हवा थोड़ी ठंडी भी थी, थोड़ी गरम भी थी। वफ़ाई को यहाँ की हवा भा गई।

वफ़ाई ने उस स्थल पर विहंग द्रष्टि डाली। उसे कहीं भी मरुस्थल नहीं दिखाई दिया।

"तो मरुस्थल है कहाँ?" वफ़ाई ने स्वयं से पूछा।

वह एक छोटा सा गाँव था। वहाँ कुछ लोग घूम रहे थे, छोटी मोटी कुछ दुकानें भी थी। लोग अपने काम में व्यस्त थे। इन दिनों अज्ञात लोगों का आगमन गाँव वालों के लिए सामान्य बात थी अत: वफ़ाई के आगमन पर किसी ने खास ध्यान नहीं दिया।

प्रति वर्ष हजारों लोग यहाँ आते हैं। नवंबर से फरवरी तक यह मरुस्थल सारे विश्व की नजर में रहता है। ठंड, मरुस्थल, स्थानीय संस्कृति आदि को चाहने वाले यहाँ आते रहते हैं। कई प्रसिध्ध हस्तियाँ भी यहाँ आती है। देश के प्रत्येक कोने से और विदेशों से भी यात्री आते रहते हैं।

यात्री यहाँ 'रण उत्सव' का भरपूर आनंद उठाते रहते हैं, जिसमें जीवन के अनेक रंग देखे जाते हैं। स्थानीय लोगों के लिए यात्रियों का आगमन कोई विशेष घटना नहीं होती है। अत: किसी ने भी वफ़ाई के आगमन पर ध्यान नहीं दिया।

वफ़ाई ने जीप से नीचे उतकर हाथ-पैर को झटका। शरीर के अंगों को मरोड़ा। गहरी सांस ली, पानी के कुछ घूंट पिये। वह स्थल और वहाँ के वातावरण में अपने आप को ढालने का प्रयास किया।

दस बारह मिनिट में वफ़ाई ने उस परिवेश से अनुकूलन साध लिया। उसे अच्छा लगा। उसके अधरों पर स्मित था।

"भाई साब, मरुस्थल कहाँ है? वहाँ जाने का मार्ग कौन सा है?" वफ़ाई ने किसी से पूछा।

"आप को थोड़ा और आगे जाना होगा। उसके बाद एक छावनी आएगी। वहाँ से प्रवेश पत्र लेना होगा। आप को इस दिशा में जाना होगा।" उसने मरुस्थल के मार्ग की तरफ हाथ खींचा।

"धन्यवाद।" वफ़ाई मरुस्थल के मार्ग पर जाने लगी।

"एक मिनिट रुको, मरुस्थल जाने से पहले गाड़ी में पेट्रोल की टंकी पूरी भरा लो। यह जो पेट्रोल पंप है वह अंतिम पंप है, आगे नहीं मिलेगा।" उसने वफ़ाई को सलाह दी।

"ठीक है, फिर से धन्यवाद।"

वफ़ाई ने गाड़ी की टंकी पूरी भरवा ली। दो बड़े डिब्बे में भी पेट्रोल भरवा लिया। वह मरुस्थल की तरफ चल पड़ी।

कुछ मिनिट पश्चात वह सैनिक चौकी पर पहुँच गई जहां से उसे प्रवेश पत्र लेना था। चौकी पर कोई नहीं था। बिना प्रवेश पत्र के ही वह मरुस्थल की तरफ चल पड़ी।

वफ़ाई जीप को धीरे धीरे चला रही थी। वह उस स्थान का निरीक्षण करना चाहती थी, अत: मार्ग के दोनों तरफ देखते देखते जा रही थी। उसने देखा की सभी वाहन मरुस्थल की दिशा से नगर की तरफ आ रहे थे।

'इन लोगों के लिए उत्सव पूरा हो गया होगा।' वह मन ही मन बोली, 'किन्तु यह क्या? सभी वाहन मरुस्थल की विरूध्ध दिशा में जा

रहे हैं। मैं ही अकेली मरुस्थल की दिशा में जा रही हूँ। कुछ तो बात है।' वफ़ाई फिर भी मरुस्थल की दिशा में जा रही थी।
वह उत्सव के स्थल पर आ पहूँची। वहाँ अस्थाई रूप से बना तंबुओं का एक नगर था। पर वहाँ कोई नहीं था, कुछ भी नहीं था।
केवल एक नगर, जो अभी अभी खंडित हुआ था, के अवशेष बचे थे। नगर अपना जीवन खो चुका था।
'नगर ऐसे ही मर जाते होंगे...।' वफ़ाई ने स्वयं से कहा।
"यह नगर ऐसे क्यों है?" वफ़ाई ने किसी से पूछा।
"मरुस्थल का उत्सव चार दिन पहले ही पूरा हो गया। इस नगर को छोड़कर यात्री जा चुके हैं। यह तो अस्थाई नगर है। अगले उत्सव तक यहाँ कोई नहीं आएगा।" उस व्यक्ति ने उत्तर दिया।
"तो पुर्णिमा कब है?" वफ़ाई ने दूसरा प्रश्न किया।
"पुर्णिमा की रात्री तीन दिन पहले ही बीत चुकी, अब सत्ताईस दिनों के पश्चात ही पुर्णिमा आएगी।"
"तो वह अदभूत घटना, सूर्यास्त और चंद्रोदय वाली घटना ....?" वफ़ाई के शब्द अधूरे रह गए। वह व्यक्ति जा चुका था।
वह निराश हो गई।
"हवाई यात्रा का प्रस्ताव यदि मैंने स्वीकार कर लिया होता तो उस घटना का, उस उत्सव का आनंद प्राप्त हो सकता था। किन्तु वह क्षण, वह समय जा चुका।" वह अपने आप पर गुस्सा हो गई, "वफ़ाई, वह तेरी ही जिद थी, अब भुगतो।"
"मुझे बिना उत्सव के ही लौटना पड़ेगा।" वफ़ाई रो पड़ी।
उसने अपने अश्रुओं को बहने दिया। उसने उसे शक्ति दी। कुछ समय लगा उसे अपने आप को संभालने में। उसने जीप के दर्पण में स्वयं को देखा और स्मित किया। स्थिति को समझा और फिर से स्मित किया।
"जो खो चुकी हूं उसकी पीड़ा तो है किन्तु पीड़ा को साथ लेकर क्या हाथ लगेगा? मुझे नए रूप से कुछ करना होगा।" वफ़ाई ने स्वयम को आश्वस्त किया।
ठंड की ऋतु धरती को छोड़ कर जा रही थी और ग्रीष्म ऋतु, वसंत ऋतु का हाथ पकड़ कर आ रही थी। हवा की एक शीतल लहर वफ़ाई को छूकर निकल गई।

"उत्सव सम्पन्न हो गया। इसका अर्थ है कि लोग जा चुके हैं। लोगों के द्वारा बनाया गया कृत्रिम विश्व मिटा दिया गया है, जो केवल एक भ्रम था। मूल और वास्तविक वस्तुएं तो अभी भी है।" वफ़ाई स्वयं से बातें करने लगी। इस प्रकार एकांत को पराजित करने

लगी।
"कौन सी वस्तुएं वास्तविक है?"
"यह मरुस्थल, गगन, पवन, रेत, सूर्य, चन्द्र, मरुस्थल के रूप, उसका आकार, यहाँ कि हवा……।"
"हाँ, यह सब तो है जो कभी निराश नहीं करते।"
"तो मैं यह सब जो वास्तविक है उसका आनंद लूँगी, अकेली। लोग नहीं है तो क्या हुआ?"
"तो तुम्हें यहाँ रुकना होगा, वफ़ाई।" वफ़ाई के अन्तर्मन ने उसे आदेश दिया।
"तो रुक जाती हूँ यहाँ।" वफ़ाई ने निश्चय कर लिया।
वफ़ाई ने चारों तरफ द्रष्टि डाली। मरुस्थल फैला हुआ था, हर तरफ। जहां तक द्रष्टि जा सकती थी वहाँ तक मरुस्थल ही था। क्षितिजों तक फैला हुआ था अनंत मरुस्थल!
श्वेत मरुस्थल। सूर्य की किरणों जैसा श्वेत। वफ़ाई की आँखें विस्मय से भर गई। अब तक केवल दिशाओं तक फैले हुए श्वेत हिम को देखने की आदत थी। प्रथम बार क्षितिज तक फैली अन्य किसी वस्तु को वफ़ाई की आँख देख रही थी जो हिम की भांति श्वेत ही थी। श्वेत हिम! श्वेत मरुस्थल! मरुस्थल के रूप ने वफ़ाई का मन मोह लिया।
"वा….ह..। अद्भूत अनुपम, अजोड़। तुम सबसे भिन्न हो, प्रिय मरुस्थल। मैं तो तुम्हारे प्रेम में पड गई।"
दिशाओं तक फैले मरुस्थल को पवन के माध्यम से वफ़ाई ने स्नेह भेजा।
वफ़ाई ने अपनी बाहें खोली,"हे मरुस्थल, मेरे आलिंगन का स्वीकार करो। मेरी मित्रता का स्वीकार करो। मेरे स्नेह का स्वीकार करो।"
वफ़ाई का स्नेह दिशाओं में फ़ेल गया। दिशाएँ विचलित हो गई, प्रवाहित हो गई। क्षितिज तक फ़ेल गई। क्षितिज तक उत्तेजना से उष्ण हुई हवा वफ़ाई को छु कर बह गई।
"मेरे स्नेह को स्वीकार करने के लिए मैं तुम्हारा धन्यवाद करती हूं, मेरे मित्र। हे मरुस्थल, आज से तुम मरे नए पुरुष मित्र हो।" वफ़ाई ने सारे मरुस्थल को सुनाई दे ऐसे कहा।
"नया? तो पुराना पुरुष मित्र कौन है?" मरुस्थल ने पूछा।
"हे मित्र। अभी अभी तो मित्रता हुई है और अभी से ऐसे सवाल? मैं यहाँ रुकने वाली हूँ, तुम्हारे साथ कुछ समय के लिए। हो सकता है कुछ दिनों के लिए। धीरे धीरे तुम्हें सब ज्ञात हो जाएगा। धैर्य रखो।" वफ़ाई ने मरुस्थल की तरफ श्रुंगारिक स्मित किया। मरुस्थल ने भी जवाबी स्मित दिया। ठंडी हवा का एक टुकड़ा वफ़ाई को छु गया, ह्रदय तक अंदर उतर गया।
"हम खूब बातें करेंगे, एक बार मुझे रात्रि व्यतीत करने का कोई ठिकाना तो ढूंढ लेने दो।"
वफ़ाई ने दूर तक देखा, दूर दूर तक कुछ भी नहीं था। वह जीप में कूद पड़ी और मरुस्थल की अज्ञात दिशा में एक घर की खोज में निकल पड़ी।
एक घंटे से भी अधिक समय से जीप चलती रही किन्तु वफ़ाई को कोई उचित स्थान नहीं मिला। मार्ग में उसे रेत मिली, बिना मनुष्य की धरती मिली, गहन एवं स्वच्छ आकाश मिला, ऊष्मा भरी हवा मिली, अंत हिन मौन मिला, कहीं कहीं कोई वृक्ष मिले, सुखी धरा मिली, अज्ञात मार्ग मिला, रंगीन एवं रंगविहीन क्षण भी मिले। इन सब ने वफ़ाई को अपनी तरफ आकर्षित किया किन्तु उसे कोई आश्रय स्थान नहीं मिला। वह चलती रही, खोज करती रही।
"एक घर ढूँढना कितना कठिन होता है, ज्ञात है तुम्हें?"
"अरे, भरे पूरे नगर में जहां बस्तियाँ बसी है वहाँ भी एक घर नहीं मिल पाता और तुम इस मरुस्थल में घर ढूंढ रही हो।"
"यदि सारा विस्तार ऐसा ही रहेगा तो रात कहाँ और कैसे बीतेगी? क्या मुझे लोगों से बसे नगर की तरफ लौट जाना चाहिए?" वफ़ाई ने स्वयं से प्रश्न किए।
"सबसे सरल उपाय है यह। किन्तु, ऐसे तो तुम मरुस्थल से भाग रही हो। ऐसे में मरुस्थल को जानोगी कैसे? समझोगी कैसे? अनुभवोगी कैसे?"
"किन्तु कुछ तो…।"
"किन्तु, परंतु आदि शब्द का प्रयोग कायर व्यक्ति करते हैं। क्या तुम…।"
"नहीं, मैं कायर नहीं हूँ। मैं मरुस्थल में ही रहूँगी, रात भर। और यदि कुछ नहीं मिला तो जीप के अंदर सारी रात बिता दूँगी किन्तु मरुस्थल से दूर नहीं भागूंगी।" वफ़ाई ने अपने आप को वचन दिया। वह जीप चलाती रही।
मरुस्थल के एक कोने में कहीं दूर वफ़ाई की आँखों ने किसी आकृति को पकड़ लिया। उसने उसे दो तीन बार देखा।
"मुझे विश्वास है कि वह स्थान उपयोगी हो सकता है, जिस की मैं खोज में थी वह यही है।" उसने जीप रोक दी और बाहर आ गई। उस ने दूरबीन निकाला, आँखों पर रखकर उस घर जैसे लगने वाले स्थान पर ध्यान केन्द्रित किया।
"यहाँ कोई मानवीय संकेत नहीं मिल रहे हैं। मकान खाली सा लगता है। वहाँ जा कर देखती हूं।"
वफ़ाई जा पहुंची।
वफ़ाई ने घर का निरीक्षण किया।
"मकान के दो कक्ष हैं किन्तु द्वार तो है ही नहीं। खिड़कियाँ तो है किन्तु उसके भी द्वार नहीं है। सदा से खुले रहने वाले द्वार एवं

खिड़कियाँ। यह कैसा घर है?”
“यह घर नहीं मकान है।”
“नहीं, यह तो खंडहर लग रहा है।”
वफ़ाई ने आस पास देखा।
“कोई नहीं है यहाँ। बस एकांत बसा है, एक अकेला एकांत। सब कुछ शांत है। कोई ध्वनि नहीं, कोई हलचल नहीं। एक भयावह शांति का अस्तित्व है यहाँ।” वफ़ाई विचलित हो गई।
“ऐसी शांति से तुम अपरिचित तो नहीं हो, वफ़ाई।”
“क्या?”
“तुम्हें ऐसी शांति का परिचय है। पहाड़ों में तुम सदैव ऐसी शांति से मिलती रही हो। तीव्र, गहन और घुमावदार उपत्यकाओं में ऐसी ही गहरी और अनंत शांति से तुम प्रत्येक दिन मिलती रही हो। क्या तुम उसे भूल गई?”
“उन क्षणों को मैं कैसे भूल सकती हूँ?”
“तो फिर तुम ऐसे भयभीत क्यूँ हो?”
“नहीं, मैं भयभीत नहीं हूँ। मैं पहाड़ी लड़की हूँ, तुम्हें ज्ञात होगा।”
“वफ़ाई, मुझे सब ज्ञात है। बस, आज रात यहीं रुक जाओ।”
“ठीक है, मैं यहीं रुकूँगी।” वफ़ाई मकान में प्रवेश कर गई।

7

प्रथम कक्ष साधारण खंड जैसा था। प्रत्येक कोने में धूल, मिट्टी और मकड़ी के जाले फैले हुए थे। मकड़ी ने एक पारदर्शक किन्तु सशक्त दीवार रच दी थी। वफ़ाई वहीं रुक गई और पूरे कक्ष का निरीक्षण करने लगी, स्थल और स्थिति को समझने का प्रयास करने लगी।
कक्ष के मध्य में टूटी हुई एक कुर्सी थी। अन्य कोई सामान नहीं था। कोने में एक झाड़ू, दो बाल्टियाँ, पुराने कपड़ों के कुछ टुकड़े, टूटे

हुए चप्पल, पानी का खाली घड़ा, स्टील के दो प्याले, प्लास्टिक का बड़ा प्याला और तीन चम्मच। बस इतना सा सामान था।
"यह सब वस्तुएं संकेत दे रही है कि इस कक्ष में कभी जीवन हुआ करता होगा। ना जाने यह जीवन कब इस कक्ष को छोड़ कर चला गया होगा। कुछ दिनों पहले अथवा कुछ महीनों पहले। या कुछ युग पहले। किंतु यह निश्चित है कि यहाँ कभी जीवन था।" वफ़ाई ने स्वयं को आश्वस्त किया।
दीवार पर बिजली की कुछ स्विच लगी थी। वफ़ाई ने बिजली की अपेक्षा की, किन्तु वह निराश हुई। बल्ब के स्थान पर बल्ब नहीं था, कोई पंखा भी नहीं था। वफ़ाई ने मोबाइल चार्जर लगाया, मोबाइल चार्ज होने लगा।
"बिजली अभी भी प्रवाहित हो रही है। बस, एक बल्ब का ही अभाव है कक्ष को प्रकाशित करने के लिए।" वफ़ाई हंस पड़ी।
दीवार के एक कोने में, सुंदर पहाड़ का द्रश्य अपने में समेटे हुए, एक तस्वीर लटक रही थी। वफ़ाई उस की तरफ आकृष्ट हुई। तीव्र मनसा से वफ़ाई ने उस धुंधले चित्र को देखा।
"कितना सुंदर है यह? एक बड़ा सा पहाड़, हरियाली से भरी गहरी और तीक्ष्ण घाटी, पहाड़ के आँचल में बडी और सीधी खड़ी काले घने रंग की अनेक शिलाएँ। चोटियों और शिलाओं पर बिखरा हुआ गाढ़ा हिम। हिम और शिलाओं को स्पर्श कर रही सूरज की किरणें, जिस के कारण देदीप्यमान हिम और अधिक काली दिख रही शिलाएँ। किन्तु यह चित्र यहाँ कैसे?
"हे चित्र तुम मुझे मेरे ही नगर के पहाड़ का स्मरण करा रहे हो।"
वफ़ाई को वह तस्वीर भा गई। उसने उस पर जमी धूल को हटाया। धुंधली तस्वीर अब पूर्ण रूप से स्पष्ट थी। वफ़ाई अपने नगर की यादों में खो गई। कुछ क्षण यादों में ही व्यतीत हो गए। अचानक दीवार को छोड़कर तस्वीर जमीन पर गिर पड़ी। वफ़ाई भी हिम पहाड़ों से मरुभूमि में सरक गई।
वफ़ाई ने झुककर तस्वीर उठा ली, अपने आलिंगन में ले ली।
वफ़ाई दूसरे कक्ष में गई। उसकी कथा भी पहले कक्ष जैसी ही थी। वहाँ से बाहर निकलने का एक द्वार था जो पीछे के भाग में खुलता था। वह बाहर निकली। वहाँ एक स्नान घर था, जिसे बंध करने का कोई द्वार नहीं था।
स्नान घर के समीप पानी का हाथ पंप था। एक शौचालय भी था, खुल्ला, बिना द्वार का।
वफ़ाई ने स्नानघर में प्रवेश किया। समय के किसी अज्ञात क्षण से वह सूखा पड़ा था। एक विचित्र गंध ने वफ़ाई के नाक पर आक्रमण कर दिया। उसने साँसे रोक ली।
तीन फिट ऊंचाई पर पानी का नल था। वफ़ाई ने उसे घुमाया, पानी की एक भी बूंद नहीं निकली। वफ़ाई ने तीन चार बार प्रयास किया किन्तु परिणाम शून्य। वफ़ाई ने रोकी हुई साँसे छोड़ दी ।
वफ़ाई स्नानघर को छोड़ कर शौचालय में गई। वहाँ भी वही स्थिति थी।
वह हाथ पंप की तरफ मुड़ी, उसे चलाने लगी। वह कठोर था, स्थिर था। वफ़ाई ने पूरी शक्ति से प्रयास किया, अनेक बार किया। अंततः पंप से पानी निकला जो वफ़ाई पर बारिश की भांति गिरा। वह भीग गई, पूर्ण रूप से।
समय के लंबे अंतराल के पश्चात वफ़ाई के शरीर को पानी का स्पर्श हुआ था। उसे अच्छा लगा। वह कक्ष की तरफ दौड़ी, बाल्टी ले आई और उसे पानी से भर दिया।
वह आनंदित हो कर चीखी, चिल्लाई। उसकी आवाज हवा में धूमिल हो गई। उस की ध्वनि को सुनने के लिए वहाँ कोई नहीं था। वफ़ाई फिर से चीखी, चिल्लाई, इस बार अधिक शक्ति से।
"आज रात्रि तो यहीं रुकना होगा।" निश्चय कर लिया वफ़ाई ने।
उसने झाडू लगाया, कक्ष को साफ किया, पानी से धोया, कक्ष को रहने लायक बना दिया। बदले हुए कक्ष को देखकर वह प्रसन्न और संतुष्ट हुई।
जीप से कुछ सामान कक्ष में ले आई। जमीन पर चटटाइ बिछाई और उस पर लेटकर विश्राम करने लगी। वह थकी हुई थी, उसकी आँख लग गई।
कुछ समय पश्चात जब जागी तो घड़ी को देखकर बोली, "कितना अधिक समय बीत गया।" वह कूदी और कक्ष से बाहर आ गई, आकाश की तरफ देखा, जहां संध्या खेल रही थी। दिवस अपने अंतिम क्षण जी रहा था। सूर्य अस्त हो चुका था। प्रकाश आने वाले अंधकार से अपने अस्तित्व का यूध्ध लड़ रहा था।
"ओह, मैं आज का सूर्यास्त चूक गई।"
"सूर्यास्त के समय तुम कहीं ओर व्यस्त थी।"
"'हाँ, वह आवश्यक था।"
"सूर्य का अस्त होना भी अनिवार्य था।"
"किन्तु सूर्य मेरी प्रतीक्षा तो कर सकता था।"
"हा, हा, हा हा… सूर्य तुम्हारी प्रतीक्षा नहीं कर सकता …।"
"सूर्य को करना चाहिए था। तुम्हें तो ज्ञात है कि मैं यहाँ अतिथि हूँ। अतिथि के लिए तो सूर्य को प्रतीक्षा करनी चाहिए थी अथवा अस्त होने के समय मुझे आवाज दे …।"
"वफ़ाई, तुम पागल हो।"

'हाँ, मैं हूँ पागल। मैं स्वीकार करती हूँ। ओ गगन, ओ सूर्य, ओ दिशाओं, ओ बादलों... आपने सुना कि मैं पागल हूँ....।" वफ़ाई ज़ोर से चिल्लाई, दिशाओं की तरफ अपने बाजुओं को फैला कर, आँख बंध कर उसे आलिंगन के लिए आमंत्रित करने लगी।
हवा के एक ठंडे टुकड़े ने वफ़ाई को आलिंगन दिया। वफ़ाई ने भी उसे अपने आलिंगन में लिया।
संध्या ढल गई, अंधकार ने गगन पर अपना आधिपत्य जमा दिया, किन्तु कुछ ही क्षणों के लिए। अंधकार को पराजित करने के लिए चंद्र निकल आया। पूरा गगन चाँदनी के श्वेत प्रकाश में नहाने लगा।
वफ़ाई कक्ष से बाहर आकर लंबे समय तक आकाश को, चन्द्र को, बादलों को, रेत को, मार्ग को, दिशाओं को देखती रही। समय के क्षण बीतने लगे, बीतता हुआ यह समय वफ़ाई को मनभावन लगा।
"यह क्षण मौन से सभर है, जैसे पहाड़ों के क्षण मौन से सभर होते थे।"
"किन्तु, दोनों मौन में अंतर है।"
"पहाड़ों पर, पहाड़ मुझ से बात करते थे। मौन भी रहते थे। मैं पहाड़ों के मौन से भी बातें कर लेती थी। वह मौन परिचित था। किन्तु, यहाँ सब कुछ अपरिचित है। हवा, रेत, क्षितिज और यह मौन भी।"
वफ़ाई ने अपरिचित मौन से बातें करना चाहा, वह विफल हो गई। किसी ने कोई प्रत्युत्तर नहीं दिया। मौन भी मौन ही रहा।
असीम गगन के स्थिर मौन को छोड़ कर वफ़ाई कक्ष में आ गई। उसे भूख लगी थी, रात्री भोज का आनंद लेने लगी। थकी हारी सो गई, सपनों के नगर में खो गई; अर्धजागृत मन को लेकर, अर्धजागृत सपने लेकर। ना तो विचार, ना तो मन और ना ही सपने स्पष्ट थे, फिर भी वफ़ाई सपनों के उस नगर में विचरती रही।
रात अपने मार्ग पर आगे बढ़ रही थी, और वफ़ाई अपने सपनों के मार्ग पर; बिना किसी भय के, बिना किसी चिंता के चल रही थी। एक निर्भीक पर्वत सुंदरी मरुस्थल की रात्री में निंद्राधीन थी।
निशा व्यतीत हो गई। नया प्रभात भी निशा की भांति ही मौन था। कहीं भी कोई ध्वनि नहीं था। पंखियों के मधुर गीत नहीं थे। मंदिर का घंटनाद नहीं था, मस्जिदों की अजान भी नहीं, कोई नर अथवा नारी भी नहीं थे। इतने शांत वातावरण में वफ़ाई जागी तब घड़ी में बजे थे - 9:11 ।
"या अल्लाह... यह भी कोई समय है जागने का ...।" वह बड़बड़ाई।
वफ़ाई ने वातायन से बाहर द्रष्टि डाली। द्वार और खिड़की के मार्ग से दिवस का प्रकाश कक्ष के अंदर घुस चुका था। सूरज भी आक्रामक था। प्रकाशमय था।
"यह तो आनंद सभर विस्मय है। पहाड़ों पर कभी भी तेजोमय दिवस नहीं होते थे। दिवस बिना प्रकाश के ही संध्या और रात्री में परिवर्तित हो जाता था। सूरज दिनों तक गायब रहता था। किन्तु यहाँ सूर्य देदीप्यमान है, दिवस तेजोमय है। कहीं भी अंधकार नहीं है।"
"मरुभूमि और पहाड़ के बीच यदि कुछ भी सामान्य है तो वह है- एकांत।"
वफ़ाई उठी, अंगड़ाई ली। सहसा उसे लगा कि कक्ष में कुछ है जो गतिमान है। वह चकित हो गई।
"मेरे सिवा इस कक्ष में और कौन हो सकता है?"
वफ़ाई ने सावधानी से उस दिशा में देखा। उसने दर्पण में अपने ही प्रतिबिंब को पाया। बाएँ कोने में एक छोटा सा दर्पण था। वह विचलित हो गई, "मैंने इसे कल देखा क्यूँ नहीं? मेरी द्रष्टि से यह चूक कैसे हो गई?"
वह दर्पण के समीप गई। उसमें उसने अपने मुख को, आँखों को, गालों को, अधरों को और केश को देखा। उसे अपना ही प्रतिबिंब अपरिचित लगा।
वफ़ाई ने दर्पण से पूछ लिया, "ए लड़की, कौन है तू?"
दर्पण ने भी यही प्रश्न पूछा। वफ़ाई ने दर्पण को स्मित दिया। दर्पण ने भी स्मित दिया।
दर्पण और दर्पण में स्वयं का प्रतिबिंब, वफ़ाई को भाने लगा। वह खुलकर हंस पड़ी। उसने दर्पण को चूम लिया।
तैयार होकर वह घर से बाहर आई। जीप वहीं खड़ी थी जहां कल शाम रखी थी। कुछ भी बदला नहीं था। धरती का एक भी कण अपने स्थान से हिला नहीं था। सब कुछ स्थिर था।
"रात भर यहाँ कोई नहीं आया, कोई पशु भी नहीं। हवा भी स्थिर सी होगी रात भर। बिना जीवन के किसी संकेत से भरा जीवन। कैसा है यह जीवन?" मन ही मन वह बोली।
वफ़ाई ने घर छोड़ दिया और विशाल मरुभूमि में किसी अनदेखे मार्ग पर किसी अज्ञात की खोज में निकल पड़ी। क्या था वह? वफ़ाई नहीं जानती थी।

8

वफ़ाई पूरा दिवस मरुभूमि में भटकती रही, किन्तु कुछ भी उसे आकृष्ट नहीं कर सका। वही अकेला मरुस्थल, अंतहिन मार्ग, रेत के ढग, ठंडी-सुखी हवा, बिना बादल का गगन, साफ और खुल्ली दिशाएँ, तेज सूर्य प्रकाश और मौन। वफ़ाई मिलती रही इन सब से। दिवस ढलते ढलते वफ़ाई थक गई, निराश हो गई।

वह लौट आई उसी घर में जहां उसने कल रात बिताई थी। रात बिताने के लिए उसे उस घर से अधिक उचित कोई स्थल नहीं मिला। घर अभी भी वैसा ही था जैसा वह छोड़ गई थी। प्रत्येक वस्तु अपने स्थान पर थी, कुछ भी नहीं बदला था। ना तो कोई घर में गया था ना ही कोई घर के समीप से गुजरा था। वफ़ाई घर में प्रवेश कर गई।

वह द र्प ण देखने को ललचाई, उसने दर्पण में देखा, उसे अच्छा लगा, वह प्रसन्न हो गई।

“कोई तो है मेरे साथ, चाहे वह मेरा प्रतिबिंब ही क्यूँ ना हो। मेरी छाया, मेरे प्रतिबिंब, तुम तो मेरे साथ रहोगे ना?” वफ़ाई दर्पण को देखती रही।

वह खुलकर हंसी, उसने पहाड़ का गीत गया, अपने आप से बातें की, कुछ शब्दों -जिसका अर्थ उसे भी नहीं ज्ञात था- के साथ ज़ोर से चीखी। वह उस क्षण का आनंद उठाने लगी। पूरे दिवस में यही तो वह क्षण थे जब वह प्र सन्न थी।

करने के लिए वफ़ाई के पास कोई काम नहीं था। केवल समय व्यतीत करना था और पुर्णिमा के दिवस की प्रतीक्षा करनी थी। कक्ष से बाहर निकल कर उसने गगन की तरफ देखा। गगन स्थिर था, वहाँ भी कुछ गतिमान नहीं था।

“गगन कैसे गतिमान हो सकता है? गगन तो खाली खाली होता है, तो वह स्थिर ही रहेगा। गगन ने अपना रंग भी नहीं बदला है। गहरा नीला आकाश।” वफ़ाई बड़बड़ा ई, “हे आकाश, तुम तो उस बच्चे की कोरी पाटी जैसे ही हो जो लिखना नहीं जानता, जिसके पास शब्द नहीं है, जिसके पास गणित के अंक नहीं है, जिसके पास कुछ भी ज्ञान नहीं है। तुम बड़े ही मूर्ख प्रतीत होते हो।”

वफ़ाई ने पश्चिम की तरफ देखा। केवल सूर्य ही एक मात्र वस्तु थी सारे गगन में। सूरज अभी भी पूर्ण प्रकाशित था। सूर्यास्त होने में अभी समय था। धूप के कारण मरुभूमि थोड़ी उष्ण थी।

अचानक वफ़ाई हंस पड़ी, खुलकर हंसने लगी। उसने मुक्त हास्य किया। उसका हास्य मरुभूमि में व्याप गया, प्रतिध्वनि बनकर वफ़ाई के कानों में गूंजने लगा। उसके हृदय में आनंद की तरंग बहने लगी।

“आज मैं सूर्यास्त के क्षण नहीं चुकुंगी, इस मरुभूमि की संध्या का आनंद लूँगी।”

सूर्य अस्त होने की दिशा में बढ़ने लगा, उस की गति द्रुत हो गई।

“जब घर समीप होता है तब बच्चा अधिक गति से चलता है। सूर्य, तुम भी वैसे ही बच्चे हो।”

वफ़ाई ने शीघ्रता से केमरा लिया और डूबते सूरज की, गगन की और संध्या की तस्वीरें लेने लगी। गगन अभी भी वैसा ही था, शुष्क और रंगहिन।

वफ़ाई ने खींची हुई तसवीरों को केमरे में देखा। वह निराश हो गई। केमरे से बातें करने लगी, “जानु, तुमने यह क्या कर दिया? सभी तस्वीरें एक सी लगती है। मैं उसे हटा देती हूँ।” वफ़ाई तसवीरों को हटाने लगी। दो चार तस्वीरें हटाने के बाद वफ़ाई ने अपना निर्णय बदल दिया। सभी तसवीरों को बचा के रख लिया।

मरुभूमि की दूसरी रात्रि भी वफ़ाई ने उसी घर में व्यतीत कर दी। और दो दिवस वफ़ाई मरुभूमि में घूमती रही किन्तु पहले दो दिनों की भांति वह निराश ही रही। ना कोई मिला उसे ना कोई घटना घटी। तीसरी और चोथी रात्रि भी वफ़ाई ने उसी घर में बिताई।

चार दिवस मरुभूमि में घूमने से जो अनुभव मिले उसे वफ़ाई लिखने लगी।

“यहाँ की कुछ बातें भिन्न है।

एक, यहाँ सूर्योदय प्रतिदिन होता है। सूरज का उगना यहाँ सामान्य घटना है। और वहाँ, पहाड़ पर सूरज दिनों तक, सप्ताहों तक और कई बार तो महीनों तक अद्रश्य रहता है।
दो, गगन सपाट, सूखा, साफ एवं रंगहीन रहता है। गगन में किसी भी रंग के दाग नहीं होते हैं। वह स्थिर रहता है।
तीन, मरुभूमि भी रंगहीन और शुष्क है। सब कुछ जड़ सा गतिहिन है, संवेदना हिन है।
चार, इन चार दिनों में मेरा जीवन भी एक सा और अचल रहा है जिसमे कोई गति नहीं है। रेत भी अपने स्थान से हिली तक नहीं, समय भी स्थिर और जड़ सा है। एक मात्र वस्तु जो चलित हो रही है वह है सूर्य, जो निकलता है, गति करता है एवं अस्त हो जाता है। अन्यथा ऐसा लगता है कि पृथ्वी घटना रहित एवं जीवन रहित हो। जीवन के जैसे कोई संकेत ही न हो।
पांच, मैंने मरुभूमि की अनेक तस्वीरें खींची है, किन्तु सब एक समान लगती है। इन चित्रों में कोई विविधता नहीं है। समय कोई भी हो, द्रश्य एक से ही होते हैं।"
वफ़ाई ने लेखनी और आँखें बंध कर ली, गहरी सांस ली। वह उठी, पानी और खाने के सामान को जांचा,"इससे तो केवल दो दिनों तक काम चल सकता है।"
वफ़ाई फिर से विचारों में खो गई। विचार जो वफ़ाई के मन से खेल रहे थे, जो मन की शांति को प्रभावित कर रहे थे। सभी विचारों का अपना अपना महत्व था, अपनी अपनी दिशाएँ थी। प्रत्येक विचार वफ़ाई को भिन्न भिन्न दिशा में खींच रहा था। विचारों के सागर ने वफ़ाई के मन में चक्रवात रच दिया।
अंततः सब शांत हो गया, विचार भी और मन भी। शांत चित्त से वफ़ाई ने निश्चय किया, "यदि कल का दिवस भी बिना किसी घटना के बीत जाएगा तो मैं इस मरुभूमि को छोडकर अपने घर, अपने गाँव और अपने पहाड़ पर लौट जाउंगी।"
"फोटो पत्रकार के रूप में घाटी में घटती अनेक घटनाओं को मैंने देखा है। इस के लिए दौड़ भाग करती रहती थी, और कभी कभी तो एक साथ अनेक घटनाएँ होती रहती थी। अधिकांश दिवस घटनाओं से भरपूर रहते थे। पागलों की भांति एक स्थल से दूसरे स्थल तक भागती रहती थी। कभी कभी तो लगता था कि जगत में इतनी सारी घटनाएँ क्यों होती रहती है? क्या कभी विश्व का एक दिवस बिना किसी घटना के नहीं बीत सकता? घटनाओं के पीछे ध्येयहीन भागती रहती थी, थक जाती थी और चाहती थी कि कुछ पल के लिए यह सब रुक जाए, थम जाए और मुझे विराम के कुछ क्षण मिले। किन्तु घटनाएँ कभी नहीं रुकी। और यहाँ? सब कुछ रुका सा है, स्थिर सा है। कोई घटना दिनों तक नहीं घटती, चार चार दिवस व्यतीत हो चुके हैं। मैं घटना के घटने के लिए व्याकुल होकर प्रतीक्षा कर रही हूँ।" वफ़ाई अपने आप से बात करने लगी। इस एकांत में भी वफ़ाई अपने साथ थी जो उसे आश्वस्त करता था कि कोई तो है उसके साथ। स्वयं से बातें करना उसे अच्छा लगा।
"घटनाओं के रंग होते हैं, कभी श्वेत तो कभी श्याम तो कभी कोई और रंग। किन्तु यदि घटना ही ना घटे तो? तो रंग कहाँ से आएंगे?" वफ़ाई ने स्वयं को प्रश्न किया और स्वयं निरुत्तर रही।
हवा मौन हो गई, गगन भी। समय भी एक शब्द नहीं बोला। भिंती, द्वार, खिड़कियाँ, रेत, क्षितिज एवं सूरज भी मौन रहा।
वफ़ाई केमरे में कैद मरुभूमि की तसवीरों को फिर से देखने लगी। सब एक सी थी, सब का मन पर प्रभाव भी एक सा था।
"रंग विहीन, घटना विहीन विश्व। एक सा आकाश, एक सी रेत, एक सा मन। कुछ भी तो भिन्न नहीं है।"
"वफ़ाई, यह आत्मा विहीन धरती की एक सी तस्वीरें, एक सी मुद्रायेँ खींच खींच कर मैं तो ऊब गया हूँ। मेरे लेंस विद्रोह पर उतर आए हैं। किसी भी क्षण वह तस्वीर खींचने से मना कर देंगे। एकविधता से थक चुका हूँ मैं। मुझे भिन्न भिन्न रंगों, व्यक्तियों, स्थलों, वस्तुओं, जीवन एवं भावों की झंखना थी, जो सब यहाँ अद्रश्य है।" केमरे ने विद्रोही सुर कहे।
वफ़ाई ने अनुभव किया कि नीली झांय वाले श्वेत लेंस थोडे से लाल हो गये हैं। उसने फिर से देखा, वह लाल ही दीखाई दिये।
"जानु, तुम इतने क्रोधित क्यों हो? क्या हो गया है तुम्हें?" वफ़ाई ने केमरे को स्नेह से पूछा।
"तुम सब जानती हो। मेरा अस्तित्व रंग और जीवन से भरी तसवीरों के लिए है। रंग और जीवन मेरी आत्मा है। और यह तस्वीरें जो तुमने मुझसे खिंची है वह तो शुष्क है। तुम ही कहो मेरी आत्मा के बिना मैं कैसे जी सकूँगा?" केमरे ने कहा।
वफ़ाई ने केमरे की तरफ स्मित किया, केमरे ने भी जवाबी स्मित किया। वफ़ाई ने केमरे को चूमा और स्नेह से छाती से लगा लिया, जैसे कोई मां अपने बच्चे को अपने आँचल से लगाती हो।
"जानु, मैं भी तो अकेलापन अनुभव कर रही हूँ। किन्तु हम क्या कर सकते हैं?"
"मुझे अपेक्षा है नए क्षण, नया जीवन, नयी घटनाएँ, नए व्यक्ति, नया स्थल, नयी हवा, नया गगन, नया सूर्य, नया चन्द्र, नयी लहर, नए तरंग, नए…।" जानु बोलता रहा।
"मैं भी वही चाहती हूँ।"
"मैं यह सब की तीव्र झंखना करता हूँ। यदि तुम मुझे यह सब नहीं दे सकती तो हमें लौटना होगा।"
"हमें आने वाली पुर्णिमा तक प्रतीक्षा करनी होगी। जानु, तब तक मेरा साथ दो।" वफ़ाई ने जानु को विनती की।
"किन्तु वह तो अत्यंत दूर है।"
"मुझे ज्ञात है, किन्तु हम एक अभियान पर हैं, एक कार्य पर हैं, जिसे हमें पूर्ण करना है। इस समय हम उसे छोडकर नहीं जा सकते।"
"वफ़ाई, वापस लौट चलो।"

वफ़ाई कुछ क्षण विचार करके बोली, "जानु, हमें एक और दिवस प्रतीक्षा करनी चाहिए। कल हम मरुभूमि की किसी अज्ञात दिशा में जाएंगे और यदि परिणाम वही रहता है तो हम लौट जाएंगे।"
"कल भी कुछ नहीं होगा। इतने दिनों से कुछ नहीं हुआ तो कल क्या हो जाएगा? वफ़ाई, तुम हमारा समय और शक्ति व्यर्थ ही ....।"
"जब हम जीवन को छोडने के मोड पर होते हैं तभी जीवन अंगड़ाई लेता है और बदल जाता है। हम नहीं जानते कि कौन सा क्षण जीवन को बदल डालेगा। हम सदैव उसी क्षण हार मान लेते हैं जिस क्षण जीवन बदलने वाला होता है। वह क्षण हमारे द्वार पर आ रहा है, जानु। मुझे विश्वास है कि वह क्षण यहीं कहीं हमारे आसपास ही है जो हमें कल अवश्य मिलेगा। कल यहाँ का जीवन बदल जाएगा। हम कल नए जीवन से, नए रंगों से, नए व्यक्ति से भेंट करेंगे। तुम बस कल की प्रतीक्षा करो।" वफ़ाई ने जानु में उत्साह भरने का प्रयास किया।
"ठीक है। जैसी तुम्हारी इच्छा। किन्तु मैं कल के लिए उत्साहित नहीं हूँ। कल भी कुछ नहीं बदलने वाला है।"
"मैंने कहा ना कि यदि कल कुछ नहीं हुआ तो हम इसे छोडकर लौट जाएंगे।" वफ़ाई ने जानु को आश्वस्त किया।
"और यदि, जैसे तुम कह रही हो वैसे, कल कुछ हुआ तो?" जानु ने सुर बदले।
"तो हम उसका भरपूर आनंद लेंगे।"
"और यदि कुछ बुरा हुआ तो?" जानु भयभीत था।
"जानु, बहादुर बनो। लड़की होकर मैं डर नहीं रही हूँ। तुम्हें तो मेरी हिम्मत बनना है। तुम ...।"
"ठीक है।" जानु ने अपनी आँखें बंध कर ली। वफ़ाई ने जानु को थेले में रख दिया। समय अधिक व्यतीत हो गया था। रात आ चुकी थी। वफ़ाई सोने का प्रयास करने लगी। विचारों के घेरे में घिरी वफ़ाई की खुल्ली आँखेँ कहीं दूर देख रही थी।
कल क्या होगा*?* कुछ होगा भी*?* नहीं होगा तो*?*
"जो भी होगा, देखा जाएगा। मैं इस स्थिति को भिन्न द्रष्टि से देखूँगी और कोई ना कोई कारण ढूंढ लूँगी, पूर्णिमा तक रुक जाने के लिए।" वफ़ाई ने स्वयं को वचन दिया।
वफ़ाई उठी, बाहर गगन में चाँदनी निखर उठी थी। कुछ क्षण चाँदनी को देखती रही।
"कई दिनों से स्नान नहीं किया है, चल आज स्नान करते हैं।"
वफ़ाई स्नान घर में गई, स्नान की तैयारी करने लगी। कक्ष में जाकर कपड़े उतारने लगी। एक के बाद एक सभी कपड़े उतार दिये। पूर्ण रूप से वफ़ाई अनावृत हो गई। दर्पण में स्वयं के अनावृत शरीर को वफ़ाई ने देखा। पूरे शरीर को ऊपर से नीचे तक देखा। एक एक अंग को देखा, अंग के प्रत्येक घुमाव को देखा। अपने शरीर को, शरीर के सौन्दर्य को और शरीर के लावण्य को वह देखती ही रह गई। स्वयं के प्रतिबिंब से वफ़ाई मोहित हो गई।
वफ़ाई ने दर्पण के सामने कई अंगड़ाइयाँ ली। अनेक कामुक मुद्राएं रचती रही, स्वयं को देखती रही। स्वयं के स्नेह में, मोह में प्रवाहित हो गई।
उतारकर कुर्सी पर रखे कपड़े में से एक कपड़ा नीचे गिर गया। वफ़ाई का ध्यान भंग हो गया।
"क्या घर में कोई है? कौन होगा?" वह दौड़ी और कपड़ा उठाकर अनावृत शरीर को ढंकने का व्यर्थ प्रयास करने लगी। वफ़ाई ध्यान पूर्वक सब तरफ देखने लगी। वहाँ कोई नहीं था।
"तो यह कपड़ा गिरा कैसे?" वफ़ाई चिंतित हो गई।
हवा का दूसरा तेज टुकड़ा खुली खिड़की से अंदर प्रवेश कर गया। वफ़ाई के अनावृत शरीर को छु गया। कुर्सी पर पड़े दूसरे कपड़े को गिराता चला गया।
"ओह, तो यह काम हवा का था? कितनी निर्लज्ज है यह हवा भी? किसी सुंदर यौवना को अकेली देखि नहीं कि बस चली आती है छेड़ने। और यदि वह यौवना मेरी भांति अनावृत हो तो? पूरे शरीर को छू जाती है। मेरे प्रत्येक अंग को छू गई यह हवा। तुम्हें लज्जा नहीं आती एक यौवना के नग्न शरीर को ऐसे स्पर्श करते हुए? इतनी निर्लज्ज कैसे हो गई तुम?" वफ़ाई ने झूठा रोष दिखाया।
वह स्नान घर में गई। द्वार विहीन स्नान घर में स्नान करके भीगे अनावृत शरीर के साथ ही घर में प्रवेश कर गई। फिर जा खड़ी हो गई दर्पण के सामने।
भीगा अनावृत शरीर वफ़ाई को और कामुक बना रहा था। वह स्वयं को देखकर स्वयं की तरफ आकृष्ट हो गई, उत्तेजित हो गई। वफ़ाई देर तक वैसे ही स्वयं को निहारती रही। धीरे धीरे शरीर पर ठहरी पानी की बुँदे सूखने लगी। दो तीन बूंदें छाती के मध्य में खुल्ली दो पहाड़ियों के बीच की घाटी में रुक गई थी। वह अभी भी सुखी नहीं थी। वफ़ाई दर्पण में उसे देखती रही, फिर अचानक उसने उन बूंदों पर उंगली से प्रहार किया। पानी की बूंदें बिखर कर दोनों पहाड़ियों पर फ़ेल गई। दोनों पहाड़ियों की काली चोटी भीग गई, उन्नत हो गई। एक प्रवाह सारे शरीर में प्रवाहित हो गया। वफ़ाई कंपित हो गई।
"ऐसे अनावृत होना और अनावृत ही रहना कितना मनभावन लगता है? कितना सहज है? हम क्यों कपड़े पहनकर आवृत हो जाते हैं? क्या हम नैसर्गिक नहीं रह सकते? कितना अनुपम सौन्दर्य होता है अनावृत तन का? आज तो मैं अनावृत ही रहूँगी।" वह अनावृत ही रही। घर से बाहर निकली और चाँदनी के नीचे खड़ी हो गई। अनावृत वफ़ाई अनावृत चाँदनी में नहाती रही, देर तक।
फिर घर में लौट गई, सो गई। गहरी नींद में सो गई, किसी चिंता से मुक्त। ना तो उसे कल की चिंता थी ना उसे अनावृत होने की। और ना ही उसे इस अवस्था में कोई देख लेगा उसकी चिंता थी। वह सोती रही, देर तक।

9

जब वफ़ाई जागी तब प्रभात हो चुका था, सूरज अभी अभी निकला था। धूप की बाल किरनें कक्ष में प्रवेश कर चुकी थी। प्रकाश मध्धम था। सूरज की किरणें दुर्बल सी थी। लगता था सूरज किसी के पीछे छुप गया था।

वफ़ाई खुश हुई, कूदकर उठ गई। उसके साथ दो पहाड़ियाँ भी कूद पड़ी, उछल पड़ी। वह भूल गई थी कि रातभर वह अनावृत होकर सोई थी। वफ़ाई ने दोनों हाथों से दोनों पहाड़ियों को पकड़ा, स्थिर किया। वह गवाक्ष के समीप गई और बाहर फैले गगन को देखने लगी।

तीन चार दिनों से जैसा साफ सूथरा गगन था वैसा नहीं था। उसमें कुछ दाग थे, जो वफ़ाई को पसंद आए। गगन रंग बदल चुका था। नीला गहरा गगन अनेक रंग धारण किए हुए था। श्वेत, पीला, नारंगी और लाल।

वफ़ाई घर से बाहर निकली और गगन को ध्यान से देखने लगी। वहाँ कई बादल थे। सूरज लाल था। गगन ने कई रंगो को समेटा था जैसे किसी चित्रकार ने तूलिका से रंग भर दिये हो, जैसे किसी ने रंगों का घड़ा गिरा दिया हो। श्वेत बादलों की किनार लाल रंग से तो कोने पीले रंग से भर गए थे। वह गगन सुंदर था, अदभूत था।

वफ़ाई के अंग अंग में, ह्रदय में, मन में, शरीर में और नसों में भी रंगों की नदी बहने लगी। वह कक्ष में लौटी और दर्पण के सामने जा खड़ी हुई। उसका पूरा अनावृत शरीर रंगीन हो गया था। वफ़ाई ने अपनी ही आँखों को दर्पण में देखा। वह थोड़ी नटखट हो गई थी, पूरे शरीर को कामना भरी द्रष्टि से देख रही थी।

“हे आँखें, तुम बहोत बोलती हो। क्या आशय है तुम्हारा इस तरह मुझे देखने का?” वफ़ाई ने अपनी ही आँखों को डांटा। वह स्मित कर बेठी।

“जानु से बात की जाय।” वफ़ाई को केमरा याद आया, “किन्तु उसके सामने ऐसे अनावृत नहीं दिखना है मुझे।” वफ़ाई ने झट से कपड़े पहन लिए।

केमरे को निकाला और गगन की तस्वीरें लेने के लिए दौड़ पड़ी।

“हे वफ़ाई, क्या कर रही हो? कहाँ जा रही हो? क्यूँ इतनी उतावली हो? क्यूँ इतनी उत्साहित हो? क्या हुआ कहो तो?” जानु ने प्रश्नों की झड़ी लगा दी किन्तु वफ़ाई उसे जवाब देने के बदले गगन की तस्वीरें खींचने के भाव में थी।

गगन के हर कोने की तस्वीरें ली वफ़ाई ने। अनेक तस्वीरें, रंगीन तस्वीरें।

अंतत: वह रुकी और जानु को चूमा। जानु प्रसन्न था। पहली बार इस मरुभूमि में उसने रंगों को देखा था, अपने अंदर उन रंगों को कैद किया था।

वफ़ाई ने गगन को छोड़ कर अन्य वस्तुओं पर ध्यान दिया। उसे अनुभव हुआ कि हवा में गति थी, मधुर सी पवन बह रही थी, रेत के कण स्थान बदल रहे थे, धरती सूरज की किरणों का एवं बादलों का सन्मान कर रही थी। पवन जीप को भी छु रही थी। जीप ने धूल और रेत के वस्त्र धरण किए थे। रेत के वस्त्रों मे सजी यौवना जैसी लग रही थी जीप।

वफ़ाई ने उस सुंदर यौवना की तस्वीरें खींची। जीप, रेत, धूल और पवन के टुकड़े। तस्वीरों को अनेक रंग मिल चुके थे।

मौन अभी भी व्याप्त था। जानु तथा वफ़ाई दोनों मरुभूमि के इस बदले रूप, जिसकी कोई अपेक्षा नहीं थी, से सम्मोहित थे।

उत्तर दिशा से सहसा पवन की तेज धार बहकर वफ़ाई की तरफ आने लगी। वफ़ाई को पहले तो यह अच्छा लगा, किन्तु वह पवन तूफ़ान में बदल गया। बचने के लिए वफ़ाई कक्ष में घुस गई, किन्तु तूफान कक्ष में भी प्रवेश कर गया। घर की दीवारों ने वफ़ाई को तूफ़ान में बह जाने से बचा लिया। कुछ ही क्षणों के तूफ़ान का प्रभाव सारे घर में बिखर कर रह गया।

सारा घर रेत और धूल से भर गया था। सब वस्तुएं जैसे रेत में स्नान कर के अभी अभी आई हो। वफ़ाई भी रेत से ढँक गई थी। केवल जानु ही रेत के स्नान से बचा हुआ था।

जानु ने वफ़ाई को छेड़ा, “तुम तो रेत सुंदरी लग रही हो, ओ पर्वत सुंदरी।”

वफ़ाई ने हास्य के साथ जवाब दिया, “हे य जानु, मैं अभी भी पर्वत सुंदरी ही हूँ।” वफ़ाई स्वयं को दर्पण में देखने लगी।

“रेत में स्नान करती पर्वत सुंदरी। तुम्हारे लिए यही नाम उचित रहेगा।” जानु ने सुझाया।

“पागल मत बनो। अपने आप को तैयार करो।”

“किसके लिए? क्या हम लौट रहे हैं?” मरुभूमि को छोडने की आश में जानु उत्साहित हो गया। किन्तु वफ़ाई की योजना अलग थी।

“नहीं। हम यहाँ से भाग नहीं रहे हैं किन्तु हम मरुभूमि में कहीं खो जाने को जा रहे हैं।”

“क्या अर्थ है वफ़ाई तुम्हारा?”

“पहले घर को साफ करते हैं। फिर मरुभूमि में जाते हैं।”

“किन्तु हमने तो निश्चय किया था कि हम मरुभूमि को आज छोड़ देंगे। तुम तो…।”

“हाँ, यह निर्णय हुआ था कि यदि कोई घटना नहीं घटी तो हम चले जाएंगे। किन्तु आज मरुभूमि पूर्ण रूप से बदल गई है।”

“तो क्या योजना है तुम्हारी?”

“हम इस मरुभूमि के भीतर, खूब भीतर तक जाएंगे और वहाँ जीवन को ढूँढेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि कहीं ना कहीं जीवन है इस मरुभूमि में। बस हमें उसे खोज निकालना है।” वफ़ाई ने केमरे को एक तरफ रखा, घर को साफ किया और गहन मरुभूमि कि लंबी यात्रा की तैयारी करने लगी।

एक घंटे पश्चात उत्तर दिशा में जीप जा रही थी जहां से वह तूफ़ान आया था। वह दो घंटे तक जीप चलाती रही किन्तु उसे ऐसे कोई भी संकेत नहीं मिले जिसकी उसे अपेक्षा थी। वह थक गई। जीप को एक तरफ रोक दिया। गहरी सांस लेने लगी।

वह फिर से निराश थी। वह स्थान भी बाकी सभी स्थानों से भिन्न नहीं था। उसे वह स्थान भी परिचित सा लगा।

वही एकांत से भरे मार्ग, वही रेत, वही धूल, कोई व्यक्ति नहीं, कोई पशु नहीं, कोई पंखी तक नहीं। उष्ण हवा और वही अनंत तक फैला मौन। इतने दिनों से मरुभूमि में रहकर वफ़ाई को उसकी आदत सी हो गई थी।

दोपहर हो गई थी, सूरज ठीक माथे पर ही था। किन्तु वह मध्धम सा था। तापमान भी सामान्य ही था। फिर भी वह थकान अनुभव कर रही थी। एक प्रकार की अरुचि हवा में थी।

वफ़ाई ने कुछ खाना खाया और जीप में ही विश्राम करने लगी।

जब वफ़ाई जागी तब संध्या गगन में प्रवेश कर चुकी थी। पश्चिम दिशा में किसी को मिलने को उतावला हुआ सूरज भी तीव्र गति से चल रहा था।

वफ़ाई ने आसपास का निरीक्षण किया और पूरा साहस जुटाया, आगे की यात्रा के लिए।

जैसी ही वफ़ाई ने जीप चालू की, जानु ने प्रश्न किए, “क्या कर रही हो? कहाँ जा रही हो?”

“हम और गहन मरुभूमि में जा रहे हैं। आज मैं किसी ना किसी को मिलना चाहती हूँ। मैं आज किसी को अवश्य खोज निकालुंगी और उसे मिलूँगी।”

“वफ़ाई, पागल मत बनो और अपने घर को लौट चलो।”

“अपना घर? जानु इस मरुभूमि में हमारा कोई घर नहीं है।”

“फिर भी हमें अंधकार से पहले उस घर को लौट जाना चाहिए।”

“मैं तब तक नहीं लौटुंगी जब तक मैं किसी व्यक्ति को अथवा कोई वस्तु को ढूंढ ना लूँ जो जीवन से भरे हो। हम इस मृत मरुभूमि में जीवन की खोज में हैं। यही एक मात्र लक्ष्य है अभी हमारा।”

"तुम वास्तव में पागल हो, वफ़ाई। यहाँ कोई नहीं रहता, किसी का भी यहाँ अस्तित्व नहीं है। तुम गहरे सागर में सुई ढूंढ रही हो। समय और शक्ति का व्यय मात्र।"
"हाँ, मैं गहन सागर में सुई ढूंढ रही हूँ, किन्तु यह तो तुम भी मानते हो की वहाँ सुई है। सुई का अस्तित्व है। यदि सुई वहाँ है तो उसे किसी भी गहनता से खोज निकालने का हमें साहस करना होगा।"
"ऐसा कोई अवसर नहीं मिलेगा तुम्हें, वफ़ाई।"
"एक बड़ी आशा है जिनके सहारे मैं आगे बढ़ूँगी। मुझे जाने दो और लक्ष्य को पाने दो।" जानु के प्रत्युत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही वफ़ाई ने जीप चला दी।
आधे घंटे से भी अधिक समय व्यतीत हो गया, कुछ भी नहीं बदला। वफ़ाई अविरत जीप चला रही थी, अपितु मरुभूमि में भटक रही थी। वफ़ाई अपने निश्चय में द्रढ थी, वह चलती रही।
जीप से बाहर पसार हो रहे विश्व को वफ़ाई देखती रही। जीवन विहीन वस्तुएं पीछे छुट रही थी। कोई आभास नहीं, कोई स्मित नहीं, कोई प्रतिभाव नहीं इन वस्तुओं से। सब निष्प्राण था, सुस्त था, निष्क्रिय था, स्थिर था। किन्तु इन सब का वफ़ाई पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह अपने मार्ग पर, अपने निश्चय पर अडग सी चलती रही।
समय के लंबे अंतराल के पश्चात वफ़ाई ने दूर किसी पंखी को उड़ते देखा। उसे विस्मय हुआ। उसे संशय हुआ कि वास्तव में वह पंखी ही था या उसके मन एवं आँखों का भ्रम था।
"वफ़ाई, क्या वह पंखी ही था? जब हम किसी व्यक्ति अथवा वस्तु की खोज में होते हैं तब हमें हर वस्तु में वही द्रष्टि गोचर होता है। क्या कोई भ्रमणा वहाँ उड रही थी? निश्चय ही वह मेरा भ्रम था।" वफ़ाई ने स्वयं से कहा।
वफ़ाई ने आँखों को मला, एक बार, दो बार, तीन बार, चार बार। पलकों को झपकाया फिर जीप रोक दी। वह बाहर आई, पानी से मुख धोया और स्वस्थ हो गई। दूरबीन निकाला और दूर उड़ते पंखी को देखने लगी। दूरबीन के लेंस को आगे पीछे किया, झूम किया। वफ़ाई को वह पंखी स्पष्ट दिख रहा था। वह नीले और काले रंग का पंखी था जो जमीन से अस्सी-
सौ फिट ऊपर उड़ रहा था। वह धीरे धीरे, अपनी पंखों को पूरा खोलकर, सरलता से उड़ रहा था। नीला गगन गहरे सागर जैसा लग रहा था और उड़ता नीला पंखी सागर की लहर जैसा। वह सहज ही उड़ रहा था, जैसे मधुर संगीत की सुरावली बह रही हो। पंखी के उड़ने ओर गति करने से वफ़ाई पूर्णत: सम्मोहित थी। वह मूक हो गई, बस देखती ही रही।
वफ़ाई ने फिर से पंखी पर ध्यान लगाया। कुछ और पंखी उसे दिखाई दिये। वह प्रसन्न हो गई। एक पंखी उसके ह्रदय में, उसकी रक्त वाहिनियों में प्रवेश कर गया जो धीरे धीरे गति करता हुआ सारे शरीर में प्रसर गया। रक्त सागर की भांति उछलने लगा। यह सब वफ़ाई को भाने लगा।
वफ़ाई के अंदर के पंखी ने पंख फैलाये, वफ़ाई ने अपने हाथ। पंखी उड़ने को तैयार था, ऊपर, ऊपर और अधिक ऊपर, वफ़ाई भी।
"जानु, देखो वहाँ पंखी उड़ रहे हैं। अनेक पंखी हैं।"
"तो क्या हुआ?" जानु ने रूची नहीं दिखाई।
"जहां पंखी होते हैं वहाँ जीवन अवश्य ही होता है। मैं विश्वास करती हूँ कि वहाँ कोई अवश्य होगा।
"वफ़ाई, क्या आशय है तुम्हारा? मैं तो...।"
"बस मेरे साथ चलते रहो।" वफ़ाई जीप के अंदर कूद पड़ी और उड़ते पंखीयों की दिशा में जीप चलाने लगी।

10

कुछ ही क्षणों में वफ़ाई उस स्थान पर पहुँच गई। जीप को एक कोने में छोडकर वह पंखी की दिशा में चलने लगी। बारह से पन्द्रह पंखी थे वहाँ। वफ़ाई के पदध्वनि से वह सावध हो गए। दूर उड़ गए। वफ़ाई उसके पीछे चलने लगी, चलते चलते एक स्थान पर रुक गई।
वहाँ रेत का बड़ा ढग था, जो पंद्रह बीस फिट ऊंचा और तीस चालीस फिट चौड़ा था। पंखी उस ढग के ऊपर से उड़ गए, विलीन हो गए। वफ़ाई ने उस ढग के पार भी उनका पीछा करना चाहा किन्तु नहीं कर पाई। रेत को पार करने की उसे आदत नहीं थी।
"हिम से भरे पहाड़ तो चड जाती किन्तु यह रेत का पहाड़?" उसने विचार छोड़ दिया। वह निराश हुई। जीप की तरफ लौटने लगी। तभी उसके कानों में कुछ ध्वनि पड़ा। वफ़ाई ने मुड़कर देखा। वह पंखीयों की ध्वनि थी। जैसे वह कुछ कहना चाहते थे। वफ़ाई को कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। वफ़ाई ने पुन: प्रयास किया किन्तु विफल रही।
उस ने नि:श्वास भरा, "पंखी की भाषा मुझे सीख लेनी थी। यह कुछ कहना चाहते हैं किन्तु...।"

पंखी अविरत रूप से संकेत दे रहे थे किन्तु व्यर्थ। वफ़ाई वहीं कुछ क्षण मूर्ति की भांति खड़ी रही।
एक बड़ा पंखी वफ़ाई की तरफ आया और उसे मार्गदर्शित करने लगा। वफ़ाई ने उसे समझने का प्रयास किया। अंतत: वह समझ गई की पंखी उसे कहीं ले जाना चाहता है। वह पंखी के पीछे रेत के ढग पर चड गई। प्रत्येक चरण पर वफ़ाई फिसल रही थी किन्तु साहस करके उस ढग को पार कर दिया।
वफ़ाई ने देखा कि कुछ दूरी पर एक छोटा सा भवन था। वफ़ाई ने अनुमान लगाया- वह एक मंज़िले भवन में दो या तीन कक्ष होंगे। ऊपर छत थी। भवन के आसपास और कुछ नहीं था। मिलों तक कुछ भी नहीं था, सिवा एकांत के।
वफ़ाई भवन के समीप गई, उसने भवन और गगन की कुछ तस्वीरें ली। गगन रंगों से भरा था। सूरज बड़ा और लाल था। वह अस्त होने को चल पड़ा था। गगन में अनेक बादल थे जो चित्र विचित्र आकृतियों का सर्जन कर रहे थे। एक बादल बड़े से वृक्ष जैसा लग रहा था जिसकी अनेक बड़ी बड़ी शाखाएँ थी। दूसरा बादल बड़े पर्वत जैसा था। काला पहाड़ और उस पर श्वेत हिम। वफ़ाई को अपना नगर का स्मरण हो आया।
एक बादल जल प्रपात के आकार सा था जिसमें खूब ऊंचाई से पानी गिर रहा हो। एक और बादल भी था जिसका आकार साडी में लिपटी सुंदर स्त्री जैसा था। बादल का रंग आधा नारंगी और आधा फिकका सा श्वेत था। नारंगी साड़ी में किसी नारी हो जैसे। स्त्री का शरीर तीव्र घुमावदार था।
मरुभूमि के गगन में बादलों के ऐसे आकार देखकर वफ़ाई को विस्मय हुआ, “कल रात्रि तक गगन कितना शुष्क था और अब यह रंगीन है, सुंदर है। अनेक आकार धारण किए है। जैसे किसी खाली घर को मनुष्य ने हृदय की ऊष्मा से भर दिया हो।”
वफ़ाई ने सब कुछ केमरे में कैद कर लिया। तस्वीर खींचते समय वफ़ाई को घर की छत पर कुछ गतिमान होता दिखाई दिया। कोई वहाँ था जो गति में था।
“कोई वहाँ है।” खुशी से वफ़ाई ने कहा। वह नाचने लगी, स्मित करने लगी। वह भवन की तरफ बढ़ी। कोई छत पर अभी भी घूम रहा था।
“कौन हो तुम? मैं तुम से मिलने को अधीर हूँ।”
वफ़ाई ने चलने की गति तेज कर दी। वह शीघ्रता से वहाँ पहुँचना चाहती थी।
वफ़ाई सीधी छत पर चढ़ गई। वह निराश हुई। छत खाली थी। कोई नहीं था वहाँ। वह गति हिन, जीवन हिन लग रही थी।
“अभी तो कोई था यहाँ, कुछ क्षण पहले। मैंने देखा था इन्हीं आँखों से। क्या वह सत्य नहीं था? क्या वह भ्रम था? क्या वह मेरी कल्पना थी? मैं इस मरुभूमि में किसी को, कोई जीवन को, कोई घटना को, कोई गति को खोज रही हूँ। क्या यही कारण है कि मुझे प्रत्येक वस्तु में वह दिखाई दे रहा है, जो वास्तव में नहीं है?” वफ़ाई व्याकुल हो गई।
वफ़ाई को लगा कि उसका सब कुछ लूट गया हो। कुछ भी बचा नहीं। उसने नि:श्वास भरा, आँखें बंध की और छत की दीवार पर बैठ गई।
चलती हवा कुछ ध्वनि सुना रही थी। पवन के इस संगीत ने उसे आराम दिया। कई क्षण तक वह आँखें बंध कर वहीं बैठी रही। इस मुद्रा में वह किसी संत जैसी लग रही थी जो गहन समाधि में हो। पवन वफ़ाई की समाधि में बाधा डालने की चेष्टा करता हुआ बहता रहा।
अचानक हुए किसी ध्वनि ने वफ़ाई की समाधि तोड़ी। वह ध्वनि भवन के नीचे वाले दायें भाग से आई थी। ध्वनि बड़ी थी, जैसे कोई भारी वस्तु ऊंचाई से धरती पर गिरि हो। वह ध्वनि की दिशा में दौड़ी।

छत के कोने से वफ़ाई ने देखा कि एक युवक धरती की तरफ झुक कर कुछ कर रहा था। धरती पर गिरे हुए रंग इधर उधर बिखरे हुए थे। भूमि पर पानी भी फैला हुआ था। वह युवक उस सब को समेटने का प्रयास कर रहा था।

वफ़ाई व हाँ की प्रत्येक वस्तु को देखने लगी। एक चित्राधार, जो कि रंगो के समीप ही गिरा था, उस पर एक बड़ा सा केनवास जिसमें बादल और गगन का ताजा रचा चित्र था।
वफ़ाई चित्र को ध्यान से देखने लगी। उसमें गगन था, बादल था। बादल का आकार साड़ी में सजी सुंदर यौवना सा था। गगन गहरे नीले रंग का था, बादल नारंगी था। ऐसा लग रहा था कि यौवना ने नारंगी साड़ी पहनी हो। यौवना का शरीर घुमावदार था। प्रत्येक घुमाव, पहाडी घाटी की भांति तीक्ष्ण थे।
"यह द्रश्य तो कहीं देखा था मैंने, किन्तु कहाँ?" वफ़ाई विचारने लगी।
"अरे हाँ, यह दृश्य तो कुछ क्ष ण पूर्व गगन में बादलों के आकार में देखा था। हाँ, यह गगन में ही था।" वफ़ाई ने गगन की तरफ देखा। उसे विस्मय हुआ कि गगन में बादल की वही मुद्रा अभी भी दिखाई दे रही थी। वह बिलकुल वैसी ही थी जैसी केनवास पर चित्रित की गई थी। केवल एक ही अंतर था, केनवास पर यौवना का चित्र बिखरे रंगों के कारण बिगड़ गया था। रंग अस्त व्यस्त से बिखरे हुए थे किन्तु वह यौवना की साड़ी के रंगो को और निखार रहे थे। रंगों के धब्बे सुंदर लग रहे थे। पूरा चित्र अदभूत लग रहा था। वफ़ाई उस चित्र के विस्मय और सम्मोहन से घिर गई।
'गगन में देखे किसी द्रश्य को कोई व्यक्ति कैसे चित्रित कर सकता है? बादल अपने आकार को गति से और अविरत रूप से बदलता रहता है। परिवर्तन की इस गति के साथ ताल मिलाकर केनवास पर वही द्रश्य अंकित करना कठिन होता है, असंभव सा लगता है। किन्तु, यह बात मेरी आँखों के सामने वास्तविक रूप से दिख रही है।' वफाई पूर्ण रूप से उस चित्र से प्रभावित थी। मन ही मन वफ़ाई ने उस चित्रकार की प्रशंसा की।
"लगता है कि केनवास पर का चित्र इसी युवक ने बनाया होगा। किसी कारण से चित्राधार गिर गई होगी और सारा सामान धरती पर बिखरा होगा।"
युवक अभी भी गिरि हुई वस्तुओं को समेटने में व्यस्त था। वफ़ाई के फोटोग्राफर मन ने खेल रचाया।
'यदि मैं इस घटना को केमरे में कैद कर लेती हूँ, बॉस को भेजती हूँ, बॉस उसे प्रसिध्ध करता है, तो यह उत्तम कला के रूप में माना जाएगा और कला जगत में मेरा नाम हो जाएगा।" वह मन ही मन हंसी।
चुपचाप, युवक का ध्यान भंग किए बिना ही, वफ़ाई उस घटना की तस्वीरें लेने लगी। चित्राधार, चित्रित केनवास, चित्र, बिखरे रंग, रंग और अन्य वस्तुओं को समेटता युवक। वफ़ाई इन सब की तस्वीरें लेने लगी। वह पूरी तरह केमरे में खो गई। तस्वीर लेते लेते वफ़ाई छत पर घूमने लगी। घूमते घूमते वफ़ाई का हाथ एक दीवार पर पड़े बड़े से पथ्थर को धक्का दे गया। पत्थर धरती पर जा गिरा। बड़ा सा ध्वनि हुआ। युवक का ध्यान भंग हुआ और उसने ऊपर छत की तरफ देखा।
उसे वहाँ एक सुंदर युवती, हाथ में केमरा लिए खड़ी दिखाई दी। भय, विस्मय और आश्चर्य की रेखाएँ उसके मुख पर आ गई।
"एकांत से भरे इस भू भाग के इस घर तक एक युवति कैसे आ गई? और बिना मेरे संज्ञान के छत पर भी चढ़ गई?" वह युवक बड़बड़ाया।
वफ़ाई ने भी युवक को देखा। वफ़ाई की आँखों में भी भय था। दोनों मौन थे, दोनों में से किसी में बोलने का साहस ना था। उस समय, उन क्षणों पर मौन और भय का साम्राज्य था। समय के कुछ प्रवाह व्यतीत हो गए। ना कोई हिला, ना कोई कुछ बोला। एक अज्ञात भाव से दोनों एक दूसरे को देखते रहे। जैसे समय स्थिर हो गया हो।
युवक क्रोधित था। वफ़ाई लज्जित एवं भयभीत थी। वफ़ाई युवक के घर में चोरों की भांति घुस गई थी और रंगे हाथ पकड़े गई थी। उसके मन में अपराध भाव जन्मा। वह उस युवक की अपराधी थी अत: वह युवक के प्रतिभाव की प्रतीक्षा करने लगी, स्थिर सी। युवक अभी भी विस्मय में था कि यह युवति यहाँ तक आ कैसे गई? और इतनी सुंदर? वह वफ़ाई के सौन्दर्य से भरे तथा लावण्यमय मुख के प्रभाव से ग्रस्त हो गया।
अंतत: रोष से भरा वह युवक छत पर चढ़ने लगा। वफ़ाई कुछ चरण पीछे हटी, और छत की सामने वाली दीवार तक गई। वह अब आगे जा नहीं सकती थी। वह वहाँ से भाग जाना चाहती थी, कहीं दूर किसी स्थान पर दौड़ जाना चाहती थी जहां वह युवक पहुँच ही न सके।
ऐसा कोई स्थान नहीं था। वह उस दीवार को पकड़े आँखें बांध कर स्थिर सी खड़ी रही।
वह वफ़ाई के समीप आ गया। वफ़ाई ने गहरी सांस ली। उसका हृदय अधिक गतिमय था।
कुछ क्षण व्यतीत हो गए। कुछ नहीं हुआ। वफ़ाई ने आँखें खोल दी। वह उसके ठीक सामने था, समीप था, अत्यंत समीप। वफ़ाई दो तीन सांसें लेना चूक गई।
वह आगे बढ़ा, वफ़ाई के हाथ से केमरा खींच लिया और नीचे की तरफ भागा। वफ़ाई उन क्षणों के प्रभाव से बाहर आई, साहस जुटाया और युवक के पीछे भागी। वफ़ाई ने देखा कि वह एक कक्ष में ओझल हो गया था, वह उसके पीछे कक्ष में गई।
युवक ने केमरा खोला, मेमरी कार्ड निकाला और वफ़ाई ने जितनी भी तस्वीरें ली थी उसे अपने लेपटॉप में डाल दिया। मेमरी कार्ड कंगाल हो गया, वफ़ाई भी। लेपटोप समृध्ध हो गया उन तसवीरों से।
"ओ श्रीमान, आप ऐसा नहीं कर सकते।" वफ़ाई चीखी। उसने वफ़ाई के शब्दों पर ध्यान नहीं दिया।
उसने अपना काम पूरा किया और बिना वफ़ाई की आँखों में देखे, खाली कार्ड और केमरा सौंपने के लिए वफ़ाई की तरफ हाथ बढ़ा दिया। वफ़ाई ने उस पर ध्यान नहीं दिया, ना ही कोई प्रतिभाव दिया।

वफ़ाई क्रोधित थी, वह युवक भी। बिना प्रतिभाव के खड़ी वफ़ाई के कारण उसका क्रोध और बढ़ गया। वह वफ़ाई के समीप गया। उसने वफ़ाई की आँखों में आँखें डालकर देखा। उसे वफ़ाई की आँखों में क्रोध से भरा ज्वालामुखी दिखाई दिया। उसक हाथ अभी भी वफ़ाई की तरफ था, केमरा लौटाने के लिए। किन्तु वफ़ाई अभी भी प्रतिक्रिया नहीं दे रही थी, मूर्ति की भांति स्थिर खड़ी थी।
“एय युवति, अपना केमरा ले लो।” उसने आदेश दिया।
“वफ़ाई नाम है मेरा, श्रीमान....।” अपने मुख के भावों को बदले बिना ही वफ़ाई ने अपना परिचय दिया।

12

“और मैं जीत।” युवक ने अपना नाम बताया और फिर आदेश दिया, “वफ़ाई, अपना केमेरा ले लो अन्यथा मैं....।” वह आसपास कुछ खोजने लगा।
“श्रीमान जीत, मुझे मेरी सभी तस्वीरें भी चाहिए, तभी मैं मेरा केमेरा लूँगी।”
वफ़ाई ने जीत की आँखों में देखा, जीत ने भी वफ़ाई की आँखों में देखा। चारों आँखें क्रोधित थी।
“तुम्हें अपना केमेरा वापिस चाहिए अथवा मैं उसे भी रख लूँ?” जीत ने पूछा।
“श्रीमान जीत, तुम्हें यह ज्ञात होना चाहिए कि तसवीरों के बिना केमेरा मृत होता है। केमेरे में कोई जीवन नहीं होता। खींची हुई तस्वीरें उसे जीवंत करती हैं। मेरी खींची तस्वीरें इस केमरे की आत्मा है। तुमने उस आत्मा का वध किया है। अत: यह केमेरा एक शव के सिवा कुछ भी नहीं। तुमने इस केमेरा का वध किया है। तुम अपराधी हो, पापी हो, हत्यारे हो।” वफ़ाई अपने नियंत्रण से बाहर थी।
“अपने शब्दों को सीमा में रखो, वफ़ाई। स्मरण रहे कि आप मेरे साम्राज्य में है।” जीत ने कहा।
जीत के शब्दों ने आग में घी डाल दिया। वफ़ाई ने निश्चय कर लिया कि वह हार नहीं मानेगी और लड़ती रहेगी, “श्रीमान जीत, मुझे भयभीत करने का प्रयास ना करें। मैं...।”
“वफ़ाई, तुमने अपराध किया है और उसके लिए तुम्हें दंडित किया गया है। इस बात को स्वीकार लो।”
“क्या? अपराध तो तुमने किया है अभी अभी। जरा बताओ तो कौन साअपराध किया है मैंने?”
“अनेक हैं। प्रथम, चोरों की भांति तुम बिना मेरी अनुमति के मेरे घर में घुस गई हो। दूसरा, सीधे छत पर चली गई हो। तीसरा, तुमने मेरी तस्वीरें ली है। चौथा, तुम...।” जीत वफ़ाई के अपराध गिना रहा था, किन्तु वफ़ाई ने उसे रोका।
“ठीक है। मैं अपने सभी अपराध का स्वीकार करती हूँ। इसके लिए तुम जो चाहो वह दंड दो मुझे किन्तु मुझे मेरी सभी तस्वीरें चाहिए। वह सभी मुझे लौटा दो। मैं यहाँ से चली जाऊँगी, सदा के लिए।”
जीत मौन रहा, वफ़ाई को देखता रहा। वफ़ाई जीत के मुख के भाव पढ़ ना सकी। उसका मौन वफ़ाई के क्रोध को गति दे रहा था। उसके क्रोध का अग्नि ज्वाला बनकर फैलने ही वाला था कि अचानक वफ़ाई ने उसे नियंत्रित कर लिया।
मन ही मन विचार किया- ‘मैं यहाँ किसी अभियान पर हूँ। मुझे जीत के साथ लड़ाई नहीं करनी चाहिए किन्तु उसे युक्ति पूर्वक संभाल लेना चाहिए और उचित समय की प्रतीक्षा करनी चाहिए। लड़ाई से यह समस्या का समाधान नहीं होने वाला।’
वफ़ाई ने स्वयं को शांत किया।
‘मुझे कोई युक्ति करनी होगी, जीत को भी शांत करना होगा, उसे पिघलाना होगा। तभी काम बन पाएगा। किन्तु जीत पिघलेगा कैसे? क्या वह हिम है? यदि वह हिम होता तो मैं उसे गर्मी से पिघला देती। किन्तु यहाँ तो गर्मी ने ही सब खेल ....।’
‘वफ़ाई, यहाँ गर्मी से नहीं किन्तु स्नेह की ऊष्मा से काम होगा। अधिक तापमान हिम को बाष्प बना देता है। तुम्हें पिघले हुए हिम की आवश्यकता है, बाष्प की नहीं। यदि तुम किसी पुरुष को मारना चाहती हो तो उसे क्रोध से नहीं मार सकती, उसे अपने बल से परास्त नहीं कर सकती। अपने स्मित का प्रयोग करना होगा तुम्हें, वफ़ाई। स्मित अधिक विध्वंशक होता है। वह अचूक काम करता है।’
‘ओह... मैं सब समझ गई।’
वफ़ाई ने जीत को भाव से भरा स्मित दिया, जीत से केमेरा लिया और उसे अपने गले में डाल दिया।
“जीत, मैं लज्जित हूँ। मुझे ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए था। मुझे क्षमा कर दो। क्या हम मित्र बन सकते हैं?” वफ़ाई ने जीत की तरफ मैत्री का हाथ बढ़ा दिया। जीत ने उपेक्षा से भरा स्मित किया।
‘हिम पिघल रहा है, और यही समय है उस हिम पर प्रहार करने का। मुझे कुछ करना चाहिए।’
वफ़ाई ने पुन: स्मित दिया और धरती पर गिरि वस्तुएं उठाने लगी। जीत कोने में खड़े खड़े वफ़ाई को देखता रहा।
वफ़ाई बिना जीत की सहायता के सफाई करने लगी। जीत ने वफ़ाई को रोका नहीं।
दोनों मौन थे। दोनों एक दूसरे के भावों को समेट रहे थे।
जीत झूले के पास खड़ा हो गया और त्वरा से बदलते परिवेश को देखने लगा। वह वफ़ाई की प्रत्येक गतिविधि को ध्यान से देख रहा था। वफ़ाई, प्रत्येक वस्तु को उठाती थी और उसे योग्य स्थान ढूंढ कर वहाँ रख देती थी। वह इस छोटे से क्षेत्र में इधर उधर घूम रही थी, स्थिति को संभालने में लगी थी।
सत्रह मिनट के पश्चात धरती साफ और स्वच्छ थी। केनवास चित्राधार पर अपने उचित स्थान पर था, रंगो की टिकिया अपनी अपनी

कटोरी में थी। तूलिकायेँ भी अपने स्थान पर सुंदर रूप से सजा कर रखी थी। रंग, रंग की कटोरी, रंगों की टिकियाँ, पानी की कटोरी, सब सुंदर रूप से सजा दिया था वफ़ाई ने।
बाकी सब वस्तुओं को भी वफ़ाई ने ढंग से सजा दिया था अत: वह मैदान सम्पूर्ण रूप से बदल गया था। किसी भी स्त्री का इस धरातल पर प्रथम स्पर्श था, जीत के मन में भी। वह स्पर्श धरती के प्रत्येक कोने में, प्रत्येक कण में अभिव्यक्त हो रहा था, जीत की साँसों में भी।
धरती पर सूखा घास था, निर्जीव सा। पवन की लहर आई और उस घास को छु गई। घास आंदोलित हुआ, नाचने लगा। सूखा घास तरंगित हो गया।
'ऐसा लंबे अंतराल के बाद हुआ है। क्या यह वफ़ाई के कारण हुआ है? क्या ऐसा उसके आने से हुआ है? अथवा क्या यह केवल एक भ्रम है?' जीत निष्कर्ष पर नहीं आ पाया।
वफ़ाई ने काम पूरा किया और झूले पर जा बैठी, "जीत, थोड़ा पानी मिलेगा?" उस के अधरों पर स्मित था।
जीत कक्ष में गया। वफ़ाई पानी की प्रतीक्षा करती रही किन्तु जीत लंबे समय तक पानी लेकर नहीं लौटा। वफ़ाई कुतूहलवश जीत के पीछे कक्ष में गई।
जीत स्टील के पात्र को साफ कर रहा था जो लंबे समय से मलिन पड़ा था।
"तुम उसे छोड़ दो, मैं करती हूँ।" वफ़ाई ने जीत से पात्र लिया। वफ़ाई के शब्दों से जीत चौंक गया। पीछे हट गया।
वफ़ाई ने पात्र को साफ किया और मिट्टी के घड़े में से पानी भर लिया। पानी शीतल था।
'इतना शीतल पानी इस मरुभूमि में? यह तो विस्मय है। पानी अत्यंत शीतल है। जीत यही पानी पिता होगा क्या?'
पानी का पात्र लेकर वफ़ाई कक्ष से बाहर आई, झूले पर बैठ गई और धीरे धीरे झूलने लगी। जीत भी बाहर आ गया और झूले से कुछ अंतरपर खड़ा हो गया।
एक तरंग हवा में व्याप्त हो गई, जीत को छु गई। उस मधुर और ठंडी हवा से जीत को लगा कि वह मरुभूमि से कहीं दूर किसी हिम से घिरे पहाड़ पर है।
वफ़ाई झूले पर धीरे धीरे और लयबध्ध रूप से झूल रही थी। पैरों से झूले को गति में रख रही थी, एक हाथ झूले की शलाका पर था तो दूसरे हाथ में पानी का पात्र। वफ़ाई ने अभी भी पानी का एक भी घूंट नहीं पिया था। वफ़ाई मैदान को देख रही थी, जीत की वहाँ उपस्थिती को भूल कर।
किन्तु, जीत वफ़ाई नाम की इस यौवना के सान्निध्य को अनुभव कर रहा था। उसकी हवा भिन्न थी, उसकी सांसें भी भिन्न थी। वह वफ़ाई की उपस्थिती की उपेक्षा नहीं कर सका। वफ़ाई के होने की सुगंध जीत के मन एवं ह्रदय पर मीठा प्रहार कर रही थी।
वफ़ाई प्रत्येक वस्तु को देखती रही, सब अपने स्थान पर थी। स्वयं से वह संतुष्ट हो गई। उसने जीत को देखा और उसे स्मित दिया। जीत नाम का हिम पिघल रहा था। वफ़ाई ने पानी पी लिया।
"श्रीमान जीत, क्या हम बात कर सकते हैं?" वफ़ाई ने पहल की।
"तुम क्यूँ बात करना चाहती हो?" जीत ने उपेक्षा से पूछा।
"मैं इस मरुभूमि में पाँच दिवस से हूँ और मैंने किसी को नहीं देखा, ना किसी को मिली और ना ही किसी से मैंने बात की है इन पाँच दिनों में। मैं किसी से बात करने के लिए उत्साहित हूँ। यदि तुम...।"
"केवल पाँच दिवस? तो क्या? मैंने तो पाँच महीनों से किसी से बात नहीं की।"
"पाँच महीने? जीत, यह तो बड़ी ही विचित्र बात है।" वफ़ाई विस्मय से जीत को देखने लगी।
जीत ने अर्ध मन से स्मित दिया। उसे वफ़ाई का यहाँ होना, वफ़ाई का बोलना और बातें करना भाने लगा था। वह भी वफ़ाई से बातें करना चाहता था किन्तु साहस नहीं कर पाया। वह मौन रहा, शांत रहा।
"जीत, मेरा मानना है कि हमें एक दूसरे से बातें करनी चाहिए।"
"ठीक है, किन्तु क्या बात ...?" जीत पिघल रहा था।
"चलो, एक दूसरे को जानने का प्रयास करते हैं।"
"मैं तुम्हें जानता हूँ। तुम एक चोर हो...।" जीत ने स्मित किया। वह पिघल चुका था।
"हाँ, चोर तो हूँ मैं। चोर नहीं, चोरनी कहते हैं इसे। किन्तु मैंने अभी तक कुछ भी नहीं चुराया है तुम्हारा।"
वफ़ाई की बात सुनकर जीत मन ही मन बोला,'तुम ने कुछ चुराया तो नहीं पर मेरा कुछ खोया जा रहा है।'
"जीत, मुझे खेद है। मैं मेरा अपराध....।" वफ़ाई गंभीर हो गई।
"नहीं, नहीं। मैं तो बस यूं ही... चलो छोड़ो।"
"धन्यवाद, जीत। क्या तुम अपना परिचय दे सकते हो?" वफ़ाई झूले को छोड़ कर जीत के समीप आ गई।
वफ़ाई की निकटता से जीत सम्मोहित हो गया।
"तो पहले तुम बताओ।" जीत ने वफ़ाई का आव्हान किया।
वफ़ाई हंस पड़ी, जीत भी। दोनों के स्मित ने दोनों के बीच के तनाव को हटा दिया।

वफ़ाई ने अपने बारे में सब कुछ बता दिया, नाम, स्थान, व्यवसाय, मरुभूमि में आने का कारण भी। वफ़ाई ने इन पाँच दिनों में मरुभूमि में उसके साथ जो जो हुआ वह भी बता दिया।
जीत उसे पूरे भाव से, धैर्य से, शांति से सुनता रहा। मन ही मन विचारता रहा, 'युवतियां इतना अधिक बोलती क्यूँ है? जरा सा पुछो और पूरी कथा सुना देती है। अपने अंदर का सब कुछ कह देती है, खाली हो जाती है। किन्तु जब वह बोलती है तो कितना मनभावन लगता है। यह इसी तरह बोलती रहे और मैं जीवनभर सुनता ही रहूँ। जीवनभर?'
जीत 'जीवनभर' शब्द पर आकर अटक गया, क्षुब्ध हो गया। विचारों में खो गया।
"श्रीमान, अब आपकी बारी है। कहो चलो अपने बारे में।" वफ़ाई ने जीत को विचारों से जगाया।
जीत अपना परिचय दे उससे पहले एक पंछी आ गया और केनवास पर के चित्र पर अपनी चोंच मारने लगा। वफ़ाई दौड़ी और उसे भगा दिया। वह कहीं उड़ गया।
वफ़ाई ने चित्र को देखा। वही चित्र जिसमें साड़ी पहने स्त्री के आकार में बादल था, गगन था, सूरज था।
वफ़ाई ने गगन की तरफ देखा। स्त्री के आकार वाला बादल बिखर रहा था और त्वरा से अपना आकार बदल रहा था। गगन के बादल और केनवास पर चित्रित बादल के आकर भिन्न भिन्न हो गए थे जो कुछ क्षण पहले तक एक से थे।
वफ़ाई ने जीत की तरफ उत्साह एवं आशा से देखा।
जीत ने भी चित्र को और गगन को देखा। उसने वफ़ाई की आँखों के शब्दों को पढ़ लिया। वह तूलिकाओं के पास गया, एक तूलिका उठाई और कुछ रंग भर दिये उस केनवास के चित्र पर। क्षण में ही चित्र बदल गया। पुन: गगन के बादल का आकार और केनवास का चित्र समान हो गया। एक समय पर दो गगन वहाँ थे, एक केनवास पर तो दूसरा मुक्त एवं वास्तविक गगन। वफ़ाई को आनंदाश्चर्य हुआ। उसने केमरा खोला और अनेक तस्वीरें ली। जीत ने वफ़ाई को मंद क्रोध से देखा। जीत के अंदर पुन: कोई हिम जम गया। वफ़ाई ने उसे भांप लिया किन्तु स्मित से टाल दिया।

"दिखाओ तुमने कैसी तस्वीरें ली है।" जीत वफ़ाई की तरफ मुडा। वफ़ाई ने केमरा खोल दिया। तस्वीरें दिखने लगी- जीत, चित्राधार, उस पर केनवास, केनवास पर चित्र, चित्र में बादल, गगन के रंग, दूर क्षितिज में सूरज।
चित्राधार के पीछे वास्तविक गगन एवं तस्वीर का गगन एक समान थे। यह बात अदभूत थी।
तस्वीरें जीत को पसंद तो आई किन्तु वह प्रसन्न नहीं था। उसने फिर से वफ़ाई से केमरा खींचा और सारी तस्वीरें केमरे से हटा कर लेपटोप में डाल दी। वफ़ाई ने ना तो विरोध किया ना विद्रोह। वह बस देखती रही। उसने मन में कुछ योजना बना ली।
जीत लौटा और खाली केमेरा वफ़ाई को दे दिया। वफ़ाई ने चुपचाप उसे ले लिया। वह कुछ क्षण मौन रही।
"जीत, मुझे मेरी सभी तस्वीरें लौटा दो। तुम चाहो तो वह सभी लेपटोप में भी रख सकते हो। पर मुझे वह सब दे दो।" वफ़ाई ने मौन से विद्रोह कर दिया।
'दो वीरोधी विचारों से संघर्ष करना पड़ रहा है मुझे। यह कैसी विडम्बना है कि एक तरफ तो वफ़ाई पर क्रोध आ रहा है कि इस ने

मेरी अनुमति के बिना तस्वीरें ले ली और दूसरी तरफ मुझे यही यौवना, वफ़ाई, की उपस्थिती पसंद भी आ रही है। क्यों मुझे वफ़ाई के सान्निध्य की झंखना है? मेरे क्रोध और मेरे ह्रदय के बीच यह कैसा यूध्ध चल रहा है?'

जीत मन में हो रहे यूध्ध को शांत मन से देख रहा था। समय रहते वह यूध्ध समाप्त हो गया। ह्रदय विजयी हो गया। वफ़ाई का सान्निध्य बना रहे ऐसी वह योजना बनाने लगा।

जीत ने पूछा, "क्या तुम्हें वास्तव में तुम्हारी तस्वीरें वापिस चाहिए?"

"कोई संदेह है क्या?"

"किन्तु मैं उसे कभी भी नहीं लौटाऊंगा।"

"यह बात अनुचित है। वह मेरी संपत्ति है।"

"तुमने जिस स्थान की तस्वीरें ली है वह स्थान मेरा है। और इस की सभी तस्वीरें तुमने बिना मेरी अनुमति के खींची है।"

"तो क्या हुआ? मैंने कभी किसी की अनुमती नहीं ली। पहाड़, गगन, बादल, रेत, मरुभूमि....।"

"किन्तु मेरी तसवीरों के लिए, मेरे साम्राज्य की तसवीरों के लिए तुम्हें मेरी अनुमति लेनी आवश्यक है। यह मेरा साम्राज्य है और मैं यहाँ का राजा हूँ।"

"तुम और राजा? मैं नहीं मानती। तुम केवल एक साधारण मनुष्य ही हो। समझे श्रीमान जीत?"

"वह तुम्हारी समस्या है। मैं तुम्हें अनुमति नहीं देता कि तुम....।"

दोनों ने खूब दलीलें की किन्तु जीत उन तस्वीरों को लौटाने को सहमत नहीं हुआ।

अंत में वफ़ाई निराश एवं क्रोधित हो गई, "तो यह तुम्हारा अंतिम निर्णय है कि तुम मुझे मेरी तस्वीरें नहीं लौटाओगे?"

"बात स्पष्ट है।" जीत ने कहा।

"ठीक है, तुम्हारे साथ मुझे समय व्यर्थ नष्ट नहीं करना चाहिए, मैं चली जाती हूँ।" वफ़ाई जाने लगी।

"वफ़ाई, तुम कहाँ जाना चाहती हो?"

"मैं मेरे घर जाऊँगी।"

"कहाँ है तुम्हारा वह घर?"

"यहाँ से दूर।"

"वहाँ तक जाने का मार्ग ज्ञात है तुम्हें?"

"हाँ। मैं जानती हूँ। पिछले तीन चार दिनों से मैं मरुभूमि में घूम रही हूँ। मैं रात्रि से पहले मेरे घर तक...।"

"वफ़ाई, संध्या पहले ही ढल चुकी है, बल्कि रात्री आरंभ हो चुकी है। ऐसे में मार्ग ...।"

"मार्ग सभी मेरे मित्र बन चुके हैं।"

"वफ़ाई, तुम मरुभूमि को नहीं जानती।"

"मैं उसे जानती हूँ, श्रीमान।"

"तुम भूल कर रही हो वफ़ाई। रात्रि की मरुभूमि, दिवस के प्रकाश में दिखाई देने वाली मरुभूमि से, भिन्न होती है। ज्ञात मार्ग भी अज्ञात से लगते हैं।"

"तो तुम क्या चाहते हो मुझ से?" वफ़ाई त्रस्त हो गई।

"कुछ विशेष नहीं। आज की रात्रि यहीं रुक जाओ, कल प्रभात होते ही जहां जाना चाहो चली जाना।"

"मेरी इतनी चिंता क्यूँ कर रहे हो श्रीमान?"

"मैं तो इस मरुभूमि...।"

"यदि मेरी इतनी ही चिंता है तो मुझे मेरा सामान लौटा दो।"

"वफ़ाई, हठ मत करो।"

"जीत, हठ तो तुम कर रहे हो। एक नहीं दो, दो। एक, तुम मेरी सारी तस्वीरें मुझे नहीं दे रहे हो। दुसरा यहीं रात्रि रुकने को कह रहे हो। मैं तुम्हारे साथ नहीं रह सकती।"

"यदि तुम जाना चाहती हो तो मैं तुम्हें नहीं रोकूँगा। बस इतना ध्यान रहे कि इस मरुभूमि में कहीं तुम खो ना जाओ।"

"मुझे कोई चिंता नहीं है।" वफ़ाई त्वरा से उठी और जीत का घर छोड़ गई। जीप की तरफ भागी। जीप का द्वार खोला और अंदर कूद पड़ी, सोये हुए जीप के एंजिन को जागृत किया। वफ़ाई अंधकार में लंबे, रेतमय और अज्ञात मार्ग पर निकल पड़ी।

जीत, उसे जाते हुए स्थिर सा देखता रहा। जीप और वफ़ाई उस से दूर होती जा रही थी। शांत मार्ग दौड़ती हुई जीप की ध्वनि से जाग उठा।

लंबे अंतराल तक जीत वहीं खड़ा रहा, अंतत: कक्ष के अंदर चला गया।

समय बीत गया। शीतल रात्री ने मरुभूमि पर प्रवेश कर लिया। रात्रि सदा की भांति शीतल थी, किन्तु जीत के अंदर कुछ उष्ण बह रहा था।

सोने से पहले जीत सदैव दूसरे दिन की चित्रकारी की तैयारी कर लेता था। चित्र के विषय में विचार करता था, उसके मन में चित्र

जन्म लेता था जो दूसरे दिन केनवास पर प्रकट होता था। अजन्मे चित्र जीत को स्वप्न में मार्ग दिखाते थे।
किन्तु उस रात्रि भिन्न थी।
पाँच महीनों के बाद कोई उसके घर आया था और उसने बातें भी की थी। घर के मौन को अनेक बार उसने भंग किया था।
'मरुभूमि के मौन को मैं सदा पसंद करता रहा हूं। किन्तु लंबे समय के पश्चात आज मैंने ध्वनि सुनी है। मनुष्य के मुख से शब्द सुने हैं। जिनके कारण मेरा व्यक्तिगत और ज्ञात मौन अनेक टुकड़ों में बिखर गया है।
इन पाँच महीनों में किसी से भी बात करना मुझे पसंद नहीं था, स्वयम से भी नहीं। किन्तु, आज संध्या समय पर मैंने बातें की है, अधिक बातें की है, स्वयं के साथ भी, वफ़ाई के साथ भी। न केवल बातें किन्तु लड़ाई भी की है, दलीलें भी की है, क्रोध भी किया और स्मित भी।' जीत विचारता रहा।
स्मित !
एक ताजा स्मित जीत के अधरों पर आ गया। छाती के अंदर उसने कुछ अनुभव किया। कुछ उग रहा था उसके ह्रदय के अंदर। एक शीतल लहर कक्ष में प्रवेश कर गई, दूसरी जीत के ह्रदय में।
जीत ने आँखें बंध कर ली। उसे अपने सामने एक युवति दिखाई दी जो उसे आमंत्रित कर रही थी, ह्रदय के द्वार खटखटा रही थी। जीत ने अनायास स्मित किया। एक कन्या वफ़ाई नाम की, कारण था उसके स्मित का।
जीत की आँखों के सामने पूरा घटनाक्रम आ गया जो आज संध्या को हुआ था। वह उसमें धूमिल हो गया। वह आनंदित हो उठा। वफ़ाई के शब्द उसे मधुर संगीत जैसे लगने लगे।
जीत, वफ़ाई के स्वप्न को साथ लिए सो गया।
प्रभात में जब जीत अपने कार्य में व्यस्त था तब कोई भिन्न ध्वनि उसके कान पर पडी। वह मोबाइल की ध्वनि थी। जीत ने उसे देखा, विस्मय से।
"यह यदा-कदा ही बजता है। आज कौन याद कर रहा है मुझे?" जीत ने उसे उठाया और बात करने लगा।

14

वफ़ाई सीधे मार्ग पर जीप चला रही थी। मार्ग अंधकार भरा था। गगन में अंधेरी रात का प्रभुत्व था। वह मार्ग को देखते जा रही थी। पहले तो यह मार्ग ज्ञात लग रहा था किन्तु धीरे धीरे वह अज्ञात सा लगने लगा। मरुभूमि भी अज्ञात लगने लगी। जो मरुभूमि को वह चार पाँच दिनों से जानती थी वह कोई भिन्न थी। यह कोई दूसरी भूमि थी।
वफ़ाई ने संदेह के साथ स्वयं से पूछा, "वफ़ाई, तुम इस मरुभूमि को जानती हो?"
"कुछ कह नहीं सकती।"
"यह मरुभूमि, यह मार्ग और यह रात्री उस घर तक नहीं जाते जहां तुम जाना चाहती हो।"
"तो मैं कहाँ जा रही हूँ?"
"मैं नहीं जानती।"
"तो रुक जाओ, जीत के पास लौट जाओ। अन्यथा तुम मार्ग भूल जाओगी और रात भर मरुभूमि में भटकती रहोगी।"
"जीत के पास तो कभी नहीं जाऊँगी।"
जीप चलती रही। प्रत्येक क्षण मार्ग एवं मरुभूमि अधिक से अधिक अज्ञात से होने लगे थे जो किसी अज्ञात स्थान की तरफ ले जा रहे थे। चंद्रोदय अभी दूर था।
आधे घंटे तक वफ़ाई जीप चलाती रही। यात्रा में उसे ना तो प्रकाश मिला, ना व्यक्ति मिले, ना वृक्ष मिले और ना ही मानव जीवन के कोई संकेत मिले। सब तरफ अखंड शून्यता व्याप्त थी। तथापि वह चलती रही।
समय के कुछ और टुकड़े व्यतीत हो गए। वफ़ाई अज्ञात मार्ग पर, अज्ञात दिशा में, अज्ञात लक्ष्य की तरफ बढ़ रही थी।
सहसा दूर कहीं प्रकाश दिखाई दिया। वफ़ाई के अधरों पर स्मित आ गया। उसने दो चार गहरी साँसे ली, अच्छा लगा। वह निश्चिंत हो गई। उसने जीप की गति घटा दी। जीप प्रकाश की दिशा में धीरे धीरे गति करने लगी।
दूरी पर उसे कुछ गतिविधि दिखाई दी। कुछ आकृतियाँ यहाँ वहाँ घूम रही थी।
"निश्चय ही वहाँ कोई मानव जीवन है।" वफ़ाई आश्वस्त हो गई, "आज की रात्रि सुरक्षित व्यतीत हो जाएगी।"
आशा में वफ़ाई ने एक कोने में जीप लगा दी, जीप की लाइट बंध कर दी। अचानक अनेक लाइट ने जीप को घेर लिया। वफ़ाई अचंभित हो गई। वह अनेक सैनिकों से घिरी थी जिनके हाथों में भरी बंदूकें थी। वह सब धीरे धीरे जीप की तरफ बढ़ रहे थे। वफ़ाई भयभीत थी अत: जीप में ही बैठी रही। एक सैनिक ने जीप का द्वार खटखटाया।
"बाहर आ जाओ।" उसने आदेश दिया।
संभालते हुए वफ़ाई जीप से बाहर आई।

“हाथ ऊपर।” एक सैनिक चिल्लाया। वफ़ाई ने हाथ ऊपर कर दिये। वफ़ाई को समझ आ गई कि वह भटक गई है। वह सेना की किसी छावनी पर आ गई है। उसने समर्पण कर दिया।
“लड़की, कौन हो तुम?” किसी ने पूछा। वह वफ़ाई के समीप गया।
वफ़ाई ने गहरी सांस ली और धैर्य जुटाने लगी।
“मेरा नाम वफ़ाई है।” स्मित के साथ वह बोली। स्मित ने काम किया।
“बंदूकें हटा लो और उसे अंदर ले चलो।”
कोई वफ़ाई को अंदर ले आया, बाकी सब चले गए।
“तुम कौन हो और यहाँ क्या कर रही हो?” अधिकारी के सौहार्दपूर्ण शब्दों से वफ़ाई स्वस्थ हो गई।
“मेरा नाम वफ़ाई है। मैं वर्तमानपत्र की फोटो पत्रकार हूँ। मैं यहाँ रण उत्सव को कवर करने आई हूँ।”
“वफ़ाई, रण उत्सव तो कब का सम्पन्न हो गया, क्या तुम नहीं जानती?”
“हाँ, जानती हूँ।”
“तो अभी भी तुम यहाँ क्यूँ हो?”
“मेरे यहाँ आने से पहले ही वह सम्पन्न हो गया था। मैं देर से पहुंची हूँ।”
“तो तुम्हें यहाँ से चले जाना चाहिए।”
जांच आधे घंटे तक चली।
“ठीक है, मैं तुम्हारी सभी बातों और दलीलों को मान लेता हूँ, यदि तुम मुझे तुम्हारा पहचान पत्र, अनुमतिपत्र एवं तुम्हारे कार्यालय का पत्र दिखा दो।”
“हाँ, यह सब है मेरे पास। मैं आपको दिखा सकती हूँ, साहब।”
“तो चलो दिखाओ।”
“वह सब मेरे थेले में है। क्या मैं उसे जीप से ला सकती हूँ?”
अधिकारी के संकेत पर एक व्यक्ति जाकर जीप से वफ़ाई का थेला ले आया। उसे खोलकर वह आवश्यक दस्तावेज़ और पत्र खोजने लगा। उसने पूरा थेला जांच लिया किन्तु कुछ भी हाथ नहीं लगा।
“सा’ब, इसमें तो कुछ भी नहीं है।”
“वह थेले में ही होने चाहिए। थेले में एक लाल बटुआ होगा। उसमें देखो, मिल जाएंगे।” वफ़ाई ने कहा।
वह लाल बटुए को खोजने लगा, उसे वह भी नहीं मिला।
“कोई लाल बटुआ नहीं है इसमें।”
“लाल बटुआ कहीं जीप में होगा। मैं देख कर आऊँ?” वफ़ाई ने अरज की।
अधिकारी ने वफ़ाई को संदेह से देखा, कुछ क्षण मौन रहा और फिर बोला, “चलो जीप में देखते हैं।”
वफ़ाई जीप के अंदर, प्रत्येक कोने में ढूंढती रही किन्तु उसे लाल बटुआ नहीं मिला। वह निराश हो गई, भयभीत हो गई।
“वफ़ाई, कहाँ है सारे कागज?”
“सा’ब वह लाल बटुए में ही है, किन्तु वह लाल बटुआ नहीं मिल रहा है।”
“वफ़ाई, तुम हमारी हिरासत में हो।”
“किन्तु...सा’ब।” वफ़ाई पूरा कह न सकी।
“वफ़ाई, तुमने हमारे देश की सीमा का उल्लंघन किया है, हमें संदेह है कि तुम जासूस हो सकती हो।”
“जासूस? मैं? सा’ब मैं पूर्ण भारतीय हूँ।”
“तुम किसके लिए काम करती हो?” अधिकारी कठोर हो गया।
“नहीं सा’ब। मैं जन्म से ही भारतीय हूँ, कोई जासूस नहीं हूँ। मेरा विश्वास कीजिये।”
“बिना किसी प्रमाण के हम तुम पर विश्वास नहीं कर सकते।”
“मेरे पास वह बटुए में सब, ... वह बटुआ अभी कहीं मिल नहीं... मेरा विश्वास करें... मैं सच्ची भारतीय हूँ। मैं वैधिक रूप से भारत की नागरिक हूँ।”
“इसे कस्टडी में ले जाओ।” अधिकारी ने आदेश दिये।
“वफ़ाई, कल हम इस विषय में आगे जांच करेंगे। तब तक तुम भारतीय सेना के संरक्षण में हो।”
“सा’’ब, एक...।” वफ़ाई भयभीत थी। पूरा कह नहीं पाई।
“तुम यहाँ सुरक्षित हो।”
“किन्तु मेरा क्या होगा?”
“वह कल निश्चित करेंगे। तब तक भारतीय सेना के आतिथ्य का आनंद उठाओ।” एक रहस्यमय स्मित देकर वह चला गया।
एक कक्ष में वफ़ाई को बंध कर दिया गया, सारा सामान वफ़ाई से ले लिया गया।

रात्री बीत गई। वफ़ाई को असुविधा अवश्य हुई किन्तु वह सुरक्षित थी। वह रात भर सो नहीं पाई थी अत: प्रभात में भी थकी हुई थी। वफ़ाई को यह संशय था कि बिना कागजों के वह स्वयं का पक्ष रख नहीं पाएगी। वह चिंतित थी। उस ने गहरी सांस ली, स्वयं को संभाला।

फिर से वफ़ाई की पूछताछ होने लगी। वह जवाब देती रही।

“सा’ब, मेरे पास सभी कागज और पहचान पत्र.....।”

“तो उसे प्रस्तुत करो।” जांच अधिकारी ने स्मित के साथ कहा।

“हाँ, मुझे कुछ याद आया। कल संध्या समय मैं एक युवक के साथ थी। हो सकता है मेरा लाल बटुआ वहीं छुट गया हो। यदि आप मेरे साथ उसके घर चलें तो मैं आपको सब....।”

“ओह, युवक! इस मानव रहित भूमि पर युवक? कहाँ है वह? कौन है वह?”

“मुझे उस स्थान का पता नहीं है किन्तु उस का नाम जीत है।”

“जीत? वह धुनि चित्रकार? तुम उनसे जानती हो? क्या तुम कल संध्या उसके साथ थी?”

“जी। मेरा लाल बटुआ उसी के घर.... यदि हम उसके घर चलेंगे तो...।”

“ऐसा करने की आवश्यकता नहीं है।” उस अधिकारी ने फोन घुमाया।

15

जीत के मोबाइल की घंटी बजना खास और विरल घटना होती थी। घंटी सुनकर उसे विस्मया हुआ। उसने फोन उठाया।

“जीत, आपको इस समय फोन करने पर क्षमा चाहूँगा। किन्तु यह अति आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है।” जीत ने कैप्टन सिंघ की आवाज

सुनी।
“जय हिन्द, कैप्टन सिंघ। कहिए क्या बात है?” जीत सावध हो गया।
“कल रात एक युवती सेना के क्षेत्र में पाई गई। उसके पास एक जीप है जिसका पंजीकरण जम्मू कश्मीर से है। हमें संदेह है कि वह सिमा पार से आई कोई गुप्तचर है। पूछताछ पर उसने आपका नाम दिया। क्या आप उसे जानते हो?”
“क्या वह वफ़ाई है?” जीत ने पूछा।
“हाँ, वह ऐसा ही कह रही है। किन्तु उसके पास कोई पहचान पत्र नहीं है। वफ़ाई का कहना है कि कल संध्या वह आपके साथ थी। क्या यह सत्य है?”
“हाँ, कैप्टन सा’ब। वह दो घंटे से अधिक समय तक मेरे साथ थी।”
“वह कह रही है कि उसके पास सारे पहचान पत्र थे किन्तु वह सब आपके घर भूल आई है। तो क्या वह सभी आपके घर पर है? यदि ऐसा है तो इस बात की पुष्टि करें।”
“मुझे देखना पड़ेगा।” फोन कान पर ही रखते हुए जीत इधर उधर देखता रहा। उसे एक लाल बटुआ मिला जो जीत का नहीं था। जीत ने उसे खोला, “सा’ब, मुझे एक बटुआ मिला है जो स्त्रीयां …।”
“क्या वह लाल है?”
“हाँ, वह लाल है।”
“उसे देखकर कहो कि उसमें वफ़ाई के पहचान पत्र हैं?” कैप्टन सिंघ ने आदेश दिया।
जीत ने कहा,“सा’ब, वफ़ाई के कुछ पहचान पत्र हैं इस में।”
“जीत। उन सभी की तस्वीर निकालकर हमें भेज दो। अति शीघ्र।”
फोन कट गया। जीत ने कैप्टन सिंघ के आदेश का पालन किया।

/*/*/*/*/*/*/*/

जीत अपनी चित्रकारी में व्यस्त था। केनवास पर एक सुंदर द्रश्य का जन्म हो रहा था। चित्र में नदी के ऊपर से एक पंखी उड रहा था जिसके पंख नदी के पानी को स्पर्श करते थे। पानी में पंखी का प्रतिबिंब पड रहा था। उसकी पंख लाल और नीली थी। किंतु पानी में पड रहे प्रतिबिंब में पंखों का रंग भिन्न दिखाई दे रहा था क्यूँ कि उसमें गगन का रंग भी घुल गया था।
पंखी के पंख, उसका प्रतिबिंब और गगन के रंग का मिश्रण केनवास पर एक सुंदर द्रश्य को जन्म दे रहे थे। किन्तु जीत अभी भी पंखी के प्रतिबिंब के रंगों से संतुष्ट नहीं था। वह उसे बार बार बदल रहा था।
जीत ने रंग भरना छोड़ दिया, तूलिका को एक तरफ रख कर केनवास को देखता रहा। उसके मन में सेंकड़ों विचार तीव्र गति से आने लगे। किन्तु वह किसी से भी संतुष्ट नहीं था। वह एक ही ध्यान से चित्र को देखता रहा, जैसे कोई ऋषि समाधिमय हो। वहाँ की ध्वनि भी उस की समाधि अवस्था को भंग नहीं कर पाई।
उसके आँगन में दो जीप आ चुकी थी किन्तु उसका ध्यान नहीं गया।
वफ़ाई की जीप से कैप्टन सिंघ और सेना की जीप से वफ़ाई उतरे। दोनों सीधे जीत की तरफ बढ़े। जीत एक अपूर्ण चित्र के सामने खड़ा था। वह समाधि अवस्था में था।
कैप्टन ने कुछ क्षण प्रतीक्षा की किन्तु जीत ध्यान की अवस्था में ही रहा। कैप्टन जीत के समीप गए और उसके कंधे पर हाथ रख दिया।
जीत की गहन समाधि भंग हुई। उसने कैप्टन को देखा, वफ़ाई को भी।
“जीत, मैं वफ़ाई को यहाँ छोड़ जाता हूँ। हमारी सतर्क द्रष्टि वफ़ाई पर सदैव रहेगी। यदि कुछ भी संदेहपूर्ण पाया गया तो उसे कैद कर लिया जाएगा। अब यह आपका दायित्व होगा कि वफ़ाई की गतिविधियों को आप देखते रहेंगे और संदेह की किसी भी स्थिति में आप हमें सूचित करेंगे।” कैप्टन ने आदेश दिया।
जीत ने वफ़ाई की तरफ देखा। वफ़ाई ने स्मित किया, पलकें झुकाई, फिर उठाई। वफ़ाई की आँखें जीत को कुछ कह रही थी। जीत ने उसे पढ़ा, वफ़ाई को स्मित दिया और कैप्टन को कहा, “सा’ब आप निश्चिंत रहें। मैं वफ़ाई की गतिविधियों पर सतर्क द्रष्टि रखूँगा और आप के आदेशानुसार ही काम करूंगा।”
“मेरी शुभकामना, जीत। मैं अपेक्षा रखता हूँ कि सब कुछ ठीकठाक रहेगा।” कैप्टन ने वफ़ाई और जीत की तरफ एक द्रष्टि डाली और चल दिये। दोनों ने कैप्टन सिंघ को सलाम किया। मरुभूमि के रस्तों पर कैप्टन की जीप ओझल हो गई।
जीत एवं वफ़ाई के मन में एक दूसरे के लिए कई प्रश्न थे। दोनों एक दूसरे को जानने के लिए उत्सुक थे। दोनों एक दूसरे को अपने विषय में कहने को उत्सुक थे। दोनों के मुख पर प्रश्नों के आवरण थे जो दोनों हटाना चाहते थे। किन्तु दोनों मौन खड़े थे। दोनों इसी मौन धारण किए लंबे समय तक खड़े रहे, दोनों में से कोई नहीं जानता था कि कैसे प्रारम्भ किया जाय, कहाँ से प्रारम्भ किया जाय? कल संध्या समय के मिलन की छाया दोनों के मन में अभी भी थी।

/*/*/*/*/*/*/*/

16

मौन अभी भी व्याप्त था। वफ़ाई को यहाँ छोड़कर कैप्टन को गए दो घंटे से अधिक समय व्यतीत हो चुका था। दोपहर हो चुकी थी। सूरज माथे पर आ गया था। दोनों के मन उद्विग्न थे किन्तु धीरे धीरे शांत होते जा रहे थे। फिर भी कोई किसी कुछ नहीं बोला।
"जीत, मुझे भूख लगी है और मैं कुछ खाना चाहती हूँ। कुछ मिलेगा क्या?" अंतत: वफ़ाई ने मौन के साम्राज्य को तोड़ा।
जीत तूलिका हाथ में लिए चित्रकारी में व्यस्त था। उसने वफ़ाई के शब्दों की उपेक्षा की। वफ़ाई ने अपने शब्द दोहराए, जीत ने भी उपेक्षा दोहराई।
वफ़ाई जीत के समीप गई और उसके कान में चिल्लाई, "मुझे भूख लगी है और मैं खाना चाहती हूँ। क्या कोई मुझे सुन रहा है?"
वफ़ाई ने स्मित किया। जीत पूर्ण रूप से पिघल गया, स्मित का उत्तर स्मित से दिया।
"यदि तुम्हें खाना हो तो तुम्हें पकाना पड़ेगा। पका लो और खा लो। मेरे लिए रसोई बनाना मत भूलना।" जीत ने सस्मित कहा।
"तुम्हारा खाना कौन बनाता है?" वफ़ाई ने पूछा।
"कोई नहीं। मैं स्वयं बनाता हूँ।"
"तो फिर तुम कैसे अपेक्षा करते हो कि मैं खाना बनाऊं? और हाँ, मैं तो अतिथि हूँ, मेरा ध्यान रखना तुम्हार नैतिक दायित्व है, जीत।"
"ठीक है। मैं फिर से तुम्हारे साथ लड़ाई करना नहीं चाहता। वहाँ फ्रिज में कुछ खाना पड़ा है उसे खा लो।" जीत ने फिर से स्मित दिया और चित्रकारी में व्यस्त हो गया।
फ्रिज में वफ़ाई को खाना और कुछ फल मिले। उसे लेकर जीत के समीप आकर बोली, "तुम कुछ लोगे?"
जीत ने स्मित के बदले में खाना मांगा। वफ़ाई ने स्मित भी दिया, खाना भी दिया। मौन होकर दोनों भोजन का आनंद लेने लगे।
मरुभूमि मौन थी। हवा मौन बह रही थी, मौन गगन देख रहा था, बादल भी मौन यात्रा कर रहे थे, रेत मौन पड़ी थी, मार्ग मौन थे, पंखी भी मौन उड़ रहे थे। सब कुछ मौन था, शांत था। केवल दोनों के मन अशांत थे। दोनों बात करना चाहते थे, एक दूसरे को जानना चाहते थे किन्तु कोई भी बात नहीं कर रहा था। दोनों प्रतीक्षा कर रहे थे कि सामनेवाला बात प्रारम्भ करे। दोनों मौन थे अत: दोनों अशांत थे।
दोनों चित्र को बिना किसी उद्देश्य से देख रहे थे। चित्र शांत एवं मौन था। किन्तु चित्र में बसे आकार शांत नहीं थे, वह कुछ कह रहे थे। चित्र में एक तरफ एक पर्वत था, झरना था, नदी थी, घाटी थी, काला घना जंगल था, हिम था, बादलों से भरा काला गगन था तो दूसरी तरफ मरुभूमि थी, एकांत से भरा मार्ग था, रेत थी, खुल्ला गगन था एवं सपाट और सुखी धरती थी। चित्र की दोनों बाजुओं में स्पष्ट विरोधाभास था। एक मात्र समानता थी कि दोनों तरफ एक एक व्यक्ति था।
रेत पर खड़ा व्यक्ति हिम पर खड़े व्यक्ति की तरफ अपना हाथ बढ़ाकर खड़ा था तो हिम पर खड़ा व्यक्ति दुविधा में था कि उस हाथ से हाथ मिलाएँ अथवा नहीं।
वफ़ाई उन सभी आकारों को ध्यानपूर्वक देखती रही और उसके अर्थ को समझने का प्रयास करने लगी। उसने देखा कि एक तरफ रेत है तो दूसरी तरफ हिम है।
"रेत पर खड़ा व्यक्ति जीत है जो मुझे अपनी मित्रता का आमंत्रण दे रहा है। और मैं हिम पर खड़ी विचार रही हूँ कि उस आमंत्रण का स्वीकार करूँ अथवा उसकी उपेक्षा करूँ?" वफ़ाई ने स्वयं से बात की।
"ओह, कितना सुंदर है यह!" वफ़ाई बोल पड़ी। उसने तीन चार बार आँखें बंध की फिर खोली, वह उठी, चित्र के समीप गई, तूलिका उठाई, रंगों में डुबोई, और रेत की तरफ से बढ़े हाथ से हिम पर खड़े व्यक्ति का हाथ जोड़ दिया। चित्र कुरूप हो गया, उसने अपना सौन्दर्य खो दिया। वफ़ाई व्यथित हो गई।
जीत ने वफ़ाई की प्रत्येक क्रिया को देखा और वह जो कर रही थी वह उसे करने दिया। चित्र को कुरूप होते हुए जीत ने देखा किन्तु वफ़ाई को नहीं रोका।
जीत भी चित्र के समीप गया, "मुझे यह तूलिका देंगी?"
वफ़ाई ने तूलिका दे दी। जीत ने उसको रंगों में भिगोया और कुछ ही क्षण में उसने चित्र को फिर से सुंदर बना दिया। रेत के हाथ में हिम का हाथ था।
वफ़ाई आनंदित हो गई।
"कितनी सरलता से तुमने इसे फिर से सुंदर बना दिया।" वफ़ाई ने जीत की प्रशंसा की।
"यह तो जीवन की भांति है।" जीत ने गगन की तरफ देखते हुए कहा।
"वह कैसे?" वफ़ाई ने रुचि दिखाई।
"जीवन भी सरल एवं सुंदर ही होता है, किन्तु अवांछित रंगो को उसमें भरकर हम उसे जटिल बना देते हैं। यदि हम जीवन के चित्र से उन रंगों को हटा दें तो वह भी सुंदर बन जाता है।" जीत ने तूलिका को अपने स्थान पर रख दी ।
"चलो हम भी वर्तमान के इन क्षणों को सुंदर बना दें।" वफ़ाई ने जीत को आमंत्रित किया।
दोनों झुले के समीप गए, वफ़ाई झूले पर बैठ गई, जीत खड़ा रहा। वफ़ाई ने अपने विषय में सब कुछ बता दिया.... उसका नगर, उसका पर्वत, उसकी नौकरी, हिम से रेत तक की यात्रा, सेना क्षेत्र में भूल से घुस जाना, आदि।

सब कुछ कहने के पश्चात वफ़ाई रुकी, जीत को देखने लगी। जीत बड़ी ही रुचि से वफ़ाई को सुन रहा था, वफ़ाई को जानने का प्रयास कर रहा था, वफ़ाई की उपथिति को अनुभव कर रहा था। वफ़ाई आनंदित थी।
“जीत, मेरे विषय में अब और कुछ नहीं कहना है मुझे। अब तुम बताओ अपने विषय में।” वफ़ाई ने जीत को स्मित देते हुए झूले को रोका। वह चित्र के समीप जा खड़ी हो गई, जीत के शब्दों की प्रतिक्षा में उसे निहारती रही।
जीत मौन था। वफ़ाई के पर्वत अभी भी उसके मन में थे। वह उस पर्वत की हवा एवं उसके हिम को कुछ और समय तक अनुभव करना चाहता था अत: वह मौन था।
वफ़ाई उत्सुक थी जीत को लेकर, “जीत, अब तुम कुछ कहो, तुम्हारी बारी है अब। तुम्हारे विषय में जानने को मैं उत्सुक...।”
“वफ़ाई, वह सब फिर कभी बताऊंगा।”
“इस क्षण क्यों नहीं?”
“दो कारण है इसके। एक, मैं कुछ समय तक पर्वत को अनुभव करना चाहता हूँ, यदि मैं मेरी मरुभूमि तक की यात्रा कहने लगा तो मेरे मन और ह्रदय से वह पर्वत ओझल हो जाएगा जो मैं नहीं चाहता।
दुसरा, हम दोनों को भूख लगी है, चलो कुछ खाना बनाते हैं।” जीत कक्ष की तरफ बढ़ा, वफ़ाई भी।
खाना बनाते समय दोनों के बीच मौन - पर्वत का मौन, घाटी का मौन और मरुभूमि का मौन- व्याप्त रहा।
भोजनोपरांत वफ़ाई झूले पर जा बैठी, जीत चित्र के समीप खड़ा हो गया। वफ़ाई ने अपने आँख और कान को जीत पर केन्द्रित किया। सभी ध्वनि अद्रश्य हो गए, गहन शांति व्याप्त हो गई। जीत ने अपने अधरों को धीरे से खोला और शब्दों को प्रवाहित होने दिया।
“वफ़ाई, यह स्थान मेरा घर नहीं है। कुछ महीनों पहले तक मैंने कच्छ देखा नहीं था। मैं मुंबई से हूँ। मैं विज्ञान का अनुस्नातक हूँ। एक बड़ी उत्पाद इकाई का मैं प्रभारी था। मेर बड़ा नाम था। मुझे अच्छा वेतन और अच्छी सुविधाएं उपलब्ध थी। दो वर्ष के अंदर ही मालिक ने उसे बेच दिया, मैंने खरीद लिया। मैं मालिक बन गया।” जीत रुका, आँखें बंध की, गहरी सांस ली, आँखें खोल दी।
वफ़ाई और अधिक जानना चाहती थी, जीत को पूरी रुचि से देख रही थी, सुन रही थी। वफ़ाई कुछ समय धैर्य रखते हुए जीत की आगे की बात की प्रतीक्षा करने लगी। जीत की मौन मुद्रा लंबी खींच गई।
“जीत, क्या हुआ? यह सब तो बीती बात थी। यह बताओ कि उसके बाद क्या हुआ? यहाँ कैसे आ गए? कब आए यहाँ? यहाँ कैसे बीत रही है? यह चित्रकला, यह रंग...।” वफ़ाई ने रुचि व्यक्त की।
“एक वर्ष तक कारोबार अच्छा चला और व्यापार में लाभ होने लगा। कुछ सन्मान भी मिले। वह क्षण मेरे और मेरे साथियों के लिए गर्व के थे। फिर अचानक मैंने यह सब छोड़ देने का निश्चय कर लिया। मैंने कारोबार बेच दिया, मुंबई छोड़कर इस मरुभूमि में आ बसा।”
क्षण भर रुका जीत । फिर आगे कहने लगा, “यह स्थान मुझे पसंद आ गया, पूरा जीवन यहीं व्यतीत करने का निश्चय कर लिया था। तो मैंने इसे खरीद लिया। सेना ने मेरे इस स्थान को खरीदने पर विरोध किया था। किन्तु, किसी भी तरह मैं सेना को मनाने में सफल रहा और सेना ने सम्मति प्रदान कर दी। मुझे इस स्थान का स्वामित्व दिलाने में कैप्टन सिंघ ने भरपूर सहयोग दिया। मैं उसका सम्मान करता हूँ। वह कभी भी इस तरफ निकलते हैं, मुझे अवश्य मिलकर ही जाते हैं। हम दोनों अच्छे मित्र हैं।”
“ओह। यही कारण होगा की कैप्टन सिंघ तुम पर विश्वास करते हैं और मुझे तुम्हारी शरण में छोड़ गए।”
“वफ़ाई, मैं कोई साधू-संत नहीं हूँ कि तुम मेरे शरण में आ कर रहो।”
“मेरा तात्पर्य वह नहीं था... मैं तो कहना चाहती थी कि ...।” वफ़ाई शब्दों में उलझ गई।
“अरे रे, मैं तो बस यूं ही। चलो छोड़ो।” जीत ने स्मित के सहारे स्थिति को संभाल लिया।

17

मीठी हवा की एक धारा आई, वफ़ाई, जीत एवं सारे घर को स्पर्श करती हुई चली गई। दोनों को हवा भाने लगी।

“किन्तु तुमने मुंबई क्यों छोड़ा? सब कुछ तो सही हो रहा था। सफलता भी, नाम भी, सम्मान भी। सब कुछ तो ठीक था। तो फिर?” वफ़ाई ने प्रश्नों की धारा बहा दी।

“मैं तुम्हारी जिज्ञासा को समझता हूँ। उचित समय पर मैं यह सब भी बता दूंगा।”

“समय के यह क्षण क्या उचित समय नहीं है? हम जिस समय में जीते हैं वह समय ही सदैव उचित समय होता है। मेरा आग्रह है कि तुम अभी सब कुछ बता दो।” वफ़ाई ने कहा।

“तुम्हारा तर्क उचित है। किंतु, समय सदैव उचित नहीं होता। कभी कभी हमें सही एवं उचित समय की प्रतीक्षा करनी पड़ती है।” जीत ने वफ़ाई के मुख के भावों को देखा।

“वह समय कब आएगा?” वफ़ाई नि:श्वास भरा।

“बस, प्रतीक्षा करो। वह अवश्य ही आएगा। वैसे भी तुम बाईस से पचीस दिन यहीं हो, इतने में वह समय भी आ जाएगा।”

“ठीक है। मैं प्रतीक्षा करूंगी।” वफ़ाई ने कहा, “एक और प्रश्न। कारोबार बेचने पर खूब धन मिला होगा। भारत देश में और पूरे संसार में अनेक सुंदर स्थल है जो प्रकृति के अनेक रूप जैसे पर्वत, नदी, झरनें, जंगल अथवा सागर से भरपूर है। जहां सौन्दर्य भी है और शांति भी है। तो उन सब को छोडकर इस मरुभूमि को पसंद करने का क्या तात्पर्य? यह एकांत भरा, सूखा, निर्जन और रंग विहीन स्थल जहां मानव नहीं है, जीवन नहीं है, सौन्दर्य भी नहीं है। है तो केवल रेत जो रात्रि में दारुण एवं अंधकारमय हो जाती है। यह मरुभूमि में कोई रंग नहीं है, मात्र गहन अंधकार ही है। तो इसे क्यूँ पसंद किया? और वह भी जीवनभर के लिए?”

“चलो, कुछ बातों को स्पष्ट कर देता हूँ।” जीत ने कहा। वफ़ाई को अपने प्रश्नों के उत्तर की अपेक्षा हुई।

“प्रथम, काला अंधकार स्वयं ही एक रंग है। सामान्य व्यक्तियों को यह ज्ञात भी नहीं की अंधकार कितना सुंदर होता है। वह रंगीन भी है और सुंदर भी।

दूसरा, दिवस के प्रकाश में सुंदर दिखने वाली प्रत्येक वस्तु रात्री में भयावह एवं काली दिखती है। यह सभी सुंदर स्थल जैसे सागर, जंगल, पर्वत अथवा नदी, सब के लिए सत्य है। यह तर्क सभी सुंदर वस्तु, सभी सुंदर व्यक्ति और सभी सुंदर क्षणों पर भी लागू होता है। यह मरुभूमि भी प्रकृति के उसी नियम का पालन करती है।

तृतीय, यह मरुभूमि निर्जन अवश्य ही है, किन्तु यहाँ जीवन है, रंग है, सौन्दर्य भी है।

चतुर्थ, यह स्थल भी प्रकृतिक ही है। प्रकृति का यह भी एक रूप है। यह शांत भी है। इस भूमि की अपनी ही नीरवता है, अपना ही मौन है।

पाँचवाँ, मैं यहाँ मेरे चित्रों से क्षणों को रंग से भर देता हूँ। इन चित्रों में अनेक रंग होते हैं।” जीत मरुभूमि को दूर तक देखता रहा और अपने ही विचारों में खो गया।

“अपनी इस मरुभूमि का खूब सशक्त पक्ष रखा है तुमने, जीत। किन्तु नीरवता और शांति में अंतर होता है। क्या तुम जानते हो?“

“अवश्य। यहाँ तुम्हें दोनों मिलेंगे। नीरवता में मौन और मौन में नीरवता का अनुभव होगा।” जीत ने स्मित दिया।

“वह कैसे?”

“यह तो बिलकुल सरल है। मौन को आमंत्रित करोगी तो नीरवता स्वयं चली आएगी।” जीत ने मौन धारण कर लिया। वफ़ाई ने भी मौन को आमंत्रित कर दिया। दोनों मौन हो गए। प्रगाढ़ मौन व्याप्त हो गया।

वह मौन गहन था, बिना व्यवधान वाला था। वह सागर सा गहन, गगन सा विशाल, पर्वत सा ऊंचा, धूप सा तेजोमय, चाँदनी सा शुध्ध, पुरातन वृक्ष की भांति स्थिर, झरने की भांति निर्बाध, हिम की भांति शीतल, रेत की भांति उष्ण, पवन की भांति मधुर, घाटी की भांति तीव्र, मयूर की भांति नृत्यमय, कोयल की भांति संगीतमय, जीत के चित्र की भांति रंगीन था।

दोनों नीरव मौन की समाधि में थे। समय भी समाधिस्थ था, स्थिर सा हो गया था।

“जीत, मौन की समाधि में खूब समय व्यतीत हो गया है।” वफ़ाई ने मौन तोड़ा।
जीत ने धीरे से आँखें खोली और वफ़ाई को स्मित दिया।
“वफ़ाई, यह केवल मौन नहीं था, यह समाधी थी। इस अवस्था पाने को अनेक ऋषि मुनि तरसते हैं। किन्तु उन्हें भी नहीं मिलती यह अवस्था। कितनी नीरवता थी? कीनता मौन था?”
“वह अद्भुत था, अनुपम था।”
“ध्यान का यह सौन्दर्य है कि वह समय से परे है, समय से भिन्न है। वह समय को बहने देता है और समाधिस्थ व्यक्ति को अनुभव होता है कि समय स्थिर है। किन्तु समय तो चलता ही रहता है।” जीत ने कहा।
“सम्मत हूँ। मुझे समाधि अवस्था में ले जाने के लिए धन्यवाद। किन्तु मेरा प्रश्न अभी भी अनुत्तरित है।” वफ़ाई ने प्रशनार्थ द्रष्टि से जीत को देखा।
“वह क्या है?”
“तुमने यह कच्छ की मरुभूमि को क्यों पसंद किया?” वफ़ाई ने प्रश्न दोहरा दिया।
“ओह, मैंने इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया, है ना?”
“बिलकुल नहीं दिया।” वफ़ाई उत्सुक हो गई।
“किसी तात्पर्य से मैंने उतर नहीं दिया। पुन: उचित समय की प्रतीक्षा करनी होगी, वफ़ाई।”
वफ़ाई ने आग्रह नहीं किया, केवल स्मित दिया।
“जीत, यहाँ इस मरुभूमि में आने के बाद की यात्रा के विषय में कुछ कहो। कैसा रहा यह समय? तुमने क्या किया, कैसे किया, जीवन कैसे बिता, कितने चित्रों का सर्जन किया, यह कला कैसे सीखि? इस गहन और निर्जन मरुभूमि के विशेष अनुभव कैसे रहे? और जो भी तुम बताना चाहो, कहो।”
“अवश्य। समय समय पर सब बताता रहूँगा।”
“मुझे प्रतीक्षा रहेगी।” वफ़ाई ने स्मित दिया।
अब रेत की ऊष्मा से हिम पिघलने लगा, टूटने लगा। बिखरी रेत झरने के प्रवाह से एक साथ हो गई। वफ़ाई और जीत ने एक साथ एक दूसरे की तरफ हाथ बढ़ाए, एक साथ स्वीकार किए। दोनों के अधरों पर स्मित था। एक बड़ा सा काला बादल गगन में छा गया, सूरज को अपने आँचल में छुपा ले गया।

/*/*/*/*/*/

सूर्य अस्त होने को दौड़ रहा था। संध्या ने धरती पर प्रवेश कर लिया था। वफ़ाई ने गगन की तरफ देखा। उसे मन हुआ कि वह पंखी बन कर गगन में उड़ने लगे, मरुभूमि से कहीं दूर पर्वत पर चली जाय। वह उड़ने लगी, ऊपर, ऊपर खूब उपर; बादलों को स्पर्श करने लगी, गगन के खालीपन को अनुभव करने लगी। तारे उसके आसपास थे तो चन्द्रमाँ निकट था। उसने चंद्रमा को पकड़ना चाहा, दोनों हाथ फैलाये किन्तु चंद्रमा को पकड़ न सकी।

“चंद्रमा, मैं तुम्हें अपने आलिंगन में लेना चाहती हूँ, किन्तु जितनी भी बार मैंने मेरे हाथ फैलाये, तुम थोड़ा पीछे हट जाते हो। और मेरे हाथ से निकल जाते हो।”

पंखीयों के कलरव ने वफ़ाई के विचारों को रोका। वह पंखीयों के समीप गई, जीत उनके साथ खेल रहा था। वह भी जीत के साथ मिलकर पंखीयों के साथ खेलने लगी।

थोड़ा समय व्यतीत हो गया। सूर्य अस्त हो गया। रात्रि का आगमन होने लगा। चन्द्र अभी निकला नहीं था, रात्रि अंधकार भरी थी। अंधकार होते ही सभी पंखी एक एक करके उड़ गए। वफ़ाई और जीत ही रह गए। अब वह पंखीयों के साथ नहीं किन्तु एक दूसरे के साथ खेल रहे थे। दोनों बालक बन गए थे और खेल का आनंद ले रहे थे।

“जीत, एक लंबे समय के पश्चात मैं ने बालक की भांति खेल खेला।” वफ़ाई प्रसन्न थी, “कितने मधुर क्षण है यह?”

जीत ने वफ़ाई को देखा, स्मित दिया, और कक्ष में चला गया। वफ़ाई भी अंदर गई। मौन रहकर ही दोनों ने भोजन बनाया और खाया भी।

गहन काली रात्रि अब काली नहीं थी। चाँदनी ने गगन को तेजोमय श्वेत रंग में ढाल दिया था। रेत के मैदान चमक रहे थे।

जीत मरुभूमि कीचाँदनी भरी रात्री को निहार रहा था। वफ़ाई जीत को देखते मन ही मन बोली, ‘जीत, तुम सदैव मरुभूमि की रात्री को इसी प्रकार देखते हो, रा त्रि काली हो या श्वेत? मैंने काली तथा चाँदनी रात्रि में पर्व त को देखा है किन्तु मरुभूमि की ऐसी निशा कभी नहीं देखि। पिछले पाँच दिनों से मैं मरुभूमि में थी किन्तु ऐसी रात्रि का दर्शन....।’

‘कल रात्रि तो मैं सेना के संरक्ष ण में थी। वह रात्रि काली थी। गगन में कहीं धवल ज्योत्स्ना अवश्य रही होगी किन्तु मैं उसे नहीं देख पाई। मुझे उस रात्रि को भुला देना चाहिए। मैं इसे मेरे मन से ही निरस्त कर देती हूँ। उस के स्थान पर आज की उज्ज्वल रात्रि को भर देती हूँ।’ वफ़ाई स्वयं से बातें कर रही थी।

गरम रेत धीरे धीरे ठंड हो गई। मरुभूमि भी ठंडी हो गई। ठंडी मंद हवा बहने लगी। वफ़ाई एवं जीत अपनी अपनी चाँदनी रात्रि का आनंद उठा रहे थे। दोनों के गगन भिन्न भिन्न थे किन्तु आनंद एक समान था।

“जीत, मैं थक गई हूँ, सोना चाहती हूँ। मैं कहाँ सो सकती हूँ?” लंबे मौन के पश्चात बोले गए वफ़ाई के शब्दों ने मरुभूमि को तरं गित कर दिया।

“कक्ष में एक शय्या है, तुम उस पर सो जाओ।” जीत उसे कक्ष में ले गया।

“और तुम कहाँ पर सो...।”

“मेरी चिंता मत करो। मैं यहीं इस झूले पर सो जाऊंगा।” जीत ने अपना बीछौना लिया और बाहर निकल गया।

“जीत, रात्रि ठंडी है, और अधिक ठंडी हो जाएगी। यदि तुम्हें ठंड लगे तो तुम कक्ष में आ सकते हो।” वफ़ाई ने चिंता प्रकट की।

“प्रात: मिलते हैं। शुभ रात्रि।” जीत ने स्मित दिया। वफ़ाई ने परख लिया कि वह स्मित शुध्ध था, श्वेत चाँदनी की भांति शुध्ध।

/*/*/*/*/*/

नया प्रभात धरती पर प्रवेश कर रहा था। पंखी मधुर कलरव कर रहे थे, प्रभात के गीत गा रहे थे, उत्साह से भरे थे। अपने पंखों को जागृत कर रहे थे। वह उड़ने के लिए और मरुभूमि के गगन में खो जाने के लिए अधीर थे। प्रति दिन की भांति अनंत और गहन गगन उसे आमंत्रित कर रहा था, उन सभी का आव्हान कर रहा था, चुनौती दे रहा था।

प्रति दिन गगन पंखीयों के पंख को चुनौती देता था और पंखी उसे स्वीकार करते थे। प्रत्येक नया दिवस नयी चुनौती लेकर आता था किन्तु पंखीयों ने कभी हार नहीं मानी। वह ऊंचा, और ऊंचा उड़ते रहते थे। गगन उससे भी ऊपर उठता था और इन पंखीयों के लिए नयी ऊंचाई खोल देता था। गगन और पंखी यह खेल प्रतिदिन खेलते थे, खेल का पूर्ण आनंद लेते थे।

पंखीयों कीसारी गतिविधि देखते देखते वफ़ाई भी पंखी बन गई। वह भी गगन में अनत ऊंचाई तक उड़ना चाहने लगी। पंखीयों के पंख की भांति वफ़ाई ने अपने दोनों हाथ खोल दिये, गगन की तरफ देखने लगी। गगन उसे आमंत्रित करने लगा- आओ और मेरी गहनता का अनुभव करो।

वफ़ाई ने गगन को स्मित दिया, दोनों हाथ से आलिंगन किया।
दिशाओं में अभी भी थोड़ा अंधेरा था, सूरज अभी निकला नहीं था और रात्रि आने वाले प्रभात से अपने अस्तित्व का संघर्ष कर रही थी। अस्त होते चंद्र की ज्योत्स्ना भी थी जो अब धुंधली पड गई थी। अंधकार एवं प्रकाश का अनूठा संयोजन था जो गगन में मनोरम्य द्रश्य बना रहा था। वफ़ाई उस सौन्दर्य को मन भर के पी रही थी।
“यह सुंदर क्षणों को केमरे में कैद कर लेना चाहिए अथवा केनवास पर चित्रित कर लेना चाहिए।” वफ़ाई ने स्वयं से बात की। वह केमरा लेने के लिए भागी किन्तु दो तीन पदों से अधिक नहीं जा पाई। उसकी आँखों ने एक द्रश्य देख लिया था।
वह जीत था, जो उषा काल के इन अद्भुत क्षणों को केनवास पर उतार रहा था। वफ़ाई ने केनवास को देखा। उसे विस्मय हुआ। अभी अभी गगन को जिस रूप में उसकी आँखों ने देखा था वही गगन केनवास पर भी उतर आया था। जीत ने पुन: कोई जादू कर दिया था। वह आश्चर्य से, मूर्ति की भांति स्थिर हो गई, उसे देखती रह गई, देर तक।
वफ़ाई नि:शब्द थी, प्रसन्न थी, दुविधा में भी थी। उन क्षणों को सदा के लिए मन में कैद करने की उसकी इच्छा पूर्ण हो गई थी। उस के मन में प्रश्न उठा, ‘ क्या जीत मेरे मन को, मन की बात को पढ़ लेता है? मेरी इच्छाओं को जान लेता है? और मैं उसे कहूँ उससे पहले ही वह पूरी भी कर देता है?’
“वफ़ाई, गगन को देखते रहो। यह गगन तुमसे छल कर देगा और क्षण में द्रश्य बदल देगा। फिर तुम इन क्षणों को सदा के लिए चूक जाओगी। यह चित्र, यह केनवास यहीं रहने वाले हैं जो कभी छल नहीं करेंगे। तो चित्र की तरफ अभी मत देखो, वास्तविक गगन के सौन्दर्य को देखते रहो।” जीत ने वफ़ाई को कहा।
जीत के शब्द सुनकर वफ़ाई अचंभित रह गई।
“किन्तु, यह...।” वफ़ाई कुछ कहना चाहती थी किन्तु जीत ने उसे रोका, “बातें, दलीलें, तर्क, इन सब के लिए पूरा दिवस पड़ा है। किन्तु गगन का अनुभव करने के लिए यही क्षण है हमारे पास। गगन के सिवा सब कुछ भूल जाओ।”
‘यह मरुभूमि की शुष्कता के बीच भी इस व्यक्ति में कितना जीवन भरा है?’ वफ़ाई सोचती रही। उसने कुछ नहीं कहा, प्रभात के उन क्षणों को अनुभव करती रही, अनुभूति लेती रही।
जब गगन ने अपना रूप बदल लिया तो वफ़ाई का सम्मोहन भी टूटा।
सूरज मरुभूमि के व्योम में प्रवेश कर चुका था। वफ़ाई और जीत के हाथों में गरम दूध के प्याले थे। जीत चित्र के समीप खड़ा था तो वफ़ाई झूले पर थी।
“जीत, यह सब तुम कैसे कर लेते हो?” वफ़ाई ने शांति का भंग किया। जीत ने कोई प्रतिभाव नहीं दिया। वफ़ाई अपने प्रश्न का उत्तर चाहती थी किन्तु पाँच मीनट तक जीत ने उत्तर नहीं दिया। उसने झूला छोड़ दिया और जीत के समीप गई।
“जीत, मैंने ध्यान दिया है कि तुम मेरे मन और मेरे विचारों को पढ़ लेते हो। तुम मेरी मनषा को भी पढ़ लेते। इतना ही नहीं, मैं तुम्हें कहूँ उससे पहले तुम उसे पूरा भी कर देते हो। क्या यह बात सत्य है? अथवा यह मेरा भ्रम है?” वफ़ाई ने अनिश्चित मन से जीत को देखा।
“भ्रम भी हो सकता है, संयोग भी। सत्य क्या है मैं नहीं जानता।” जीत ने स्मित दिया।
“मान लेती हूँ तुम्हारी बात, किन्तु कुछ तो है, अवश्य है जो...।”
“वफ़ाई, एक लंबे समय से मैंने वर्तमानपत्र भी नहीं पढ़ा। मैं यहा लंबे समय से रहता हूँ। मुझे संदेह है कि मैं अक्षरों को जानता भी हूँ अथवा नहीं। हो सकता है मैं उसे भूल भी गया हूँ। हो सकता है मैं केनवास पर लिखे शब्दों और वाक्यों को भी पढ़ न सकूँ। तो किसी का मन, किसी का विचार किसी के मुख के भाव, इन सब को मैं कैसे पढ़ सकता हूँ?”
“किन्तु यह हूआ है, अभी अभी।”
“कैसे हुआ?”
“उषा काल में गगन के रंगों को देखकर मेरी मनषा हुई कि मैं इन क्षणों को केमरे में अंकित कर लूँ, सदा के लिए। और संयोग से तुम उसी द्रश्य को चित्रित कर रहे थे।”
“यह कोई चमत्कार नहीं था। मैं सदैव प्रभात अथवा कहो प्रभात से पूर्व ही नींद त्याग देता हूँ और चित्र बनाता रहता हूँ। मेरे लिए यह सहज है, स्वाभाविक है। किन्तु मुझे प्रसन्नता हुई कि मेरे यह चित्र ने तुम्हारी मनषा को पूर्ण कर दिया।” जीत ने पुन: स्मित दिया।
“ठीक है, चलो एक खेल खेलते हैं। क्या इसकी अनुमति है?” वफ़ाई ने घातक स्मित दिया।
“अवश्य, किन्तु मैं तेज दौड़ नहीं सकता। तो खेल कुछ...।”
“निश्चिंत रहो, जीत। यह खेल शारीरिक नहीं किन्तु मानसिक है।”
“तो ठीक है।”
वफ़ाई जीत के समीप गई और उसकी आँखों में देखते हुए कहा, “मेरी तरफ देखो, मेरी आँखों में देखो और उसे पढ़ने का प्रयास करो। कहो कि तुमने क्या देखा।”
जीत, वफ़ाई के मुख एवं आँखों को देखने लगा। कुछ क्षण वह देखता रहा, फिर आँखें हटा ली। वह अधिक समय तक उसे देख नहीं सका। वह थोड़े दूर चला गया।

“तुमने शीघ्र ही खेल पूर्ण कर दिया?” वफ़ाई ने व्यंग में कहा, जीत ने कोई प्रतिभाव नहीं दिया।
“जीत, क्या पढ़ पाये तुम?” वफ़ाई ने सीधे ही पूछा।
“मैंने पढ़ा कि तुम्हें कोई तीव्र इच्छा है और उसे तुम इसी क्षण पूरा करना चाहती हो।”
“सम्पूर्ण सत्य कहा तुमने, जीत। अब यह बताओ कि वह इच्छा क्या है।”
“यही कि तुम अपनी सारी तस्वीरें वापिस चाहती हो और वह मिलते ही यहाँ से भाग जाना चाहती हो।” जीत ने वफ़ाई की तरफ देखा। वफ़ाई ने अपेक्षा भरा स्मित किया।
“तो मेरी इच्छा पूर्ण करो, जीत।” वफ़ाई ने कहा।
“अर्थात मैं तुम्हें वह दे दूँ।”
“हाँ, अवश्य। मुझे वह लौटा दो, जीत।” वफ़ाई ने आशा भरा हाथ बढाया। जीत उस हाथ को और वफ़ाई को वैसे ही छोड़कर चित्र के समीप चला गया।
वफ़ाई जान गई कि उसकी इच्छा की उपेक्षा की गई है, तिरस्कार की गई है। फिर भी आशा खोये बिना फिर से अरज करने लगी, “जीत लौटा दो ना।”
जीत वफ़ाई के खूब निकट जाकर बोला, “वास्तव में उसे वापिस चाहती हो?”
“हाँ, मुझे वह सब लौटा दो।”
“उसके लिए तुम्हें एक काम करना होगा।”
“मैं कुछ भी करने को तैयार हूँ, किन्तु वह मुझे लौटा दो।” वफ़ाई अधीर हो गई।
“शांत हो जाओ। प्रथम ध्यान से सुनो फिर ...।”
“जीत, क्या आशय है तुम्हारा? क्या कुछ दुराशय तो नहीं...।” वफ़ाई सावध हो गई।
“सभी दुराशय क्षति कारक नहीं होते, वफ़ाई।”
“जीत, स्पष्ट कहो। तुम क्या चाहते हो?”
“मेरी बात सीधी एवं सरल है, कोई जटिल नहीं।”
“मैं उसे जानने को उत्सुक हूँ। शीघ्र ही बता दो।”
“यदि तुम अपनी सभी तस्वीरें वापिस चाहती हो तो तुम्हें चित्रकारी सिखनी होगी। जैसे मैं चित्र बनाता हूँ वैसे तुम बना सकोगी उस दिन मैं सब कुछ लौटा दूंगा।”

19

“यह कोई सरल बात नहीं है, जीत। मुझे चित्र बनाना बिलकुल नहीं आता। यह मेरे लिए संभव..।” वफ़ाई ने बात अधूरी छोड़ दी। जीत ने कोई प्रतिभाव नहीं दिये।
“जीत, चित्रकारी ही क्यों? दूसरा कुछ क्यों नहीं? मुझे तस्वीरें लेना आता है, वह पर्याप्त है।” वफ़ाई ने विरोध प्रकट किया।
“चित्र बनाना और तस्वीरें लेना भिन्न बात है।”
“मैं ऐसा नहीं मानती। दोनों एक ही है और दोनों के परिणाम भी समान ही है। अत: चित्रकारी सीखने की कोई अवश्यकता नहीं है।”
“दोनों समान कैसे हैं, बता सकती हो?”
“जब हम किसी द्रुश्य, वस्तु, व्यक्ति, स्थान अथवा क्षण को देखते हैं तब उसे सदा के लिए अंकित कर लेना चाहते हैं। ठीक है ना?” वफ़ाई ने जीत को निहारा जो वफ़ाई को देख रहा था, ध्यान पूर्वक सुन रहा था।
जीत ने पलकों से वफ़ाई की बात का समर्थन किया।
“तो उसे सदा के लिए स्मरण में रखने के भिन्न भिन्न उपाय है।”
“जैसे?”
“कवि शब्द का प्रयोग करते हैं और उस पर सुंदर कविता रचते हैं। गीतकार गीत लिखता है, तो लेखक कहानी के माध्यम से, संगीतकार संगीत की धुन से, नृत्यकार नृत्य से, शिल्पकार शिल्प बनाकर, फ़िल्मकार चित्रपट पर द्रश्य सजाकर, उसे अभिव्यक्त करता है। उसी प्रकार चित्रकार चित्र बनाकर उसे व्यकत कर देता है। और तसवीरकार केमरे के लेंस के माध्यम से उन को अंकित कर लेता है।
अंतत: हम सब समान कार्य करते हैं। केवल माध्यम भिन्न भिन्न होता है। एक ही भाव को हम विभिन्न मंच से भिन्न भिन्न रूप में विश्व के समक्ष रखते हैं। किन्तु उद्देश्य समान होता है, परिणाम भी समान ही होता है।” वफ़ाई ने डर्ट तर्क प्रस्तुत किया।
“वफ़ाई, मैं तुम्हारे इस तर्क से सहमत हूँ। किन्तु, इन सभी में और तस्वीर लेने में एक मूलभूत तफ़ावत है जो तुम भूल रही हो।” जीत

ने अपना पक्ष रखा।
“यह सब कला के भिन्न भिन्न रूप ही हैं तो भिन्न ही होंगे। यह समान नहीं हो सकते। जीत, तुम जानते हो कि विविधता ही सौन्दर्य है। क्ला के यह रूप हमें आकृष्ट करते हैं क्यों कि वह सब भिन्न है। यही सुंदरता है, यही विस्मय है, और हमारी रुचि का कारण भी यही है। यह सब कला है।”
“तस्वीर लेना तो कला नहीं है।”
“जीत, एक और बात। प्रत्येक कलाकार विशेष होता है, प्रत्येक कला विशेष होती है। दो चित्रकार अथवा दो सर्जक भी भिन्न होते हैं, विशेष होते हैं। यदि दोनों एक सी कला को प्रस्तुत करेंगे तो भी वह भिन्न भिन्न रूप से और विशेष रूप से करेंगे। जैसे सब कुछ एक दूसरे से भिन्न और विशेष है, वैसे ही तस्वीर कला भी अन्य कला से भिन्न है।”
“किन्तु तस्वीर कला…।”
“जीत, दो तसवीरकार भी भिन्न है, विशेष है। यदि एक ही क्षण पर एक ही द्रश्य की तस्वीर को एक ही कोने से मैं और तुम लेते हैं तो भी दोनों भिन्न सर्जन होंगे। और तुम कहते हो…।” वफ़ाई अविरत रूप से बोलती रही।
“मैंने सुना है कि बोलती हुई स्त्री को कोई रोक नहीं सकता। लगता है सच ही सुना है।” जीत ने ठहाका लगाया। वफ़ाई ने उसका साथ दिया। कुछ क्षण दोनों हँसते रहे फिर सब कुछ शांत हो गया, मौन हो गया, कुछ अंतराल के लिए।
“वफ़ाई, तुम कुछ मुद्दों पर बात कर रही थी।” जीत ने टूटी हुई बात को जोड़ने का प्रयास किया। किन्तु वफ़ाई शांत रही, बात करने के कोई संकेत नहीं दिये।
“मैंने यह भी सुना है कि लड़की के मौन को भी आप तोड़ नहीं सकते।” जीत फिर से हंसने लगा।
“व्यंग अच्छा कर लेते हो, जीत।” वफ़ाई भी हंसने लगी, मौन टूट गया।
“तो तुम फिर से बात करोगी?”
“अवश्य। मैं बात करना चाहती हूँ, मेरा पक्ष रखना चाहती हूँ। और…।”
“और वह सब तस्वीरें भी।”
“हाँ जीत, अब यह खुल्ला रहस्य है। मैं मेरे आशय को छुपाना नहीं चाहती। मैं तस्वीर की कला जानती हूँ और अब कोई नई कला नहीं सीखना चाहती हूँ। बस, मुझे मेरी सारी तस्वीरें लौटा दो।” वफ़ाई ने अपने आशय को स्पष्ट कर दिया।
“वफ़ाई, तस्वीरें लेना कोई कला नहीं है …।” जीत बात पूरी कह ना सका।
“मुझे लगता है कि कला के विषय में तुम्हारा ज्ञान मर्यादित है। पहले अपना ज्ञान बढ़ाओ फिर तर्क करना।” वफ़ाई ने कहा।
“ओह, अवश्य। किन्तु मैंने यह भी सुना है कि युवतियाँ कभी पूरी बात, पूरे शब्द अथवा पूरा विचार सुनती ही नहीं और तर्क करने लगती है, पक्ष विपक्ष में बोलने लगती है। लगता है यह भी सच ही कहा है किसी ने। पहले पूरा सुन तो लो।” जीत ने स्मित दिया।
“तूम कहना क्या चाहते हो? तुम्हारे पूरे शब्द, पूरे विचार है क्या? चलो तुम उसे पूरा प्रस्तुत कर दो, तब तक मैं सुनती रहूँगी और कुछ नहीं बोलुंगी।” वफ़ाई ने व्यंग किया। उसने आँखें बंध कर ली और जीत के समीप खड़ी हो गई।
जीत ने वफ़ाई के सान्निध्य और सामीप्य को अनुभव किया। बंध आँखें और मीठे रोष से भरी वफ़ाई की वह मुद्रा मनोहर थी। जीत उसे मौन रहकर कुछ क्षण निहारता रहा। वह अपने पक्ष में दलील करना भूल गया। वह नि:शब्द रहा। लंबे समय तक वफ़ाई ने कुछ नहीं सुना तो उसने आँखें खोल दी।
जीत उसे उत्कट भाव से देख रहा था। वफ़ाई को वह विचित्र सा लगा। वह जीत की द्रष्टि के भय से दूर जा खड़ी हो गई। जीत अभी भी वहीं देख रहा था जहां कुछ क्षण पहले वफ़ाई खड़ी थी। वफ़ाई जीत की द्रष्टि से बाहर थी। उसने गहरी सांस ली।
“जीत कोई गहन विचार अथवा ध्यानमग्न है और किसी एक बिन्दु पर केन्द्रित है। और वह बिन्दु मैं नहीं हूँ।”
“जीत, जीत। तुम कहाँ हो?” वफ़ाई चिल्लाई। जीत का ध्यान भंग हुआ और वफ़ाई को निहारने लगा।
“जीत, तुम तस्वीर कला पर कुछ कह रहे थे। क्या कह रहे थे? कहो।” वफ़ाई ने जीत को जागृत किया।
“हाँ। मेरा मत है कि तसवीर खींचने की कला के सिवा अन्य सभी कलाओं में कलाकार उसके सर्जन में जुड़ा रहता है, उसमें अपना हस्तक्षेप करता है। जब तस्वीर खींचते हैं तो कलाकार वहाँ नहीं होता है। केमरे के काँच ही सब काम करते हैं, तुम तो केवल बटन दबाते हो, बाकी सब काम केमरा ही कर लेता है। तस्वीर के सर्जन में तुम्हारी कोई भूमिका अथवा तुम्हारे भाव का कोई खास महत्व नहीं रहता। यहाँ तुम केवल एक साधन के माध्यम से तस्वीर खींचते हो, कोई कला का सर्जन नहीं करते हो। तुम्हारी इसमे क्या भागीदारी? तुम्हारी कल्पना के रंग कहाँ इसमें?
अन्य सभी कला में विचार से लेकर कला के सर्जन की एक प्रक्रिया होती है। इस प्रक्रिया में कलाकार स्वयं को जोड़ता है और सारी प्रक्रिया का हिस्सा बना रहता है। उसका जुड़ना ही मुख्य बात है। जिस स्तर पर कलाकार अपने सर्जन से जुड़ता है वह स्तर ही उस सर्जन को साधारण से विशेष बनाता है।” जीत ने कहा।
वफ़ाई ने उसे पूरे ध्यान से सुना।
“किसी युवति का मौन इस संसार का सबसे सुंदर अनुभव है।” जीत धीरे से बोला। वफ़ाई ने वह शब्द भी सुने किन्तु मौन ही रही।
“मैंने अपनी बात कह दी है, सम्पन्न कर ली है। मैं तुम्हारे धैर्य की प्रशंसा करता हूँ। तुम अब बोल सकती हो।” जीत ने स्मित दिया।

“मैं सहमत हूँ कि तस्वीरें खींचने में तसवीरकार की भूमिका मर्यादित रहती है। फिर भी मेरा द्रढ़ मन्तव्य है कि वह कला है, कला ही है। तस्वीरें लेना, क्षणों को अंकित करना होता है। अत: यह क्षणों का खेल होता है। कला की इस प्रक्रिया में अल्प क्षणों के लिए ही सही पर कलाकार की भूमिका है। अल्प भी सुंदर होता है।”
“अपनी भूमिका का विस्तार बढ़ाओ।”
“वह कैसे?”
“अल्प से व्यापक हो जाओ, चित्रकारी सीख लो। इसके दो लाभ होंगे। एक, नई कला सीखने को मिलेगी। दूसरा, तुम्हें तुम्हारी तस्वीरें मैं लौटा दूंगा। विशेष में किसी सर्जन का संतोष एवं आनंद भी मिलेगा।”
“विचार तो सुंदर है। किन्तु मैंने कभी चित्र नहीं रचे, ना ही कभी किसी चित्र में रंग भरे। एक सीधी रेखा तक नहीं होती मुझसे। मेरे लिए यह चित्रकला सीखना असंभव है।” वफ़ाई ने कहा।
“तो क्या? मैं यह सब तुम्हें सीखा दूंगा, मेरा विश्वास करो।” जीत ने आश्वस्त किया।
“धन्यवाद, जीत। किन्तु यह प्रक्रिया अधिक लंबी होगी और मैं यहाँ लंबे समय तक रह नहीं सकती। कृपा करके मुझे छोड़ दो, मुक्त कर दो।”
“कितने दिनों तक तुम यहाँ हो?”
“एक अथवा दो दिनों तक।”
“किन्तु पुर्णिमा को अभी बाईस दिन बाकी है।”
“मैं पुर्णिमा तक प्रतीक्षा नहीं कर सकती। मुझे शीघ्रता से यहाँ से चले जाना है। मैं यहाँ से भाग जाना चाहती हु, पर्वतों में लौट जाना चाहती हूँ। जीत, बस तुम मुझे मेरी तस्वीरें लौटा दो।”
“तो फिर तुम उसे भूल जाओ। मैं तुम्हें वह कभी नहीं लौटाऊंगा।” जीत ने कह दिया।
वफ़ाइं क्रोधित हो गई और कक्ष में दौड़ गई। बाकी का समय मौन हो गया। कोई किसी से कुछ नहीं बोला।

***

20

वफ़ाई जागी, घड़ी में समय देखा। रात के तीन बज कर अड़तालीस मिनिट। वह उठ खड़ी ऊई। कक्ष से बाहर निकली।
झूले पर जीत गहरी नींद में सोया था। “जीत, स्वप्नों के नगर में हो क्या?” वफ़ाई मन ही मन बोली।
रात शीतल थी। देर रात्रि के चाँद की श्वेत चाँदनी से गगन तेजोमय था। दो तीन बादल गगन में घूम रहे थे।
ठंडी पवन वफ़ाई को स्पर्श कर गई। वफ़ाई ने थोड़ा कंपन अनुभव किया। उसने दुपट्टे को लपेटा और कक्ष के अंदर चली गई।
वफ़ाई ने जीत का लेपटोप चालू किया। जीत ने वफ़ाई के केमरे से जो भी तस्वीरें ले ली थी वह सारी तस्वीरें वफ़ाई ने पेन ड्राइव में डाल डी। लेपटॉप बंध कर दिया।
शीघ्रता से अपना सारा सामान उठाया और धीरे से कक्ष से बाहर आई। जीत अभी भी झूले पर गहरी नींद में था। वफ़ाई के अधरों पर एक विशेष स्मित आ गया। सामान लेकर वह घर से बाहर की तरफ जाने लगी।
वफ़ाई वहाँ से भाग रही थी। जीत की तरफ अंतिम द्रष्टि करते बोली, “क्षमा करें मित्र। मैंने चोरी की है और मैं तुम्हें इस मरुभूमि में अकेले छोडकर जा रही हूँ। धन्यवाद मेरी सहायता करने के लिए। तुम अच्छे हो, जीत।”
उसने केनवास के पास तूलिका के नीचे विजिटिंग कार्ड रख दिया। केनवास की तरफ एक द्रष्टि डाली। उस पर एक अधूरा चित्र था जो किसी भी द्रश्य को अभिव्यक्त नहीं कर रहा था।
केनवास को छोड़ कर वफ़ाई घर से बाहर निकल गई। विजय और आनंद का स्मित उसके अधरों पर था।
“जीवन के एक प्रकरण को यहीं समाप्त कर रही हूँ, जो मैं कभी पुन: जीना नहीं चाहुंगी।” वह निकल पड़ी।
वफ़ाई की जीप कुछ दूरी पर थी। हाथ में सामान लिए वह जीप की तरफ भागी। भागते समय कुछ उसके हाथ से गिर गया किन्तु उसे उसका ध्यान नहीं रहा। जीप के समीप पहोंचते ही दरवाजा खोल कर सारा समान जीप में पीछे डाल दिया और अंदर घुस गई। जीप चालू करने के लिए वफ़ाई चाबी ढूँढने लगी पर वह उसे नहीं मिली। वफ़ाई ने उसे बटुआ, थेला, सामान तथा जेब में ढूंढा किन्तु उसे वह नहीं मिली।
जीप का द्वार बंध कर वफ़ाई कुछ क्षण शांत बैठी रही। आँखें बंध करके चाबी कहाँ हो सकती है उस पर विचार करने लगी।
“ठक ... ठक...।” अचानक किसी ने जीप के द्वार को ठोका।

“अल्ला...ह....।” वफ़ाई भय से चिखी। उसके चित्कार से मरुभूमि की शांति भंग हो गई। कुछ पंखी रोने लगे। कुछ ने पंख फड़फड़ाए और शांत हो गए। भयावह हवा बह गई। कुछ क्षणों पश्चात वफ़ाई ने साहस करके जीप से बाहर देखा। भय अभी भी वफ़ाई की आँखों में था।
वफ़ाई कुछ भी समज पाये उससे पहले जीप का द्वार बाहर से खुला और चाबी के साथ एक हाथ अंदर आ गया। वफ़ाई इतनी भयभीत थी कि उसने आँखें बंध कर ली, साँसे रोक ली और मूर्ति की भांति स्थिर हो गई।
“वफ़ाई, तुम्हारी जीप की चाबी। इसे ले लो और यहाँ से चले जाओ।” जीत के शब्द वफ़ाई के कानों में पड़े। वफ़ाई अभी भी भयग्रस्त थी। उसने एक आँख खोलकर संदेह से जीत की तरफ देखा। वह जीत ही था।
वफ़ाई के लिए जीत का वहाँ होना भय की बात थी भी और नहीं भी। वफ़ाई ने दोनों आँखें खोल दी। जीत जीप के बाहर हाथ में चाबी लिए, मुख पर सौम्य स्मित लिए खड़ा था।
“वफ़ाई, शांत हो जाओ।” जीत ने सस्मित कहा। वफ़ाई शांत होने लगी, भय से मुक्त होने लगी। वफ़ाई गहरी सांस लेने लगी। वह हाँफ रही थी। जीत ने पानी की एक बोतल खोल कर वफ़ाई को दी। वफ़ाई एक ही घूंट में पानी पी गई।
अनेक क्षण व्यतीत हो गए, बिना किसी क्रिया- प्रतिक्रिया के। अंतत: वफ़ाई शांत हो गई। भय ओझल हो गया, साँसे सामान्य हो गई।
जीत, वफ़ाई को निहार रहा था। वफ़ाई ने जीत को देखा। वफ़ाई के मुख पर अनेक सवाल थे। जीत उसके उत्तर देने को तैयार था किन्तु वह वफ़ाई के स्वस्थ होने की प्रतीक्षा करता रहा, शांति से।
उस क्षण गगन शांत था। दिशाएँ शांत थी। पवन शांत था। चंद्रमा तथा चाँदनी शांत थी। मरुभूमि शांत थी। समय का वह क्षण शांत था। जीत शांत था। वफ़ाई शांत थी। इन सभी में मौन की धुन मधुर संगीत सुना रही थी।
“वफ़ाई, एक लंबा मार्ग तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है। वास्तव में यह अधिक लंबा मार्ग है। समय ने अपनी यात्रा प्रारम्भ कर दी है। तुम्हें भी अपनी यात्रा प्रारम्भ कर देनी चाहिए। चलो यात्रा पर निकल पड़ो।” जीत ने चाबी वफ़ाई के हाथों में रख दी और दो तीन पद पीछे हट गया।
वफ़ाई को कुछ भी समज नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है और उसे क्या करना चाहिए। अनिर्णायक स्थिति में ही वफ़ाई ने जीत से चाबी ले ली और जीप चालू कर दी।
देर रात्रि की शांति से भरे मरुभूमि के मार्ग पर वफ़ाई की जीप चलने लगी।
जीप चलती रही, वफ़ाई रोती रही। अनायास ही आँखों से अश्रु बहने लगे। खारा पानी वफ़ाई के गालों पर बहने लगा। जीप अपने मार्ग पर बह रही थी।
जीत, आँखों से ओझल होती हुई जीप को देखता रहा। खाली मार्ग को देर तक निहारने के पश्चात उसने गगन की तरफ देखा। गगन का चंद्रमा अकेला था। सारे बादल चले गए थे। गगन खाली था।
जीत की भांति चंद्रमा भी फिर से अकेला हो गया। जीत चंद्रमा की तरफ झुका, वंदन किया और खाली गगन को स्मित देकर उसे निहारता रहा। मरुभूमि की रात्री में जीत के एकांत का एक मात्र साथी था चंद्रमा।
चंद्रमा ने भी जीत के स्मित का उत्तर स्मित से दिया। दो अकेले एक दुसरे से स्मित कर रहे थे।

***

21

चाँदनी के प्रकाश में वफ़ाई मार्ग पर बढ़े जा रही थी। मार्ग शांत और निर्जन था। केवल चलती जीप की ध्वनि ही वहाँ थी।
‘यह कैसी मरुभूमि थी जहां दिवस के प्रकाश में भी मनुष्य नहीं मिलता और रात्रि अधिक निर्जन हो जाती है।’ वफाई ने सोचा।
उस समय ना रात्री थी ना दिवस था। रात्रि अपने अंतिम क्षणों में थी तो दिवस अभी नींद से जागा नहीं था। जीप धीरे धीरे चल रही थी। अश्रु भी वफ़ाई की आँखों से गालों तक की यात्रा धीरे धीरे कर रहे थे। जीप अविरत चल रही थी किन्तु अश्रु रुक रुक कर बह रहे थे।
वफ़ाई जीत को छोड़ कर भाग चुकी थी। दूर, अधिक दूर जा रही थी। उसका शरीर अवश्य ही जीत से दूर जा रहा था किन्तु मन और हृदय जीत के समीप, अधिक समीप जा रहा था। उसके विचारों मे जीत ही जीत छाया हुआ था। वफ़ाई अपने मन से, हृदय से जीत के साथ बीते क्षणों को मिटा देना चाहती थी किन्तु वह सफल नहीं हुई।
जीत के साथ बीते सभी क्षणों ने वफ़ाई के मन को घेर लिया।
‘वह प्रथम क्षण जब चित्राधार गिर गया था और जीत गिरे हुए सामान को उठा रहा था, मैंने जीत की तस्वीरें ली थी, जीत ने क्रोध

किया था। उसी जीत ने अभी अभी तो जीप की चाबी दी थी, हँसते हँसते।'
'हाँ, चाबी देते हुए वह स्मित कर रहा था। उसके मुख पर कोई क्रोध नहीं था। वह शांत था, स्वस्थ भी था। उसके मुख पर कोई प्रश्न नहीं था। उसके मन में प्रश्न अवश्य होंगे। फिर भी वह स्वस्थ था। उसने स्वयं मुझे भाग जाने की अनुमति दी थी।'
'यह जानते हुए कि मैंने उसके लेपटोप से सारी तस्वीरें चूरा ली थी, मैं उसे इस मरुभूमि में फिर से अकेला छोड़कर भाग रही थी, फिर भी, फिर भी जीत स्वस्थ था, सहज था, शांत था, स्वाभाविक था।'
'मेरे इस कार्य से वह जरा सा भी विचलित नहीं था। कोई इतना स्वस्थ और शांत कैसे रह सकता है। क्या कारण होगा?'
'मैं नहीं जानती।'
अश्रु की कुछ बूंदें आँखों से गिरकर जीप चला रहे वफ़ाई के हाथों पर गिरि। उसने गहरी सांस ली। अनायास ही उसके पैरों ने जीप को रोक दिया। सहसा जीप रुक गई। तीव्र चित्कार ने मरुभूमि की शांति को भंग कर दिया। उसने जीप बंध कर दी। वह बैठी रही, रोती रही।
वह अपने विचारों से संघर्ष करने लगी। एक तरफ वह जीत से दूर भाग जाना चाहती थी और उसमे सफल भी हो गई थी तो दूसरी तरफ ऐसे चोरों की भांति भाग जाने से उसका मन उसे दोषित मान रहा था। अपने ही विरोधी विचारों के बीच वह फंस गई। वह पुन: जीप चलाने लगी।
व फ़ाई के मोबाइल पर तीन चार संदेश आए। मोबाइल प्रकाशित हो उठा। वफ़ाई जीप चलाते चलाते ही उन संदेशों को पढ़ने लगी। सभी संदेश वफ़ाई के पति बशीर के थे। वह मन ही मन आनंदित हो गई। उसने उत्साह और अधीरता से संदेश पढ़ें। संदेशपढ़ते ही वफ़ाई क्षुब्ध हो गई। वफ़ाई ने तीव्रता से जीप की ब्रेक दबा दी। जीप रुक गई।
व फ़ाई ने बशीर के संदेशोंको पु न: पढ़ा। उस के मन में अब कोई संदेह नहीं रहा। सभी बातें स्पष्ट हो गई।
गहरी सांसें लेने लगी,वफ़ाई। बशीर के घात से आहत हो गई थी वफ़ाई। वह रोने लगी। कुछ क्षण तक अनराधार रोती रही। अनेक विचारों में स्वयं को खोती रही।
समय के कुछ टुकड़े व्यतीत हो गए, साथ में अश्रु की कई धाराएँ भी। धीरे धीरे वफ़ाई स्वस्थ होने लगी। उसे कुछ भी नहीं सुझा तो जीप चलाने लगी। जीप किसी अज्ञात दिशा में चलती रही, निरुद्देश।
"मैं कहाँ जारही हूँ? क्यों जा रही हूँ?"
"वफ़ाई, तुम अपने घर जा रही हो। हिम से आच्छादित पहाड़ों पर बसे तुम्हारे नगर जा रही हो। वही पहाड़, वही घाटियां, वही झरने, वही हिम, वही मौन, वही निर्जनता, वही लोग , वही बशीर.।"
"बशीर?"
"हाँ, बशीर वहाँ है। तुम वहीं तो जा रही थी। बशीर को मिलने।"
"नहीं, नहीं। अब बशीर वह बशीर नहीं रहा। मैं बशीर से नहीं मिलना चाहती, कभी नहीं। मैं मेरे घर लौटना नहीं चाहती।"
" वफ़ाई, कब तक नहीं जाओगी तुम अपने घर? मनुष्य सारा संसार घूम ले किन्तु लौट कर तो घर ही जाता है। तुम्हें भी तो घर...।"
"घर? कौन सा घर? मेरा वहाँ अब कोई घर नहीं है। मैं वहाँ नहीं जाना चाहती।"
"तो तुम कहाँ जाओगी? कहीं ना कहीं तो जाना ही होगा। अथवा सारा जीवन इसजीप को चलाती रहोगी, इसी तरह किसी अज्ञात मार्गों पर, अकेली।"
"मैं नहीं जानती। किन्तु मैं घर नहीं जाना चाहती।"
"तो कहाँ जाओगी?"
"तुम ही बताओ न, मैं कहाँ जाऊं?"
"मैं बताऊँ?"
"और नहीं तो क्या? तुम्हें ही बताना होगा। कहो।"
"मैं बता तो दूँ किन्तु तु म मानोगी नहीं।"
"तुम बताओ तो सही। मैं मान लूँगी।"
"तो तुम जीत के पास लौट जाओ।"
"तुम मूर्ख जैसी बात कर रही हो।"
"तो तुम जानो तुम्हें क्या करना है। मैं अब तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकती।"
"किन्तु मैं तो जीत को छोड़कर चोरों की भांति भाग आई हूँ।"
"तो?"
"कितनी कुरूप बात थी जीत की? मेरी ही तसवीरों को जो उसने छिन ली थी जिसे लेने के लिए मुझे चित्र कला सिखनी होगी! मुझे आदेश देनेवाला वह होता कौन है?"
"वह जीत, तुम्हारा मित्र जो है, वफ़ाई।"
"बड़ा विचित्र मित्र था वह। मैंने भाग कर ठीक ही किया। उसे यह दंड मिलना ही चाहिए।"

“जब हम किसी को अपने व्यवहार से दंडित करते हैं तब वास्तव में हम स्वयं को ही दंड देते हैं।”
“नहीं, ऐसा नहीं है। जीत को ही दंड दिया है मैंने।”
“क्या जीत दंडित हुआ है? अथवा तुम स्वयं को दंडित कर रही हो? तुम्हारे आने से पहले ही वह इस मरुभूमि में रह रहा है, अकेला ही। और तुम्हारे जाने के पश्चात भी वह यहीं रहेगा, अकेला। उसे कहाँ कोई दंड मिला? वफ़ाई, वास्तव में तुम ही दंडित हो गई हो, तुम्हारे इस कार्य से।”
“मैं कैसे दंडित हुई? मेरे पास खोने को कुछ भी नहीं था। वास्तव में जीत ने मुझे खो दिया है। तो दंड तो उसे ही मिला ना?”
“वफ़ाई, मरुभूमि के पास खोने को कुछ नहीं होता। हिम ही सदैव खोता रहता है।”
“क्या तात्पर्य है तुम्हारा?”
“मरुभूमि के पास केवल रेत ही होती है, और कुछ नहीं। जब कि हिम की परत के नीचे पानी होता है। हिम इस पानी को सदैव खोता रहता है, अपनी शीतलता को खोता है और अपने अस्तित्व को भी खो देता है। तूफान से पहले और तूफान के पश्चात भी रेत वैसी की वैसी ही रहती है।”
“मैं हिम सुंदरी हूँ अर्थात मैं ही पराजित होती रहती हूँ, यही तात्पर्य है ना तुम्हारा?”
“हाँ तुम पराजिता हो, तुम पराजिता हो...।” वफ़ाई के कानों में शब्द गूँजते रहे। उसने अपने दोनों कानों पर हाथ रख दिये और अपने ही शब्दों की प्रतिध्वनि को अनसुना करने लगी, विफल हो गई।
उसने आँखें बंध कर ली, गरदन को पीछे की तरफ झुकाया और जीप की कुर्सी पर लेट गई। कुछ ही क्षणों में वह गहरी निंद्रा में खो गई।
वफ़ाई जब जागी तब दिवस की आयु तीन घंटा हो चुकी थी। उसने अपने आप को मार्ग के एक कोने में पाया। सदा की भांति मार्ग निर्जन था। कल रात्रि जो हुआ और वह यहाँ तक कैसे आ गई वह सब घटनाएँ वफ़ाई याद करने लगी।
वफ़ाई पुन: रोने लगी। वह मनभर रोती रही। वह रुदन स्वाभाविक था, सहज था, शुध्ध था।
जब उसका रुदन सम्पन्न हुआ तब सब कुछ स्पष्ट था, उसके विचार भी।
वफ़ाई ने गहरी सांस ली, जीप चालू की और चल पड़ी। जीप उचित मार्ग पर जा रही थी। वफ़ाई उस मार्ग को जानती थी।
वफ़ाई स्मित करने लगी, गीत गाने लगी। उसने जीप के काँच खोल दिये। नई हवा जीप के अंदर प्रवेश कर गई। उसे लगा की पर्वत की हवा उसके साथ हो गई है और जीप मे साथ साथ यात्रा कर रही है। वह जीप चलाती रही, तेज गति से। उसे कहीं पहूँचने की शीघ्रता थी। निर्जन मार्ग अब व्यतीत हुए क्षणों से भरपूर था, किसी के साथ होने की अनुभूति से सभर था।

22

वफ़ाई के जाने के पश्चात जीत व्याकुल था। वह झूले पर बैठ गया। वफ़ाई के साथ व्यतीत क्षणों के स्मरण में खो गया। उसने एक एक क्षण को पकड़ना चाहा जो उसने वफ़ाई के साथ व्यतीत की थी। अपनी कल्पना में उसे पुन: जीने का प्रयास करने लगा, वह विफल रहा।
उसने झूला छोड़ दिया, यहाँ से वहाँ घूमता रहा। झूले से चित्राधार तक, वहाँ से कक्ष में, कक्ष से घर के पीछे तक और पुन: झूले तक। हार कर जीत ने वफ़ाई के स्मरणों को भूलना चाहा, वह पुन: विफल हो गया।
घर के प्रत्येक कोने में वफ़ाई की उपस्थिती थी। पवन की प्रत्येक लहर वफ़ाई की सुगंध से भरी थी। घर की प्रत्येक वस्तु को वफ़ाई ने अपना स्पर्श दिया था। अत: वह वफ़ाई के विचारों से मुक्त नहीं हो सका।
“वैसे तो तुम एक दो दिवस ही मेरे साथ रही हो किन्तु तुम्हारा स्मरण मेरे मन से जाता क्यों नहीं? तुम्हारे स्मरण के कारावास से मैं मुक्त क्यों नहीं हो पाता हूँ? तुम्हें भूल जाने के मेरे तमाम प्रयास विफल क्यों हो जाते हैं? वफ़ाई, तेरे स्मरण के सामने मैं पराजित हो गया हूँ। अब मैं तुम्हें तथा तुम्हारे स्मरणों को नहीं रोकूँगा। आ जाओ, मेरे हृदय में प्रवेश कर लो, बस आ जाओ इस में। मेरे हृदय का प्रत्येक कोना तुम्हारे लिए है। मेरी नसों में रक्त बनकर बहते रहो। मैं मैं ना रहूँ, मैं तुम बन जाऊं। मैं जीत से वफ़ाई बन जाऊं तब तक तुम मेरे में बसे रहो। मेरी नसों में विस्फोट कर दो, मुझे राख़ में मिला दो। मेरे अस्तित्व को नष्ट कर दो। मेरे में से नए व्यक्ति को जन्म दे दो। मुझे वफ़ाई बना दो। तुम्हें अनुमति है मुझे मिटा देने की। मैं विवश हूँ, मैं कुछ नहीं कर सकता।”
जीत स्वयम से विद्रोह करने लगा। वह स्वयम से पराजित हो गया।

अंतत: सारी शक्तियाँ जोड़कर वह केनवास के समीप गया।
“इस मरुभूमि में चंद्रमा के साथ साथ तुम ही मेरे साथी हो। जब भी एकांत का अनुभव होता है, जब भी किसी के साथ की मनसा करता हूं, तब तुम ही मेरे साथ होते हो। जब भी मेरे मन में कोई भाव जन्म लेते हैं, मैं तुम्हारे पास ही आता हूं, रंग और तूलिका के द्वारा मेरे मन के भावों को तुम पर लिख देता हूं।”
जीत केनवास के सामने था। उसने केनवास को स्मित दिया। केनवास ने जवाबी स्मित दिया। जीत सकारात्मक ऊर्जा से भर गया। गहरी सांस लेकर जीत शांत हो गया। भरा हुआ केनवास हटा दिया। नया, खाली, श्वेत केनवास लगा दिया। रंगों को घोलने लगा, तूलिका उठाई और श्वेत केनवास को रंग का पहला स्पर्श दिया। केनवास का कौमार्य भंग हो गया।
तूलिका केनवास पर वफ़ाई का चित्र अंकित करना चाहती थी, अनायास ही, अज्ञात मन से ही। तूलिका ने अनेक रंग भर दिये किन्तु वफ़ाई की तस्वीर बन नहीं रही थी। जीत ने यहाँ-वहाँ, ऊपर-नीचे, दायें-बाएँ, एक कोने से दुसरे कोने तक रंग भर दिया किन्तु वफ़ाई का चित्र नहीं बन पा रहा था। उस ने रंगों और आकृतियों को अनेक बार बदला किन्तु वफ़ाई का चित्र नहीं बना पाया।
“वफ़ाई मेरी हथेली से, सरकती रेत की भांति, सरक रही है। वफ़ाई को मुट्ठी में पकड़ने का प्रत्येक प्रयास विफल हो रहा है। मैं बारंबार प्रयास कर रहा हूँ किन्तु विफल हो रहा हूँ। वफ़ाई तुम मुझसे दूर निकल गई हो, इतनी दूर कि मैं अब तुम्हें केनवास पर भी उतार नहीं पा रहा हूँ। वफ़ाई।” जीत विचलित हो गया।
केनवास को छोड़ कर वह दूर खड़ा केनवास को निहारता रहा।
“एक यौवना का चित्र तो बन रहा है, किन्तु वह वफ़ाई नहीं है। किसी भी रूप में वह वफ़ाई नहीं है। कुछ बात तो है, कुछ तो ...।”
जीत केनवास के समीप गया, तूलिका उठाई और तूलिका से रंग भरने को हाथ बढ़ाया ही था तब उसके कानों में शब्द पड़े, “जीत, वफ़ाई का चित्र बनाना इतना सरल नहीं है। श्रीमान चित्रकार, तुम विफल हो गए।” उस ध्वनि के साथ हास्य घुल गया।
“यह तो वफ़ाई के शब्द लगते हैं, यह ध्वनि उसकी ही है।” जीत ने केनवास को देखा।
“तुम केनवास में से बोल रही हो?” जीत ने देखा कि केनवास तो मौन था। वह हंस पड़ा।
“केनवास कभी नहीं बोलता। चित्र अवश्य बोलते हैं किन्तु शब्दों से नहीं। चित्र की भाषा भिन्न होती है। किन्तु यह तो मनुष्य के शब्द थे। कौन बोला इन शब्दों को? अथवा मेरा भ्रम है?”
“जीत, यहाँ कोई नहीं है। वफ़ाई जा चुकी है। वफ़ाई के जाने के पश्चात तुम केवल वफ़ाई का ही ध्यान धरे हो, हो सकता है यह ध्वनि तुम्हारे हृदय से आई हो। अपने हृदय की ध्वनि को मत सुनो, यहाँ कोई नहीं है।”
“श्रीमान चित्रकार, तुम मुझे केनवास पर नहीं उतार सकते। वह तुम्हारी कल्पना और कला से भी परे है।” जीत ने फिर शब्द सुने।
“मैं कोई शब्द नहीं सुनना चाहता, भ्रमित नहीं होना चाहता।” जीत ने दोनों कानों पर हाथ रख दिये, आँखें बंध कर ली और दीवार के सहारे खड़ा हो गया। जीत वहीं स्थिर हो गया। उसके हाथ में कुछ चुभा, उसे पीड़ा हुई। कोनी में किसी स्पर्श का अनुभव हुआ। वह स्पर्श मीठा था किन्तु चुभता था, जैसे किसी ने हाथ में छेद कर दिया हो।
“यहाँ कोई नहीं है, कुछ भी नहीं है, अत: यह छेद भी वास्तविक नहीं है। यह भी भ्रमणा ही है, मैं इसकी पीड़ा को नकारता हूँ।” जीत मन ही मन बोलता रहा। वह निश्चल सा स्थिर खड़ा रहा। गहरी सांसें लेता रहा।
जीत को अनुभव हुआ कि किसी ने उसके हाथों में खरोंच कर दी हो। वह अधिक पीड़ादायक था तथापि जीत ने आँखें नहीं खोली, कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।
“जीत, आँखें खोलो। यह कोई भ्रम नहीं है। यह वास्तवीक है। देखो इसे, अनुभव करो इसे, मानो इसे।” वफ़ाई के शब्द पुन: जीत के कानों पर पड़े। वह उस की उपेक्षा नहीं कर सका।
जीत ने आँखें खोली। वफ़ाई को सामने पाया, साक्षात पाया।
“यह स्वप्न है अथवा नया भ्रम? अथवा समय का कोई नया छल?” जीत ने कोनी पर पड़ी खरोंचो को देखा, वह वास्तविक थी, पीड़ा भी वास्तविक थी।
“यदि खरोच वास्तविक है, पीड़ा वास्तविक है तो वफ़ाई भी वास्तविक ही होगी। किन्तु मैं विश्वास नहीं करता। मैं तुम्हारे अस्तित्व और यहाँ होने को अस्वीकार करता हूँ।” जीत ने वफ़ाई को अनदेखा कर दिया।
एक नए मौन ने जन्म ले लिया। मौन वहीं रुक गया। प्रगाढ़ मौन के साथ जीत कक्ष में चला गया। वफ़ाई उस मौन में डूब गई जो जीत अपने पीछे छोड़ गया था।

“वफ़ाई, तुम अधिक बोलती हो। क्या तुम चुप नहीं रह सकती?” जीत ने वफ़ाई के प्रति क्रोध से देखा। वफ़ाई ने मीठे स्मित से जवाब दिया।

पिछली रात से ही जीत ने मौन बना लिया था जो भोर होने पर भी, दिवस चड़ने पर भी बना हुआ था। वफ़ाई उसे बारंबार तोड़ रही थी। प्रत्येक बार जीत ने उसकी उपेक्षा की थी। पिछले पाँच घंटों में वफ़ाई ने सत्रहवीं बार मौन भंग करके दोनों के बीच टूटे हुए संबंध को जोड़ने का प्रयास किया था किन्तु जीत कोई रुचि नहीं दिखा रहा था। वफ़ाई हिम को पिघला ना सकी।

तपति दोपहरी हो गई। सूर्य अपने यौवन पर था। जीत का मौन भी अपने यौवन पर था। वफ़ाई जीत के ऐसे व्यवहार से विचलित थी। अत: बारंबार मौन भंग करने की चेष्टा कर रही थी।

“जीत, मैं तुम्हारी अतिथि हूँ। अपने अतिथि के साथ कोई ऐसा व्यवहार करता है क्या? तुम जानते हो कि हम भारतीय लोग अतिथि को ईश्वर का रूप मानते हैं। तुम्हें ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए। तुम अपने क्रोध को शांत कर लो।” वफ़ाई ने एक और प्रयास किया, हिम को पिघलाने का।

“वफ़ाई, तुम अधिक बोलती हो। क्या तुम चुप नहीं रह सकती?” जीत ने वफ़ाई के प्रति क्रोध से देखा।

“नहीं, मैं शांत नहीं रह सकती, मौन नहीं रह सकती। मौन पहाड़ की भांति होता है। मौन रेत के टीले की भांति होता है। मौन गहरे सागर की भांति होता है, जिसके एक तरफ मैं हूँ तो दूसरी तरफ तुम हो। मैं इस पर्वत को हटा देना चाहती हूँ, रेत के इस टीले को मिटा देना चाहती हूँ, सागर को पार करना चाहती हूँ।”

“तुम ऐसा क्यों चाहती हो?” जीत ने रुचि दिखाई।

“मैं मौन को धारण नहीं कर सकती। मौन मुझे मार देगा, मेरा वध कर देगा। मैं मरना नहीं चाहती। सुना तुमने, मैं मरना नहीं चाहती?” वफ़ाई पर उत्तेजना सवार हो गई।

“मौन से आज तक किसी की मृत्यु नहीं हुई। इतिहास इसका साक्षी है। विध्यालय में जाओ, इतिहास की पुस्तक खोलो, उसे पढ़ो। मनुष्य मरे हैं तो यूध्ध से, रोगों से। मौन से नहीं।” जीत ने बात की।

“जीत तुम धीरे धीरे खुल रहे हो, तुम मेरे साथ दलीलें करना भी चाहते हो किन्तु थोड़ा…।” वफ़ाई बड़बड़ाने लगी।

“क्या कह रही हो तुम, वफ़ाई?” जीत ने वफ़ाई को रोका।

“जीत, तुम भी तो मेरे साथ यूध्ध कर रहे हो, जिस से मेरी मृत्यु हो सकती है। मैं इस मौन से कहीं मर ना जाऊँ।”

वफ़ाई की युक्ति काम करने लगी। जीत ने दलील की, “वफ़ाई, तुम पहाड़ों से आई हो। निर्जन से होते हैं पहाड़। पहाड़ों पर मौन सदैव रहता है। तुम निर्जन पहाड़ों के मौन की आदी हो। अत: ना तो तुम मौन के लिए और ना ही मौन तुम्हारे लिए अज्ञात है। पहाड़ों के मौन के होते हुए भी तुम जीवित हो। तो फिर मरुभूमि के इस मौन से कैसे तुम्हारी मृत्यु हो सकती है? बस, मौन को हमारे साथ रहने दो।” वफ़ाई के लौटने के पश्चात जीत ने सबसे लंबी बात की। वफ़ाई आनंदित हो गई।

वफ़ाई जीत को बातों में अधिक से अधिक व्यस्त रखना चाहती थी, “पहाड़ों के मौन एवं मरुभूमि के मौन के बीच बड़ा अंतर होता है। दोनों भिन्न होते हैं। मैं इस मरुभूमि के मौन की…।”

“मौन, मौन होता है। पहाड़ों का मौन, मरुभूमि का मौन, निर्जन मार्गों का मौन अथवा भीड़ भरे नगर का मौन, ऐसा कुछ नहीं होता। तुम मौन में भेद कर रही हो।”

“यही तो भ्रमणा है। यही तो कल्पना है। यही तो असत्य से भरी धारणा है। यदि तुम भिन्न भिन्न अवस्थाओं में भिन्नता नहीं देख सकते हो तो तुम निर्जीव मूर्ति हो, जीवंत व्यक्ति नहीं।” वफ़ाई अपने ही शब्दों से भयभीत हो गई।

“क्या तात्पर्य है तुम्हारा, वफ़ाई?” जीत भी वफ़ाई के शब्दों से विचलित हो गया।

वफ़ाई ने स्वयम को संभाला, “शांत, जीत शांत हो जाओ। किसी भी दो स्थितियाँ सदैव भिन्न होती है। एक ही स्थल की दो क्षण भी समान नहीं होती, वैसे ही मौन भी भिन्न भिन्न होते हैं। हमें उसे देखना होगा, अनुभव करना होगा, उसे स्वीकार करना होगा। प्रत्येक मौन का अपना सौन्दर्य होता है, अपनी कुरूपता होती है।”

“तो मरुभूमि का मौन कुरूप है और पहाड़ों का मौन सुंदर है?” जीत ने तीव्र प्रतिभाव दिया।

“मैंने ऐसा तो नहीं कहा। मैंने कहा कि प्रत्येक मौन का अपना सौन्दर्य होता है, अपनी कुरूपता होती है। यह स्वयं के ऊपर निर्भर है कि मौन में सौन्दर्य देखना है अथवा कुरूपता?”

“अर्थात मौन सुंदर है। यदि ऐसा है तो उसका आनंद लो, उसे तोड़ो मत। उसे यहाँ रहने दो।”

“यदि दो व्यक्ति एक दूसरे के साथ हो और मौन उन दोनों पर राज करे यह तो उचित नहीं है।”

“तो क्या हम साथ साथ हैं, वफ़ाई?” जीत ने पूछा।

वफ़ाई के मन को यह शब्द भा गए। वह नाचने लगी, हंसने लगी। उस के हास्य की प्रतिध्वनि मरुभूमि में व्याप्त हो गई। मौन के कारावास से मरुभूमि मुक्त हो गई।

“तो तुम बात करना भी जानते हो! वाह।” वफ़ाई ने नटखट हो कर जीत को छेड़ा। जीत को वफ़ाई का यह रूप पसंद आया। वह वफ़ाई की तरफ घूमा, उसे निहारता रहा।

वफ़ाई अधरों पर स्मित पहने झूले पर बैठ गई। जीत, स्मित के संमोहन के साथ वफ़ाई को निहारता रहा, एक नजर से। वफ़ाई जीत की आँखों में देखने लगी। चार आँखें एक हो गई, स्थिर हो गई। एक अद्रश्य सेतु रच गया इन चार आँखों के बीच।

द्रष्टि के इस सेतु पर भावनाओं की अनेक तरंग बहने लगी, दोनों छोर तक जाने लगी। दोनों छोर पर उसकी अनुभूति होने लगी। दोनों खो गए कोई भिन्न जगत में, मौन ही।

समय स्थिर हो गया। केवल पवन चलती रही।

पवन की एक तीव्र लहर अपने साथ रेत को लाई जो जीत की आँखों में घुस गई। जीत ने आँखें मली। आँखों में अश्रु आ गए। द्रष्टि से रचाया सेतु टूट गया। जीत ने आँखों पर हथेली रख दी।

वफ़ाई ने अश्रुओं को देखा, वह जीत के पास भागी। उसके कंधे पर हाथ रख दिया। जीत को वफ़ाई का स्पर्श अच्छा लगा। वह स्पर्श पीड़ाहारी था। उस स्पर्श ने जीत की पीड़ा हर ली।

“जीत, तुम इस केनवास पर क्या सर्जन करना चाहते थे?” वफ़ाई मौन को अविरत रूप से परास्त कर रही थी।

“सत्य यही है कि तुम लौट आई हो।” जीत ने स्वयं से कहा।

वफ़ाई ने प्रश्न दोहराया।

“खास कुछ नहीं। मैं तो बस कुछ भिन्न करना…।” जीत ने उत्तर अपूर्ण छोड़ दिया। वह शब्दों को चुराने लगा, हृदय के भावों को छुपाने लगा।

वफ़ाई ने उस चोरी को पकड़ लिया, “वह भिन्न का अर्थ है वफ़ाई का चित्र, है ना?”

जीत ने मौन सम्मति दी।

वफ़ाई खुलकर हंस पड़ी, जीत भी। प्रताड़ित करता सूरज बादलों के पीछे छुप गया। ठंडी पवन बहने लगी।

”यदि तुम किसी व्यक्ति को केनवास पर प्रकट करना चाहते हो तो वह व्यक्ति तुम्हारे हृदय में होनी चाहिए, बुध्धी में नहीं। वफ़ाई अभी भी तुम्हारे हृदय में नहीं है, उसने तुम्हारी बुध्धी में, तुम्हारे मन में स्थान बना रखा है। बस यही कारण है कि तुम वफ़ाई को प्रकट नहीं कर पाये। जब तक तुम वफ़ाई को हृदय में स्थान नहीं दोगे, तुम उसे कहीं भी प्रकट नहीं कर पाओगे। जो भी करना चाहो कर लो, पसंद तुम्हारी।” वफ़ाई केनवास के समीप गई।

जीत वफ़ाई के उन शब्दों की तीव्रता सह नहीं पाया।

“अनेक कारणों में से एक कारण यह भी हो सकता है, किन्तु कारण कुछ भिन्न ही है।”

“वह कौन सा कारण है? क्या मैं जान सकती हूँ?” वफ़ाई ने आग्रह किया।

जीत सत्य प्रकट करने, ना करने की दुविधा में मौन ही रहा।

“ओ जीत, क्या हुआ?” वफ़ाई झूले पर जा कर बैठ गई, “तुम भी आ जाओ न यहाँ।”

जीत झूले के समीप ही खड़ा रह गया। मौन हो गया।

‘जीत के मन में कुछ तो बात है जो वह कहना तो चाहता है किन्तु कह नहीं पा रहा। कुछ तो है जो उसे रोक रहा है। क्या होगा? अवश्य ही कोई रहस्य, कोई घटना, कोई बात….।’ वफ़ाई आगे सोच ना सकी। वह मौन हो गई, समय को बहने दिया। जीत को मौन के गगन में विहरने दिया।

24

जीत मौन तो था किन्तु अशांत था।

‘जीवन के जिस अध्याय को मैं पीछे छोड़ चुका हूँ, जिसे छोड़ देने के पश्चात कभी याद नहीं किया, याद करना भी नहीं चाहता था किन्तु, वफ़ाई उसी अध्याय को पढ़ना चाहती है। तप्त मरुभूमि में सब संबंध, सब वार्ता, सभी स्मरण, सब कुछ भस्म कर दीया था मैंने। वफ़ाई, तुम मुझे स्मरणों की अग्नि में पुन: जला रही हो। तुम नहीं जानती की स्मरणों की अग्नि कितनी तीव्र होती है, कितनी घातक होती है।’

‘तो भाग जाओ इन स्मरणों से, बच निकलो उसकी अग्नि से। आज तक उसे याद नहीं किया तो अब क्यों कर रहे हो? वफ़ाई के सवालों का जवाब देने के लिए?’

‘जब वफ़ाई ने सवाल किया है तो उसका उत्तर तो देना ही पड़ेगा.।’

‘क्यों देना पड़ेगा? तुम उस उत्तर को टाल भी सकते हो। वैसे भी वफ़ाई कुछ ही दिनों की अतिथि है, जैसे आई थी वैसे चली जाएगी।



वफ़ाई के प्रश्नों को इतना महत्व क्यों दे रहे हो?'
'उसका प्रश्न ...।'
'वफ़ाई को तुम्हारे बीते हुए कल से कोई संबंध नहीं है। उसे केवल उसका अभियान पूरा करना है और तब तक वह तुम्हारे साथ समय व्यतीत करना चाहती है। अपने स्वार्थ की सिद्धि हेतु ही वफ़ाई ऐसे प्रश्न कर रही है, करती रहेगी। तुम उसे जवाब ही ना दो ।'
'नहीं, वफ़ाई स्वार्थी नहीं हो सकती ।'
'तो स्मरणों की अग्नि में तपते रहो।'
'स्मरणों से कौन बच सकता है? बड़े बड़े ऋषि मुनि भी नहीं, मैं भी नहीं ।'
जीत ने आँखें बंध कर ली। आँखों के सामने कुछ द्रश्य आने लगे।
दो साल पहले जब सर्दियाँ अपने पूरे यौवन पर थी। पहाड़ियों पर हिम अविरत बरस रही थी। समाचार माध्यमों पर हिम से ढंके पहाड़ों की चोटियों के द्रश्य दिखाये जा रहे थे।
जीत किसी होटल पर दिलशाद के साथ भोजन लेते लेते समाचारों को देख रहा था। दिखाये जा रहे द्रश्यों में पहाड़ों पर बिखरी हिम की चादर अत्यंत रोचक, मोहक और लुभावनी लग रही थी। हजारों किलोमीटर दूर रहते हुए भी हिम की अनुभूति हो रही थी।
"जीत, चलो न हम भी चलते हैं इन पहाड़ों के बीच। हिम की चादर कितनी सुहानी लगती है!" दिलशाद ने बड़ी देर से टीवी देख रहे जीत को उकसाया।
"क्या बात कर रही हो? इतनी ठंड में? कहीं तुम उपहास तो नहीं कर रही?" जीत ने गंभीरता से दिलशाद के चहेरे को देखा।
"नहीं तो। मैं पूरी सभानता से यह प्रस्ताव रख रही हूँ।"
"इतनी ठंड में वहाँ जाना उचित होगा क्या?"
"जब ठंड ज्यादा होगी तभी तो हिम गिरेगी। हिम ...।"
"कुछ समय बाद जब ठंड कम हो तब भी हिम तो बनी रहेगी इन पहाड़ों पर। तो तब...।"
"जमी हुई हिम तो पूरे साल मिल जाएगी। गिरि हुई हिम स्थिर होती है, उस में जीवन कहाँ? जो बहता है, जो चंचल है उसी में ही जीवन है, जीवन का आनंद है। आसमान से गिरती हिम देखनी हो तो आज ही निकल जाना चाहिए। गिरते हिम को देखना, अनुभव करना, फिसलना, गिरना, एक दूसरे को हिम के गोले मारना। कितना आनंद आएगा, जीत ..।" दिलशाद रोमांचित थी।
जीत ने घड़ी देखि। कुछ क्षण सोचता रहा।
"ठीक है, कुछ सोचते हैं। दिलशाद, तुम घर जाकर तैयारियां करो। मुझे थोड़ा समय लगेगा। सारी व्यवस्था कर के आता हूँ।"
जीत और दिलशाद का विवाह हुए तीन चार महिने व्यतीत हो चुके थे किन्तु वह कहीं घूमने जा नहीं सके थे।
घर आते ही जीत ने कहा, "दिलशाद, कल सुबह 7 बजे की फ्लाइट से हमें निकलना है।"
दूसरे दिन शाम ढलने से पहले दोनों बर्फीली पहाड़ियों पर थे। आकाश से रिमझिम गिरते हिम की बारिश से भीगने लगे थे।
"कितना सुंदर है यह सब? जहां भी नजर दौड़ाएं बस हिम ही हिम दिखाई देता है।"
दिलशाद ने अपने जीवन में बर्फीली पहाड़ियों पर गिरते हिम को पहेली बार ही देखा था, तो जीत ने भी पहले कभी ऐसा अनुभव नहीं किया था।
"हिम का एक समंदर हो जैसे।" जीत भी उत्साहित था। गगन की तरफ सर उठाकर, दोनों बाजू फैलाकर, आँखें बांध कर जीत गिरते हुए हिम को अपने आलिंगन में लेने लगा। आँख पर, गालों पर, बालों पर, हाथ पर, कंधे पर, सारे शरीर पर हिम छा गई। ऐसा लगता था कि जैसे जीत ने हिम के वस्त्र पहने हो। दिलशाद ने भी जीत का अनुकरण किया।
"जीत, बड़ा आनंद आता है हिम की बारिश में भीगने का, नहाने का।" दिलशाद ने जीत का ध्यान आकृष्ट करना चाहा। जीत ने दिलशाद को देखा। दिलशाद के श्वेत गालों पर श्वेत हिम और उस पर गिरती सूरज की मध्धम धूप!
श्वेत गाल, श्वेत हिम और श्वेत किरण।
"यह सूरज की कोमल किरनें, यह श्वेत हिम और तुम्हारे श्वेत गाल। कौन किसकी शोभा बढ़ा रहा है?" जीत ने श्रिंगार रस से भरे अपने हाथ से दिलशाद का हाथ पकड़ लिया। दिलशाद का वदन लज्जा से गुलाबी हो उठा। पारदर्शक हिम की परत के पीछे से नजर आते गुलाबी गाल! हिम गुलाबी हो गया। दिलशाद ने आँखें बंध कर ली, जीत की तरफ पीठ रख कर खड़ी हो गई। सूरज बादलों में खो गया।
दिलशाद देर तक मौन खड़ी रही। जीत उसे देखता रहा। वह दिलशाद थी या हिम की प्रतिमा?
जीत आठ दस चरण पीछे हट गया। मुट्ठी भर हिम उठाया, गोला बनाया और दिलशाद की पीठ पर मारने के लिए फेंका। अचानक दिलशाद जीत की तरफ मुड़ी।
पीठ पर लगने वाला हिम का गोला दिलशाद की छाती पर बीचों बीच लगा। खाली स्थान पर अपना हक्क जमा कर बैठ गया।
जीत दौड़ा, दिलशाद को अपने आलिंगन में ले लिया। दो छातियों की ऊष्मा से वह हिम पिघलने लगा। सारे हिम पिघलने लगे। कोई झरना बहने लगा, पहाड़ियों के बीच से। दो छातियों के बीच अब कोई हिम न था, केवल झरना था, जो दोनों तरफ बह रहा था।
बर्फीली पहाड़ियों में कुछ दिन यूं ही बीत गए। दोनों ने छुट्टीयों का खूब आनंद लिया।
"जीत, कल तो हमें लौटना है। कितनी त्वरा से बीत गए ये दिन?"
"यहाँ की बात ही निराली है। यह हवा, यह पहाड़ी, यह हिम, यह झरने, कभी कभी निकल आती धूप, खुल्ला गगन।" जीत अपनी बाहें फैलाये आकाश की तरफ देखने लगा।
"और तेरा मेरे साथ होना।"
"कितना सुखद, कितना अद्भुत है यह सब?"
"क्या हम कुछ दिन और नहीं रुक सकते?" दिलशाद ने आग्रह भरी नजरों से जीत को देखा। जीत उन आँखों के आग्रह को टाल न सका, "यदि तुम कहती हो तो...।" जीत रुका, दिलशाद को देखा, दिलशाद के होठों पर स्मित था,"तीन दिन और रुक लेते हैं।"
जवाब में दिलशाद ने प्रगाढ़ आलिंगन दे दिया। दोनों खो गए पहाड़ों में, हिम से भरी घाटियों में। शाम होते लौट आए होटल पर।

"दिलशाद, आज खाना यहीं मँगवा लेते हैं।" जीत ने सुझाया।
"थक गए हो क्या?"
"थोड़ा सा।"
"नीचे तक चल सको तो...।"
"नहीं, आज कुछ...।" जीत लेट गया।
दिलशाद ने खाना मँगवा लिया। थोड़ी देर तक कोई कुछ नहीं बोला। दोनों ने खाना खा लिया।
जीत फिर लेट गया। दिलशाद कोई पुस्तक पढ़ने लगी। रात धीरे धीरे गहरी होने लगी। ठंड बढने लगी। एक दूसरे के आलिंगन में दोनों सो गए।

25

रात ने अपनी यात्रा सम्पन्न कर ली। किसी ने द्वार खटखटाया। दिलशाद ने दरवाजा खोला.
"कितने बजे चेक आउट करेंगे आप?" होटल मेनेजर ने पूछा।
"हम दो तीन दिन और रुकेंगे।" मेनेजर लौट गया।
जीत अभी भी गहरी नींद में सोया हुआ था। दिलशाद ने गवाक्ष खोल दी। एक पूरा टुकड़ा आकाश का वातायन का अतिक्रमण कर दिलशाद की आँखों में उमड़ गया जो अपने साथ हिम से भरी हवा के टुकड़े भी लाया। दिलशाद ने देखा कि गवाक्ष के उस पार था पहाड़ों का जंगल।
सूरज निकल आया था। पहाड़ों के ढलान पर जमी हिम पर यात्री अपने अपने आनंद में व्यस्त हो गए थे। 'मन तो करता है कि दौड़ जाऊँ हिम के बीच। पर यह जीत, अभी भी सो रहा है। मैं क्या करूँ?
दिलशाद ने जीत को देखा। वह सो रहा था। दिलशाद ने अपनी इच्छा को भी सुला दिया। प्रतीक्षा करने लगी, जीत के जागने की। कुछ क्षण बित गए। दिलशाद का मन कहीं नहीं लग रहा था। वह जीत के पास आ कर बैठ गई।
जीत सो रहा था। दिलशाद ने जीत के माथे पर हाथ फेरा। जीत का ललाट उष्ण था। माथे पर पसीने की बुँदे थी। दिलशाद चौंक गयी- "इतनी ठंड में भी पसीना?"
"जीत, तुम ठीक हो क्या?" दिलशाद चिल्ला उठी। जीत जाग पड़ा,"दिलशाद...।"
"जीत, माथे पर यह पसीना, इतनी ठंड में, तुम ठीक तो हो?" दिलशाद चिंतित थी।
"अरे कुछ नहीं हुआ। तुम बैठो मेरे पास। चलते हैं थोड़ी देर में, मिल आते हैं इन पहाड़ों को। " जीत ने संभलने का प्रयास किया, सफल भी हुआ।
सज्ज होकर दोनों निकल पड़े श्वेत चादर में लिपटे रास्तों पर। जीत दिलशाद के साथ चल तो रहा था पर उसके पैरों में कल वाली ऊर्जा न थी। जैसे कोई उसे खींच रहा हो। एक दो बार तो वह फिसलते फिसलते बचा।
"जीत, क्या बात है? तुम ठीक तो हो?"
"अरे, कुछ नहीं। बस यूं ही।" बोलते बोलते जीत हाँफ गया। उसकी सांस अनियमित हो गयी।
"जीत, तुम्हारी सांस फूल रही है। सांस लेने में कष्ट हो रहा है?"
"दिलशाद, शायद इस ऊंचाई के कारण, कभी कभी क्या होता है कि ऊंचाई पर...।"
"इस ऊंचाई पर तो हम पिछले कई दिनों से हैं। कल तक कुछ नहीं हुआ था, आज अचानक से यह क्या हो गया? सच सच बताओ।"
"कुछ नहीं है।" जीत ने अपने आप को संभाला और दिलशाद के साथ चल दिया। दोनों पहाड़ी पर थे, हिम के बीच थे। हिम के साथ खेलते रहे, आनंद करते रहे, हँसते रहे। अंत में थक गए। लौट गए।
शाम ढलते ढलते जीत फिर से हाँफने लगा। दिलशाद चिंतित हो उठी।

“जीत, तुम ठीक नहीं लग रहे हो। हम आज ही लौट जाते हैं।”
“वह तो जरा सा ...।” जीत ने हंसने का प्रयास किया।
“नहीं हम लौट....।” दिलशाद ने होटल के रिसेप्शन पर फोन घुमाया और टिकिट बुक करने को कहा।
“दो दिन तक कोई टिकिट उपलब्ध नहीं है।” सामने से जवाब मिला।
“जो भी पहेला टिकिट मिले बुक कर लो।” दिलशाद ने फोन रख दिया।
उस रात देर तक दोनों बातें करते रहे। दिलशाद सो गई पर जीत सो नहीं पाया। वह कुछ सुस्त सा अनुभव कर रहा था। उसे सांस लेने में कठिनाई हो रही थी। वह देर तक जागता रहा। अपनी सांस को नियंत्रित करने का प्रयास करता रहा। रात के पिछले प्रहर वह सो गया।
“आज कहीं नहीं जाएंगे हम, बस यहीं आराम करेंगे।” दिलशाद ने जागते ही जीत को सूचित कर दिया।
“ठीक है, जैसी आप की आज्ञा।” जीत ने स्मित दिया।
वातायन खोलकर दूर पहाड़ियों को देखने लगे, दोनों। समय बीतने लगा।
जीत हिमाच्छादित घाटियों को देख रहा था। मन ही मन सोच रहा था- ना जाने फिर कब आना होगा इन घाटियों में? अगले साल? कभी नहीं?
“कभी नहीं?” जीत स्वगत बोला,“चलो पहाड़ियों पर चलते हैं।"जीत ने उत्साह जताया।
“तुम ठीक तो हो?” दिलशाद ने संदेह जगाया।
“बिलकुल।” और जीत कमरे से बाहर निकाल गया। दिलशाद भी जीत के साथ चल दी। बीच राह में ही जीत की सांस फूलने लगी, वह छाती पर हाथ रखकर बैठ गया। दिलशाद ने तुरंत होटल को सूचित किया। होटल ने सैन्य को सूचित किया। 6 मिनिट में सैन्य का एक दल जीत का उपचार करने लगी।
कुछ समय पश्चात डॉक्टर ने कहा, “इसे कैंट ले चलो।”
अनेक परीक्षण करने के पश्चात डॉक्टर ने कहा, “कोई चिंता का कारण नहीं है। क्या नाम है आपका?”
“जीत। सर मुझे हुआ क्या है? क्या यह हाई आल्टीट्यूड डीसीझ है?”
“नहीं, ऐसा नहीं है। यहाँ बात थोड़ी सी भिन्न है।”
“क्या बात है? हो सके तो विस्तार से ...।” दिलशाद उत्सुक हो गई।
“हिम का एक छोटा सा टुकड़ा नाक के माध्यम से सांस की नली में घुस गया है। वह वहीं फंस गया है जो साँसों को रोकता है। इसी कारण सांस लेने में कठिनाई हो रही है।”
“हिम का टुकड़ा है, तो पिघल ही जाएगा। आप उसे किसी तरह पिघला दीजिये।” दिलशाद ने कहा।
“यह संभव नहीं। यह टुकड़ा नहीं पिघल सकता।”
“क्यूँ नहीं पिघल सकता?” दिलशाद ने संदेह व्यक्त किया।
“क्यूँ कि हिम के इस छोटे से टुकड़े पर मिट्टी जम गई है जो हिम के टुकड़े को घेरे रखी है। मिट्टी की वह परत कठोर हो गई है, जिसके कारण नर्म सा हिम का टुकड़ा कठोर हो गया है। जैसे कोई छोटा सा कंकड़ या खड़क। जब तक ऊपर की परत पर चढ़ी मिट्टी तोडी नहीं जाती, हिम के टुकड़े को पिघलाया नहीं जा सकता।”
“तो तोड़िए ना उस मिट्टी की परत को।” दिलशाद चिढ़ गयी।
डॉक्टर ने दिलशाद की बात को सहज रूप से लिया, स्मित देते हु कहा, “यह एक बड़े ऑपरेशन से हो सकता है, जिसके लिए आप को शहर की बड़ी अस्पताल जाना होगा। आप कौन से शहर से हैं?”
“मुंबई।”
“आप लौट जाइए मुंबई। वहाँ डॉक्टर नेल्सन हैं जो शायद इस काम को कर सके। डॉ॰ नेल्सन मेरे अच्छे मित्र हैं। मैं उससे बात कर लूँगा। वह आप की कोई मदद कर सके...।”

26

जीत तथा दिलशाद मुंबई लौट आए। डॉ॰ नेल्सन ने पूरी तरह से जीत को जांचा, कई परीक्षण भी हुए।

“बर्फीले पहाड़ों पर आप की छुट्टियाँ कैसी रही? बड़ा आनंद आया होगा न? कुछ मुझे भी तो बताओ कि पहाड़ों पर हिम कैसा लगता है? मैं कभी गया नहीं उन पहाड़ों पर।” नेल्सन ने बात का दौर सांधा। नेल्सन के होठों पर मीठा सा स्मित था। वह स्मित मोहक भी था। उसमें कोई जादू अवश्य था, जो रोगी की पीड़ा हर लेता था।

दिलशाद और जीत उस स्मित के सम्मोहन में पड गए। कुछ क्षण के लिए पीड़ा भूल गए, बर्फीली पहाड़ियों में, पहाड़ों की घाटियों में व्यतीत क्षणों में खो गए।

दोनों उन क्षणों का अनुभव डॉ॰ नेल्सन को बताते चले गए। नेल्सन उसे पूरी तन्मयता से सुनते रहे। होठों वाला स्मित अब नेल्सन की आँखों में भी था। वह आँखों में आँखें डाले, होठों पर और आँखों पर स्मित लिए, अनिमेष द्रष्टि से दोनों की बातें सुनता रहा। दिलशाद और जीत उनके मोहक प्रवाह में पिघलते हिम के झरने की तरह बहते गए।

कुछ छब्बीस मिनिट के बाद दिलशाद और जीत रुके, “एक बार जरूर से आप भी उस स्थल का आनंद उठाने के लिए हिम से भरे पहाड़ों पर जाइए।” जीत ने बात समाप्त करते हुए कहा।

“और अकेले मत जाइएगा।” दिलशाद ने सुझाया।

“मैं एक बात मान सकता हूँ दूसरी नहीं।” नेल्सन ने कुर्सी पर से उठते हुए कहा।

“अर्थात?” दोनों एक साथ बोल पडे।

“मैं पहाड़ियों पर जाऊंगा जरूर, पर किसी को साथ नहीं ले जा सकता।”

“क्यूँ?”

“मैंने अभी विवाह ही नहीं किया।” नेल्सन ने बड़ा ठहाका लगाया। दिलशाद और जीत भी साथ हो लिए।

“तो प्रथम विवाह कर लो, तब जाना।” दिलशाद ने कहा।

“तब तक तो मैं वृध्ध हो जाऊंगा और मेरे चरणों में पहाड़ चढ़ने की क्षमता ही नहीं रह पाएगी।” नेल्सन के होठों पर वही मोहक स्मित था।

“चलो हम पहाड़ों की हिम को पहाड़ों पर ही छोड़ देते हैं और जो हिम हम साथ लेकर आए हैं उसकी बात करते हैं।” नेल्सन ने बातों के तार जोड़ दिये। दिलशाद और जीत मौन हो गए।

“हिम का पहाड़ जहां अदभूत आनंद देता है वहीं एक छोटा सा टुकड़ा पीड़ा भी दे रहा है। वास्तव में पीड़ा हिम के टूकडे से नहीं है परंतु उस पर जमी मिट्टी की परत से है, जो उसे पिघलने नहीं देती है। जिसे हम मिट्टी समझ रहे है वह केवल मिट्टी ही नहीं है, उसमे

कुछ खनिज तत्व भी शामिल है। जो उस मिट्टी को अधिक कठोर बना रहे हैं।
दूसरी बात, हिम का वह टुकड़ा सांस की नली में घुस जाने के पश्चात जो फंस गया था वह धीरे धीरे खिसक भी रहा है। कभी भी फेफड़े तक जा सकता है, फेफड़े के अंदर घुस सकता है। यदि वह फेफड़े में घुस गया तो फेफड़े की दीवार को क्षति हो सकती है। फेफड़ा फट भी सकता है। जो चिंता का विषय है। मेडिकल जगत में यह अपने आप में अनूठा और प्रथम किस्सा है। विश्व के बड़े से बड़े डॉक्टरों को मैंने आप का यह केस भेजा दिया है, और वह सब इस पर कार्य कर रहे हैं। शीघ्र ही कोई उपचार मिल जाएगा।"
डॉक्टर नेल्सन ने लंबी गहरी सांस ली और अपनी कुर्सी पर बैठ गए।
जीत और दिलशाद कुछ क्षण मौन ही रहे। समय बितता चल गया।
"तब तक क्या?" दिलशाद ने मौन तोड़ा।
"आप चिंता ना करें।" नेल्सन के होठों पर वही मोहक स्मित था, "मेरा पूरा प्रयास रहेगा कि मैं हिम के उस टुकड़े को फेफड़े तक जाने से रोके रखूँ। जब तक वह फेफड़े से दूर है तब तक कोई चिंता नहीं है।"
"यदि वह फेफड़े तक पहोंच गया तो?" दिलशाद ने चिंतित नजरों से नेल्सन की आँखों में आँखें डालकर पूछा। नेल्सन की आँखें खुछ बोल रही थी, दिलशाद को कुछ कह रही थी। दिलशाद उसे पढ़ना चाहती थी, किन्तु पूरी तरह से पढ़ नहीं पा रही थी। कोई संकेत, कोई आमंत्रण था उन आँखों में, जो दिलशाद की आँखों के मार्ग से ह्रदय तक चला गया। वह उन संकेतों को सुलझाने में उलझ गई। स्थिर द्रष्टि से दिलशाद बस देखती रही, नेल्सन की आँखें। मौन बैठे जीत का वहाँ होना वह भूल गयी।
"इस टुकड़े को नली में रखना भी उचित नहीं है। हो सकता है वह सांस को पूरी तरह ही रोक ले।" नेल्सन के शब्दों ने दिलशाद को जगाया।
"हाँ, तो तो...?" दिलशाद के शब्द दिशाहिन थे।
"डॉ॰ नेल्सन, कुल मिलाकर स्थिति क्या बन रही है?" जीत ने मौन तोडा।
"अभी तो कोई गंभीर चिंता की बात नहीं है। रिपोर्ट्स, दवा, इंजेक्शन आदि से उपचार चलता रहेगा। जहां तक संभव हो सके शल्य क्रिया टालते रहेंगे, क्यूँ कि वह सुरक्षित नहीं है।" नेल्सन ने जीत को आश्वस्त किया।
जीत और दिलशाद ने सब फाइलें, रिपोर्ट्स आदि समेटा और बाहर निकल आए।

27

"जीत, मेरा पर्स वहीं टेबल पर ही रह गया। मैं अभी लेकर आई, तुम गाड़ी निकालो।" दिलशाद ने कहा।
दिलशाद नेल्सन के कक्ष की तरफ दौड़ी, अंदर घुसी।
"मेरा पर्स मैं भूल गयी थी।" वह टेबल पर पड़ी पर्स की तरफ बढ़ी, वह पर्स उठाती तब तक नेल्सन ने उसे उठा लिया।
"भूल गयी थी अथवा...?" नेल्सन दिलशाद की समीप गया। वह दिलशाद के अत्यंत समीप था। दिलशाद को उसका सामीप्य पसंद आया। वह मन ही मन चाहने लगी कि नेल्सन उसे स्पर्श करे किन्तु उसने स्वयं को रोका।
"मेरा पर्स?" दिलशाद ने पर्स लेने के लिए हाथ आगे बढ़ाया, नेल्सन ने पर्स देने के लिए। आगे बढ़े दो हाथ एक दूसरे से टकराए, मिले और अलग हो गए। दिलशाद ने पर्स ली, साथ में नेल्सन का स्पर्श भी। उस स्पर्श में ना जाने क्या क्या था?
दिलशाद कक्ष से बाहर जाने लगी, द्वार पर जाकर रुकी, मुड़ी, "आप की आँखें अत्यंत मोहक है।" एक स्मित दिया और आगे बढ़ गयी।
"और आप तो स्वयं ही पूर्ण सौन्दर्य हो।" नेल्सन के शब्दों ने दिलशाद के कानों में मीठा सा रस घोल दिया। वह निकल गयी। जाकर जीत के साथ गाड़ी में बैठ गयी।
गाड़ी घर की तरफ दौड़ने लगी, दिलशाद का मन नेल्सन की तरफ। मार्ग भर वह सोचती रही कि पर्स तो ले आई किन्तु ना जाने क्या क्या वह नेल्सन के पास छोड़ आई!
जीत का उपचार चलता रहा। इस बहाने नेल्सन से मिलती रही दिलशाद। धीरे धीरे दोनों के बीच सामीप्य बढ़ने लगा।
जीत की बीमारी बढ़ती गई। सारे प्रयास के उपरांत भी वह हिम का टुकड़ा ना तो टूट सका ना उसे आगे बढ़ते रोका जा सका। नेल्सन

ने किसी तरह से उसे फेफड़े तक पहोंचने से बचाए रखा था। कभी भी कुछ भी हो सकता था।
“हिम का टुकड़ा सांस लेने मैं बाधा कर रहा है। बांये फेफड़े की दीवार तक वह जा चुका है। यदि उसे अभी नहीं रोक पाये तो वह फेफड़े में घुस सकता है, फेफड़े को फाड़ भी सकता है। एक प्रयास हम कर सकते हैं।” नेल्सन ने जीत और दिलशाद को चेताया।
“क्या कर सकते हैं?” जीत और नेल्सन एक साथ बोले।
“लेसर से उस टुकड़े को थोड़ा सा घूमाते हैं, खिसकाते हैं और सांस की नली में कहीं फंसा देते हैं।”
“वह कैसे?”
नेल्सन ने रिमोट से बड़ी सी स्क्रीन ऑन की, उस पर विडीओ चलाया।
“यह जो नली है जिससे हम सांस लेते हैं वह स्नायुओं की बनी होती है। इसकी दीवार स्थिति स्थापक होती है। यदि फेफड़े के प्रवेश द्वार से ठीक पहले हिम के टुकड़े को इस दीवार में इस तरह से फंसा दें कि वह आगे खिसके ही नहीं।”
“उससे क्या होगा?”
“उससे एक लाभ होगा। यदि उसे हम दीवार में फंसा दें तो नली का रास्ता थोड़ा खुल जाएगा जिससे साँसों का आवागमन सरल हो जाएगा। जब तक वह उस दीवार में फंसा रहेगा, सांस सरलता से चलती रहेगी।”
“और वहाँ से जरा सा भी खिसक गया तो?”
“तो?” नेल्सन ने गहरी सांस ली, “यह ‘तो’ को अभी नहीं सोचते हैं। अभी तो जो श्रेष्ठ उपाय है वही करते हैं।”
तीनों मौन हो गए। जीत और दिलशाद घर लौट गए।
दो दिवस पश्चात नेल्सन का फोन आया, दिलशाद ने बात की।
“फिर क्या सोचा?” दुसरे छोर से नेल्सन ने पूछा।
“किस विषय में?” दिलशाद ने नटखट होकर पूछा।
“हम जीत के लेसर ऑपरेशन के बारे में बात कर रहे हैं।”
“ओह, मैं तो कुछ और ही…।” दिलशाद ने बात आधी कही, आधी छोड़ दी।
उस छोर पर नेल्सन हंस पड़ा। दिलशाद उस हंसी को सुनती रही। दिलशाद को लगा कि, नेल्सन की हंसी फोन पर भी उतनी ही मोहक है। दिलशाद के होठों पर भी स्मित आ गया।
“हम अभी किसी निष्कर्ष पर नहीं पहोंचे, कुछ समय और चाहिए, सोचने के लिए।”
“एक काम करो, तुम शाम को यहाँ आ जाओ।”
“जीत को साथ लेकर अथवा….?” दिलशाद ने फिर बात आधी छोड़ दी।
“तुम्हारी जैसी इच्छा। किन्तु आना अवश्य। आओगी ना?”
“अवश्य।” दूसरी तरफ से फोन कट गया। दिलशाद जीत की तरफ मुड़ी। जीत गवाक्ष से बाहर कहीं देख रहा था किन्तु उसके कान, दिलशाद और नेल्सन की बात पर ही थे। उसने सब सुन लिया था, सब समझ भी लिया था। वह मौन रहा।
“जीत, डॉ॰ नेल्सन का फोन था। लेसर ओपराशन के विषय में पुछ रहे थे। कुछ बात करना चाहते हैं, बुलाया है।”
“तो तुम जाकर मिल लो।”
“तुम भी साथ चलो। मैं अकेली कोई निर्णय नहीं ले पाऊँगी।” दिलशाद ने आग्रह करा, अधुरे मन से।
“नहीं, तुम ही चली जाओ। वैसे भी मैं थोड़ा थका हुआ हूँ।” जीत ने बात टाल दी।
“ठीक है, तुम विश्राम करो। पर हाँ, फोन चालू रखना। हो सकता है मुझे वहाँ से तुम्हें कुछ पूछना पड जाय।” दिलशाद संध्या तक प्रतीक्षा करने लगी।

28

संध्या होते ही दिलशाद नेल्सन के पास जाने के लिए घर से निकली। दिलशाद के पैरों में कोई विशेष बात थी, नेल्सन से मिलने को उतावली थी वह। जीत ने उस चंचलता को भांप लिया, कुछ ना बोला, बस देखता रहा।
दिलशाद चली गयी।
जब वह नेल्सन के पास पहोंची, दो रोगी नेल्सन की प्रतीक्षा कर रहे थे। दिलशाद समय के बीतने की प्रतीक्षा करने लगी। नेल्सन को संदेश कर के अपने आने की सूचना दे दी। नेल्सन ने शीघ्रता से दोनों को निपटा दिया। दिलशाद अंदर चली गई।
यह पहला अवसर था कि दिलशाद अकेली ही नेल्सन से मिल रही थी, उसकी हॉस्पिटल में, उसके कक्ष में। नेल्सन और दिलशाद, दोनों अकेले थे।
दिलशाद नेल्सन के सामने, टेबल की दूसरी तरफ रखी कुर्सी पर, होठों पर स्मित लिए बैठ गई। नेल्सन की आँखों ने उस स्मित का

जवाब दिया। चार आँखें एक हो गई। कुछ क्षण के लिए सब रुक सा गया। दिलशाद ने पलकें झुकाई तब जाकर रुका हुआ समय बहने लगा।
“जीत नहीं आया साथ में?”
“प्रतीत होता है कि मेरा अकेला यहाँ आना तुम्हें पसंद नहीं आया।” दिलशाद ने नेल्सन की तरफ देखकर आंखे नचाई। नेल्सन ने उसका कोई जवाब नहीं दिया।
“तो कहो, क्या करेंगे? कब करेंगे?” नेल्सन ने काम की बात की।
“जो तुम चाहो कर सकते हो।” दिलशाद ने अपने दोनों हाथ इस तरह उठाए जैसे वह नेल्सन को अपनी तरफ आने का आमंत्रण दे रही हो। नेल्सन ने उस संकेत को पढ़ा, कुर्सी से उठा और टेबल पार करके दिलशाद की कुर्सी के ठीक पीछे आकर खड़ा हो गया। दिलशाद स्थिर सी बैठी रही। नेल्सन ने कुर्सी को पीछे से पकड़ा, उसके हाथ दिलशाद की पीठ को स्पर्श करने लगे। एक झरना सा दिलशाद के शरीर में प्रवाहित हो गया। उसे अच्छा लगा। उसने गहरी सांस ली, आँखें बंध कर दी और नेल्सन की नई क्रिया की प्रतीक्षा करने लगी। कुछ क्षण व्यतीत हो गए। नेल्सन ने कुछ नहीं किया।
दिलशाद ने पीछे घूमते हुए आँखें खोली। नेल्सन के मुख से दिलशाद का मुख एक फुट से भी कम अंतर पर था। दिलशाद ने आँखें मिलाई, नेल्सन की आँखों से। फिर पलकें झुका दी। उसके होठों ने कुछ गति की जिसमें में कोई आमंत्रण था जो नेल्सन समझ गया। नेल्सन थोड़ा झुका, दिलशाद थोड़ी ऊपर उठी। दोनों के अधर अब अत्यंत निकट थे। दिलशाद के अधरों ने वह अंतर सम्पन्न कर लिया, जा मिले नेल्सन के अधरों से। प्रगाढ़ चुंबन की आश्लेष में थे दोनों के अधर।
नेल्सन ने दिलशाद के दोनों कंधों को पकड़कर अपनी तरफ खींचा, दिलशाद खड़ी हो गई। नेल्सन आगे बढ़ा और दिलशाद की कमर पर हाथ डाल दिये। धीरे से दिलशाद को अपनी तरफ खींचने लगा।
“नहीं… नेल्सन …।” दिलशाद छुटना नहीं चाहती थी, छुटने का व्यर्थ ही प्रयास करने लगी। नेल्सन समझ चुका था कि दिलशाद की नहीं, नहीं, में पूरी हाँ, हाँ छुपी है।
उसने अपने दोनों हाथों से दिलशाद को अपनी तरफ खींचा, इस बार दिलशाद ने झूठा सा भी विरोध नहीं किया। नेल्सन ने उसे अपने आश्लेष में ले लिया। दिलशाद ने भी अपने हाथ खोले और नेल्सन की दोनों तरफ फैला दिये। दोनों एक दुसरे के आलिंगन में थे। दिलशाद ने पूरे उन्माद से नेल्सन को कसा, नेल्सन ने भी। दोनों के बीच से हवा के बहने की संभावना भी नहीं रही।
दिलशाद, नेल्सन, आलिंगन और चुंबन। बस यही थे उस कक्ष में, उस क्षण।
नेल्सन ने अपने आलिंगन को थोड़ा और कसा। दिलशाद और समीप आ गई। नेल्सन ने फिर से कसा। इस बार कुछ टूटने की ध्वनि आई। नेल्सन को समज नहीं आया, पर दिलशाद समज गई।
“यह ध्वनि?” नेल्सन ने पुछा।
दिलशाद ने स्वयं को नेल्सन के आलिंगन से मुक्त किया। थोड़ी गभराई, थोड़ी लज्जित हुई और कुर्सी पर जा बैठी।
नेल्सन भी कुर्सी पर जा बैठा। क्या हुआ उसे समझने का प्रयास करने लगा। उसे कुछ समज नहीं आया। प्रश्न भरी द्रष्टि से दिलशाद को देखता रहा। दिलशाद कुछ नहीं बोली।
“दिलशाद, आई एम सोरी। मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। मैंने कुछ °..।” नेल्सन ने द्रष्टि झूका ली। उसके मुख पर अपराध भाव थे।
“नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। मुझे तो तुम्हारा यह … जो… अच्छा लगा।” दिलशाद को कोई अपराध भाव नहीं हुआ। वह प्रसन्न थी।
“तो बात क्या है? हुआ क्या है?”
“मेरी छाती की तरफ देखो। कुछ समज आ रहा है?”
नेल्सन ने दिलशाद की भरी तथा आकर्षक छाती की तरफ देखा। उसे कुछ समज नहीं आया।
“अरे बुध्धु हो तुम बिलकुल ही। मेरी छाती का आकार बदल गया है।”
“वह कैसे?”
“तुम्हारे कसने से मेरी ब्रा टूट गई है।”
“तो?”
“तो मेरे दोनों स्तन बंधन मुक्त हो गए है। थोड़े फैल से गए हैं।”
“तो अब क्या होगा? क्या करोगी तुम? जीत को पता चल जाएगा।” नेल्सन चिंतित हो गया।
“दो उपाय है। एक, दुकान से नयी ब्रा खरीद लूँ और पहन लूँ। दूसरा, टूटी हुई ब्रा को उतार दूँ।”
“?”
“यही कि मैं घर से बिना ब्रा ही निकली थी।” दिलशाद ने स्मित लहराया। वह उठी, कोने में गई और टूटी ब्रा खींच निकाली। नेल्सन ने उसकी छाती को देखा। दोनों तरफ ढली हुई पहाड़ियाँ सुंदर लग रही थी। नेल्सन उसे देखता ही रहा।
दिलशाद ने उस द्रष्टि को नहीं रोका।
“डॉक्टर, धरती पर रहने वाले पुरुष पहाड़ियों पर ज्यादा देर नहीं रहते, चाहे वह पहाड़ी कितनी भी छोटी हो, कितनी भी सुंदर हो, कितनी भी आकर्षक हो, कितना भी आमंत्रित करती हो। लौट आइये।” दिलशाद हंस पड़ी, नेल्सन भी।
कुछ इधर उधर की बातें करके दिलशाद ने जीत को फोन लगाया।
“जीत, नेल्सन तुमसे बात करना चाहते हैं।” दिलशाद ने फोन नेल्सन को दिया। फोन देते समय भी दिलशाद नेल्सन के हाथों को स्पर्श करना नहीं चुकी।
“जीत, दो दिन बाद हम लेसर शस्त्र क्रिया कर सकते हैं। तुम बस तैयार हो जाओ, मन से।”
“किन्तु…..।”
“किन्तु परंतु कुछ नहीं। इस विषय में विलंब करना उचित नहीं।”

“जैसा आप दोनों उचित समझो।”
“मैंने पूरी बात दिलशाद को समझा दी है। चिंता की कोई बात नहीं है। बस थोड़ी सी हिम्मत रखना। मैं और दिलशाद हैं न तुम्हारे साथ।”
“ठीक है।” जीत ने फोन काट दिया।
एक गरम चुंबन और एक उन्माद से भरा आलिंगन, दोनों ने एक दूसरे को दिया और पृथक हो गए। दिलशाद घर लौट गई। दुकान से नई ब्रा लेना भूल गई।

29

दिलशाद जब घर पहुंची तो जीत आँगन में झूले पर बैठा था। दिलशाद जीत के पास गई और उसके गाल को चूमने के लिए झुकी। दिलशाद की ढीली छाती भी झूली। जीत ने उसे अनुभव किया। वह समझ गया कि दिलशाद की ब्रा अपने स्थान पर नहीं थी। दिलशाद कभी बिना ब्रा के घर से बाहर नहीं जाती। तो यह कैसे हुआ? सवाल जीत के मन में उठा, जवाब भी उसे ज्ञात था। दिलशाद अपनी ब्रा खो चुकी थी, जीत को भी।
जीत कुछ नहीं बोला। रात भर सोचता रहा। रात भर स्वयं से संघर्ष करता रहा। भोर जब आई तो वह चिंता से परे था। उसने कोई निर्णय कर लिया था। बस उस पर अमल करना था।
“डॉक्टर नेल्सन, मैं इस शस्त्र क्रिया के लिए अभी तैयार नहीं हूँ। मुझे कुछ समय चाहिए।” जीत अपनी योजना को रूप देने लगा।
“क्या बात है, जीत?” नेल्सन ने पूछा।
“विशेष कुछ नहीं। बस स्वयं को तैयार करना है मुझे, उसके लिए थोड़ा समय चाहिए।”
“कितना?”
“आठ से दस दिन।”
“ठीक है। जैसा तुम चाहो।” नेल्सन ने फोन काट दिया।
अगले क्षण से ही जीत दिलशाद को भरपूर प्रेम देने लगा। अनराधार बारिश की भांति वह दिलशाद पर बरसता रहा। दिलशाद उस प्रेम की वर्षा को समझ नहीं पाती थी, पर भीगती रही।
जीत अपनी योजना पर काम करने लगा। उसके अंदर एक नयी ऊर्जा जन्म ले चुकी थी। नया उमंग उसकी अंदर दौड़ रहा था। दिलशाद ने उस परिवर्तन को परख लिया था, पर उसे कुछ समझ नहीं पा रही थी।
दिलशाद, उस शाम के बाद नेल्सन से कभी नहीं मिली, ना ही फोन पर बात भी की। जीत के प्रेम ने नेल्सन के साथ बीती उस शाम को भी भूला दिया था। पर जीत नहीं भूला था। जीत की योजना का कारण भी यही था, वह शाम जब दिलशाद नेल्सन से मिलने गई थी ब्रा पहनकर और लौटी थी बिना ब्रा के। जीत उस बात को कभी नहीं भूल पाया।
पूरे सात दिनों के बाद, जीत ने नेल्सन को फोन पर बताया कि वह शस्त्र क्रिया के लिए तैयार है। दूसरे दिवस वह डॉक्टर नेल्सन के अस्पताल में था।
दो दिवस तक भिन्न भिन्न परीक्षण होते रहे। दिलशाद जीत के साथ अस्पताल में ही रहने लगी। प्रत्येक परीक्षण में वह उसके साथ

रहती थी।
नेल्सन से मुलाक़ात होती रहती थी, पर वह नजरें चुरा लेती थी। नेल्सन भी जैसे उस शाम कुछ हुआ ही नहीं ऐसे एक अच्छे डॉक्टर की भूमिका निभाने लगा।
“कल संध्या को ठीक पाँच बजे शस्त्र क्रिया होगी। सब कुछ ठीक ठाक है। तुम तैयार हो न?” नेल्सन ने जीत से पूछा। जीत ने केवल स्मित किया। नेल्सन ने दिलशाद की तरफ देखा।
“हाँ, बिलकुल तैयार है।”
“पर, मुझे कुछ सवाल पूछने हैं, नेल्सन तुमसे।” जीत ने नेल्सन और दिलशाद की तरफ बारी बारी देखा।
नेल्सन और दिलशाद इस बात से विचलित हो गए, एक दूसरे की तरफ देखने लगे।
“कैसे सवाल, जीत?” नेल्सन ने कहा।
“मेरे स्वास्थ्य के विषय में।” जीत के शब्दों ने दोनों को निश्चिंत कर दिया।
“अवश्य। पुछो जो पुछना चाहते हो। एक डॉक्टर का यह दायित्व है कि वह अपने रोगी को पूरी जानकारी दे।”
“इस स्थिति में मुझे किन किन बातों का ध्यान रखना होगा? जिससे मेरी क्षण क्षण पिघल रही जिंदगी टिकी रहे। मेरे द्वार पर खड़ी और कभी भी आ जाने वाली मृत्यु को मैं टालता रहूँ।” जीत नेल्सन की आंख में आँख डालकर एक ही श्वास में बोल गया।
“किसने कहा कि मौत के समीप हो तुम?” दिलशाद ने जीत के माथे पर हाथ फेरा।
नेल्सन कुछ नहीं बोल सका। एक डॉक्टर तब निराश हो जाता है जब उसका रोगी स्वयं की मृत्यु को सामने देख लेता है और उसे वह स्वीकार भी कर लेता है। नेल्सन भी निराश था।
“मेरा सवाल डॉक्टर से है। वह सत्य जानते हैं।”
नेल्सन जीत के पास आया, “जब तुम जानते हो कि तुम्हारे पास बची हुई जिंदगी का गणित कोई लंबा चौड़ा नहीं है तो मुझे बता देना चाहिए।”
“बता दो, मुझे सब कुछ सुनना है।” जीत लैटा हुआ था, वह बैठने का प्रयास करने लगा। वह दुर्बल था अत: नेल्सन और दिलशाद ने उसे सहारा दिया। वह बैठ गया। दिलशाद और नेल्सन ने दूरी बनाए रखी।
“तुम्हारे पास कितना समय बचा है वह कोई नहीं बता सकता। हो सकता है चार छ: महीने निकल जाये और हो सकता है कई साल तक कुछ न हो। यह पूरी अनिश्चितताओं का चक्र है।”
“अर्थात कोई दिवस, कोई तारीख निश्चित नहीं है। कभी भी आ सकती है मृत्यु मेरे पास।”
“यह मृत्यु वर्षों तक ना आए, यह भी तो हो सकता है।” दिलशाद ने आशा बंधाई।
“और कल भी आ सकती है। यह भी तो हो सकता है।” जीत ने कहा।
“दोनों बात सही है। कुछ भी हो सकता है, कभी भी। किन्तु …।” नेल्सन अटक गया।
“किन्तु क्या, डॉक्टर नेल्सन?” जीत और दिलशाद एक साथ बोले।
“किन्तु बात यह है कि हम अपना धैर्य और अपनी हिमत क्यूँ छोडें? हम अपना प्रयास जारी रखेंगे और एक सशक्त लड़ाई लड़ेंगे। ऐसे हम हार क्यूँ मान लें? मैं मृत्यु को इतनी सरलता से सफल नहीं होने दूंगा। क्या आप मेरा साथ दोगे?” नेल्सन ने दोनों को नया उत्साह दिलाने का प्रयास किया।
“जो लड़ाई का परिणाम निश्चित हो उसको लड़ने का क्या औचित्य?” जीत ने पूछा।
“जब तक सामने वाला जीत ना जाय, हमें हार नहीं माननी है।”
“वह कैसे संभव होगा?”
“बस दो तीन बातों का ध्यान रखना है।”
“क्या क्या?”
“एक, कोई ऐसा काम महेनत का नहीं करना है जिसके आघात से हिम का टुकड़ा खिसक जाय। दूसरा, खाने पीने की कोई पाबंदी नहीं है। तीसरा, ऊंची, बहुत ऊंची पहाड़ियों पर जाना नहीं है।”
“पहाड़ियों पर क्यूँ नहीं?”
“तुम्हारी मूल समस्या सांस के साथ जुड़ी है। ऊंचाई पर अधिकांश लोगों को सांस लेने में कठिनाई हो जाती है। हवा वहाँ धरती पर होती है वैसी नहीं होती। ऊंचाई पर सांस बंध भी हो सकती है। तो यह ध्यान रहे कि बर्फीले पहाड़ियों पर जाना अब बंध।”
“मैं भी कभी नहीं जाऊँगी उन पहाड़ियों पर।” दिलशाद ने अपना निर्णय बताया।
तुम जाओ ना, तुम्हें कहाँ प्रतिबंध है? नेल्सन तुम्हारे साथ चलने को उत्सुक होगा, ले चलो उसे अपने साथ।
जीत के मन में विचार आ तो गया पर उसे अधरों तक जाने से रोक लिया।
“ठीक है। और कुछ ध्यान रखना है मुझे?”
“विशेष कुछ नहीं, बस समय समय पर दवाइयाँ लेते रहो, और जब भी, जो भी आवश्यक हो वह सभी औषधीय उपचार एवं उपाय करवाते रहो। और खास, जीवन की अभिलाषा बनाए रखो।”
“जीने की तीव्र इच्छा मृत्यु को भी परास्त कर देती है।” दिलशाद ने साहस बँधाया।
“धन्यवाद डॉक्टर नेल्सन, धन्यवाद दिलशाद।” जीत लैट गया।
नेल्सन चला गया। दिलशाद वहीं बैठी रही। जलमार्ग से बाहर शून्य मन से देखती रही।

30

जीत सूर्योदय से पहले ही जाग गया। कुछ समय चिकित्सालय में ही घूमता रहा। वह बाहर निकला और राज मार्ग पर आ गया। मार्ग खाली से थे। केवल कुछ कोहरा था।

चाय की एक दुकान खुली थी। वहाँ दो तीन लोग मध्धम ठंड का गरम चाय के साथ आनंद ले रहे थे। जीत ने भी चाय मँगवाई। चाय आई। वह चाय पीने लगा, धीरे धीरे। जैसे वह समय को रोकना चाहता हो। अपनी मृत्यु को दूर रखना चाहता हो। वह धीरे धीरे पीता रहा। एक कप चाय पीने में जीत को पूरे 26 मिनट लगे। इस बीच कई लोग चाय पीकर चले गए।

"आज पूरा समय ले कर आए लगते हो। कहाँ से आए हो?" चाय वाले ने अपनी उत्सुकता व्यक्त की।

जीत मुस्कुराया, उस चाय वाले को देखता रहा।

"सा'ब आपने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया।"

"यह पूरा समय क्या होता है, तुम जानते हो? कुछ क्षण यूं ही बैठे रहना, कुछ काम काज नहीं करना, अथवा कोई काम में हमारे गणित से अधिक समय लेना। यह सब को पूरा समय बोलते हैं?"

"सा'ब आप कहीं कोई कवि अथवा विचारक अथवा कहानीकार तो नहीं?"

"बिलकुल नहीं। तुम्हें मैं ऐसा लगता हूँ?"

"कई सालों से मैं यह चाय की दुकान चलाता हूँ। बड़े बड़े कवि, कहानीकार, चिंतक और कई बार तो फिल्मी कलाकार भी चाय पीने के लिए आते हैं और आप ही की भांति इस छोटे से कप में भरी थोड़ी सी चाय को पीते पीते घंटा भर बिता देते हैं।"

"उस घंटे भर वह क्या करते हैं?"

"क्या पता? बस बैठे रहते हैं, कहीं कुछ विचारों में खो जाते होंगें। हो सकता है उनकी आँखें कोई और दुनिया को देख रही हो। आप क्या कर रहे थे, इतनी देर तक? क्या आप भी...?"

"नहीं नहीं, मैं कोई कवि या चिंतक नहीं हूँ। ना ही मैं फिल्मी कलाकार। अरे यह बताओ, वह सब लोग चाय पीने के बाद पैसा तो चूकाते हैं ना?"

"कई लोग भूल भी जाते हैं।"

"कितने उधार होंगे ऐसी चाय के?"

"क्या करोगे जान कर, सा'ब? क्या आप उन सब का पैसा चुका दोगे? क्या आप भी उधार...? यदि आप के पास पैसा नहीं हो तो कोई बात नहीं।" चाय वाला उबल रही दूध के पास लौट गया। जीत ज़ोर से हंस पड़ा। उसका हास्य अभी भी खाली पड़े मार्ग पर बिखर गया। चायवाले ने जीत की तरफ देखा, देखता रहा, उसको समझने का प्रयास करता रहा। उबलता हुआ दूध अपने बर्तन की सीमा लांघकर उभर चुका था।

"ऐसे लोगों के चक्कर में मेरा नुकशान हो गया।" चायवाला बड़बड़ाया।

जीत उठा, जेब से कुछ रूपये निकाले और चायवाले के पास गया, "क्या नाम है तुम्हारा?"

"कोई भी हो, तुम्हें क्या? जाओ, आप की चाय के पैसे नहीं चाहिए मुझे।" उस ने उपेक्षा की।

"कोई बात नहीं। यह दो हजार रुपए रख लो।" जीत ने रुपए दिये।

"सा'ब एक चाय के इतने नहीं होते। आपने तो एक ही चाय पी है।"

"यह मेरी चाय के नहीं है। यह तो उन कलाकारों के हैं जिसने पैसे नहीं चुकाए। हाँ, मेरी चाय के पैसे तो अभी भी उधार ही रखना।" जीत हँसता हुआ चल दिया।

"सा'ब, मेरा नाम किशन है। याद रहेगा ना? और फिर कभी आइएगा चाय पीने, लंबी चाय...।" किशन के शब्द सुनते सुनते जीत

अस्पताल लौट गया।

(*)(*)

जीत ने घड़ी देखि। आठ बज रहे थे। दिलशाद घर गयी थी, उसे आने में अभी एक घंटा बाकी था। जीत अपनी योजना पर काम करने लगा। दाढ़ी हटा दी, सर पर से पूरे बाल हटा दिये। उसने आइने में देखा। स्वयं को पहेचान नहीं पाया। हंस दिया, प्रसन्न हो गया। आवश्यक सामान एक छोटी सी झोली में डाल दिया, कक्ष से बाहर निकला। अभी भी चिकित्सालय सोया हुआ था। खास कोई रोगी थे नहीं, और जो थे वह अभी भी नींद अथवा आलस के आश्लेष में थे। एक चौकीदार था पर वह समाचार पत्र पढ़ने में व्यस्त था।

जीत चिकित्सालय छोडकर मार्ग पर आ गया। थोड़े चरण पर उसे टेकसी मिल गयी, टेकसी दादर स्टेशन की दिशा में दौड़ने लगी। उसने एक टिकट लिया और लगभग छुट रही लोकल ट्रेन में चढ़ गया। ट्रेन दहाणु रोड तक जाती थी, वह दहाणु उतर गया। वहाँ से बस से सूरत होते हुए अमदावाद जा पहुंचा। गगन में संध्या प्रवेश कर चुकी थी।

(*)(*)(*)

ठीक 9.18 मिनट पर दिलशाद अस्पताल पहुंची। सीधे जीत के पास दौड़ गई। जीत अपने कक्ष में नहीं था। दिलशाद ने स्नानगृह में देखा, जीत नहीं मिला। उसे पुकारा, नहीं मिला कोई प्रतिभाव। थोड़ी गभराई सी बाहर निकली, इधर उधर देखने लगी। जीत कहीं नहीं था।

चौकीदार से पूछा, “यह रूम नंबर 107 वाले साहब कहाँ है?”

“जीत साहब की बात कर रहे हो न?”

“हाँ, वही। कहाँ है वह? तुमने उसे कहीं देखा है क्या?”

“हाँ, सुबह सुबह वह घूमने निकले थे, करीब 6 बजे के आस पास।”

“फिर? फिर कब लौटे? या अभी तक लौटे ही नहीं?”

“एकाद घंटे के बाद वह लौट आए थे। सीधे अपने कमरे में चले गए थे। बाद में उसे बाहर जाते नहीं देखा।”

“तुझे पक्का विश्वास है कि वह लौट आए थे?”

“हाँ, पक्की बात है। लौटते समय उसने मुझे 500 रुपये,” चौकीदार ने जेब से रुपये निकले, “यह देखो, यह 500 रुपये का नोट मुझे बक्षिश भी दिया था। देखो यही है वह नोट।”

“तो फिर कहाँ गए? वह अपने कक्ष में नहीं है। कहीं उसे वापिस बाहर जाते तो नहीं देखा?”

“नहीं जी। यहाँ से वह बाहर नहीं गए। आप उसके मोबाइल पर कॉल करो ना?” चौकीदार की बातें आधी सुनी दिलशाद ने। लौट आई कक्ष में।

मोबाइल पर जीत को फोन लगाया। जीत के फोन की घंटी बजी। वह उत्सुक हो उठी, जीत के जवाब की प्रतीक्षा करने लगी। अचानक कक्ष के कोने में पड़े जीत के मोबाइल की घंटी बजी।

“श्रीमान अपना मोबाइल यहाँ छोड़ गए हैं।” दिलशाद ने फोन काट दिया, क्रोध से।

“जीत कहाँ हो तुम?” दिलशाद चिल्लाई, “अब आ भी जाओ। यह छुपा छुपी का खेल मत खेलो। प्लीझ... जीत...।” दिलशाद की ध्वनि कक्ष की दीवारों से टकराकर नष्ट हो गई।

दिलशाद मौन हो गई। कुछ समय तक उसे कुछ भी नहीं सुझा। वह शून्यमनस्क सी बैठी रही। स्वयं को आश्वस्त करती रही, ‘यहीं कहीं गया होगा, आ ही जाएगा थोडे समय में।’

वह मन ही मन अपने शब्दों को दोहराने लगी। ‘सब ठीक हो जाएगा, जीत यहीं होगा, लौट आएगा..।’

समय बीतता चला गया, 10.00,

10.30,

11.00 बज गए पर जीत के कोइ संकेत नहीं मिले।

“जीत, कैसे हो? तैयार हो ना तुम?” डॉक्टर नेल्सन कक्ष में प्रवेश कर गए।

“दिलशाद कैसी हो? जीत कहाँ है? उसे हिम्मत देते रहना।” नेल्सन ने पूरे कक्ष में द्रष्टि डाली। उसे जीत दिखाई नहीं दिया। दिलशाद को देखा, वह निराश थी।

“दिलशाद क्या हुआ?”

“नेल्सन, जीत कहीं नहीं है।”

“अरे, गया होगा यहीं कहीं। आ जाएगा। तुम चिंता मत करो।”

“नेल्सन, सुबह 9.15 से मैं यहाँ हूँ और वह तब से गायब है। कोई पता नहीं वह...।” दिलशाद टूट गई, रो पड़ी। नेल्सन स्थिति को समझ गया। जीत वास्तव में कहीं चला गया था। दिलशाद को रोते हुए देखता रहा। मन तो कर रहा था कि दिलशाद को आलिंगन में लेकर उसे शांत करूँ, पर नेल्सन ने स्वयं को रोका। दिलशाद को रोने दिया। वह रोती रही। नेल्सन चला गया।

11.30 पर एक टेक्षी हॉस्पिटल के पास आकर रुकी। एक व्यक्ति हाथों में कुछ फाइलें लेकर बाहर निकला, टेक्षी चली गई। वह सीधा जीत वाले कमरे में घुस गया। उसने टेबल पर सारी फाइलें रख दी और एक तरफ खड़ा हो गया।

दिलशाद उसे देखती रही, “आप कौन हो और यह सब क्या है?”

“जीत सा’ब ने यह सब आपके लिए भेजे हैं। आप इसे संभाल लीजिये और मुझे इन सब से मुक्त कीजिये।”

वह हाथ जोड़कर कोने में खड़ा हो गया।

“पर कहाँ है आप के यह जीत सा’ब?” वह उठ खड़ी हो गयी, उस व्यक्ति के हाथ पकड़ लिए।

जीत के गुम होने की क्षण से अब तक यह पहला व्यक्ति था जो जीत के बारे में कुछ जानता था। दिलशाद ने उसे फिर से पूछा, “कहाँ

है जीत?"
वह मौन खड़ा रहा। "तुम बताते क्यूँ नहीं? इस तरह चुप क्यूँ हो?" दिलशाद गुस्साई।
वह मौन ही रहा। हाथ जोड़े खड़ा रहा।
दिलशाद के कई बार पुछने पर भी उसने कोई जवाब नहीं दिया तो दिलशाद एक के बाद एक सब फाइलें देखने लगी।
दिलशाद ने सारी फाइलें बंध कर दी। वह जान चुकी थी कि जीत उसे छोडकर कहीं चला गया है। और सारी संपत्ति और व्यापार दिलशाद के नाम कर गया है।
दिलशाद विचलित हो गयी।
"जीत ने ऐसा क्यूँ किया? क्या चाहता था वह? कहीं मैं तो इस के...?" वह सोच ही रही थी कि उस व्यक्ति ने एक बंध कागज दिलशाद के हाथों में रख दिया,"यह जीत सा'ब का पत्र, आप को देने को कहा था।"
दिलशाद ने पत्र लिया। अधिरपन से, अधीर मन से उसे पढ़ने लगी।
दिलशाद,
यह पत्र जब तक तुम्हारे हाथों में आएगा तब तक मैं कहीं दूर निकल जाऊंगा। बहुत दूर कि जहां ना तो तुम सोच सकती हो ना ही तुम पहोंच सकती हो।
मैं जिंदगी से हारा नहीं हूँ। ना ही मैं आत्महत्या करने वाला हूँ। किन्तु मृत्यु से पहले मैं जीना चाहता हूँ, अपने ढंग से अपनी इच्छा से। मृत्यु से पहले मैं मरना नहीं चाहता।
मैं जानता हूँ कि मेरे पास अब ज्यादा समय नहीं है। हर कोई मेरी मृत्यु की प्रतीक्षा करता है और जब तक मैं जीवित हूँ प्रत्येक क्षण आप सब की आँखों में मेरी मृत्यु की प्रतीक्षा रहेगी। केवल मैं ही हूँ जो मेरी मृत्यु की प्रतीक्षा नहीं करता।
उस संध्या तुम अपनी ब्रा खोकर आई थी अथवा मुझे? जिस क्षण तुम्हारी ब्रा टूटी थी उसी क्षण हमारे संबंध और हमारे प्रेम का विश्वास भी टूट गया था।
मैंने पूरी संपत्ति और व्यापार तुम्हारे नाम कर दिया है। तुम्हें ही उसे संभालना होगा।
नेल्सन अच्छा डॉक्टर है, लड़का कैसा है वह मुझसे ज्यादा तुम जानती हो। चाहो तो उससे विवाह कर सकती हो। संसार के जिस बंधन से हम दोनों जुड़े थे उन सब बंधनों से तुम मुक्त हो।
मेरे विषय में जानने की अथवा मुझे ढूँढने की व्यर्थ चेष्टा मत करना। मैं हाथ नहीं आने वाला।
प्रसन्न रहो।
जीत।
दिलशाद की आँखों से कुछ बूंदें टपक गई, गालों से होते हुए उस कागज को भी गीला कर गई।
दिलशाद ने स्वयं को संभालने का प्रयास किया। उसने उस व्यक्ति की तरफ देखा। वह व्यक्ति वहां नहीं था। वह उठी, दौड़ी, भागी उस व्यक्ति को पकड़ने। वह मार्ग पर आ गई। दूर मार्ग के पड़ाव से टेक्षी पकड़कर वह व्यक्ति चला गया। मुंबई की गलियों में विलीन हो गया। दिलशाद उसे जाते हुए देखती रही।
कौन था वह? सोचती रही।

&&

जीत ने अमदवाद से नया मोबाइल फोन और सिम कार्ड लिया। किसी का भी नंबर उसमे नहीं डाला। दूर जाती एक बस में चढ़ गया। वह बस भुज जाती थी। वह भुज से कच्छ के रण में गया, वहीं रुक गया। सारे संसार से अलग, गुप्त और अकेला। कोई नहीं जानता था कि जीत कहाँ गया।

31

जीत की हथेली अनायास ही खुल गई। वह खुली हथेली को देखता रहा। उसे लगा जैसे उसकी बंध मुट्ठी से कुछ फिसल गया हो, सरक गया हो, छुट गया हो।

“क्या था जो अभी अभी हाथों से छूट गया?” जीत चारों दिशाओं में, ऊपर, नीचे, उसे खोजता रहा। किन्तु ना तो वह उसके हाथ आया ना वह समझ पाया कि जो छूट गया वह क्या था। जो छूट गया, वह कहीं विलीन हो गया। जीत निराश हो गया।

वफ़ाई मौन थी। जीत के मुख पर परिवर्तित होते रहे भावों को देख रही थी, उसे समझने का प्रयास कर रही थी।

“जीत, कहाँ हो? कहीं किसी का स्मरण तुम्हें विचलती तो नहीं कर गया?” वफ़ाई जीत के समीप गई।

जीत ने आँखें खोली, सामने वफ़ाई को पाया। अचंभित सा रह गया, जीत।

“यह सहज है जीत, कि कभी कभी हम यहाँ होते हुए भी यहाँ नहीं होते हैं। और जहां नहीं होते हैं वहाँ नहीं होते हुए भी होते हैं।”

“किन्तु ऐसा होता क्यों है?”

“यह होना, ना होना कुछ भी हमारे बस में नहीं है। यह प्राकृतिक है, स्वाभाविक है। उसके कारणों में क्यों पड़ें हम?”

“तो क्या करें हम?”

“हम कर भी क्या सकते हैं? कुछ नहीं। हमें कुछ करना भी नहीं चाहिए। बस, जब जब ऐसी क्षण आए तब तब उन क्षणों का आनंद लेते रहना चाहिए। वह क्षण का भार लेकर नहीं चलना चाहिए।”

“वफ़ाई, यही तो समस्या है। उन क्षणों से भय नहीं लगता किन्तु उन क्षणों का भार विचलित कर देता है। सब कुछ छिन्न भिन्न कर देता है।”

“एक उपाय है इसका, सीधा एवं सरल। तुम कहो तो मैं कहूँ।”

“कहो।”

“जीत, हमें ऐसे क्षणों में रो लेना चाहिए।”

“यदि रो न सके तो?”

“तो उसे किसी को बता देना चाहिए। दोनों विकल्प है, अब पसंद तुम्हारी।”
“वफ़ाई, तुम सुनोगी क्या उन बातों को?”
“मैं तो अधीर हूँ तुमसे बात करने को, तुम्हारे अतीत को जानने को। तुम हो कि बताते नहीं हो।”
“बता तो दूँ....।” जीत रुक गया।
“तो तुम मुझे सब कुछ बताने जा रहे हो। वाह जीत, आओ बैठो।” वफ़ाई उत्साह से भर गई। उसे मन तो हुआ कि जीत का हाथ पकड़कर उसे झूले तक ले जाऊं। वफ़ाई ने अपनी अभिलाषा को वहीं छोड़ दिया। झूले पर जाकर बैठ गई, जीत की प्रतीक्षा करने लगी।
“जीत, तुम मुझे सब बता रहे हो ना?” वफ़ाई ने पुन: पूछा।
“हाँ भी, नहीं भी।” जीत झूले के समीप आ खड़ा हुआ। वफ़ाई जीत की तरफ मूड गई।
“हाँ और ना, दोनों?”
“हाँ का अर्थ है मैं तुम्हें यह बताने जा रहा हूँ कि मैंने यह चित्रकला कैसे सीखि। ना का अर्थ है मैं तुम्हें अभी वह बात नहीं कहूँगा कि मैं सब कुछ छोड़कर यहाँ कैसे आ गया।”
“तुम जो उचित समझो वह बता दो। जीत, मैं अधीर हूँ इन बातों को जानने के लिए।”
“वफ़ाई, मैं भी नहीं जनता था कि चित्र कैसे बनाया जाता है। मुझे भी सीधी रेखा तक खींचना नहीं आता था। मुझे रंगों की भी कोई समझ नहीं थी। रंगों के मिश्रण, रंगों से उत्पन्न होते भावों आदि का कोई ज्ञान नहीं था।” जीत क्षण भर के लिए रुका।
“जीत, तुम बिना रुके कहते रहो। मैं एकाग्रता से सुन रही हूँ। तुम कहते रहो, मैं सुनती रहूँ तो रस क्षति नहीं होगी।”
“मैं प्रयास करूंगा।”
“ठीक है, मैं तैयार हूँ। और हाँ, झूले पर बैठकर बातें कर सकते हो।”
जीत ने वफ़ाई के आमंत्रण की उपेक्षा की, वह खड़ा ही रहा।
“यह घर खरीदने के पश्चात मैं निश्चिंत हो गया। कुछ ही दिनों में एकांत से मन भर गया। तब विचार आया कि क्यों ना मैं सारे संसार के संपर्क में रहूँ? इस हेतु मैंने नया ई-मेल बना लिया। प्रत्येक घंटे के बाद मैं अपने ई-मेल को देखता रहता था कि किसी ने मुझे कोई संदेश तो नहीं भेजा। कई दिनों तक मेरा इन-बोक्ष खाली रहा। मैं निराश हो गया।
मैंने ई-मेल देखना ही छोड़ दिया। किसी से संपर्क होने की आशा भी छोड़ दी। मैं पुन: एकांत से घिर गया। मैं ई-मेल को लगभग भूल ही गया था।" जीत दूर कहीं गगन को देख रहा था, किसी अज्ञात में खो चुका था।
“जीत, फिर क्या हुआ?”
जीत ने नि:श्वा स लेते कहा, “एक दिन मैं ने यूं ही ई-मेल देखा और पाया कि किसी गेलिना बाबोक ने मुझे कोई ई-मेल भेजा है। मुझे आश्चर्य हुआ। यही पहली जीवित व्यक्ति थी जिसने मुझे ई-मेल भेजा था। मैं अधीर हो गया, ई-मेल और उसे भेजनेवाले के विषय में जानने के लिए। मैंने उसे शिघ्रता से खोला और पढ़ने लगा।
‘हेय जीत, मैं गेलिना बाबोक, स्त्री, 65, स्वीडन से। मेरी मित्रता स्वीकार करोगे? अपने विषय में विस्तार से कुछ कहो। तब तक मैं यहाँ के सौन्दर्य की तस्वीरें भेज रही हूँ। मुझे आशा है तुम्हें पसंद आएगी।’
ई -मेल में 3 सुंदर तस्वीरें थी। एक, समुद्र के तट की थी जिसमें नारिएली लगी हुई थी, नीला समंदर और नीला गगन था। दूसरी, हिम से आच्छादित पहाड़ों की थी। तीसरी, अत्यन्त ऊंचाई से गिरते जल प्रपात की थी।
मैं उसे बारंबार देखता रहा, निहारता रहा। तस्वीरें इतनी सजीव थी किजैसे सागर, हिम, पहाड़, जल प्रपात, यह सब मेरे सामने ही हो। मैं उसके हमी की अनुभूति के रस को मरुभूमि में रहते हुए भी पिता रहा। मैं आँखें बंध कर कई क्षणों तक उसका आनंद लेता रहा। वफ़ाई, सुखी इस मरुभूमि में रहते हुए भी रस से भरे विश्व की अनुभूति करना मुझे रोमांचित कर गया।
पैंसठ वर्ष की एक अज्ञात स्त्री जो दूर किसी अज्ञात स्थल पर रहती हो, जो मुझ से मित्रता चाहती हो, एक सुखद अनुभूति थी वह क्षण मेरे लिए।” जीत थोड़ा रुका। वफ़ाई की तरफ देखा। वह जीत को ही निहारती रही थी, एक ध्यान होकर जीत को ही सुन रही थी। जीत को लगा जैसे वफ़ाई भी समय के उस पड़ाव पर चली गई हो।
जीत ने आगे कहा , “मैंने गेलिना कीमित्रता स्वीकार कर ली। उसे ई-मेल का प्रत्यु त्तर देने लगा। कुछ शब्द लिखने के पश्चात मैं रुका और सोचने लगा कि मैं भी मरुभूमि की तस्वीरें भेजूं तो?
मेरे मन ने मुझे रोका,
नहीं जीत, सुखीमरुभूमि की तस्वीरें मत भेजो। वह सुंदर स्थल पर रहती है। उसे मरुभूमि की तस्वीरें विचलित कर सकती है। हो सकता है कि मित्रता समाप्त ही हो जाय। तुम उसे प्रकृति के सौन्दर्य से भरी तस्वीरें भेजो जो उसे पसंद आए।
मन में द्वन्द्व चालू हो गया।
‘मेरे पास ऐसी तस्वीरें है ही नहीं। मुझे वह वस्तु भेजनी चाहिए जो उसके पास नहीं हो। हिम, सागर, पहाड़ आदि का सौन्दर्य तो उसके पास है ही। उसके पास रेत अथवा मरुभूमि की सुंदरता नहीं है। मैं उसे रेत से भरे मरुभूमि की तस्वीरें ही भेजूँगा।’
‘सुंदर विचार है, जीत। तुम यही करो।’

मैंने मरुभूमि की तीन चार तस्वीरें खींची और ई-मेल से भेज दी। घंटों तक गेलिना के प्रत्युत्तर की प्रतीक्षा करता रहा। उसका कोई जवाब नहीं आया। मैं निराश हो गया।
दूसरे दिवस गेलिना का ई-मेल आया। मैंने अधीरता से उसे खोला, पढ़ने लगा। गेलिना ने अदभूत जवाब दिया था। उसने कुछ चित्र भेजे थे।"
जीत के शब्द सुनकर वफ़ाई उत्तेजना से बोल पड़ी, "ओह, क्या बात है?" वह उत्साह से खड़ी हो गई।
"वफ़ाई, मैंने भी इसी तरह प्रत्याघात दिये थे। जैसे तुम अभी उछल पड़ी हो मैं भी वैसे ही उछल पड़ा था।"
"जीत, वह चित्र किसके थे? क्या था उन चित्रों में?" वफ़ाई ने पूछा।
"वह अविश्वस्निय थे, अदभूत थे, अविस्मरणीय थे। वह चित्र मरुभूमि के थे। मैंने मरुभूमि की जो तस्वीरें भेजी थी उसी के चित्र थे वह सब।"
"ओह, जीत। तुम अदभूत बात कह रहे हो।"
"मुझे उन चित्रों ने आकृष्ट किया। मुझे वह चित्र भा गए। मैंने ई-मेल में लिखा, तुमने जो चित्र भेजे हैं वह अदभूत है, अनुपम है। यह चित्र किसने बनाए हैं?"
'वह चित्र मैंने बनाए हैं।'गेलिना का जवाब आया था।
"ओह, कितना सुंदर! क्या मैं ऐसा कर सकता हूँ? मैं चित्रकला सीखना चाहता हूँ। क्या तुम मुझे वह सिखाओगी?" मैंने उसे विनती करी।
"जीत, यह तो अत्यंत रोचक घटना है। तो तुमने गेलिना से चित्रकला सीखि? आगे कहो कि गेलिना ने तुम्हें यह सब कैसे सिखाया, वहाँ दूर रहते हुए भी।" वफ़ाई ने पूछा।
"वफ़ाई, उसने जवाब दिया कि मैं सीखा सकती हूँ किन्तु इन्टरनेट अथवा ई-मेल के माध्यम से नहीं। यदि तुम उसे सीखना चाहते हो तो तुम्हें मुझे साक्षात मिलना होगा। गेलिना ने कुछ और चित्र भी भेज दिये।
मैंने भी लिखा, "यह तो संभव नहीं होगा। यह तो मेरी बिनती को तुम नकार रही हो। मैं निराश हुआ हूँ।"
गेलिना ने लिखा, "नहीं जीत। मैं नकार नहीं रही हूँ। मैं ऐसा कभी नहीं कर सकती। चित्रकारी मेरा उत्कट आवेग है, मेरी उत्कट भावना है। यदि कोई मेरे चित्रों के विषय में बात करता है तो मैं रोमांचित हो जाती हूँ। तुमने ना केवल मेरे चित्रों में रुचि दिखाई है अपितु तुम उसे मुझ से सीखना भी चाहते हो। यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है। यह मेरा सम्मान है, मेरी कला का सम्मान है। मैं तुम्हें अवश्य सिखाऊँगी। निराश मत हो।"
"जीत, फिर क्या हुआ। गेलिना का व्यक्तित्व अदभूत है।" वफ़ाई झुले से खड़ी हो गई।
"उसके पश्चात गेलिना का कई दिवस तक कोई ई-मेल नहीं आया। मैं खूब निराश हो गया।"
"स्वाभाविक है, जीत।"
"वफ़ाई, इस मरुभूमि में गेलिना मेरी पहली मित्र थी, एक मात्र मित्र थी। समय व्यतीत होता गया। मैं गेलिना और उसके स्मरणों को भूलता गया। मैंने निश्चय कर लिया था कि मैं ई-मेल से दूर ही रहूँगा।
अनेक दिवस समय के पंख लेकर कहीं दूर उड़ गए।
एक सुंदर प्रभात में मैं गगन को निहार रहा था जो काले बादलों से समृध्ध था। कहीं दूर क्षितिज में वर्षा हो रही थी और यहाँ तक वर्षा किसी भी क्षण आ सकती थी। गगन, बादल और दिशाएँ मुझे आनंदित कर रही थी।
ओ मेरे हृदय, तुम क्यों आनंदित हो? मैंने मेरे ह्रदय से पूछा था।
प्रकृति सदैव कुछ संकेत देती रहती है, उस का अनुसरण करो। तुम्हारे साथ कुछ सुंदर घटना होने वाली है यही कारण है कि मैं आनंदित हूँ। मेरे हृदय ने उत्तर दिया था।"
"फिर?" वफ़ाई अधीर थी।
"मेरे अधरों पर स्मित था। मैं सहज ही धरती को नमन कर बैठा।
मेरा फोन गीत गाने लगा। वह गेलिना का फोन था। मैंने उत्साह से फोन लिया, बातें करने लगा।
वह कह रही थी,"जीत, मैं भारत आ रही हूँ, अगले सप्ताह। तुम्हें मिलने की भी योजना है। मैं कच्छ आ रही हूँ। तुम मेरे स्वागत के लिए तैयार तो हो न?"
मैं फोन के इस तरफ नि:शब्द था। उत्तर मैं मैं कुछ कह नहीं सका।
"तुम मौन क्यों हो? जीत, मेरे आने की बात सुनकर तुम ….।" गेलिना कह रही थी।
"नहीं, नहीं। ऐसी कोई बात नहीं है।"
"तो? क्या बात है?"
"यदि यह सत्य है कि तुम भारत आ रही हो तो यह सत्य से भी अधिक सुंदर है, मेरी कल्पना से भी अधिक मधुर है, मेरे विश्वास से भी अधिक सबल है।"
"केवल भारत ही नहीं, कच्छ भी आ रही हूँ। विशेष रूप से तुम्हारे पास आ रही हूँ। तुम्हारे लिए आ रही हूँ।"

“मेरे लिए?”
“हाँ तुम्हारे लिए। मैं तुम्हारे साथ कुछ दिवस रहूँगी। उस समय मैं तुम्हें चित्रकला सिखाऊँगी।”
“ओह ईश्वर। यह सुनने में अत्यंत मधुर लग रहा है। किन्तु क्या तुम सत्य कह रही हो अथवा मेरा उपहास कर रही हो?” मैंने भी संदेह से पूछा था।
गेलिना ने फोन काट दिया था। कई क्षण तक मैं विस्मय से फोन को देखता रहा। मैं सोचता रहा कि गेलिना ने मेरे साथ कोई खेल खेला होगा। कोई इतनी दूर से मुझे मिलने आए, मुझे चित्रकला सीखाने हेतु मेरे घर तक आए, मेरे साथ रहे। यह सब मुझे उपहास ही लग रहा था। मैंने गेलिना की भारत यात्रा के विषय में सोचना छोड़ दिया।
दूसरे दिवस मैं ई-मेल देख रहा था। गेलिना का मेल था। उसमें उसकी भारत यात्रा की टिकटें थी। मुझे तब भी विश्वास नहीं हो रहा था। मैंने हवाई यात्रा के PNR जाँचे और पाया की वास्तव में गेलिना भारत आ रही है।
मेरे लिए वह क्षण सुखद थे। बादलों ने मेरे गगन में प्रवेश कर लिया था। वर्षा की बूंदें मेरे तन को, मेरे मन को और मेरी इस मरुभूमि को स्पर्श करने लगी थी।”
जीत उन क्षणों के स्मरणों में खो गया। मौन हो गया। वफ़ाई भी उस मौन में बसे रोमांच को अनुभव करने लगी।
अनेक क्षण व्यतीत हो गए। जीत के मौन की समाधि को वफ़ाई ने भंग किया, “जीत, गेलिना भारत आई थी? यहाँ रुकी थी?”
“हाँ, वफ़ाई। गेलिना भारत आई थी। एक दिवस गेलिना का संदेश आया, ‘मैं भारत में हूँ और संध्या तक कच्छ आ रही हु।’
मैं अधीर हो गया, संध्या होने की प्रतीक्षा करने लगा। संध्या के समय मैं और गेलिना साथ थे। मेरे लिए यह एक सुखद आश्चर्य था कि एक स्त्री स्वीडन से यात्रा कर मेरे घर तक आई थी, मुझे मिलने आई थी, मुझे चित्रकला सीखने आई थी। वह अकल्पनीय था, किन्तु सत्य था। हाँ, गेलिना और मैं साथ साथ थे।”
“वाह जीत, यह तो रसप्रद है। तुम आगे कहो, सब कुछ कहो। मैं उत्सुक हूँ।” वफ़ाई के अधरों पर स्मित था, मुख पर आनंद।
“मैं तुम्हें समय के उस काल खंड में ले चलता हूँ। तुम उसे अपनी आँखों से देखो, स्वयं ही उसे अनुभव करो।”

“गेलिना जी, यह मेरा सौभाग्य है कि आप यहाँ हो।” जीत ने गेलिना का स्वागत किया।
“यह तो मेरा सौभाग्य है कि भारत जैसे अदभूत देश को देखने का मुझे अवसर मिला है. कच्छ प्रदेश को भी। वास्तव में भारत भ्रमण की मेरी योजना थी ही। तुम्हारा आमंत्रण मिला और मैं यहाँ दौड़ी चली आई।” गेलिना भी उत्साह से भरी थी।
गेलिना झूले पर बैठ गई और जीत के घर को देखने लगी। वह मन ही मन बोली,”यहाँ से अथवा…।” गेलिना झुले से उठी इधर उधर घूमी। दीवार के समीप, झूले से आठ दस फिट की दूरी पर एक स्थान पर रुक गई, “हाँ, यही ठीक रहेगा।” गेलिना के अधरों पर स्मित था।
जीत गेलिना को, उसके हाव भाव को देख रहा था किन्तु कुछ भी समझ नहीं आ रहा था।
“जीत, चलो प्रारम्भ करते हैं।” गेलिना ने आदेश दिया।
“क्या?” जीत ने पूछा।
“चलो चित्रकला प्रारम्भ करो। कहाँ है वह सब साधन जो चित्रकला के लिए लेकर रखने को मैंने कहा था।”
“सब तैयार है।” जीत सब सामान ले आया।
“तुम्हारा चित्राधार यहाँ रखो। यहाँ रंगों को रखो, यहाँ तूलिकाएं रखो, चलो प्रारम्भ करते हैं।” गेलिना व्यस्त हो गई।
“किन्तु, गेलिना जी, आप अभी अभी तो आई हो। यात्रा से थकी हुई हो। थोड़ा विश्राम कर लो फिर करते है। अथवा कल से प्रारम्भ करते हैं।”
“नहीं, जीत। समय दौड़ता रहता है। कई काम करने हैं, बहोत कुछ सीखाना है।”
“गेलिना जी, मैं शीघ्रता से सीख लूँगा। आप निश्चिंत रहो।”
“जीत दो बातें हैं। एक, तुम चित्रकला कितनी जानते हो और सिखने की तुम्हारी गति कितनी है? मुझे संज्ञान नहीं इस बात का। दूसरा, मेरे पास यहाँ रुकने के लिए केवल चार दिवस ही है। इन चार दिवस में मुझे यह कला तुम्हें सिखानी हैं और यहाँ के सौन्दर्य को देखना भी है। तुम मुझे मरुभूमि की अनुभूति करवाओगे ना? तो चलो, प्रारम्भ करो।”
“फिर भी गेलिना जी थोड़ा विश्राम..।” जीत की बात गेलिना ने काट दी।
“नहीं। विश्राम के लिए समय नहीं है। और यह “जी” क्या होता है?”
“ओह, हम भारतवासी किसी के भी नाम के पीछे ‘जी’ जोड़ देते हैं। इस प्रकार उस व्यक्ति का सम्मान करते है। आप तो मुझसे बड़ी हो, मेरी दादी जैसी हो तो मैंने ‘जी’ का प्रयोग किया।”
गेलिना हंस पड़ी।
“ओह मेरे पुत्र, मैं दो सुंदर बच्चों की दादिमा बन गई। एक स्वीडन में और एक यहाँ।” वह फिर से हंसने लगी। “किन्तु तुम मुझे गेलिना ही कहोगे, केवल गेलिना। और मित्र हैं हम, तो तुम मुझे आप नहीं किन्तु तुम से संबोधित करोगे। ठीक है?” गेलिना के मुख पर मधुर भाव थे, अधरों पर अलौकिक स्मित था।
गेलिना ने चित्राधार लगा दिया। रंग, केनवास, तुलिकाएँ, पानी, रकाबी आदि उचित स्थान पर रख दिये।
वह झूले पर जा बैठी और सभी वस्तुओं का निरीक्षण करने लगी।
“वाह, सभी वस्तुएं अपने स्थान पर है। चलो प्रारम्भ करते हैं।” संतुष्ट हो कर गेलिना ने जीत की तरफ देखा, “पेंसिल कहाँ है?”
“यहाँ है, यह रही।” जीत ने गेलिना को पेंसिल दी।
“तुम्हारा अभ्यास अब प्रारम्भ होता है। ध्यान से सीखना। केवल सीखने पर ही ध्यान देना होगा, बाकी सभी विचारों को मन से विदा

कर दो।"
जीत, गेलिना से एक चित्त होकर सीखने लगा।
"प्रथम, केनवास पर सरल सा चित्र बनाओ।" गेलिना सीखाने लगी।
"कैसे और कौनसा चित्र रचना है? मुझे कुछ नहीं आता। मैंने कभी नहीं किया।" बालक की भांति जीत व्याकुल हो गया।
"निश्चिंत रहो। पेंसिल लो और चतुष्कोण, त्रिकोण, गोल अथवा कोई भी आकार जो तुम बना सको उसे बनाओ। कोई विशेष नियम नहीं है, कोई बड़ा विज्ञान नहीं है इसमें।"
जीत ने दो-तीन छोटे छोटे चतुष्कोण एवं गोल बनाए। जीत ने अपना प्रथम चित्र बना कर गेलिना को देखा। वह जीत को सस्मित देख रही थी।
लगता है मैं प्रथम कक्षा में हूँ और गेलिना मेरी शिक्षिका है। जीत के मुख पर शिक्षिका के लिए विस्मय के भाव थे।
गेलिना ने उन भावों को पढ़ा, मन ही मन आनंदित हुई। जीत अभी भी गेलिना के प्रतिभाव की अपेक्षा में उसे निहार रहा था।
"अति सुंदर, मेरे पुत्र। तुम चित्रकार बन सकते हो। स्वयम पर विश्वास रखना।" गेलिना ने स्मित दिया।
"ओह, क्या यह सत्य है?" जीत ने पूछा।
जीत ने जो आकार रचे थे वहाँ गेलिना ने पेंसिल से कुछ निशानियाँ की।
"यहाँ देखो। यदि तुम इस रेखा को थोड़ा अंदर की तरफ खींचते तो अधिक सुंदर बनता। इस चित्र में थोड़ा सा परिवर्तन करने पर अधिक सुंदर बनेगा, क्या तुम ऐसा करोगे?" गेलिना ने एक आकार में थोड़ा परिवर्तन कर दिया। वह सुंदर लगने लगा। "अब तुम करके दिखाओ।"
"मैं कर सकता हूँ, करता हूँ।" जीत ने भी आकृतियों को परिवर्तित किया। उन आकारों को पुन: देखकर बोला, "वाह। मैं चित्र बन सकता हूँ।" वह आनंद से नाच उठा।
"सुंदर। जीत अब इस केनवास को अनेक नये आकारों से भर दो।"" गेलिना दूर जाकर झूले पर बैठ गई; गगन, बादल, पंखी एवं क्षितिज को निहारने लगी। जीत अपने कार्य में व्यस्त हो गया।
कुछ समय पश्चात जीत ने अपना काम पूरा किया। केनवास अनेक आकारों से भर गया था।
"आगे क्या करूँ?" जीत ने गेलिना से पुछ।
"वह रकाबी लो और किसी एक रंग की टिकिया उस में डाल दो।"
"यहाँ तो अनेक रंग है, कौन सा रंग लूँ?"
"यह तुम्हें पसंद करना है। स्वयं निर्णय लो।"
जीत विचार में पड़ गया। आस पास द्रष्टि करने लगा। उसकी द्रष्टि गेलिना पर जा अटकी। जीत ने निर्णय कर लिया, "मैं नारंगी रंग पसंद करता हूँ।" जीत ने कहा।
"अच्छी पसंद है। तुमने नारंगी रंग ही क्यों पसंद किया? कोई अन्य रंग क्यों नहीं?"
"तुमने नारंगी रंग की कुर्ती जो पहेनी हुई है। मेरा प्रथम चित्र, उसका यह नारंगी रंग और उस चित्र की प्रेरणा अर्थात गेलिना। यह चित्र से मुझे सदैव तुम्हारा स्मरण रहेगा।" जीत ने कारण बताया।
"बुध्धीमान बालक हो तुम। चलो अब रंग की टिकिया रकाबी में रखो। तूलिका को पानी में डुबाओ। यदि तूलिका में अधिक पानी हो तो उसे झटक देना। पानी की मात्रा थोड़ी सी ही रखना।"
"गेलिना, इतनी उतावली मत बनो। मैं अभी नया नया विध्यार्थी हूँ और इतनी तेज गति से मैं सीख नहीं पाऊँगा। क्या फिर से कहोगी? धीरे धीरे कहना।"
गेलिना ने सब बातों का पुनरावर्तन किया, जीत ने अनुसरण किया।
"आगे क्या करना है?" जीत ने पूछा।
"पानी की कुछ बूंदें रंग पर डालो। अधिक पानी नहीं डालना है, थोड़ा ही डालना। केवल रंग की टिकिया को घन से प्रवाही करना है।"
गेलिना जीत के काम को निहारती रही। जीत ने पूरा और उचित अनुसरण किया।
"पूरा रंग घुल जाने पर इन आकृतियों में रंग भर दो।" जीत ने वही किया।
"इसे देखो। रंग गाढ़ा लग रहा है। एक स्थान पर चिपक गया है। इस का मैं क्या करूँ?" जीत ने रंग भरने का प्रयास किया।
"कुछ नहीं, बस थोड़ा पानी और डाल दो।"
"वाह, सुंदर। अब ध्यान से सुनो। पानी और रंगों के मिश्रण का अभ्यास करते रहो। समय रहते सीख जाओगे। आवश्यकतानुसार रंग और पानी का मिश्रण करना है और कागज पर खींची आकृतियों को रंगों से भरना है। यदि सूखा चित्र करना हो तो पानी थोड़ा चाहिए और चित्र प्रवाही करना हो तो रंग में पानी अधिक चाहिए। कितना सरल है यह।" गेलिना समझाती रही, "चित्र को सूखने दो, थोड़ा पानी डालो। ना, वह नहीं, हाँ वह रंग भरो। चित्र पर तूलिका धीरे धीरे चलाओ।"
जीत वैसा ही करता रहा। जीत ने सभी आकृतियों में भिन्न भिन्न रंग भर दिये।
जीत ने अपना प्रथम चित्र, रंगों के साथ पूर्ण कर दिया। वह उसे लंबे समय तक निहारता रहा। वह प्रसन्न था।

“आधी जीत तो सुंदर प्रारम्भ से ही प्राप्त हो जाती है। अभिनंदन जीत।” गेलिना ने जीत को प्रोत्साहित किया। जीत ने स्मित दिया।
“चलो अब दूसरा चित्र बनाओ।”
“दूसरा कौन सा चित्र बनाऊँ? कैसे बनाऊँ?”
“पहले तो चित्राधार पर केनवास बदल दो। भीगी तूलिका से उसे भिगो दो।”
जीत ने केनवास भिगो दिया।
“अब भिन्न भिन्न रंगों से उस पर चित्र बनाने का प्रयास करो। जैसे जैसे केनवास सूखेगा, सभी रंग अपने रंग बदलने लगेंगे। उस बदलाव का निरीक्षण करो। अब बिना पेंसिल से सीधे तूलिका से ही चित्र रचना है तुम्हें।”
जीत सीधे ही तूलिका से चित्र बनाने लगा। उसने भिन्न भिन्न स्थानों पर भिन्न भिन्न रंग भर दिये।
“यह तो सरल है।” जीत प्रसन्न हो गया।
“अब एक ही स्थान अथवा एक ही आकृति में एक से अधिक रंग का प्रयोग करो।” जीत ने वैसा ही किया। धीरे धीरे चित्रकारी सीखने लगा, जीत।
तीन दिवस से जीत गेलिना से चित्र सीख रहा था। गेलिना ने जीत को गगन, पंखी, बादल, सूरज, चंद्र, वर्षा, तारें आदि अनेक चित्र बनाना सीखा दिया। जीत ने भी पूरी निष्ठा से उसे सीखा। जीत को अब एक कला का ज्ञान था, चित्रकला। वह प्रसन्न था।

33

“चौथे दिवस गेलिना भारत भ्रमण को चली गई, वहाँ से स्वीडन लौट गई।” जीत ने कहा।
वफ़ाई जीत को एक मन से सुन रही थी। जीत अभी भी गगन को देख रहा था, जैसे वह गेलिना के साथ व्यतीत हुए समय खंड में खोया था।
“तुम कहना चाहते हो कि पैंसठ वर्ष की एक स्त्री स्वीडन से तुम्हें चित्रकला सीखाने आती है। तुम गेलिना से चित्रकला सीखते हो और वह लौट जाती है। क्षमा करना किन्तु मैं तुम्हारी इस बात का विश्वास नहीं कर सकती।” वफ़ाई ने संदेह व्यक्त किया।
“मैं सत्य कह रहा हूँ। वह स्वीडन से कच्छ आई थी और मुझे उसने ही चित्रकला सिखाई।”
“तुम कथा अच्छी बना लेते हो, जीत। पर मैं उस कथा से प्रभावित नहीं हुई हूँ।”

“कथा? क्या तात्पर्य है तुम्हारा, वफ़ाई? मैं ने कोई...।”
“गेलिना की कथा जो तुमने सुनाई उसे मैं स्वीकार नहीं कर सकती। गेलिना की कथा बनाई गई है।”
“मैं पत्रकार नहीं हूँ, वफ़ाई।” जीत ने वफ़ाई के व्यवसाय पर आक्रमण कर दिया।
“इन शब्दों से क्या तात्पर्य है तुम्हारा, जीत?” वफ़ाई विचलित हो गई।
“पत्रकार ऐसी कथा बना लेते हैं जिसका कोई अस्तित्व ही नहीं होता। पत्रकार किसी घटना, किसी प्रसंग, किसी व्यक्ति आदि का सर्जन कर लेते हैं जो कभी नहीं होते, जो कहीं नहीं होते। मैं पुन: कहता हूँ कि मैं पत्रकार नहीं हूँ।”
“तुम मुझे लक्ष्य बना रहे हो, जीत। मैं पत्रकार हूँ किन्तु पत्रकार नहीं हूँ। मैं तस्वीर पत्रकार हूँ जो वास्तविक घटना, वास्तविक प्रसंग, वास्तविक व्यक्तियों की तस्वीरें लेती है, जिसका वास्तव में अस्तित्व होता है। हम कोई काल्पनिक कथा का सर्जन नहीं करते, हम विश्व के समक्ष सत्य प्रस्तुत करते हैं।” वफ़ाई ने जीत को सशक्त उत्तर दिया।
“हो सकता है। मैं नहीं जानता क्यों कि मैं पत्रकार नहीं हूँ।” जीत ने बचाव किया।
“तो तुम कौन हो?” वफ़ाई ने जीत के अव्यक्त व्यक्तित्व पर प्रहार किया।
“मैं तो हूँ, मैं तो था...।” जीत अचानक रुक गया। मन ही मन बोला, ‘मेरे अतीत को प्रकट नहीं करूंगा मैं।’
वफ़ाई ने जीत के शब्दों और भावों को परख लिया।
“तो तुम कौन थे? क्या थे? मुझे कहो। अपने ही बनाए कारावास से निकाल आओ, जीत।” वफ़ाई ने जीत का आव्हान किया, जीत के मन को उत्तेजित किया।
“मैं और कारावास? नहीं, वफ़ाई। मुझे देखो। मैं तो मुक्त हूँ। मैं चल सकता हूँ। घूम सकता हूँ। कहीं भी जा सकता हूँ। कुछ भी कर सकता हूँ। कुछ भी कह सकता हूँ। मुझे कोई बंधन नहीं है। नहीं, मैं किसी कारावास में नहीं हूँ।”
“तुम अपने अतीत के कारावास में हो। यह कारावास का सर्जन भी तुमने स्वयं ही किया है। और मुझे लगता है कि तुम इस कारावास में प्रसन्न हो। तुम उसे तोड़ने से भयभीत हो रहे हो। जीत, उस कारावास को तोड़ने का साहस करो। उस से मुक्त हो जाओ। उस आवरण को हटा दो। उसे तोड़ दो, अभी, इसी समय।” वफ़ाई ने जीत को जागृत करना चाहा।
जीत क्रोधित हो गया, “यह सब बंध करो। मैं उसे झेल नहीं पा रहा हूँ।”
“तो उसे छोड़ दो। फिर तुम उस कारावास से मुक्त हो जाओगे।”
लंबे समय तक जीत शांत रहा।
“हम गेलिना की बात कर रहे थे, उसकी भारत यात्रा, उसका कच्छ आना, उसका चित्रकला सीखाना
और तुम मेरा विश्वास नहीं कर रही हो। यही बात थी न?” जीत ने क्षणों पर स्मित से नियंत्रण कर लिया।
“हाँ, यही बात थी। यदि तुम्हारी कथा सत्य है तो उसे सिध्ध करके दिखाओ।”
“अवश्य। मैं इसे सिध्ध कर सकता हूँ। एक मिनिट प्रतीक्षा करना ...।” जीत कक्ष में गया। एक हाथ में लिपटे केनवास तथा दूसरे हाथ में लेपटोप के साथ लौट आया।
“इसे देखो, वफ़ाई।”
“क्या है यह? क्या दिखाने जा रहे हो?क्या सिध्ध करने जा रहे हो?”
जीत ने लेपटोप चालू कर दिया।
“कुछ क्षणों के लिए तुम अपनी आँखें बंध कर लो। करो ना।” जीत ने आग्रह किया, वफ़ाई ने आँखें बंध कर ली।
जीत ने केनवास खोल दिया, चित्राधार पर रख दिया।
“आँखें खोलो, चलो इस तरफ देखो।”
वफ़ाई चित्राधार के समीप गई। केनवास पर चित्र देखकर बोली, “वाह, कितना अदभूत है? किसने किया यह? क्या भाव का निर्माण किया है! वास्तव में यह अलौकिक है, यह शास्वत है।” वफ़ाई की द्रष्टि केनवास पर स्थिर हो गई।
वफ़ाई ने देखा कि जीत के अधरों पर स्मित था, कुछ भिन्न सा स्मित था वह।
“मैंने पूछा कि किसने बनाया है यह?”
“तुमने तो एक साथ अनेक प्रश्न पूछे थे।”
“जीत, वह सब प्रश्न छोड़ो। केवल यह बता दो कि किसने यह बनाया है।”
जीत ने पुन: स्मित किया। “तुम विश्वास करोगी?”
वफ़ाई ने स्मित दिया।
“यह गेलिना ने स्वयं रचा है।” जीत प्रसन्न था।
“तुम फिर से नयी कथा रच रहे हो। जीत ऐसा मत करो।”
“इसे देखो। जब मैंने मेरा प्रथम चित्र बनाया था तब मैं अधिक प्रसन्न था। तब मेरे मुख पर जो भाव थे वह यही भाव थे। गेलिना ने उन भावों को इस केनवास पर उतारे थे। मुझे इस बात का ज्ञान नहीं था कि गेलिना यह चित्र बना रही है। जब गेलिना यहाँ से जा रही थी तब उसने मुझे यह भेंट किया था। उस रात्रि वह सोई नहीं थी। रातभर जागकर मेरा चित्र बना रही थी। मैं सारी रात सोता रहा।”

“जीत, तुम असत्य कह रहे हो। वास्तव में यह चित्र तुम ने ही बनाया है, दर्पण में देख देख कर।”
“दर्पण चित्रकारी? हाँ, गेलिना ने ऐसा एक चित्र बनाया था। मेरे पास है वह। वफ़ाई, तुम उसे देखना चाहोगी?”
“मैं मान लेती हूँ कि तुम फिर कोई नयी कथा नहीं कहोगे। हाँ, मुझे देखना है दर्पण चित्रकारी।” वफ़ाई ने अर्ध मन से रुचि दिखाई। जीत ने वफ़ाई के भावों को भाव नहीं दिया।
जीत एक केनवास ले आया और उसे चित्राधार पर रख दिया। वफ़ाई ने उस पर एक विहंग द्रष्टि डाली और उसे अनदेखा करना चाहा किन्तु नहीं कर पायी।
वफ़ाई की द्रष्टि केनवास पर स्थिर हो गई। वह देखती रही कि केनवास पर एक स्त्री का चित्र था, वृध्ध थी किन्तु तेजोमय थी। मुख आकर्षक था, देखने वाले को आकृष्ट कर रह था, आमंत्रित कर रहा था। चित्र अक्ष से आवृत था, जैसे वह किसी दर्पण में हो।
“कौन है यह? और किसने यह बनाया है?”
“गेलिना का स्वयं चित्रित चित्र है यह। इसी को दर्पण चित्रकारी कहते हैं। जब कोई चित्रकार अथवा शिल्पकार स्वयं का चित्र अथवा शिल्प बनाना चाहता है तो वह दर्पण की सहायता लेता है। किसी वस्तु अथवा व्यक्ति का चित्र बनाना हो तो वह वस्तु अथवा व्यक्ति आँखों के सामने दिखनी चाहिए। किन्तु कलाकार स्वयं को देख नहीं पाता इस लिए दर्पण का प्रयोग होता है।” जीत ने समझाने का प्रयास किया।
“तुम कितनी कथा बनाते रहोगे?” वफ़ाई अभी भी जीत की बात पर विश्वास नहीं कर रही थी।
“तुम क्या सिध्ध करना चाहती हो? क्या मैं झूठा हूँ?” जीत उत्तेजित हो गया।
“मैं दो निष्कर्ष निकाल रही हूँ इन बातों से। एक, गेलिना नाम की कोई स्त्री का अस्तित्व नहीं है। दो, यह सारे चित्र तुमने ही बनाए हैं अत: तुम वफ़ाई का चित्र भी बना सकते हो। मुझे आशा है कि तुम मुझे निराश नहीं करोगे।” वफ़ाई ने स्मित दिया।
“तुम्हारे दोनों निष्कर्ष का मैं उत्तर देता हूँ।” जीत ने लेपटोप खोला और दिखाने लगा।
“यहाँ आओ, इसे देखो।” वफ़ाई लेपटोप को देखने लगी।
“क्या दिखाना चाहते हो?” वफ़ाई अधीर हो गई।
“शांत हो जाओ, धैर्य रखो। तुम्हारे सारे संदेह दूर हो जाएंगे।” जीत तस्वीरें दिखाने लगा। वफ़ाई उन सभी तसवीरों को देखती रही।
“इसे देखो, मैं इन तसवीरों में गेलिना के साथ हूँ। यह देखो पीछे मेरा घर, यह मकान, दूर रेत का टीला, यह झूला। सब दिख रहा है। यह देखो, गेलिना केनवास पर काम कर रही है। यहाँ झूले पर बैठी है। इतना प्रायप्त नहीं क्या? अब तो यह सिध्ध हो जाता है कि गेलिना भारत आई थी, कच्छ आई थी, मेरे घर आई थी, मुझे चित्रकला सिखाई थी।” जीत ने वफ़ाई की तरफ देखा, “अब क्या कहना है तुम्हारा?”
वफ़ाई के मुख के भाव बदल चुके थे।

34

“जीत, चलो मैं मान लेती हूँ कि गेलिना यहाँ आई थी और उसने तुम्हें चित्रकला सिखाई।”
“हाँ, वह आई थी, यहाँ, इस घर में। इस कक्ष में, इस मरुभूमि में वह आई थी। उसे झूला झूलना पसंद था। वह इस झूले पर झूलती थी। वहाँ, जहां अभी तुम बैठी हो वहीं वह बैठती थी। यह झूला उसे...।”
“इस झूले पर? इस स्थान पर? कितना मधुर होगा वह समय?” वफ़ाई प्रसन्न हो गई।
“हाँ, वह चार दिवस मधुर थे। वह समय अदभूत था।”
“किन्तु मेरा दूसरा निष्कर्ष अभी भी कह रहा है कि तुम मेरा चित्र बना सकते हो। बस, तुम उसे बनाना नहीं चाहते, तुम मेरे चित्र के सर्जन से भाग रहे हो।”
“दूसरा निष्कर्ष। यह निष्कर्ष है अथवा संदेह? मैं तुम्हें कुछ और तस्वीरें दिखाता हूँ। उसे देखकर फिर किसी निष्कर्ष पर आना।”
“कौन सा निष्कर्ष?”
“यही कि मैंने गगन और बादल के सिवा किसी अन्य के चित्र कभी नहीं बनाए।”
जीत एक एक कर सभी चित्रों को दिखाने लगा।

“अंतत: मुझे संतोष हो गया कि तुम सत्य कह रहे हो।”
जीत अभी भी उन चित्रों को देख रहा था। उन चित्रों में मरुभूमि थी, सागर था, पर्वत थे।
“रुको, रुको। पीछे लो। हाँ, पीछे, थोड़ा और पीछे। हाँ, यही। यह पर्वत कहाँ है? और वह मरुभूमि कहाँ है?” वफ़ाई ने विस्मय से पूछा।
“यह ? यह काला पर्वत है। यही मरुभूमि में है यह। तुम क्यों पुछ रही हो?”
“इस मरुभूमि में? क्या बात है? क्या हम वहाँ जा सकते हैं?”
“तुम जाना चाहोगी?”
“हाँ। चलो। ले चलो मुझे।”
“अवश्य। हम वहाँ जाएंगे किन्तु उसके लिए तुम्हें प्रामाणिक होना होगा।”
“अर्थात? क्या मैं भ्रष्ट हूँ?” वफ़ाई ने झूठा क्रोध दिखाया और बाद में हंस पड़ी।
“नहीं तो। तु म भ्रष्ट बिलकुल नहीं हो।”
“तो?”
“मेरा तात्पर्य है कि उस के लिए तुम्हें यहां रुकना होगा। यहाँ से भाग जाने के विचारों से भागना होगा। कर सकोगी तुम ऐसा? तुम इस बात के लिए तैयार हो?”
“हाँ, मुझे स्वीकार है। मैं तैयार हूँ।”
“वचन? एक सज्जन व्यक्ति का वचन?”
“नहीं, एकसन्नारी का वचन।” वफ़ाई हंसने लगी। जीत भी।
“वफ़ाई, हम चर्चा कर रहे थे उससे भटकना नहीं है हमें।” जीतगंभीर हो गया।
“क्या? हम क्या चर्चा कर रहे थे?”
“एक सुंदर युवती का चित्र बनाने की। किसी पर्वत की बातें नहीं कर रहे थे।” जीत ने वफ़ाई की आँखों में देखा।
“मत भूलो कि वह छोकरी सामान्य नहीं है। पर्वत सुंदरी है वह।” वफ़ाई ने कहा। जीत को वफ़ाई के वह शब्द भा गए।
“तुम चालाक सुंदरी, नहीं नहीं, पर्वत सुंदरी हो।” दोनों हंस पड़े।
“मुझे तीव्र इच्छा है तुम्हारे द्वारा बनाए हुए मेरे चित्र को देखने की।”
“तू लिका के कुछ स्पर्श से, कुछ रंगों के मिश्रण से, मैं बादल, गगन, पंखी आदि का चित्र तो बना सकता हूँ। यही मेरी मर्यादा है। इस मर्यादित कला ज्ञान से मैं कुछ भी चित्रित कर सकता हूँ ऐसा तुम्हारा मत है। मैं कलाकार होने के भ्रम में जी रहा था और तुम मेरे इस भ्रम को हवा दे रही हो। किन्तु मैंने इस कच्चे चित्रों से परे कुछ भी सर्जन नहीं किया। ऐसा मैं गेलिना से सीख नहीं पाया। चार दिवस में तो यही सीख पाता है कोई बच्चा।”
“तो?”
“यही कि मैं वफ़ाई का चित्र नहीं बना सकता।”
“किन्तु यह सब तुम अब भी गेलिना से सीख सकते हो।”
“कैसे? वह तो यहाँ नहीं है। तुम तो जानती हो कि वह स्वीडन में रहती है।”
“जीत, इस युग में भौगोलिक अंतर की कोई समस्या नहीं है। छोटा सा विश्व है हमारा।”
“तो मुझे क्या करना होगा?”
“गेलिना से संपर्क करो। अभी उसे ई-मेल करो। उस की सहायता लो। मार्गदर्शन मांगो। वह हमारी, नहीं तुम्हारी, सहायता अवश्य करेगी।”
अनिर्णीत मन से जीत ने वफ़ाई को देखा।
“चलो काम करो, संदेह नहीं। वह एक सन्नारी है, यह मेरा मानना है।”
“यह तुम्हारा मानना है अथवा ईर्ष्या है?”
“जीत, यह सत्य है कि जब कोई पुरुष एक स्त्री के सामने दूसरी स्त्री की बात करता है तो उस स्त्री को ईर्ष्या तो होती है। यह पुरुषों पर भी लागू होती है। किन्तु अभी मुझे ईर्ष्या नहीं हो रही है। मैं क्यों ईर्ष्या करूँ? गेलिना मेरी और तुम्हारी ददिमा जैसी है।” वफ़ाई चिड गई।
जीत मौन हो गया। कुछ क्षण विचार करने के पश्चात उसने गेलिना को ई-मेल कर दिया।
“मैंने गेलिना को ई-मेल कर दिया है। हमें उसके प्रत्युत्तर की प्रतीक्षा करनी होगी।”
फिर मौन छा गया।

***

पिछले चार घंटों में वफ़ाई जीत के ई--मेल को आठ से दस बार देख चुकी थी। गेलिना से कोई प्रत्युत्तर नहीं आ रहा था। वफ़ाई व्यग्र हो गई। वफ़ाई गेलिना से प्राप्त सभी ई-मेल पढ़ गई।

“जीत, गेलिना है कहाँ? वह प्रत्युत्तर क्यों नहीं दे रही?” वफ़ाई ने धैर्य खो दिया।
“इतिहास यही कहता है कि गेलिना से प्रत्युत्तर पाने हेतु घंटों नहीं दिवसों तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है। अभी तो कुछ घंटे ही व्यतीत हुए हैं। थोड़ा धैर्य रखो और समय को व्यतीत होने दो।”
“मैं प्रतीक्षा नहीं कर सकती। मेरे पास समय नहीं है।”
“समय तो मेरे पास भी अल्प ही है। यह समय दौड़ा जा रहा है।” जीत धीरे से बोला।
“क्या? तुम्हारे पास तो समय है। तुम पिछला सब भूलकर, छोडकर तो यहाँ आए हो। तुम क्यों इतने व्याकुल हो?” वफ़ाई जीत के मुख को देखती रही जिस पर अनेक अपरिचित भाव थे। वफ़ाई ने उसे पढ़ा, उसे कुछ भिन्न ही दिखाई दिया। उस में कुछ गहन भाव थे, जिसे वफ़ाई समज नहीं सकी।
वह मौन रही।
जीत के जीवन की कोई तो कथा है जो अनकही है, अनपढी है। एक ऐसी कथा जिस पर कोई आवरण पड़ा है। जीत की इस कथा के विषय में पूछने के लिए, उसे जानने के लिए, उन अंधे पृष्ठों को पढ़ने के लिए मुझे उचित समय की प्रतीक्षा करनी होगी।
जीत मौन था।
कुछ और घंटे व्यतीत हो गए किन्तु गेलिना का प्रत्युत्तर नहीं आया।
“तो अब हम क्या कर सकते हैं?” वफ़ाई ने अधीरता व्यक्त की।
“हम उसे फोन कर सकते हैं।” जीत गेलिना के फोन नंबर ढूँढने लगा। “हाँ, यह रहा। मैं फोन लगाता हूँ।”
जीत ने फोन लगाया। किन्तु फोन लग नहीं पाया। जीत ने बारंबार प्रयास किया किन्तु परिणाम वही रहा।
“क्या हुआ?” वफ़ाई अधीर हो रही थी।
“गेलिना का मोबाइल बंध है। संपर्क नहीं हो पा रहा है।” जीत ने नि:श्वास के साथ कहा। दोनों निराश हो गए।
“कोई बात नहीं, प्रयास करते रहेंगे। हमारे पास समय …।” वफ़ाई ने जीत को आश्वस्त करने का प्रयास किया।
“अल्प समय ही है हमारे पास, किन्तु मैं क्या कर सकता हूँ? मैंने सभी संभावनाओं पर काम किया है।”
वफ़ाई छत पर चली गई। जीत झूले पर जाकर बैठ गया। कुछ क्षण विचार करने के पश्चात जीत झूले से उठा, कक्ष में गया और लेपटोप लेकर आया। उस पर कुछ काम करने लगा। कुछ क्षण प्रतीक्षा करने के पश्चात उसे एक संदेश मिला।
जीत उसे पढ़ने लगा। कुछ शब्द पढ़ते ही वह रोने लगा, “नहीं, यह नहीं हो सकता…।” वह निर्बाध रुदन करने लगा।
वफ़ाई ने जीत का रुदन सुना। वह नीचे दौड़ आई। जीत की पीठ को मृदु स्पर्श करते बोली, “जीत, क्या हुआ?” वफ़ाई का मृदु स्पर्श जीत को शांति दे रहा था, किन्तु वह एक शब्द भी नहीं कह पाया। रोते रोते जीत ने वफ़ाई की तरफ लेपटोप घूमा दिया।
लेपटोप पर गेलीना का फेसबुक पन्ना खुला था। वहाँ गेलिना की भतीजी लिली का संदेश था, “गेलिना चाची नहीं रही। कल शाम हमने उसे गंवा दिया है। हम सब दु:खी हैं।”
संदेश पढ़कर वफ़ाई भी दु;खी हो गई। कुछ ही क्षण में वफ़ाई ने स्वयं को संभाला। स्थिति को समझ लिया।
जीत ने गेलिना के फेसबुक पन्ने पर संदेश डाला था और लिली ने उसके उत्तर में गेलिना की मृत्यु का संदेश दिया था। गेलिना, जो कल संध्या तक जीवित व्यक्ति थी, अब मृत हो चुकी थी। वफ़ाई ने शीघ्रता से एक संदेश भेजा, “मुझे आशा है कि आप मेरे साथ कोई उपहास नहीं कर रही। यदि यह सत्य है तो कृपया विगत से कहिए कि क्या हुआ, कैसे हुआ?”
“गेलिना विश्व भ्रमण पर थी। तीन चार दिवसों से वह स्वीटझरलेंड के पहाड़ों पर थी। वह एक रोग से पीड़ित थी अत: भारी हिम वर्षा में वह बच नहीं पाई। डॉक्टरों का कहना है कि उसे हिमवर्षा एवं पहाड़ों से बचना था। किन्तु वह नहीं बच पाई। उसकी भारत यात्रा के समय उसने यह बात तुम्हें कही ही होगी। कुछ ही क्षण पहले उसका मृत शरीर हमें प्राप्त हुआ है। मैं उसके मृत शरीर की तस्वीरें प्रेषित कर रही हूँ।” लिली ने प्रत्युत्तर दिया।
दोनों ने संदेश पढ़ा, तस्वीरें भी देखि। जीत गहन शोक में डूब गया। उसने रोने का प्रयास किया किन्तु नहीं रो सका।
वफ़ाई ने स्थिति को अपने नियंत्रण में ले लिया। उसने जीत को रोने में सहायता की। जीत मुक्त मन से रोने लगा। उसकी आँखों से अश्रुधारा बहने लगी, बहती रही। अंतत: जीत खाली हो गया। शांत हो गया। मौन हो गया।
वफ़ाई ने उससे बात करना चाही, किन्तु जीत ने कोई प्रतिभाव नहीं दिया।

35

वफ़ाई के मन में दुविधा जन्मी।

जीत क्यों उस व्यक्ति के शोक में इतना गहन डूब गया है जो व्यक्ति से ना तो उसका कोई संबंध था ना ही वह उसके साथ अधिक समय तक रही थी?

वफ़ाई इस प्रश्न का उत्तर पाने का व्यर्थ प्रयास करती रही।

“जीत, तुम गेलिना की मृत्यु पर इतने गहन शोक में क्यों डूब गए हो? क्या संबंध था तुम्हारा उसके साथ?” अंतत: वफ़ाई ने धैर्य खोकर पुछ लिया।

“वफ़ाई, वह तुम नहीं समझोगी। मैं स्वीकार करता हूँ कि गेलिना से मेरा कोई संबंध नहीं था। किन्तु, फिर भी किसी नाम, किसी व्याख्या, किसी कल्पना, किसी शब्द से परे कोई संबंध था हमारा।”

“वह क्या था? तुम मुझे बता सकते हो। हम मित्र जो हैं।”

“कभी कभी, कोई व्यक्ति हमारे मन एवं ह्रदय में ऐसा सशक्त स्थान बना लेती है कि उसकी अनुपस्थिति हमें खाली कर देती है। चाहे वह हमारे साथ कुछ ही समय रही हो, चाहे हम उससे कभी नहीं मिले हो। वह खालीपन कभी भरा नहीं जा सकता।” जीत गगन की तरफ देखने लगा।

गगन में कुछ बादल थे। जीत उन बादलों में किसी आकार को खोज रहा था। गेलिना की आकृति को ढूंढ रहा था। वह बारंबार आँखें खोल बंध कर रहा था।

अंतत: उसके अधरों पर दिव्य स्मित आया। वह किसी बिन्दु पर अपलक देखता रहा। वहाँ बादल थे, जो धीरे धीरे बिखर रहे थे, गति कर रहे थे एवं आकार बदल रहे थे। बादल टूट रहे थे। अंतत: सब बादल बिखर गए। गगन स्वच्छ था, निरभ्र था।

वफ़ाई जीस विश्व में थी वहाँ जीत लौट आया।

“गेलिना ने तुम्हारे लिए क्या विशेष काम किया था? तुम्हारे मन पर वह कौन सा प्रभाव छोड़ गई है? वह कला जो तुम गेलिना से सीखे? अथवा...?” वफ़ाई ने जीत के मन तक उतरना चाहा।

“वफ़ाई, गेलिना का प्रभाव मेरे मन तक ही सीमित नहीं है, मेरे ह्रदय पर भी है। मन पर पड़ा प्रभाव लंबे समय तक नहीं रहता। चित्रकारी सीखने से भी कहीं आगे उसने मेरे लिए कुछ विशेष किया है।”

“क्या है वह? जीत, ह्रदय को आज खोल दो। उसकी अतल गहराई तक जाओ और बताओ कि वहाँ क्या है? उसे ह्रदय में भरकर तुम जी नहीं पाओगे। उसे खाली कर दो।”

“खाली? हाँ, यही उचित शब्द है, वफ़ाई। गेलिना ने मेरे खाली जीवन को भर दिया था। उसका व्यक्तित्व, उसकी भावनाएं, उसका उत्साह, उसकी कला। मेरे जीवन के अंत तक मैं उसे मेरे ह्रदय से खाली नहीं करुंगा।”

“अल्प किन्तु मधुर स्मृति। जीवन के अविस्मरणीय क्षण। जीत तुम ऐसे व्यक्ति हो जो किसी के साथ व्यतीत किए क्षणों की अनुभूति को समझ सकते हो।”

“हाँ, वफ़ाई।”

“मेरे जाने के पश्चात क्या तुम मुझे भी इसी प्रकार याद रखोगे?” वफ़ाई ने जीत की तरफ आशा से देखा। जीत कुछ क्षण मौन रहा। वफ़ाई झूले पर बैठ गई।

वफ़ाई ने वही प्रश्न पुन: पूछा, “मेरे जाने के पश्चात क्या तुम मुझे भी इसी प्रकार याद रखोगे?”

वफ़ाई के शब्दों ने जीत का ध्यान भंग किया।

वफ़ाई की आँखों में आँखें डालकर जीत ने कहा, “वफ़ाई, तुम चली जाओ यहाँ से, लौट जाओ अपने घर। तुम्हारा उद्देश्य पूर्ण हो गया है। तुम्हें वह सब कुछ मिल चुका है जो तुम इस स्थल से अपेक्षा कर रही थी। कृपया लौट जाओ।”

“चली जाऊँ? क्यों?” वफ़ाई को आघात हुआ। वह झूले पर से उठ गई, इधर उधर घूमने लगी। वह अशांत हो गई।

“बस चले जाओ, लौट जाओ। अपने जीवन का आनंद लो। तसवीरों के माध्यम से स्वयं को अभिव्यक्त करो। मित्रों एवं परिवार के साथ रहो।”

“क्या तुम मेरे यहाँ रहने से भयभीत हो? इस क्षण मेरे अस्तित्व से तुम भाग रहे हो, जीत।”

“कल मेरे जीवन में तुम्हारी अनुपस्थिति से अथवा तुम्हारे जीवन में मेरे ना रहने से होने वाली स्थिति की कल्पना से मैं भयभीत हूँ। इससे पहले कि हमारी अनुपस्थिति एक दूसरे को विचलित कर दे, अशांत कर दे, वफ़ाई, हमें इस कथा को विराम देना होगा। यह...।”

“जीत, श्रीमान जीत। नहीं, नहीं, चित्रकार जीत। तुम किसी और विश्व में विहार कर रहे हो। तुम्हारी नाव किसी भिन्न सागर में तैर रही है।”

“मैं तो मरुभूमि में हूँ।”

“सुनो, यदि मुझे भाग जाना होता, तुम्हें अकेले छोड़ देना होता तो मैं लौटकर नहीं आती। मुझे जो चाहिए था वह हर सामान लेकर भागने में मैं सफल हो गई थी। तथापि मैं लौट आई, तुम्हें फिर कभी नहीं छोड़ जाने के लिए। इसका अर्थ तुम समझ रहे हो, जीत?”

वफ़ाई उत्तेजित थी, व्यग्र थी।
“तुम लौट आई हो क्यों कि तुम चोरों की भांति भागी थी। तुमने चित्रकला सीखने की मेरी बात मानी नहीं थी। यही कारण था कि तुम स्वयं को अपराधी मान रही थी। किन्तु अब तुम जा सकती हो। मैं तुम्हें मेरी प्रत्येक बात से मुक्त करता हूँ। तुम अब मुक्त हो। तुम चली जाओ, लौट जाओ।”
“मैं पहले भी मुक्त थी और सदैव मुक्त ही रहूँगी। कोई मुझे बांध नहीं सकता। मैं तुम्हें छोड़कर भाग गई थी, यह सत्य है। किन्तु मैं लौट आई हूँ, यह भी सत्य है। मेरे लौटने में मुझे ही आनंद मिल रहा है। मुझे जब उचित लगेगा, मैं तुम्हें छोड़कर, यह सब कुछ छोडकर चली जाऊँगी। मेरे लौटने की क्षण मैं निश्चित करूंगी। समझे श्रीमान जीत?” वफ़ाई ने तीखी बात कह दी।
“कौन निश्चित करेगा? तुम? एक दिवस हम दोनों एक दूसरे को छोड़ जाएंगे। किन्तु, वह क्षण मैं निश्चित करूंगा। इतना मुझे विश्वास है।”
“कभी कभी मैं तुम्हारे शब्दों को, तुम्हारे विचारों को एवं तुम्हें समझ नहीं पाती।” वफ़ाई दुविधा में पड गई।
जीत स्वस्थ था किन्तु अभी भी दु:खी था, “उसकी मृत्यु कैसे हो गई?” जीत ने स्वयं से पूछा।
“उसकी अर्थात गेलिना की? जैसे लिली ने बताया था, वह किसी रोग से पीड़ित थी। क्या उसने तुम्हें यह बताया था कि यदि वह हिम से भरे पहाड़ों पर जाएगी तो वह मर सकती है?” वफ़ाई ने पूछा।
“नहीं, उसने कभी नहीं बताया। वह बीमार तो नहीं लग रही थी। वह तो ऊर्जा से भरपूर थी। वह उत्साह से भरी थी। उसमें जीवन जीने का उमंग था। वह इस प्रकार से मर नहीं सकती।” जीत अभी भी स्वीकार नहीं कर पा रहा था कि गेलिना की मृत्यु हो चुकी है।
“जितनी शीघ्रता से हो सके, यह स्वीकार कर लो कि गेलीना अब नहीं रही। हमारे लिए यही उचित होगा। यदि एक बार इसे स्वीकार कर लोगे तो तुम आगे की सोच सकोगे। यही गेलिना को सच्ची श्रध्धांजली होगी।”
“तुम किसी ज्ञानी की भांति बात कर रही हो, वफ़ाई। क्या तुम कोई तत्ववेता हो?”
“मैं तो तुम्हारी मित्र हूँ।” वफ़ाई ने स्मित दिया। जीत उस स्मित के सहारे दु:ख को भूलता गया। स्वस्थ होता गया।
“हमें चित्रकारी पर ध्यान देना चाहिए। तुम मेरा चित्र रच दो।” वफ़ाई ने समय के मौन प्रवाह बित जाने पर कहा।
“ठीक है, मैं प्रयास करूंगा।”
“कैसे करोगे तुम यह?”
“कैसे? मुझे विचार करने दो।”
कुछ क्षणों तक जीत आसपास देखता रहा, फिर घर में चला गया। जब वह लौटा तब उसके हाथ में कुछ पुस्तकें थी, “गेलिना ने यह मुझे दी थी।”
“क्या है इसमें?”
“यह चित्रकला की पुस्तकें हैं। इसको पढ़ते हैं और सीखते हैं। अब हम दो हैं। हम साथ साथ सीखेंगे। क्या तुम तैयार हो?” जीत ने उत्साह दिखाया। वफ़ाई ने जीत को सुना और खुलकर हंस पड़ी।
“तुम हंस क्यों रही हो, वफ़ाई?”
वफ़ाई पुन: हंसने लगी, हँसती रही। जीत उसे निहारता रहा।
“जीत, पुस्तकें कला नहीं सीखा सकती। इस प्रकार से कोई भी कला नहीं सीखि जाती। पुस्तकें तुम्हें दिशा दिखा सकती है, लक्ष्य नहीं।”
“तुम सत्य कह रही हो, मैं मानता भी हूँ। किन्तु इस समय हमारे पास इन पुस्तकों के उपरांत कोई विकल्प नहीं है। इसी पुस्तकों के सहारे कोई मार्ग खोजते हैं।” जीत ने पुस्तक खोल दी और उनके पृष्ठों पर विहंग द्रष्टि डाली।
वफ़ाई ने चित्राधार पर केनवास बदल दिया। वह श्वेत था। कोई बिन्दु अथवा रेखा नहीं थी उस पर। ना ही कोई चित्र था और ना ही कोई रंग। वह पूर्णत: खाली था।
वफ़ाई ने पेंसिल, रब्बड, तुलिकाएं, रकाबी, रंग सब तैयार कर दिया। चित्रकार के लिए सब कुछ तैयार था।

36

"जीत, आ जाओ सब तैयार है। यह केनवास तुम्हारी प्रतीक्षा में है।"

जीत ने केनवास को देखा। वह उसे आमंत्रित कर रहा था। वह दो तीन पद चला और रुक गया। उसने केनवास को फिर देखा। उसे अंदर से कोई रोक रहा था, वह आगे नहीं बढ़ सका।

वफ़ाई ने जीत के चरणों को देखा और समझ गई की जीत बारह-तेरह चरणों का अंतर पार नहीं कर पा रहा है। वफ़ाई ने जीत का हाथ पकड़ा और केनवास तक खींच लाई।

जीत को पेंसिल हाथ में देते वफ़ाई ने कहा, "इस झूले का चित्र बनाने का प्रयास करो। उसे देखो, निहारो और चित्र रच दो। तुम यह कर सकते हो।"

"चलो यही सही। प्रारम्भ तो करना ही होगा।" जीत केनवास के समीप गया। वफ़ाई ने चित्राधार की दिशा बदल दी। अब झूला आँखों के सामने था।

जीत झूले को केनवास पर अवतार देने लगा। परिचित सा झूला कि जिस पर बैठ कर वह पिछले कई महीनों से दिवस का अधिकतम समय व्यतीत करता था, वह परिचित झूला अब अपरिचित सा लगने लगा। वह व्याकुल था कि कहाँ से प्रारम्भ करूँ, कैसे करूँ कि यह झूले को चित्रित कर पाउं? जीत ने प्रयास चालू रखा। केनवास पर कुछ रेखायेँ खींची। कुछ आकृतियाँ बनाई। दो घंटों के पश्चात रंग हिन केनवास पर कोई आकृति प्रकट हुई। चित्राधार को छोड़ कर दस बारह फिट दूर जाकर उसे देखने लगा।

"चित्र कुरूप नहीं है किन्तु मैं संतुष्ट नहीं हूं। कई स्थान पर सुधार किया जा सकता है। इससे यह चित्र अधिक सुंदर हो जाएगा। मुझे उन बिन्दुओं पर पुन: काम करना होगा।"

जीत केनवास की तरफ बढ़ा और कुछ सुधार करने जा रहा था कि उसके कान पर शब्द पड़े।

"उसमें कोई सुधार मत करना। तुमने अच्छा चित्र बनाया है।"

जीत ने ध्वनि की दिशा में देखा। वह शब्द वफ़ाई के थे। जीत चित्रकारी में इतना व्यस्त हो गया था कि स्वयं के अस्तित्व को भी भूल गया था, वफ़ाई को भी।

जीत ने वफ़ाई की तरफ अपरिचित भाव से देखा। जैसे उसे वह प्रथम बार देख रहा हो। जैसे जीत की आँखें पुछ रही हो, "कौन हो तुम?"

"जीत, क्या हुआ? तुम मुझे इस तरह किसी अपरिचित की भांति क्यों देख रहे हो? मैं अपरिचित नहीं हूँ। मैं वफ़ाई हूँ।"

जीत किसी अज्ञात विश्व से लौट आया। वफ़ाई को अपने सामने पाया। उसने पूछा, "तुम कहाँ थी?"

"मैं तो यहीं थी, यहीं हूँ और यहीं रहूँगी। जब तक तुम्हारी बात पूरी नहीं कर लेती, मैं यहाँ से जाने वाली नहीं हूँ।"

"तुम क्या कर रही थी? मैंने तुम्हें कहीं आसपास नहीं देखा।"

"जब तुम चित्र बना रहे थे तब मैं नमाझ अदा कर रही थी।"

जीत ने स्मित दिया, "हाँ, यही समय है तुम्हारे नमाझ करने का।" जीत ने घड़ी में समय देखा।

"जीत, एक बात समज नहीं आई। मैं जब से यहाँ आई हूँ, नियमित रूप से नमाझ कर रही हूँ। किन्तु तुम्हें कभी मैंने प्रार्थना करते अथवा किसी भगवान की पुजा करते हुए नहीं देखा। मेरा मानना है कि तुम हिन्दू हो।"

"यह सत्य है कि मैंने कभी प्रार्थना अथवा पुजा नहीं की। मैं किसी धर्म में विश्वास नहीं करता।"

"अर्थात तुम्हारा कोई धर्म नहीं है?"

"हाँ, मेरा कोई धर्म नहीं है।"

"हाय अल्लाह। बिना धर्म के, बिना मझहब के भी कोई इंसान होता है क्या?"

"क्यों नहीं? हमें धर्म की आवश्यकता क्यों है?"

“हमें पुजा के लिए ईश्वर चाहिए, प्रार्थना के लिए ईश्वर चाहिए।” वफ़ाई दुविधा में पड गई। “आज तक तो ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं मिला जिसका कोई धर्म ना हो। ऐसा भी हो सकता है?”
“ईश्वर की प्रार्थना अथवा पुजा हेतु हमें किसी भी धर्म की आवश्यकता नहीं है। तुम्हारा धर्म कौन सा है, इस्लाम?”
“हाँ, मैं इस्लाम को मानती हूँ।”
“तुमने इस्लाम को मानना कब से प्रारम्भ किया?”
“मैं जन्म से मुस्लिम हूँ। मेरे जन्म के दिवस से ही, बल्कि, मेरे जन्म के क्षण से ही मैं इस्लाम को मानती हूँ।”
“तो क्या तुम्हें जन्म से ही धर्म क्या है, इस्लाम क्या है आदि का ज्ञान था? होगा ही ना?“
“तब तो मुझे कोई ज्ञान नहीं था। मैं कौन हूँ? कहाँ हूँ? क्यों हूँ? कुछ भी ज्ञान नहीं था। तो धर्म और इस्लाम आदि का भी ज्ञान नहीं था।”
“तो इस्लाम को धर्म के रूप में कैसे स्वीकार किया?”
“क्या तात्पर्य है तुम्हारा? जन्म से ही मैं मुस्लिम हूँ। मैं इस्लाम को मानती हूँ क्यों कि मेरा जन्म मुस्लिम परिवार में हुआ था। मेरे माता-पिता मुस्लिम है जो इस्लाम को मानते हैं। तो स्वाभाविक है कि मैं भी इस्लाम को मानती हूँ। यह सहज है। इस बात पर तुम्हें दुविधा क्यों है।”
“वफ़ाई, इसका अर्थ है कि तुमने धर्म को पसंद नहीं किया।”
“जीत, कोई व्यक्ति धर्म को कैसे पसंद कर सकता है? यह तो पारिवारिक परंपरा है।”
“यह तो अनुचित है।”
“इसमें अनुचित क्या है, जीत?”
“किसी भी विचार का बिना समझे, आँख बंध कर अनुसरण करना अनुचित है।”
“धर्म के विषय में कुछ भी समझने की आवश्यक्ता नहीं है। इसके नियम एवं परंपरा ईश्वर अथवा अल्लाह जो भी नाम दो उसके आदेश है। यह नियम, यह परम्पराएँ तो सभी धर्म के अनुयायियों द्वारा युगों से निभाए जा रहे हैं, माने जा रहे हैं।”
“हमारे पूर्वज एवं माता-पिता जिसे युगों से मानते आए हैं उसे कसौटी पर कसे बिना ही मान लेना है। यही कह रही हो ना तुम वफ़ाई?”
“हाँ, बिलकुल।"
“चलो, धर्म को भूल जाओ। सोचो कि, हाँ तुम्हारा यह केमरा। तुमने यह केमरा खरीदा है ना?”
“अवश्य। यह एक अजोड़ केमेरा है।”
“तुम्हें अपनी इस पसंद पर गर्व है ना?“
“क्यों नहीं? कोई संदेह है क्या? मेरी इस पसंद से मेरे सभी साथी अचंभित थे।”
“अभिनंदन, सुंदरी वफ़ाई। आप उत्तम हैं। आप श्रेष्ठ हैं। आप सबसे भिन्न हैं। आपकी पसंद भी अनन्य है। यह अदभूत है। क्या पसंद है तुम्हारी! मान गए जी। वाह,वाह! यही सब शब्द तुम्हारे साथियों से तुमने सुने होंगे। है ना?”
“हाँ, बिलकुल ऐसा ही हुआ था, सब ने यही शब्द बोले थे। किन्तु तुम यह कैसे जानते हो?” वफ़ाई के मुख पर आश्चर्य था।
“क्या तुम जानती हो कि वह सब ने तुम्हारी ऐसी प्रशंसा क्यों की थी?”
“क्यों कि मेरी पसंद श्रेष्ठ थी।”
“यह अर्धसत्य है वफ़ाई। पूर्ण सत्य यह है कि केमेरा खरीदने से पहले तुमने बड़ा ही गहन अभ्यास किया था इस केमेरे के विषय में। इसके प्रत्येक लक्षण पर पूरा अनुसंधान किया था, पूरा विश्लेषण किया था। उसके पश्चात तुमने अपने सभी तर्क एवं पूर्ण बुध्धी का प्रयोग किया था। जिसके कारण तुम श्रेष्ठ निर्णय कर सकी थी। तुम्हारी इस पसंद की प्रशंसा तो होनी ही थी।” जीत के अधरों पर स्मित था।
“धन्यवाद। किन्तु तुम क्या सिध्ध करना चाहते हो?” वफ़ाई व्याकुल हो गई।
“एक प्रश्न और। उसके पश्चात सब बात स्पष्ट हो जाएगी।”
“एक और प्रश्न? अर्थात एक और दुविधा? क्या है वह?”
“तुमने जब धर्म को पसंद किया था तब भी तुम्हें इतनी सारी प्रशंसा मिली थी?”
“वह कैसे मिलती मुझे? तब तो मैं अभी अभी जन्मी थी।”
“तो उसके पश्चात कभी किसी समय पर प्रशंसा मिली थी?”
“नहीं, कभी नहीं। मेरा जन्म हुआ, मेरा धर्म निश्चित हो गया। उसके पश्चात कभी भी धर्म के विषय में बात भी नहीं हुई।”
“वफ़ाई, उसके पश्चात उस पर विचार भी नहीं किया गया, ठीक है ना?”
“तुम ठीक कह रहे हो, जीत। हमने कभी ऐसा नहीं किया, यह सहज है। तुम क्या कहना चाहते हो?”
“कोई एक वस्तु जो पाँच सात वर्ष टिकेगी, जो नाशवंत है, जो अस्थायी है उस पर निर्णय करने से पूर्व हम कितना विचार करते हैं। किन्तु जब धर्म की बात आती है, तब हम उसे बुध्धी के द्वार बंध करके स्वीकार लेते हैं। उस पर विचार करने का, बात करने का, चर्चा

करने का कष्ट तक नहीं करते। बस धर्म कोमानने लगते हैं। हमने कभी स्वयं से भी यह प्रश्न नहीं किया कि मुझे क्यों इस अथवा उस धर्म को मानना है? मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है? किसी धर्म को मानते हुए क्या मुझे वह लक्ष्य प्राप्त होगा? यह धर्म किसने रचे? क्यों रचे? उसका अनुसरण करने का अंतिम लक्ष्य क्या है? उस के पीछे का तर्क क्या है? यह हमारी विडम्बना रही है कि हमने इन बातों की कभी चिंता नहीं की।" जीत क्षण भर रुका। वफ़ाई उसके शब्दों को ध्यान से सुन रही थी। उन शब्दों पर विचार कर रही थी। वह दुविधा में थी, विचार मग्न थी। उसके मन में अनेक विचार चल रहे थे।

"वफ़ाई, यह तो स्पष्ट हो गया कि जो धर्म को तुम मान रही हो वह तुम्हारी पसंद नहीं थी किन्तु तुम पर वह थोपा गया था।"

"अर्थात मेरा धर्म क्षति से भरा है। बाकी सभी धर्म पूर्ण है।"

"नहीं, कदापि नहीं। यही तो छलना है। यही तो भ्रमणा है। यही तो दिशा से भटकाता है। यही तो असत्य है। कोई भी धर्म पूर्ण नहीं है। सभी भ्रम का प्रसार करते हैं। सभी दुविधाएँ बढ़ा देते हैं। वह जीवन के किसी उद्देश्य की तरफ नहीं ले जाता, ना ही वह आनंद प्रदान करता है। वह कभी भी ईश्वर के समीप नहीं ले जाता। वास्तव में धर्म के कारण ही हम ईश्वर से कहीं दूर चले गए हैं। धर्म मानव मात्र को ईश्वर से विमुख कर देता है।"

"तो तुम मानते हो कि ईश्वर का अस्तित्व नहीं है?"

"मैंने ऐसा नहीं कहा। ईश्वर के प्रति मेरी पूरी श्रध्धा है।"

"किन्तु तुम किसी धर्म में आस्था क्यों नहीं रखते? जीत, तुम्हारी बातें मुझे अधिक से अधिक दुविधा में ड़ाल रही है।"

"यही कार्य है धर्म का, दुविधाओं में डाल देना। मेरा विश्वास किसी धर्म में नहीं है इसका अर्थ यह नहीं कि मैं नास्तिक हूँ। मैं भगवान के अस्तित्व को मानता हूँ।"

"तो उस भगवान को कैसे प्राप्त किया जा सकता है? उस लक्ष्य तक का मार्ग क्या है?" वफ़ाई ने निर्दोष बालक की भांति प्रश्न कर दिया।

"इस विषय में कोई तुम्हारा मार्गदर्शन नहीं कर सकता। यह सम्पूर्ण रूप से व्यक्तिगत है। यह तुम्हारे तथा ईश्वर के मध्य की बात है। ईश्वर से ही पूछ लो। तुम जिस मार्ग पर यात्रा करना चाहती हो उस पथ का मार्गदर्शन वही कर सकता है। यह व्यक्ति का अपना मार्ग है। तुम्हें उस मार्ग को ढूँढना होगा। इस में कोई सहाय नहीं कर सकता। अपने ईश्वर को, उस तक के मार्ग को स्वयं ढूंढो। वह विशेष होगा, भिन्न होगा। वह आनंद से पूर्ण होगा, वह शाश्वत होगा। ढूंढो उसे। वह तुम्हारे अंदर ही है कहीं।"

"जीत, मुझे लगता है कि तुम कोई महान संत हो। क्या तुम्हें तुम्हारा ईश्वर मिल गया? क्या तुम्हें तुम्हारा मार्ग मिल गया? मेरी धारणा है कि तुम उस लक्ष्य को प्राप्त कर चुके हो।"

"पुन: तुम छलना को पकड़ रही हो। मुझे मेरा ईश्वर नहीं मिला है, मैं अभी भी उसे ढूँढ रहा हूँ।"

"जब तुम्हें ही तुम्हारे ईश्वर एवं तुम्हारे लक्ष्य का ज्ञान नहीं है तो तुम मुझे क्यों मार्ग से भटका रहे हो?" वफ़ाई उत्तेजित हो गई।

"मैंने तुम्हें मार्ग भ्रष्ट नहीं किया। मैंने यह भी आग्रह नहीं किया कि तुम मेरे शब्दों को अनुसरो। मैंने तो केवल तुम्हारे शब्दों का उत्तर ही दिया है।" जीत शांत था, सौम्य था। उसके अधरों पर स्मित था।

"मुझे भटकाओ मत। यह बता दो कि मुझे क्या करना चाहिए? क्या मुझे मेरे अल्लाह तथा मेरे धर्म को छोड़ देना चाहिए?" वफ़ाई ने सीधा प्रश्न किया।

"यह तुम्हारा प्रश्न है, तुम ही उत्तर ढूंढ लो।"

"ठीक है, जीत। तुम्हारा धर्म कौन सा है? कौन तुम्हारा ईश्वर है?"

"कोई नहीं। ईश्वर तथा धर्म की बातों से मैं मुक्त हूँ।"

वफ़ाई कुछ भी निष्कर्ष पर नहीं आ सकी, अधिक दुविधा में पड गई।

&*&*

37"

एक सुंदर प्रभात के प्रथम प्रहर ने सो रहे जीत को जगा दिया। वह झूले से उठा। गगन को देखा। अभी भी थोड़ा अंधकार वहाँ रुका हुआ था। चंद्रमा स्मित कर रहा था। जीत ने चंद्रमा को स्मित दिया, जीत को अच्छा लगा। जीत ने चिंता नहीं की कि चंद्रमा ने उसके स्मित का क्या उत्तर दिया। वह सीधे चित्राधार के समीप गया और अपूर्ण रहे चित्र को पूरा करने में व्यसत हो गया।

"क्या तुम अपूर्ण हो?" जीत ने चित्र को पूछा।

"थोड़े से रंग भर दो मुझ में, मैं पूर्ण हो जाऊंगा।" जीत उसमें रंग भरने लगा।

समय के अनेक बिन्दु बरस गए। गगन में चंद्रमा कहीं नहीं था, ना अंधकार था। सूर्य उदय होने को तैयार था। प्रकाश अपने किरणों से धरती को देदीप्यमान करने को उत्सुक था।

जीत चित्राधार को छोड़कर झूले पर जा बैठा। अपने इस चित्र को अपनी कल्पना से भी अधिक सुंदर बनाने के विचार करने लगा। वह अपने विचारों में खो गया, कोई भिन्न जगत में चला गया।

वफ़ाई ने जागकर जब घड़ी देखि तो समय था 8:49।
जीत अभी भी अपने विश्व में था। उसने वफ़ाई की समीपता पर ध्यान नहीं दिया।
“श्रीमान चित्रकार, आप किस विश्व में हो? विलंब के लिए क्षमा चाहती हूँ। तुम्हारा नींबू पानी तैयार है।” वफ़ाई ने नींबू पानी भरे दोनों गिलास जीत के सामने रखे।
“ओ…ह…।” जीत अपने कल्पना के विश्व से लौटने का प्रयास करने लगा, सफल हुआ। उसने वफ़ाई पर तथा नींबू पानी पर एक द्रष्टि डाली।
“ओह, पर्वत सुंदरी। नींबू रस लाने में आज पूरी सेंतालीस मिनिट का विलम्ब हुआ है।”
वफ़ाई ने कोई प्रतिभाव नहीं दिया। उसने जीत को एक पात्र दिया, स्मित भी। दूसरा पात्र उसने अपने अधरों से मिला दिया।
जीत ने वफ़ाई को ऊपर से नीचे तक देखा।
“वफ़ाई, तुम आज भिन्न दिख रही हो। क्या तुम अभी अभी जागी हो? तुमने प्रभात की नमाझ अदा नहीं की? तुम्हें जागने में अधिक विलंब हो गया…।”
“मुझे देखने वाली तुम्हारी आँखें बड़ी तेज है। मान गए जी।” वफ़ाई ने जीत को छेड़ा।
“प्रशंसा करने के लिए धन्यवाद। किन्तु मेरे प्रश्नों के तुमने उत्तर नहीं दिये।”
“देती हूँ ना मैं सारे प्रश्नों के उत्तर। मैं अभी अभी जागी हूँ। मैंने आज प्रभात वाली नमाझ अदा नहीं की है। मैंने तुम्हारे सारे प्रश्नों के उत्तर दे दिये हैं, श्रीमान जीत जी।” वफ़ाई हंसने लगी।
“अवश्य दिये हैं, किन्तु मेरे प्रश्न के अंदर छिपे प्रश्न के उत्तर नहीं दिये हैं तुमने। तुम मेरी बात समझ रही हो ना?” जीत गंभीर था।
“प्रश्न के अंदर छिपे प्रश्न को मैं पढ़ सकती हूँ।” वफ़ाई एक क्षण रुकी, गहन सांस ली, बोली, “कल रात्रि से मैं विचलित हूँ। पूरी रात्रि मैं उन बातों पर विचार करती रही जो हमने धर्म के विषय में की थी। रात्रि भर मैं जागती रही। रात्रि के अंतिम प्रहर होने पर मुझे निंद्रा आई। यही कारण है कि मैं विलंब से जागी। मैं …।” वफ़ाई रुकी। जीत उसे ध्यान से सुन रहा था। जीत की आँखें वफ़ाई को पुछ रही थी कि उसके पश्चात क्या हुआ?
“स्वयं के साथ हुए संघर्ष के अंत में मैंने निश्चय कर लिया कि मैं अल्लाह की बंदगी नहीं करूंगी, मैं इस्लाम को नहीं मानूँगी। मैं किसी भी धर्म को नहीं मानूँगी। मैं अब नास्तिक हूँ…।”
“रुको, क्षणभर के लिए रुको।” जीत ने वफ़ाई को रोका, “तुम जो कह रही हो उसका अर्थ तुम जानती हो?”
“हाँ, मैं तुम्हारे विचारों से सहमत हूँ। मैं मेरा धर्म छोड़ रही हूँ। वास्तव में मैं सभी धर्म को छोड़ रही हूँ। अब मैं भी मुक्त आत्मा हूँ। मैंने उचित निर्णय लिया न, जीत?” वफ़ाई के अधरों पर शाश्वत स्मित था।
“नहीं, तुम पुन; असत्य के मार्ग पर हो। तुमने धर्म को बिना तर्क के धारण किया था। वह तुम्हारी प्रथम भूल थी। आज तुम धर्म को छोड़ रही हो, बिना किसी तर्क के, बिना किसी विश्लेषण के, बिना तुम्हारे धर्म के सिद्धांतों का अभ्यास किए। यह तुम दूसरी भूल करने जा रही हो। दोनों निर्णय अनुचित है। तुम्हें ऐसी भूल नहीं करनी चाहिए।”
“तुम्हारे विचार, तुम्हारे शब्द सुनने के पश्चात मैंने यह निर्णय लिया है। क्या मेरा यह निर्णय अनुचित है?”
“बिलकुल अनुचित है।”
“तुम कैसे कह सकते हो”
“तीन कारण है। एक, क्या तुम्हें पूरा विश्वास है कि मेरे विचार सत्य हैं? दो, यदि वह पूर्ण सत्य भी हो तो भी वह विचार तुमने मुझ से उधार लिए हैं। तुमने उस विचार को अपनी कसौटी पर कसा नहीं है। तीन, तुम्हारे धर्म के प्रति तुम्हारी आस्था क्या इतनी दुर्बल है कि मेरे कुछ शब्दों से वह क्षण में ही टूट जाए?”
“तो मैं क्या करूँ? इस क्षण तक मैं द्रढ़ थी कि मुझे धर्म को छोड़ना है। अब, तुमने पुन: कुछ शब्द कह दिये और मैं दुविधा में पड़ गई। मेरी धारणा अनुचित हो गई। मैं क्या करूँ? जीत, मेरा मार्गदर्शन करो।” वफ़ाई ने करुणा व्यक्त की।
“वास्तविक समस्या यह है कि हमें कभी विचार करने की, प्रश्न करने की, संवाद करने की, तर्क रखने की, अपने मन से किसी बात का विश्लेषण करने की तथा स्वतंत्र रूप से निर्णय करने की शिक्षा नहीं दी गई। हमारे लिए यह सब कोई ओर कर रहा है और हम उसका अंधा अनुसरण करते हैं। बात धर्म की हो अथवा जीवन की, हमें यही सीखाया जाता है। हमें स्वतंत्र विचार करने की अनुमति नहीं है। हम किसी भीड़ का हिस्सा बनकर रह जाते हैं। भीड़ के पास ना तो विवेक होता है ना बुध्धी। तुम यह बात जानती हो ना? हमें व्यक्ति बनना होगा, भीड़ का हिस्सा नहीं।” जीत ने उत्साह से कहा।
“तुम चाहते क्या हो, जीत?”
“यही कि तुम स्वयम विचार करो, अभ्यास करो, समझो और जो तुम समझी हो उस पर अपने ही तर्क से कसौटी करो। तत्पश्चात कोई निर्णय करो। यदि तुम्हें किसी ओर के विचार प्रभावित करते हैं तो उसका अर्थ है कि तुम मुक्त आत्मा नहीं हो, तुम स्वतंत्र नहीं हो। सबसे प्रथम स्वतंत्र बनो।”
“किन्तु यह तो अत्यंत लंबी प्रक्रिया है।”
“यह लंबी है क्यों कि हमें युगों से जमी हुई परतों को तोड़ना पड़ता है। यह कठिन है किन्तु असंभव नहीं।”

“तब तक क्या किया...?”
“यदि तुम अनिर्णायक हो तो जो स्थिति है उसे बनाए रखो। जब तक तुम नए विचारों से पूर्णत: संतुष्ट ना हो तब तक कुछ भी बदलना नहीं है। तुम्हें धर्म का व्यसन हो गया है। जन्म से जो व्यसन लागू हो गया है उसे ऐसे नहीं छोड़ सकते। तुम व्यसन बदल सकते हो किन्तु उसे छोड़ नहीं सकते। यह व्यसन तुम्हारे जीवन का हिस्सा बन चुका है। धर्म भी ऐसा ही हिस्सा है तुम्हारे जीवन का। व्यसन से सहज मुक्ति नहीं मिलती। किन्तु तुम प्रयास कर सकते हो।”
“जीत, तुमने मेरे मन को अनेक विचारों से भर दिया है। मैं दुविधा से घिर गई हूँ।” वफ़ाई ने घड़ी देखी,” “नमाझ का समय तो बीत गया। यह सब तुम्हारे कारण हुआ है, जीत।”
“नमाझ से क्या तपर्य है तुम्हारा? नमाझ का उद्देश्य क्या है?”
“अल्लाह की प्रार्थना करना, उसका धन्यवाद करना।”
“तो तुम्हारे अल्लाह अभी कोई अन्य कार्य में व्यस्त होंगे।”
“क्या?”
“पुजा एवं प्रार्थना का कोई नियत समय नहीं होता। अत; तुम्हारी प्रथम नमाझ का भी कोई विशेष समय नहीं होता। तुम अपनी प्रथम नमाझ रात्री में सोने से पहले भी अदा कर सकती हो।”
“मैं जब जब तुम्हारे शब्द सुनती हूँ, अधिक से अधिक दुविधा होती है और मैं अपनी मान्यताओं से दूर चली जाती हूँ। तुम विचार भंजक हो। तुमने मेरे धर्म के किल्ले को नष्ट कर दिया है।”
“यदि ऐसा हुआ है तो मुझे मौन रहना होगा। मैं अब धर्म के विषय में कोई बात नहीं करूंगा।”
जीत मौन हो गया। वफ़ाई ने कुछ क्षण प्रतीक्षा की किन्तु जीत ने स्वयं के मौन को नहीं तोड़ा।
दुविधा के साथ वफ़ाई ने प्रथम नमाझ अदा की। जीत उसे देखता रहा। वफ़ाई अधिक सुंदर, अधिक पवित्र, अधिक शाश्वत लग रही थी। नमाझ के समय की प्रत्येक प्रक्रिया एवं प्रत्येक भावों में सुंदरता थी।
जीत वफ़ाई को पूर्ण राग से देखता रहा। वफ़ाई की प्रत्येक मुद्रा अनुपम थी, अनुराग से भरी थी। अपने मन में जीत ने वफ़ाई की अनेक आकृतियाँ रच दी, ह्रदय में बंध करके रख ली।
वफ़ाई ने नमाझ पूर्ण की। उसने देखा कि जीत झूले पर मौन बैठा था। वफ़ाई ने उस मौन को भंग करने की चेष्टा नहीं की।

38

“तुम मुझे चित्रकला कब सिखाओगे?” वफ़ाई ने पूछा।
“वफ़ाई, मुझे विस्मय है कि तुम अभी भी सीखना चाहती हो।”
“मैं मेरा वचन पूर्ण करना चाहती हूँ।”
“तुम उतावली हो रही हो।”
“कोई संदेह, जीत?”
“जिस से तुम यहाँ से अति शीघ्र भाग सको।”
“मैं ना तो यहाँ से, ना ही तुम से भागने वाली हूँ।”
“तो इतनी अधीर क्यों हो? इतनी उतावली क्यों हो? तुम्हारे पास भी समय नहीं बचा क्या?”
“मैं? नहीं तो? किन्तु मुझे ज्ञात है कि तुम्हारे पास समय नहीं बचा है।”
“मैं नहीं जानता।” जीत ने गहरी सांस ली।
“तुम भली भांति जानते हो, जीत।” वफ़ाई ने कहा। जीत ने उत्तर नहीं दिया।
###
वफ़ाई चित्राधार के संग व्यस्त थी। जीत के निर्देशों का वह अनुसरण कर रही थी। चित्रकारी सीखने का उसका वह प्रथम अभ्यास था। जीत के शब्दों को अच्छे शिष्या की भांति सुनती रही वफ़ाई।
अनेक प्रयास के अंत में वफ़ाई कुछ आकारों को आकार देने में सफल रही। वफ़ाई ने उसमें रंग भर दिये। अपने कार्य को वह उत्साह से देखने लगी। अपने कार्य से उसे प्रीत हो गई।
वह आनंदित थी। वह हर्ष से नृत्य करने लगी। वह चीखती रही, नाचती रही, हँसती रही। अंतत: रो पड़ी।
जीत वफ़ाई को देखता रहा। वफ़ाई उसे एक भोली, सुंदर बालिका जैसी लगी। वफ़ाई की इसी मुद्राओं की जीत ने तस्वीरें खींच ली। वफ़ाई उस बात से अनभिज्ञ थी।
वफ़ाई की आँखों में विस्मय था जो जीत को आकर्षित कर रहा था।
“इन आकृतियों को देखो। कैसी लग रही है यह सब? सुंदर है ना?” प्रतिक्रिया की अपेक्षा वफ़ाई ने जीत को देखा। किन्तु जीत वफ़ाई

की मुग्धता में खो गया था। उसने वफ़ाई के शब्द नहीं सुने। वफ़ाई ने अपने शब्द पुन: कहे। जीत ने पुन: ध्यान नहीं दिया।
वफ़ाई जीत के समीप गई। जीत के कानों में चीखी।
“वफ़ाई, क्या कर रही…?”
“जीत, कल्पना के अपने विश्व को छोडकर वास्तविक जगत में लौट आओ।”
“ओह।”
“छोड़ो सब, इसे देखो। यह सब मैंने किया है। यह आकृतियाँ, यह रंग, यह सब। हे गुरु, मेरे इस कार्य पर अपनी प्रतिक्रिया दो। इसका मूल्यांकन करो।” वफ़ाई का हाथ चित्र पर था।
जीत ने उन चित्रों को ध्यान पूर्वक देखा। उसके मुख पर के भाव बदलने लगे।
वफ़ाई चिंतित थी। किसी बाल मंदिर के बच्चे की भांति भयभीत थी।
वफ़ाई को अपनी शिक्षिका याद आ गई। मिस रोझी, जिसे वह सदैव धृणा करती थी। तब वह तीसरी कक्षा में पढ़ती थी।
रोझी ने एक कविता पढ़ाई थी। उस कविता पर वह सभी विध्यार्थियों को प्रश्न करने वाली थी। वफ़ाई को कविता कभी पसंद नहीं थी। यही कारण था कि उसे रोझी भी पसंद नहीं थी।
वह कविता प्रकृति के सौंदर्य पर थी। सुंदर शब्दों से कवि ने प्रकृति का वर्णन अत्यंत रोचक रूप से किया था। अन्य बच्चे कह रहे थे कि रोझी ने उस कविता को सुंदर रूप से समझाया था। पूरे उत्साह से उस कविता को गाया था और गवाया भी था। सभी रोझी के साथ गाते थे। वह सब कविता का आनंद उठा रहे थे। किन्तु वफ़ाई वह सब नहीं कर पाई।
वफ़ाई को कविता से धृणा थी क्यों कि वह सुंदरता का वर्णन तो कर रही थी किन्तु खाली शब्दों से वफ़ाई प्रकृति से जुड़ नहीं पा रही थी। प्रकृति के सौन्दर्य की अनुभूति नहीं कर पा रही थी। वफ़ाई शाला की दीवार से परे बिखरी प्रकृति में घूमना पसंद करती थी। उन दीवारों को लांघकर भाग जाना चाहती थी। पहाड़ों में, जंगलों में, झरनों में, नदियों में, बादलों में, हिम में, वह स्वयं को विलीन कर देना चाहती थी। भागने का वह सदैव प्रयास भी करती रहती थी। किन्तु प्रत्येक बार रोझी उसे पकड़ लेती थी तथा शाला की दीवारों से बने कारावास में बंदी बना देती थी। बस यही कारण था कि वफ़ाई रोझी से तथा कविता से घृणा करती थी।
रोझी ने सबसे प्रथम वफ़ाई की नोट ली। वह जानती थी कि वफ़ाई गृह कार्य कभी ठीक रूप से नहीं कर पाती। उसने वफ़ाई को समीप बुलाया। वफ़ाई पद पद पर भयग्रस्त थी। वह कांप रही थी। वफ़ाई की नोट देखने के पश्चात रोझी ने वफ़ाई को तीखी द्रष्टि से देखा। वफ़ाई की नोट में कुछ भी नहीं था। वफ़ाई रोझी के डांटने से पहले ही रोने लगी। सभी बच्चे उसे ही घूर रहे थे। किन्तु सबसे भयावह द्रष्टि रोझी की थी।
रोती हुई वफ़ाई विनती कर रही थी, “मुझे क्षमा करो। क्षमा करो। मैं कल गृह कार्य करके आऊँगी। क्षमा करो। क्षमा करो।”
वफ़ाई अभी भी यह शब्द बोले जा रही थी। हाथ जोड़े वह जीत के सन्मुख खड़ी थी। जीत स्मित कर रहा था।
“नहीं, कभी नहीं। तुम्हें कभी क्षमा नहीं दी जाएगी, वफ़ाई।” जीत हंसने लगा।
वफ़ाई अभी भी रो रही थी। जीत ने उसे पानी दिया। वफ़ाई उसे एक ही घूंट में पी गई। वह जीत को देखने लगी। इधर उधर देखने लगी। वह हर दिशा, हर कोने में देखने लगी। कहीं रोझी नहीं थी, ना ही साथी विध्यार्थी थे, ना शाला थी ना कविता थी वहाँ।
वहाँ खुल्ला गगन था। असीम मरुभूमि थी। जीत था।
वफ़ाई ने अपने विचारों को तथा कल्पनाओं को स्थिर किया। उसने कुछ क्षण व्यतीत होने दिये, जीत ने भी। जीत ने आँखों के द्वारा कुछ तरंग बहा दीये, जिसे देखकर वफ़ाई भय मुक्त हो गई।
“वफ़ाई, तुम्हारे प्रामाणिक प्रयास के कारण तुम चित्र बनाने में सफल हुई हो। अभिनंदन। तुमने सुंदर प्रारम्भ किया है।”
वफ़ाई की आँखों में आनंद के, सफलता के, संतोष के तथा जीत के द्वारा दी गई प्रेरणा के भाव मिश्रित अश्रु थे। वह कुछ भी नहीं बोल पाई। वफ़ाई के केश की लटें हवा में उड रही थी, वह सब कुछ कह रही थी। जीत उसे सुनता रहा।

39

दो दिवस तक वफ़ाई अविरत रूप से चित्रकारी सीखती रही। अब वह गगन, बादल, पंखी आदि के चित्र बनाने में सक्षम थी। किन्तु वह तूलिका से संतुष्ट नहीं थी क्यों कि वह वफ़ाई की इच्छानुसार रंग भरने में सहाय नहीं कर रही थी। तूलिका के ऊपर वफ़ाई का नियंत्रण अभी बाकी था।
जीत ने भी अपनी कला में सुधार किया था। अब वह किसी भी पदार्थ जो उसकी आँखों के सामने हो उसका चित्र बना सकता था। वह सब चित्र अच्छे तो लगते थे किन्तु कुछ अभाव था जो चित्र को पूर्ण नहीं बना रहा था। जीत उस 'कुछ' को ढूँढने का प्रयास करता रहा किन्तु वह उसके हाथ नहीं लग रहा था।
वफ़ाई एवं जीत, दोनों कला में प्रगति कर रहे थे, तथापि दोनों असंतुष्ट थे।
"वफ़ाई, बालक के इस चित्र में किस वस्तु का अभाव है, बता सकती हो?"
वफ़ाई ने चित्र को देखा, "मुझे लगता है कि बालक के मुख पर भाव और भावनाएं उचित रूप से प्रकट नहीं कर पाये हो तुम। इसका मुख तो बालक जैसा है किन्तु भाव किसी वयस्क जैसे गंभीर। बालक की सहजता एवं सरलता कहीं नहीं दिख रही। इन भावों को चित्र में डालोगे तभी यह चित्र पूर्ण होगा। भाव ही तो किसी चित्र के प्राण होते हैं, आत्मा होती है। अन्यथा वह जीवन हिन प्रतिमा जैसा लगेगा। यह मेरा मत है। आवश्यक नहीं की यही सत्य हो।"
"वफ़ाई, मैं तुम्हारा तथा तुम्हारे मत का सम्मान करता हूँ। किन्तु मैं उन भावों को इस चित्र में कैसे ला सकता हूँ?"
"श्रीमान कलाकार, यह तुम्हारी समस्या है।" वफ़ाई हंस दी। जीत पर एक द्रष्टि डाल कर वह कक्ष में दौड़ गई। दूर जाती हुई वफ़ाई को जीत देखता रहा। वफ़ाई के मुख पर तब अनेक भाव थे जो पहले कभी नहीं देखे। वह भावों का रंग लाल था, गालों पर गुलाबी छाया थी।
जीत ने उन रंगों को ह्रदय में भर लिए। उसे वह रंग मिल चुके थे जिसे वह चित्र में डालना चाहता था। वह केनवास तक गया, तूलिका को रंगों में डुबो दिया। उन रंगों से चित्र भर दिया।

जीत ने चित्र पूर्ण किया। वफ़ाई को बुलाया।
“क्या बात है, श्रीमान चित्रकार?”
वफ़ाई के मुख पर वही लाल रंग, गालों पर वही गुलाबी छाया थी। बालक के चित्र के भाव बदल गए थे।
“ओह, चित्रकार। अंतत: तुमने यह कर दिखाया। यह सुंदर है, अपेक्षा के अनुरूप है। यह सहज है, एक बालक की भांति। तुमने यह कर दिखाया है जीत। मैं तुमसे प्रभावित हूँ।” वफ़ाई के मुख पर छाए लाल-गुलाबी रंग उसे सुंदरता प्रदान कर रहे थे।
वफ़ाई को अविरत देखते रहने का जीत को कारण मिल गया किन्तु वह देख नहीं सका। जीत ने वफ़ाई पर से दृष्टि हटा दी, केनवास को देखता रहा।
“हे चित्रकार, मुझे एक बात बताओ। आशा करती हूँ कि तुम्हारा उत्तर इस बालक के मुख के भावों की भांति शुध्ध ही होगा।”
“तुम जानती हो कि मैं मेरे विचार एवं मेरे चित्रों के साथ कभी नहीं खेलता।”
“तुम प्रामाणिक हो वह मुझे ज्ञात है।”
“सीधे मुद्दे पर आओ। पुछो जो पुछना हो।”
“फिर से तुम उतावले हो रहे हो।” वफ़ाई हंस दी।
वफ़ाई के हास्य का जीत आनंद नहीं ले सका, वह वास्तव में शीघ्रता में था। केवल उसे ही उस उतावलेपन का कारण ज्ञात था। अनकहे कारण को छाती में बंध करके रखा था जीत ने।
“इतने अल्प समय में तुमने इस चित्र के भावों को कैसे बदल दिया? जीत, कहीं तुम वास्तव में उत्तम कलाकार तो नहीं जो मुझ से अपनी इस कला को छुपा रहा हो? कुछ ही क्षणों में इन भावों को बदलने का रहस्य क्या है?”
“मैं स्त्रीयों को कभी समझ नहीं सका। स्त्रीयाँ इतनी संदेह क्यों करती है? सदैव संदेह करती रहती है।” जीत के मुख पर व्यग्रता थी। वफ़ाई को वह पसंद आई।
व्यग्रता में जीत कितना सुंदर लग रहा है। इसे और चिडाती हूँ, आनंद लेती हूँ।
नहीं नहीं, कहीं क्रोध कर बेठा तो?
तो सीधे सीधे जीत के प्रश्न का सरल उत्तर दे दो।
यही उचित रहेगा।
“जीत, यह सहज है। पुरुष पर संदेह करना स्त्री का अधिकार है। यह स्त्री की प्रकृति है। यह स्वाभाविक भी है। इसके लिए तुम ईश्वर को दोष दे सकते हो, स्त्री को नहीं। यदि कोई स्त्री पुरुष पर संदेह करती हो यह स्पष्ट हे की वह स्त्री उस पुरुष से अत्यंत प्रीत करती होगी।”
“तुम करती हो प्रीत मुझ से?” जीत ने बिना किसी उद्देश्य से पूछा। किन्तु वफ़ाई ने उन शब्दों को पकड़ लिया। वह लाल हो गई। मुख पर गुलाबी आभा प्रकट हो गई। जीत ने उसे देख लिया।
“जीत, तुम मेरे प्रश्न का उत्तर टाल रहे हो। तुमने मेरे प्रश्न को सुना था? तुम्हें मेरा प्रश्न याद है? क्या मुझे उसे पुन: पुछना पड़ेगा?”
“उसकी कोई आवश्यकता नहीं है। यह रहे उत्तर।
प्रथम बात, मैं पुन: स्पष्ट कर देता हूँ कि मैं कोई कलाकार नहीं हूँ। मैं कला को सीख रहा हूँ। मैंने मेरी कला के विषय में कुछ भी नहीं छुपाया।
दूसरी बात, तुम जब यहाँ से भाग कर कक्ष में जा रही थी तब मैंने तुम्हारे मुख पर कुछ भाव देखे थे। मैंने उसे पकड़ लिया। इस चित्र के द्वारा उसे प्रकट कर दिया।”
“कैसे भाव? मेरे मुख पर कौन से भाव देखे तुमने? कहो ना, जीत। कहो, मैं उत्सुक हूँ।”
“वह लाल थे, गुलाबी थे, नारंगी थे।”
“वास्तव में वह क्या थे?”
“इन सभी का मिश्रण थे वह।”
“जीत, मैं कैसी दिख रही थी? भाव कैसे लग रहे थे?”
“मैं कोई लेखक नहीं हूँ। शब्दों में उसे कैसे कहूँ?” जीत ने स्मित दिया।
“किन्तु तुम प्रयास तो कर सकते हो। तुम कहो बाकी मैं समझ जाऊँगी।”
“कभी कभी, शब्द किसी भावनाओं को व्यक्त नहीं कर सकते। ना ही वह उन भावनाओं का वर्णन करने में समर्थ होते हैं। शब्दों की अपनी मर्यादा है। भावों का केवल अनुभव किया जा सकता है।”
“जीत, तुम तो...।”
“वफ़ाई, हम अपने ही भावों को अपनी इन आँखों से नहीं देख सकते। यही इसकी सुंदरता है, यही इसका अनुपम सौन्दर्य है।”
“तुम ठीक कह रहे हो। किन्तु दर्पण में तो देखा जा सकता है। मुझे उस समय दर्पण देखना चाहिए था। उस समय तुमने मुझे दर्पण में देखने को क्यों नहीं कहा? यदि तुमने कहा होता तो...।”
“स्वयं के भावों को देखने का यह उचित मार्ग नहीं है।”

“क्यों? क्या समस्या है इसमें, जीत?”
“एक तो ऐसा करता तो मेरा ध्यान भंग होता और मैं तुम्हारे भावों को देखने से वंचित रह जाता। दूसरा, जैसे ही मैं तुम्हें दर्पण देखने को कहूँगा, तुम जागृत हो जाओगी और तुम तुम्हारे सहज भावों को खो दोगी। तुम नहीं जानती कि यह जागरूकता कितनी क्रूर होती है। यह हमारे भीतर जो भी सहज है, प्राकृतिक है उन्हें नष्ट कर देती है।”
“तो क्या, जीत?”
“इन दोनों स्थिति हमारे लिए पराजय की स्थिति बन जाती है। मैं पराजित होना नहीं चाहता। वफ़ाई, उचित तो यही है कि मैं तुम्हारे भावों को देखता रहूँ, अनुभव करता रहूँ, तुम्हें बताए बिना ही।” जीत ने आँखें बंध कर ली और अपने ही विश्व में खो गया।
वफ़ाई ने धैर्य रखा, किन्तु वह धैर्य शीघ्र ही टूट गया, “जीत, कहाँ हो तुम? मैं यहाँ हूँ, तुम्हारे साथ। तुम अकेले नहीं हो। तुम अपने विश्व से लौट आओ अथवा मुझे तुम्हारे साथ ले चलो तुम्हारे उस विश्व में। किन्तु किसी भी स्थिति में मुझे अकेली...।”
जीत ने शांत चित्त से आँखें खोली।
“हे प्रभु, तेरा धन्यवाद। जीत लौट आया है इस विश्व में।” जीत अभी भी शांत था, मौन था।
“जीत, मुझे तुम से भय लगता है।”
“क्यों? क्या मैं हिंसक पशु हूँ? मैं कोई राक्षस हूँ? तुम्हारे इन शब्दों से मुझे आश्चर्य होता है।”
“मेरे साथ ऐसी क्रीड़ा ना करो, जीत। मैं उपहास नहीं कर रही हूँ। मैं चिंतित हूँ कि...।”
“क्या बात है वफ़ाई?”
“तुम्हारी दो बातें है इसका कारण। तुम अचानक ही किसी भिन्न जगत में चले जाते हो, आँखें बंध कर लेते हो। उसके पश्चात इस वास्तविक जगत में लौटने में तुम विलंब कर देते हो। कभी कभी तो मुझे आशंका भी रहती है कि तुम इस विश्व में लौट कर कभी नहीं आओगे।”
“और दूसरा कारण?”
“अनेक बार तुम्हारा मौन अधिक लंबा हो जाता है, जैसे अंतहिन मौन।”
“तो मुझे क्या करना चाहिए?”
“बस तुम मेरे साथ रहो इस विश्व में, हमारे विश्व में। इस वास्तविक विश्व में। मेरे साथ बात करते रहो।”
“क्या तुम्हें विश्वास है कि यह जगत ही वास्तविक जगत है?”
“मैं नहीं जानती। किन्तु, तुम इसी विश्व में रहो मेरे साथ। चाहे यह विश्व वास्तविक हो अथवा आभासी।”
“मैं प्रयास करूंगा।”
“जीत, धन्यवाद।”
जीत ने स्मित दिया। उस स्मित ने वफ़ाई को निश्चिंत कर दिया।
“जीत, मेरा प्रश्न अभी भी उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा है। मेरे मुख के भावों को मैं कैसे देख सकती हूँ? मैं उत्सुक हूँ उसे देखने को। इस प्रश्न का कोई तो उपाय होगा।”
“उस क्षण कोई केमेरे में तुम्हारे भावों को कैद कर ले।”
“अथवा कोई उस भावों को चित्र बनाकर प्रकट कर ले।”
“दोनों स्थिति में तुम्हें इस प्रक्रिया का संज्ञान नहीं होना चाहिए।”
“यह ‘कोई’ का क्या अर्थ है? तुम जानते हो कि मेरे तथा तुम्हारे सिवा यहाँ कोई नहीं है। और मैं मेरी तस्वीर नहीं ले सकती ना ही उसे चित्रित कर सकती हूँ। तो स्वाभाविक है कि वह ‘कोई’ तुम ही हो जो यह दोनों कार्य कर सके।”
“किन्तु मुख्य बात है तुम्हारी अभानता। यदि तुम्हें ज्ञात हो जाए कि कोई तुम्हारा चित्र बना रहा है अथवा तुम्हारी तस्वीर खींच रहा है तो तुम जागृत हो जाओगी तब स्वाभाविक भाव के स्थान पर जो भाव मुख पर होंगे वह कृत्रिम होंगे। वह भावों के सौन्दर्य को नष्ट कर देगा।”
“तो क्या? अभी भी मेरा आग्रह है इन बातों के लिए।”
“मैं प्रयास करूंगा।”
“प्रयास नहीं, जीत, तुम्हें सफल होना है। जब भी मेरे मूख पर वह भाव हो मेरी तस्वीर लेनी है तुम्हें। उस भावों को क्या नाम दिया था तुमने? लाल, नारंगी, गुलाबी?”
वफ़ाई ने जीत को देखा, क्षण भर रुकी, चित्राधार के समीप गई, उँगलियों से तूलिका को उठाया, जीत के पास आकर जीत की हथेलियों में तूलिका रख दी, “मुझे रंग दो,जीत, मुझे रंग दो। मुझे लाल रंग दो, मुझे नारंगी रंग दो, मुझे गुलाबी रंग दो।”
कुछ पद पीछे हट गई वफ़ाई और गीत गुनगुनाने लगी।
रंग दे मुझे लाल,
रंग दे मुझे कोई गुलाल,
रंग दे गेरुआ ओ चित्रकार....

रंग दे मुझे, रंग दे मुझे, रंग दे मुझे। ओ चित्रकार ....
जीत ने स्मित किया और तूलिका को चित्राधार पर रख दिया, "तुम्हारा चित्र जो तुम चाहती हो उसे बनाने का वह क्षण व्यतीत हो चुका है। अब उचित समय की प्रतीक्षा करनी होगी। उस समय मैं तुम्हें लाल, नारंगी अथवा गुलाबी ही नहीं किन्तु इंद्रधनुष के रंगों से रंग दूंगा।" जीत दूर गगन में देखने लगा।
मौन व्याप्त हो गया, पुन:।

40

वफ़ाई चित्रकारी के अभ्यास में व्यस्त थी। जीत क्या करूँ क्या ना करूँ की दुविधा में झूले पर बैठा था।
लाल, गुलाबी, नारंगी भाव जो जीत ने वफ़ाई के मुख पर देखे थे उसने जीत के मन पर नियंत्रण कर लिया था। जीत उस से मुक्त होने का प्रयास करता रहता, विफल होता रहा।
सब कुछ छोड़ दूँ। कुछ भी विचार ना करूँ। कुछ भी ना करूँ। खाली हो जाऊं। शून्यता में विलीन हो जाऊं।
जीत संघर्ष करता रहा। वह गगन के किसी बिन्दु में विलीन हो गया। बादल, तारें, पंखी, हवा, रंग, इंद्रधनुष, सब कुछ था वहीं। इन सब के बीच था जीत। वफ़ाई भी थी वहीं। जीत ने आँखों पर हथेली रख दी।
जब आँखें खोली तब वफ़ाई वहाँ नहीं थी। इंद्रधनुष, रंग, तारें, पंखी, हवा, एक एक करके सब अलोप हो गए। वहाँ गगन था बाकी कुछ भी नहीं। उसने गगन को पकड़ना चाहा, विफल रहा।
गगन का आकार नहीं होता। कद नहीं होता, भार नहीं होता। अत: गगन का अस्तित्व नहीं होता। गगन होता भी है क्या? अथवा कोई



भ्रमणा है? गगन होता ही नहीं है, अन्यथा मैं उसे पकड़ पाता, मेरी हथेली में उसे जकड़ सकता, मुट्ठी में बंध कर पाता, किन्तु मैं नहीं कर पाता हूँ। गगन का अस्तित्व नहीं होता...।

जीत ने गगन को आलिंगन देने के लिए अपने हाथों को पसार दिया। गगन पीछे हट गया, दूर हो गया। पुन: पुन: जीत प्रयास करने लगा, गगन से आलिंगन करने को। जीत विफल रहा।

निश्चित ही यह एक भ्रमणा ही है। गगन एक भ्रमणा है, भ्रमणा ही है...। जीत बोले जा रहा था।

वफ़ाई ने जीत के शब्द सुने, वह जीत के समीप गई। वफ़ाई के हाथ से तूलिका गिर गई, किन्तु वफ़ाई को उसका ध्यान नहीं रहा। वफ़ाई ने झूले को रोक दिया। जीत की कल्पना टूट गई। एक झटके से जीत भ्रमणा के प्रदेश से वास्तविक देश में लौट आया। जीत को यह देश अपरिचित सा लगा।

“हे प्रभु, जीत किस जगत में चला जाता है। जीत, तुम तुम्हारी कल्पना के जगत में, सपनों के विश्व में बार बार क्यों चले जाते हो? याद रखो कि तुम जिस प्रदेश में चले जाते हो वह सब भ्रांति है, मिथ्या है, मोह है। यह जगत ही सत्य है।”

“सत्य, जगत, मोह, माया, मिथ्या, भ्रांति, कौन जानता है कि कौन सा जगत सत्य है और कौन सा भ्रांति? मुझे दोनों विश्व पसंद है, दोनों मुझे आकृष्ट करते हैं, दोनों बुलाते हैं, दोनों आमंत्रित करते हैं, दोनों आलिंगन दे रहे हैं। कभी कभी वह मेरे में विलीन हो जाते हैं जो मेरे अस्तित्व को छिन्न भिन्न कर जाते हैं। मुझे रेत में मिला देते हैं। रेत का एक ऐसा कण, जिसका इस विराट जगत में कोई अस्तित्व नहीं है।” जीत ने रेत के एक कण को हाथ में उठा लिया, “इस कण की भांति। वफ़ाई तुम जानती हो? मैं रेत बनता जा रहा हूँ, दिन प्रति दिन, घंटे प्रति घंटे, क्षण प्रति क्षण। शीघ्र ही मैं इस कण की भांति हो जाऊंगा। यह रेत का कण, यही सत्य है। इस के विषय में कोई भ्रांति नहीं है, यह मिथ्या नहीं है।” जीत हंसने लगा। वह स्मित सहज नहीं था, विचित्र था।

वफ़ाई जीत का यह नया अवतार समझ ना सकी।

&*&*&**

चित्रकारी करते करते जीत कुछ क्षण के लिए रुका। उसने देखा कि वफ़ाई भी चित्रकारी में व्यस्त थी। उसने वफ़ाई को मस्तिष्क से पैर तक देखा। पहली बार जीत वफ़ाई को भिन्न अनुराग से, भिन्न अभिगम से, भिन्न धारणा से, भिन्न भाव से देख रहा था। जीत ने इस अनुभव को समझने का प्रयास किया। उसके हृदय में स्नेह उभर आया। उसने स्वयं से कहा, “ यह नई बात नहीं है। यह तो पहले भी हुआ था। किन्तु कहाँ? कब? किसके लिए?”

जीत को याद आया, हाँ वह तो उस यौवना के लिए था, एक साँवली सी सुंदर युवती।

नहीं, नहीं। कभी नहीं। उन दिवसों में मत सरक जाना। वह दिवस व्यतीत हो गए हैं। मैं वर्तमान में हूँ। लौट आओ, लौट आओ इस मरुभूमि में जहां तुम वफ़ाई के साथ हो। उन स्मरणों को वहीं छोड़ दो। हृदय के इस कक्ष के द्वार बंध कर दो जिसमें यह सब बसा है।

जीत भूतकाल से बच निकला। समय के उस बिन्दु से भाग आया वर्तमान में, वफ़ाई के सामने।

वफ़ाई! वफ़ाई को ज्ञात नहीं था की जीत उसे देख रहा है, अनिमेष द्रष्टि से।

वफ़ाई, एक यौवना। जीत उसे निहारने लगा।

खुल्ले, मध्धम लंबे, काले, घने, सीधे केश वफ़ाई के माथे पर चमक रहे हैं। उसके ऊपर पड़ती सूर्य की किरणें उनको जीवंत बना रही है। क्या यह वर्षा से भरे काले बादल है?

नहीं, केश तो केश होते हैं। केश कभी बादल नहीं होते। कवि, लेखक एवं कहानीकार किसी युवती के केश को बादल की उपमा क्यों देते होंगे? काले बादल में तो वर्षा भरी होती है। किन्तु युवती के केश में वर्षा कहाँ? केश में आकर्षण होता है, वर्षा नहीं। बिना पानी के बादल तो सफ़ेद होते हैं और सफ़ेद केश तो युवति के नहीं किसी वृद्धधा के होते हैं।

वफ़ाई तो वृद्धधा नहीं युवा है।

यदि युवती के केश को कोई उपमा देनी ही हो तो उन लोगों को कोई नयी उपमा खोजनी होगी। जैसे... जैसे...।

कोई उपमा नहीं सूझ रही। छोड़ो, मैं कहाँ कवि हूँ? मैं तो बस देखता रहूँ इन केश को।

काले सीधे केश में अनेक घुमावदार लटें भी है। सभी लटें कान के पीछे ही क्यों है? वो लट थोड़ी छोटी है, वह कान के पीछे जाने को तैयार नहीं लगती। जब जब हवा की नटखट लहर उस लट को उडाती हुई गालों तक ले जाती है तब तब वफ़ाई तुम उसे अपनी उँगलियों से पकड़कर कान के पीछे रख देती हो। किन्तु शीघ्र ही वह लट कान के पीछे से निकल आती है। क्या वह लट जिद्दी है? जिद्दी लट, है नटखट किन्तु रसप्रद। आँखों के सामने जाकर यह लट क्या करती होगी? यहाँ से तो वफ़ाई की पूरी आँखें नहीं दिख रही। हाँ दाहिनी आँख का थोड़ा कोना दिख रहा है। खींचे हुए किसी तीर जैसी आँखें। घुमावदार आँखें, तीक्ष्ण आँखें। किसी चाकू जैसी धारदार आँखें। कवियों को यह उपमा रखनी चाहिए, किसी युवती की आँखों के लिए।

वफ़ाई, वैसे तो मैंने तुम्हारी आँखें अनेक बार देखि है किन्तु मुझे ज्ञात नहीं कि वह कैसी दिख रही है। वह बड़ी है अथवा छोटी? काली है अथवा नीली? किसी सागर की भांति गहरी है? क्या वह सुंदर है? क्या वह घातक है? कैसी है यह आँखें? अनेक बार देखि है तुम्हारी आँखें किन्तु, एकबार पुन: देखनी है तुम्हारी आँखें मुझे।

इस बार ध्यान से देखुंगा, सदैव याद रखूँगा। बस एक बार देख लूँ। इस बार चूक नहीं करूंगा।

जीत, तुम वफ़ाई से प्रीत नहीं करते इस किए चूक गए हो।

बंध करो यह सब। कितना बालिश विचार करते हो तुम। मैं कोई प्रीत ब्रित नहीं करता।

तो उन आँखोंमें इतनी रुचि क्यों ले रहे हो? क्यों उन आँखों को याद रखना चाहते हो ? एक बार पुन: उन आँखों को क्यों देखना चाहते हो?

मैं तुम्हारे सभी विचारों से असहमत हूँ, तथापि उनकी आँखों को देखने की इच्छा रखता हूँ।
तुम वास्तविकता से भाग रहे हो, तुम स्वयं से भाग रहे हो।
यह तुम्हारी चिंता का विषय नहीं है। मैं केवल उसकी आँखें देखना चाहता हूँ, उसकी आँखों में देखना चाहता हूँ। बस इतनी सी बात है, सुना तुमने, ओ मेरे अन्तर्मन। अब तुम जाओ यहाँ से।
जीत, तुमने मुझे दुखी किया है। किन्तु मैं तुम्हारा साथ नहीं छोड़ूँगा। तुम्हें मेरी आवश्यकता है। मैं नहीं जाऊंगा, यहीं रहूँगा, मौन रहकर। समय आने पर तुम्हें रोक भी लूँगा।
तुम यहीं रहो मेरे प्रतिबिंब। मैं तो चला वफ़ाई के सामने जहां से मैं उसकी आँखें देख सकूँ।
किन्तु वह ठीक नहीं होगा। यह अविवेक है।
तो क्या? मैं तो देखुंगा उन आँखों को।
तुम विद्रोह कर रहे हो, जीत।
क्यों? कैसे? किसके सामने?
तुम मेरी बातों को नहीं मान रहे हो। तुम मुझ से विद्रोह कर रहे हो, तुम्हारी ही आत्मा से, तुम्हारे ही अन्तर्मन से। तूम स्वयम से ही विद्रोह कर रहे हो।
यह सब से मेरा कोई संबंध नहीं। मुझे बस इतना ज्ञात है की मैं उसकी आँखें देखना चाहता हूँ और उसके लिए मैं कुछ भी करूंगा।
जीत ने वफ़ाई की तरफ बढ़ने के लिए प्रथम चरण उठाया। जीत दूसरा उठाता उससे पहले वफ़ाई जीत की तरफ घूमी।
वफ़ाई की आँखें जीत के सामने थी जिसे देखने की जीत के मन में तीव्र अभिलाषा थी। जीत स्तब्ध
हो गया, रुक गया। उसका उठा हुआ चरण अधूरा रह गया। बांया पैर हवा में अटक गया। जीत के दोनों हाथ हवा में थे, खुले हुए।
मूर्ति की भांति जीत इसी मुद्रा में स्थिर हो गया। उसकी आँखें वफ़ाई की आँखों पर स्थिर थी।
"जीत इस मुद्रा में क्यों है?" वफ़ाई ने जीत को ऊपर से नीचे तक देखा। जीत चोरी करते पकड़े गए चोर की भांति लज्जित हो गया। उसने आँखें झुका दी।
"जीत, क्या कर रहे हो? तुम क्या और कहाँ देख रहे थे?"
जीत कुछ कहना चाहता था किन्तु कह नहीं सका। वह अभी भी उसी लटकती मुद्रा में था।
"वाह। कितनी अनुपम मुद्रा में हो तुम, जीत। मैं इस मुद्रा का चित्र रचूँगी। उस चित्र को नाम दूँगी। नाम होगा 'एक अपूर्ण चरण' कैसा रहेगा श्रीमान चित्रकार?"
जीत अभी भी उसी मुद्रा में स्थिर था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या किया जय अत: वह वैसे ही खड़ा रहा।
वफ़ाई खुलकर हंस पड़ी।
"जब मैं 'एक अपूर्ण चरण' नामक मेरा चित्र रचूँ, तब तुम इसी मुद्रा में खड़े रहोगे? मुझे मेरे चित्र के लिए जीवित प्रतीक मिल गया।"
वफ़ाई जीत के समीप गई। जीत भयभीत हो गया, स्थिर सा खड़ा रहा। उसके हृदय की गति तीव्र हो गई।

“एक अपूर्ण चरण नामक चित्र मैं अभी रचने नहीं जा रही हूँ। तुम अपने पैर धरती पर रख सकते हो। अपूर्ण चरण को पूर्ण कर सकते हो।” वफ़ाई हंसने लगी।
जीत ने अपूर्ण पाद की यात्रा पूर्ण की।
“जीत, नींबू रस लो।”
वफ़ाई ने नींबू रस का एक पात्र जीत को दिया और दूसरा अपने हाथ में लिए झूले पर बैठ गई। वफ़ाई धीरे धीरे झूलने लगी। आँखें बंध कर जीत दूर खड़ा रहा।
दोनों नि:शब्द होकर रस पी रहे थे। वफ़ाई जीत को देख रही थी।
“मैं इस मुद्रा का भी चित्र रचूँगी और उस का नाम होगा- अपूर्ण घूंट।” वफ़ाई हंस पड़ी। वफ़ाई के हास्य ने जीत के मौन को भंग किया।
उसने आँखें खोलकर कहा, “तुम क्यों…?” जीत के शब्द अधूरे रह गए।
“कुछ मत पूछो, बस मेरी बात सुनो। कब से मैं विचार कर रही थी कि मैं कौन सा चित्र रचाऊँ? किन्तु अभी अभी मुझे दो नवीन विचार प्राप्त हुए हैं। एक तो तुम जानते हो 'एक अपूर्ण चरण'।”
“दूसरा क्या?”
“दूसरा ‘अपूर्ण घूंट’।”
“क्या?” जीत ने पूछा।
“अपने पात्र को देखो, रस को देखो। तुमने अभी तक रस नहीं पिया।”
“ओह। मैं अभी पूरा करता हूँ।” जीत ने रस पीना चालू किया। पीते पीते रुक गया, “तो तुम उन वस्तुओं को, उन भावों को अभिव्यक्त करना चाहती हो जो अपूर्ण है, अधूरे है, आधे हैं, जो दोष से ग्रस्त है?”
“बिलकुल। यही मैं चित्रित करना चाहती हूँ। कैसा लगा मेरा यह विचार?”
“मुझे यह विचार पसंद आया। यह अदभूत है। मुझे पसंद है अपूर्ण…।” जीत कहना चाहता था ‘अपूर्ण घटनाएँ, अपूर्ण इच्छायेँ तथा अपूर्ण जीवन।’ किन्तु गहन श्वास के नीचे उसने उसे दबा दिया।
“तुम्हें क्या क्या अपूर्ण पसंद है? जीत, जो शब्द तुम कह नहीं पाये उसे कह दो। शब्दों के जन्म से पहले ही उन शब्दों को इस तरह मार दिया नहीं करते।”
“अभी ऐसा कुछ नहीं है। कुछ समय प्रतीक्षा करो।”
“जीत, फिर वही? कई बातें तुमने भविष्य के लिए टाल रखी है। तुम्हारा यह भविष्य हमारा वर्तमान कब बनेगा?”
जीत मौन हो गया। वफ़ाई इस मौन का अर्थ भली भांति जानती थी। वह चित्राधार तरफ गई, चित्र रचने में व्यस्त हो गई। जीत ने भी स्वयं को चित्रकारी में व्यस्त करना चाहा किन्तु व्यग्र मन से वह कर नहीं पाया। जीत ने मन को स्थिर किया, वफ़ाई को पुन: निहारने लगा।
वफ़ाई ने पंजाबी कुर्ती पहनी थी। उसके कंधे पर दुपट्टा था। पवन धीरे धीरे बह रहा था। चित्रकारी करते करते वफ़ाई का दुपट्टा कंधे से सरक जाता था। दुपट्टे के इस व्यवहार से वफ़ाई का ध्यान भंग होता था।
वह बांये हाथ से चित्र बना रही थी तथा दाहिने हाथ से दुपट्टे को संभाल रही थी। दुपट्टा फिर भी सरक जाता था। अंतत: वफ़ाई ने समीप की भीत पर दुपट्टा रख दिया।
यह पहला अवसर था जब वफ़ाई बिना दुपट्टे के थी। जीत उसे निहार रहा था। वफ़ाई उस बात से अनभिज्ञ थी। वह चित्रकारी में व्यस्त थी। वफ़ाई को ऐसी मुद्रा में देखना जीत को अच्छा लगा।
पवन की किसी लहर ने भीत से दुपट्टे को गिरा दिया। वफ़ाई ने नीचे झुककर उसे उठा लिया। ऐसे करते समय उसने जीत को उसकी तरफ देखते हुए पकड़ लिया। जीत रंगे हाथ पकड़ा गया। जीत ने शीघ्रता से आँखें हटा ली।
वफ़ाई मन ही मन बोली, ‘जीत क्या देख रहा है?’ वफ़ाई ने जीत को पूछा, “तुम क्या देख रहे हो?”
“कुछ भी नहीं तो।” जीत की आँखें नीची थी।
“पक्का? मुझे लगता है कि तुम मुझे देख रहे थे।”
“मैं तो चित्र को देख रहा था।”
“तब तो कुछ भी ठीक नहीं है।” वफ़ाई ने स्मित दिया। वह पुन: चित्रकारी में व्यस्त हो गई। जब यह विश्वास हो गया कि वफ़ाई चित्रकारी में व्यस्त है, जीत उसे फिर से देखने लगा। कुछ तो था वफ़ाई में कि जीत को वह आकर्षित कर रहा था। वह वफ़ाई को देखते रहना चाहता था। क्या था वह?
तीन चार बार वफ़ाई ने जीत को अपनी तरफ़ देखते हुए रंगे हाथ पकड़ लिया। वफ़ाई जब भी जीत की तरफ देखती, जीत वफ़ाई को ही निहारता पाया जाता। उसी समय वह आँखों को वफ़ाई पर से हटा देता था। किन्तु वफ़ाई समझ चुकी थी कि वह केवल संयोग नहीं था।
जीत मुझे देखना तो चाहता है और पकड़ा जाना भी नहीं चाहता। चलो छोड़ो अभी इस बात को।
वफ़ाई मन ही मन बोली। वह चित्रकारी से जुडने लगी, किन्तु जुड़ नहीं पाई। जीत के ऐसे देखने से वह विचलित हो गई। अनेक प्रयासों के पश्चात वफ़ाई ने तूलिका वहीं छोड़ दी, दुपट्टा कंधे पर डाला और जीत के सम्मुख खड़ी हो गई।
जीत से वह एक फिट की दूरी पर थी। उसकी आँखों में, उसके मुख पर, उसके गालों पर तथा उसके अधरों पर कोई भिन्न भाव थे

जिससे जीत का कोई परिचय नहीं था।
वफ़ाई ने सीधे ही जीत की आँखों में देखा। वह उसके प्रभाव को झेल नहीं पाया। जीत ने पलकें झुका दी।
“ओ चित्रकार, तुम क्या कर रहे हो? अंतत: तुम चाहते क्या हो? तुम मुझे क्यों निहार रहे हो? जब भी रंगे हाथ पकड़े जाते हो, आँखें चुरा क्यों लेते हो?”
इतने सारे प्रश्नों के लिए जीत तैयार नहीं था, वह मौन रहा। वफ़ाई ने प्रश्नों को पुन: पूछा।
जीत ने साहस जुटाया। आँखें उठाई। वफ़ाई की तरफ देखा, मौन रहा।
“सुबह से मैं देख रही हूँ कि तुम मुझे चोरी से देख रहे हो। तुम चाहते क्या हो? यदि तुम मुझे निहारना चाहते हो तो सीधे सीधे निहार लो। तुम्हें क्या भय है मुझे निहारने में? तुम मेरा सौन्दर्य निहारना चाहते हो? तुम जानते हो कि मैं सुंदर हूँ।”
“किसी सुंदर यौवना को ऐसे निहारना तो अनुचित रीति है।”
“तुम्हें यह किसने सिखाया?”
“छोटे थे तब से माता-पिता, शिक्षक, समाज, हमारी संस्कृति। सबने यही सिखाया है कि लड़कों को लड़कियों की तरफ ऐसे सीधे सीधे नहीं घुरना है। लड़की के साथ सहज वर्ताव करने से यह सब रोक रहे हैं। यदि उसे लड़की को देखना है तो लड़की को पता ना चले ऐसे चोरी छिपे देखना चाहिए।”
“और तुम सब लड़के यह मान लेते हो कि लड़कियों को पता ही नहीं है कि तुम उसे देख रहे हो। तुम लड़के सब मूर्ख हो। लड़कियों को सदैव ज्ञात होता है कि कौन और किस आशय से उसे देख रहा है। लड़के की आँखों को तथा उनमें बसे आशय को लड़की प्रथम दृष्टि में ही जान लेती है।”
“तो तुमने मेरी आँखों में क्या पाया?”
“वह मैं अभी नहीं बताऊँगी। फिर कभी। इस समय तो मैं तुम्हें एक कथा सुनाती हूँ।”
“कथा? कौन सी कथा?”
“उस समय मैं पाँचवी अथवा छठवीं कक्षा में थी। पाठशाला गाँव से बाहर थी। हमें वहाँ चलकर जाना पड़ता था। लड़के-लड़की सब साथ पढ़ते थे। पाठशाला तक जाने के मार्ग पर लड़के तथा लड़कियां साथ साथ चलते थे। उस दीवस मैं अकेली ही पाठशाला के मार्ग पर जा रही थी। मैं प्रतीक्षा कर रही थी कि कोई मित्र साथ जुड़ जाय। एक लड़का, फवाद, कुछ दूरी पर खड़ा था। मुझे निहार रहा था। अचानक मेरा ध्यान गया और मैं उसे देखने लगी। उसने अपना मुख दूसरी दिशा में घूमा लिया जैसे वह मुझे देख ही नहीं रहा हो। मुझे पूरा विश्वास था कि वह मुझे ही घूर रहा था। प्रथम बार तो मैंने उसकी उपेक्षा की। जब दो तीन मिनिट के पश्चात मैंने उसे देखा तो वह मुझे निहारते हुए रंगे हाथ पकड़ा गया। ऐसा तीन बार हुआ। अब मुझे पूरा विश्वास हो गया कि वह मुझे ही देख रहा था। मैं जागृत हो गई। मैं जान चुकी थी कि वह सदा मुझे चोर दृष्टि से निहारता था।” वफ़ाई कहते कहते रुकी।
“तो तुमने उसके विषय में शिक्षक को सब बता दिया अथवा उस लड़के को पीट दिया?”
“नहीं, मैंने कुछ भी नहीं किया। उसे मुझे निहारने दिया। मुझे यह भाने लगा था कि कोई मुझे देख रहा है, मेरे में रुचि ले रहा है। मैंने भी उसे चोर दृष्टि से देखना प्रारम्भ कर दिया। हम दोनों जानते थे कि हम दोनों एक दूसरे को देख रहे हैं और दोनों ही आँखें चुरा रहे हैं।”
“आगे क्या हुआ?”
“वह मुझे पसंद करता था वह मुझे ज्ञात था। मैं भी उसे पसंद करती थी। मैं मेरे केश के साथ, कपड़ों के साथ, पुस्तकों के साथ कुछ नया करती रहती थी जिससे मैं उसका ध्यान मेरी तरफ आकर्षित कर सकूँ। मेरी योजना सफल होती रहती थी। अनेक बार हमने गुप्त स्मित का आदान प्रदान भी किया था।”
“रुचिकर कथा है यह।”
“इस प्रकार चोरी चोरी निहारना मुझे नहीं भाया। एक दिवस मैंने कह दिया कि मुझे चोरी चोरी नहीं सीधे सीधे निहारो। मुझ में जो देखना चाहते हो उसे बिना भीती के देख लो। मैं उसके सामने खड़ी हो गई और कहा, अब देखो मुझे।”
“वाह, तो उसने क्या किया? तुम्हारी तरफ निर्भय होकर देखा उसने?”
“नहीं। मुझे निहारने का साहस नहीं कर पाया वह। भाग गया वह। उस के पश्चात उसने मुझे किसी भी चोर दृष्टि से नहीं देखा।” वफ़ाई हंसने लगी।
“तो इस कथा का यहीं अंत हो गया?”
“हाँ।”
“तो इस कथा में क्या था?”
“तुम इस कथा का मर्म नहीं पकड़ पाये। मैं निराश हूँ।” वफ़ाई ने जीत को निहारते हुए कहा, “लड़के अथवा लड़की का एक दूसरे को देखना कोई अपराध नहीं है। इसमें समस्या क्या है? यदि तुम उसे चोरी से निहारते हो तो वह अविवेक है, विकृति है। यह तो लडकी का अपमान है। उसके सौन्दर्य का अपमान है। उसकी तरफ सीधे सीधे देखो। जो देखना चाहते हो वह देखो। कुछ क्षणों तक देखते रहो।”
“यह सब तुम मुझे क्यों कह रही हो?”
“क्यों कि तुम भी फवाद की भांति मुझे देख रहे हो। मुझे सब ज्ञात है। तभी तो मैं तुम्हारे सामने हूँ। यदि तुम मेरे सौन्दर्य से आकृष्ट हो तो मुझे देखो, बिना किसी भीती के, सीधी आँखों से, सीधी दृष्टि से, चोरी छिपे नहीं।” वफ़ाई ने अपने कंधे से दुपट्टा हटाकर हवा में लहरा दिया, “मुझे देखो, मुझे निहारो, मेरे दर्शन करो। मैं अनुमति देती हूँ। मैं आमंत्रित करती हूँ तुम्हें, जीत।” वफ़ाई ने जीत की आँखों में आँखें डाल दी।
कुछ क्षण जीत दुविधा में रहा, फिर साहस जुटाया और वफ़ाई को देखा, ऊपर से नीचे तक, पूरे उमंग के साथ, पूरे आनंद के साथ। वह वफ़ाई को देखता रहा अविरत, बिना चोरी के, अनिमेष दृष्टि से। वफ़ाई भी उसे अपलक निहारती रही। दोनों तरफ अनुराग का झरना प्रवाहित हो गया। उन आँखों के बीच एक अद्रश्य सेतु रच गया।

“विजातीय व्यक्ति को देखना सहज और नैसर्गिक है। हमें उससे भागना नहीं चाहिए। जीत, हम लड़कियां भी लड़कों को निहारती हैं, पसंद करती हैं और उसके साथ की कामना करती हैं। हम भी आँख के कोने से लड़कों को देखती हैं, किसी एक को मन ही मन पसंद करती हैं और उसके साथ सपने देखने लगती हैं। यह विजातीय व्यक्ति को देखना पूर्ण रूप से स्वाभाविक है।” वफ़ाई की बात जीत ने सुनी, वह मौन रहा। वफ़ाई भी मौन हो गई। निहारते रहने का आनंद लेने लगी।
उनकी आँखों ने कुछ स्वीकार कर लिया था, आँखों से आँखों के भाव पढ़ लिए थे, किन्तु अधर शांत थे, मौन थे। दोनों ने हृदय में एक हवा का, शीतल लहर का अनुभव किया।
कोई भी इस अनुभव को प्रकट करना नहीं चाहता था। दोनों अकेले किन्तु एक दूसरे के साथ मौन रहकर आनंद लेते रहे। उस अनुभूति को उन्होंने कोई नाम नहीं दिया। क्या यह स्नेह था? प्रीत थी? प्रेम था? अनुराग था? यह वह दोनों नहीं जानते थे ना ही जानना चाहते थे। एक बात स्पष्ट हो गई थी उन दोनों के बीच कि एक दूसरे को देखने के लिए आँखें चुराने की आवश्यकता नहीं है।
वफ़ाई मन ही मन विचार करने लगी, जीत तुम आगे बढ़ो, हमारे बीच के अंतर को मीटा दो। तुम्हारी हथेलियों में मेरा हाथ ले लो। उन हथेलियों से मेरे हृदय तक भावनाओं की नदी बहा दो। मेरे अस्तित्व को पिघला दो। यदि यह सब तुम नहीं कर सकते तो मैं दौड आऊं तुम्हारे पास, तुम्हें आलिंगन में ले लूँ।
वफ़ाई ने ऐसा कुछ भी नहीं किया। स्वयं को रोक लिया, प्रथम प्रस्ताव लड़कियां नहीं रखती। लड़के को आगे आने दो। जीत तुम तो लड़के हो।
जीत नाम का लड़का भी विचार कर रहा था, वफ़ाई, मैं दो चरण आगे बढ़ जाऊं। तुझे स्पर्श कर लूँ। तुझे आलिंगन में ले लूँ। तुम्हें चूम लूँ।
ऐसा भी कुछ नहीं हुआ।
मैं ऐसा नहीं कर सकता। ‘कुछ’ है जो मुझे ऐसा नहीं करने दे रहा। मैं उस ‘कुछ’ को जानता हूँ। उस ‘कुछ’ का सम्मान करता हूँ। वफ़ाई, मैं तुम्हारे सुंदर शरीर से प्रीत नहीं करता। वफ़ाई का अर्थ सुंदर लावण्य से भरी लड़की का शरीर नहीं है। मेरे लिए तुम एक आत्मा हो। उस आत्मा को मैं आलिंगन दे चुका हूँ, उसे चूम चुका हूँ।
कोई भी आगे नहीं बढ़ा। दोनों प्रतिमा की भांति खड़े रहे। दो जीवंत प्रतिमा!

42

एक दिवस और व्यतीत हो गया। चित्रकारी में अपनी अपनी प्रगति पर वफ़ाई तथा जीत संतुष्ट थे। एक दूसरे की सहायता से, एक दूसरे के सानीध्य से चित्रकारी की नयी नयी रीति सीख रहे थे। कल से पवन भिन्न भाव से बह रहा था। प्रत्येक क्षण में जीवन, आनंद तथा सुख भरा था। आशा एवं उमंग से भरपूर था। वैसे कोई विशेष कारण नहीं था, किन्तु दोनों प्रसन्न थे।
दोनों ने नींबू रस लिया, जो भिन्न रूप से मीठा था।
नींबू रस एक कड़ी थी दोनों के बीच बिना शब्द कहे अपने मन के भावों को व्यक्त करने का।
शब्द?
दोनों के बीच शब्द का अस्तित्व नहींवत हो गया। शब्दों की उन्हें अवश्यकता नहीं रही। उन्होंने नयी भाषा सीख ली थी। आँखों की भाषा, भावों की भाषा, मौन की भाषा। सभी बातें पूर्ण रूप से तथा उचित अर्थ में कही जा रही थी, समझी जा रही थी, बिना शब्द के।
“हमें शब्दों की अवश्यकता क्यों होती है?” जीत की आँख ने पूछा।
“शब्द संवाद का आधार है। एक बार तुम संवाद का भिन्न मार्ग जान लेते हो तो शब्द को कहीं पीछे छोड़ देते हो। हम संवाद के भिन्न रूप का प्रयोग कर रहे हैं। अत: हमें शब्दों की आवश्यकता नहीं है।” वफ़ाई के मौन अधरों ने उत्तर दे दिया।
नींबू रस पूरा करके दोनों अपने अपने चित्र में जुट गए। मरुभूमि में चित्रकारी ही एक मात्र कार्य था दोनों के लिए।
वफ़ाई ने अनेक नए चित्र रच दिये थे। तितलियों के, जंगल के, नदी के, मार्ग के, भवनों के, नगर के, गाँव के भी।
वफ़ाई चित्राधार से कुछ कदम पीछे हट गई। अपने ही सर्जन को एक एक करके देखने लगी।
मेरा मन जिस जिस की कल्पना कर सकता था वह सब मैं चित्रित कर चुकी हूँ। एक एक कर के उसे देख लूँ।
वह देखती रही। मन में चल रहे विचारों को पढ़ने लगी।
कला की दृष्टि से तो एक भी चित्र सम्पूर्ण नहीं है। सभी में कोई न कोई क्षति है, अपूर्णता है।
हम पूर्णता का आग्रह क्यों रखते हैं? इसे अपूर्ण ही रहने दो। इस की अपूर्णता का स्वीकार करो। इसे ऐसे ही रहने दो।
ओ मेरे चित्र, मैं तुम्हारी अपूर्णता का स्वीकार करती हूँ। तुम अधूरे ही मधुरे हो। मैं तुम्हें सम्पूर्ण बनाने का प्रयास नहीं करूंगी।
आगे क्या चित्रित करोगी?
मुझे मत पूछो। यदि तुम पूछना ही चाहती हो तो उससे पूछो।
उससे? क्यों ?
इस प्रश्न का उत्तर तुम जानती हो।
चुप कर, नटखट लड़की। अब कभी ऐसा कहा तो डांटुंगी, समझी?
वफ़ाई का अन्तर्मन हंसते हँसते हवा में विलीन हो गया। वफ़ाई ने उसे पकड़ना चाहा, किन्तु वह हाथ से छूट गया।
वफ़ाई अनिर्णीत रही, जीत से पूछ बैठी, “जीत, इन चित्रों को देखो। मैंने अनेक वस्तु चित्रित कर ली है। मैं कुछ नया करना चाहती हूँ। मैं कौन सा चित्र रचूँ? मैं निर्णय नहीं कर सकी, तुम मेरी सहायता कर दो।”

जीत ने अपने अधरों पर उंगली रखते हुए कहा, “श.... श.... श...। कुछ भी कहो नहीं। मौन सुन लेगा।” जीत हंस पड़ा, वफ़ाई भी। मौन भाग गया।
“मेरा मार्गदर्शन करो।” वफ़ाई ने नीले रंग का एक बिन्दु अपनी दांयी हथेली में डाल दिया। गुलाबी हथेली नीली हो गई। रंग हथेली में व्याप गया और हाथों की रेखाओं में बस गया। वफ़ाई की भाग्य रेखाएँ नीली हो गई।
जीत ने वफ़ाई की हथेली को देखा। हथेली का नीला रंग आँखों के मार्ग से जीत के हृदय मैं उतर आया। हृदय में उसके नीला गगन उग आया। एक नीली नदी प्रकट हो गई जो नसों में बहकर सारे शरीर में व्याप्त हो गई। जीत नीले रंग में रंग गया।
वफ़ाई ने देखा कि जीत की आँखेँ नीली हो गई है। ऊन आँखों में नीला सागर गरज रहा है। वह उस सागर में छोटी सी नाव में बैठकर, अपने हाथों में पतवार लिए यात्रा कर रही है। वह पतवार को सागर की लहरों में चला रही है। वह दूर दूर जा रही है। अत्यंत दूर, स्वयं से भी दूर।
क्या मैं इस नीले सागर में डूब रही हूँ? यह सागर मुझे आकर्षित क्यों कर रहा है? क्या वह मुझे किसी दूसरे किनारे ले जाएगा अथवा स्वयं में डुबो देगा? वह दूसरा तट कहाँ है? कैसा है? मैं उस अज्ञात तट पर क्यों जाना चाहती हूँ? मेरा भाग्य क्या है?
वफ़ाई ने हथेली की रेखाओं को देखा, वह नीली ही थी।
मैं कुछ निर्णय क्यों नहीं कर पाती हूँ? प्रथम प्रश्न था कि कौन सा चित्र रचूँ और अब प्रश्न है कि मेरा भाग्य क्या है? बातें सदैव अनिर्णीत क्यों रहती है?
कुछ आशा में वफ़ाई ने जीत की तरफ देखा। वह अभी भी वफ़ाई की हथेली की नीली रेखाओं में खोया हुआ था।
“जीत, मेरी तरफ देखो। मैंने तुम्हें कुछ पूछा था। और तुमने उसका उत्तर नहीं दिया।”
“तुम्हारा प्रश्न क्या था? पुन: एक बार कह सकोगी?”
“अब मैं किस का चित्र रचूँ?” इस बार जीत ने उसके शब्द सुने।
जीत केनवास के समीप गया, कुछ आकृतियाँ खींची और रंग भरने लगा। वफ़ाई और केनवास के बीच में जीत के होने के कारण वफ़ाई को दिखाई नहीं दे रहा था कि जीत क्या चित्र बना रहा है। वफ़ाई प्रतिक्षा करने लगी।
कुछ क्षण में जीत ने चित्र पूर्ण किया। वफ़ाई की तरफ घूमा और उसे समीप बुलाया।
केनवास पर दो चित्र थे।
प्रथम चित्र में खुले हुए दो अधर थे जो कुछ कहने जा रहे थे। उस चित्र पर चोकड़ी का निशान किया गया था।
“इसका अर्थ है कि मुझे मेरे अधर बंध रखने हैं और बात नहीं करनी है? तो मैं संवाद कैसे करूंगी? जीत, तुम मुझे बोलने से रोक रहे हो। बोलुंगी नहीं तो...।” वफ़ाई ने कहा। जीत ने उत्तर नहीं दिया।
वफ़ाई ने दूसरे चित्र को देखा। केनवास पर तूलिका, केनवास तथा विविध रंगों का चित्र था। उस पर सही का निशान था।
“तुम कहना क्या चाहते हो?”
जीत तो था मौन स्मित लिए खड़ा।
“जीत, तुम जब भी ऐसे स्मित करते हो अज्ञात लगते हो। मैं समझ नहीं पा रही हूँ तुम क्या कह रहे हो। पहेली मत रचो, जीत।”
जीत अभी भी मौन स्मित कर रहा था।
“श्रीमान चित्रकार, मैं तुम से पूछ रही हूँ। तुम सुन रहे हो? तुम हो कहाँ?” वफ़ाई चीख पड़ी। उसके शब्द शांत मरुभूमी में प्रतिघोष करने लगे। जीत ज़ोर से हंसने लगा। वफ़ाई दुविधा लिए देखती रही।
“केनवास पर रचे दो चित्रों को देखो। वह कोई संदेश दे रहे हैं तुम्हें। इसे पढ़ो। इसे समझो।” जीत ने उत्तर दिया।
वफ़ाई ने चित्रों को पुन: देखा, विचार किया और कहा, “प्रथम चित्र कहता है कि अधर खोलो मत, बोलो मत। किन्तु दूसरा चित्र मुझे नहीं समझ आया।”
“प्रथम उत्तर सही है। दूसरा चित्र कह रहा है कि यदि तुम्हें कुछ कहना हो तो तूलिका लो, चित्र बनाओ और चित्र के द्वारा कहो। अपने संवाद को चित्र का रूप दो।” जीत ने समझाया।
“अर्थात चित्रकारी कि भाषा? अदभूत। जो भी कहो चित्र में कहो, जो भी कहो रंगों में कहो।” वफ़ाई के अधरों पर स्मित था, हाथ उठे हुए थे जैसे अल्लाह की बंदगी कर रही हो। उसने जीत की तरफ गरदन घुमाई। उसके मुख पर आनंद था, उमंग था।
जीत वफ़ाई की उस अनुपम मुद्रा को देखता रहा। कुछ क्षण के लिए दोनों स्थिर हो गए। समय के उस पड़ाव का आनंद लेते रहे।
“वाह, सुंदर। जीत तुम अनुपम विचार ले आए हो। किन्तु इस भाषा के अक्षर को मैं नहीं जानती। इसका व्याकरण भी नहीं आता मुझे। इसके काल, क्रियापद, विशेषण, नाम, सर्वनाम, कुछ भी नहीं जानती। यह हमारे पाठ्यक्रम में नहीं था। ऐसी भाषा ना तो मैंने पढ़ी है ना सीखी है। इस भाषा पर कोई पुस्तक भी नहीं पढ़ा। तो मैं कैसे इस भाषा...?”
“वफ़ाई, तुम ठीक कहती हो। इस भाषा की कुछ समस्याएँ है, किन्तु समय रहते हम उसका हल ढूंढ लेंगे। हम अपने नियम बनाएँगे इस भाषा के। यह हमारा स्वातंत्र्य है, हमारा अधिकार है। हम अवश्य सफल होंगे।”
जीत उत्साह से भरा था। उसके मुख पर अनोखी आभा थी। वफ़ाई प्रसन्न हो गई।
“यह बात है, जीत। भाषा के क्षेत्र में हम नया अध्याय लिखेंगे। यह जगत एक दिवस नष्ट हो जाएगा, सेंकड़ों वर्ष पश्चात कोई उत्खनन करेगा और खोज निकलेगा कि इस नगर में रंगों की भाषा का प्रयोग होता था। वह कहेगा कि जीत एवं वफ़ाई ने इस अनुपम भाषा का आविष्कार किया था। इस भाषा को क्या नाम देंगे? हम इस को ‘जीव’ नाम दे सकते हैं क्या?”
“जीव?”
“जीत का जी तथा वफ़ाई का व। अर्थात जीव।”
“पहले इसका विकास तो कर लो, वफ़ाई।”
वफ़ाई अपने प्रवाह में थी, “किन्तु उसे कैसे ज्ञात होगा कि इस भाषा के सर्जक हम थे?”
“उस विश्व को संदेश देने के लिए हम एक और सर्जन कर लेंगे।”
“वह क्या है?”

“यह सब बातें किसी पत्थर पर शिलालेख के रूप में लिख देना। वह दूर वाले पत्थर पर इस भाषा के विषय में अँग्रेजी में लिख देना। बस वह इस भाषा को समझ लेंगे।”
“पत्थर पर क्यों? किसी कोम्प्यूटर अथवा कागज पर क्यों नहीं?”
“क्यों कि जब भी हम उत्खनन करते हैं, हमें शिलालेख ही मिलते हैं जो उस युग की भाषा में लिखे होते है। ऐसा क्यों होता है, जानती हो?”
“उस समय कोम्प्यूटर तथा कागज का आविष्कार नहीं हुआ था। किन्तु जीत, तुम तो किसी इतिहास के विद्वान जैसी बातें कर रहे हो। तुम इतिहास के विद्यार्थी हो क्या?”
“कागज का आविष्कार भी बाद में हुआ। अनेक कारणों में से एक यह कारण हो सकता है।किन्तु मूल कारण भिन्न है।
“वह क्या है?”
“तुम्हारी जिज्ञासा इतिहास के विद्यार्थी जैसी है, वफ़ाई।” जीत ने स्मित दिया, “कागज एवं कोम्प्यूटर नाशवंत है। समय के साथ वह नष्ट हो जाते हैं। किन्तु पत्थर, युगों तक किसी भी आक्रमण को झेल लेता है। वह युगों तक खड़ा रहता है। इस हेतु विशेष पथ्थरों का प्रयोग होता है।”
वफ़ाई को जीत इतिहास के प्राध्यापक जैसा लगा। यह उसका नया रूप था।
“पत्रकार के रूप में इतिहास से थोड़ा कुछ संबंध तो है मेरा, किन्तु उसे कभी गंभीरता से नहीं लिया मैंने। विद्यार्थी काल में मैं इतिहास से धृणा करती थी। किन्तु, जीत, तुम जैसे मित्र यदि इतिहास की बात समझाता है तो इतिहास भी रसप्रद हो जाता है। सभी को जीत जैसा प्राध्यापक मिलना चाहिए।” वफ़ाई हंसने लगी।
“वफ़ाई, इसमें हंसने जेसी क्या बात है?”
“गुरु जी…।” वफ़ाई हँसती रही।
“पहले हास्य का आनंद ले लो, वह पूर्ण हो जाय तब कुछ बोलना।”
वफ़ाई हँसती रही, कुछ समय तक।
“मनुष्य सदैव आनेवाली पीढ़ी को अथवा आने वाले युग को कुछ ना कुछ कहना चाहता है। पत्थर का शिलालेख इस हेतु उत्तम माध्यम है।”
“गुरु जीत जी, हमें भी इसी परंपरा को अनुसरना होगा।”
अब जीत का क्रम था हंसने का, वह हंसने लगा, “हमें पत्थर पर शिलालेख लिखने की आवश्यकता नहीं है।”
“क्यों? क्या तुम हमारे इस आविष्कार के विषय में आने वाले युग के मानव को ….।”
“नहीं वफ़ाई। उत्खनन से मिली अनेक संस्कृति यह प्रकट कर चुकी है कि चित्र की भाषा युगों पहले भी थी। उत्खनन में इनके अनेक प्रमाण मिले हैं।”
“हे इतिहास के प्राध्यापक, हम भाषा की बात कर रहे थे और आपने उसे इतिहास में बदल दिया। गुरु जी, कृपया भाषा पर लौट आइये।” वफ़ाई ने कहा, स्मित के साथ।
“प्रिय शिष्या, मैं उस पर ही आ रहा हूँ। मेरा कहना है कि हमने कोई नई भाषा का आविष्कार नहीं किया है, बल्कि हमने किसी का भी आविष्कार नहीं किया है। हम तो अस्तित्व में है उसका प्रयोग करने जा रहे हैं। मेरी धारणा है कि मैं भाषा की ही बात कर रहा हूँ, है ना मेरी प्रिय शिष्या?” जीत और वफ़ाई हंस पड़े।
“तो हम इस चित्र भाषा का ही प्रयोग करेंगे, ठीक है वफ़ाई?”
“ठीक है, जीत। किन्तु हमें प्रत्येक शब्द को चित्र से जोड़ना होगा, उस के अर्थ निश्चित करने होंगे।” जीत ने तथा वफ़ाई ने शब्दों को चित्रों के साथ जोड़ दिये। घंटों तक उस भाषा का अभ्यास करते रहे, सिखते रहे।
दोनों मौन के साम्राज्य में रहने लगे। शब्द, जिसे वह कवचित ही प्रयोग करते थे, अपना अस्तित्व और महत्व खो बैठे।

“श्रीमान चित्रकार, नई भाषा के लिए धन्यवाद। इस के द्वारा सर्जित मौन के लिए भी धन्यवाद। मुझे भी मौन पसंद है। किन्तु, कुछ बात मैं इस भाषा से व्यक्त नहीं कर पा रही हूँ। मुझे पुन: शब्दों के शरण में आना पड़ा है। तुम....।” वफ़ाई बोलती रही।
जीत शांत, स्थिर एवं शब्द विहीन था। उसने वफ़ाई के शब्दों पर ध्यान नहीं दिया। वफ़ाई जान गई कि जीत बात करना नहीं चाहता।
“मौन का किल्ला जो हमने बनाया था, मैंने उसे अंशत: तोड़ दिया। मैं मेरी बात कह तो दूँ किन्तु कोई सुनना ही नहीं चाहता। मैं भी मौन हो जाती हूँ। हे मौन, आओ हम पर राज करो।”
वफ़ाई झूले पर जा बैठी, विचार करने लगी।
मौन! सुंदर शब्द है यह मौन। क्या यह एक शब्द मात्र है? अथवा एक अनुभव? क्या यह लक्ष्य है अथवा यात्रा? धरती के जन्म के साथ मौन का भी जन्म हुआ था, किन्तु अभी तक वह रहस्य ही रहा है। मौन का रहस्य क्या है?
पहाड़ों के बीच बसी मेरी नगरी में भी मौन रहता था। वहाँ मैं भी लंबे समय तक मौन रहती थी। अनेक प्रसंग पर मौन रहती थी। मौन का मेरा कडा अभ्यास रहा है।
वह सब ठीक है। किन्तु, मौन है क्या? तुम क्या जानती हो इस मौन के विषय में? कदाचित कुछ भी नहीं।
मौन ही एक ऐसा शब्द है, ऐसा सर्जन है, ऐसी वस्तु है जो अपने ही नाम से धृणा करता है। जब भी हम उसका नाम पुकारते हैं, वह भाग जाता है, चिड जाता है। मौन हमारे साथ लंबे समय तक रहता है किन्तु उसका नाम लेते ही वह अदृश्य हो जाता है। जब भी हम मौन से अथवा किसी अन्य से बात करते हैं, मौन क्रोधित हो जाता है। मौन स्वयं से भी कभी बात करता होगा?
यह मौन है क्या अंतत:? वह रहता कहाँ है? क्या वह भीड़ में रहता है? अथवा एकांत में? क्या वह समाज में रहता है अथवा जंगलों में? अथवा पहाड़ों में? अथवा मरुभूमि में? गगन में? अथवा...?
मौन की कोई भाषा होती है? अथवा सभी भाषा होती है? मौन के शब्द होते हैं? कोई भाव होते हैं? कोई गीत होता है? कोई संगीत होता है? कोई कथा, कोई व्यक्ति, कोई घटना होती है?
मनुष्य जाती युगों से बाह्य शांति के लिए मौन का प्रयोग करती रही है। संत महात्मा भी मौन का महत्व बताते आ रहे हैं। वह कहते हैं कि भावों को व्यक्त करने का यह सशक्त साधन है। क्या मौन सशक्त है? बिना शब्द के वह कैसे काम करता है? शब्दों के अर्थ होते हैं, भाव होते हैं। इन शब्दों से हम वही भाव और अर्थ व्यक्त करते हैं। बिना अर्थ, बीना भाव के मौन का अर्थ ही क्या है? मौन का औचित्य क्या है?
यह मौन रुक्ष है, भावना हिन है, हृदय हिन है। जहां कुछ भी नहीं होता, कोई भी नहीं होता वहीं वह रहता क्यों है?
युगों से हम मौन की उपासना करते हैं। उसका अनुसरण करते हैं। किसी के प्रति श्रद्धांजली प्रकट करने के लिए मौन का पालन करते हैं। क्या यह अच्छा है अथवा बुरा है? जब हम ध्यान करना चाहते हैं, तब मौन हो जाते है।
क्या यह मौन शाश्वत है ? अलौकिक है? स्थायी है अथवा नाशवंत है?
मौन का उद्देश्य क्या है? क्या यह शांति का परिणाम है अथवा मौन स्वयं ही शांति है?
किन्तु मैं तो शांत नहीं हूँ, मैं विचलित हूँ। मौन फिर भी है। अर्थात मौन ना तो शांति है ना ही शांति का परिणाम है। मेरे भीतर एक यूध्ध चल रहा है और मौन भी। मौन ध्वनि में रहता है, कोलाहल में भी रहता है, यूध्ध में भी। यह शांति से भिन्न है।
क्या मौन व्यक्तिगत है? भीड़ में रहते हुए भी कोई मौन रह सकता है? भीड़ से भरी बस अथवा रेल यात्रा में भी मौन हमारे साथ रहता है? क्या वह भी हमारे साथ स्वयं को अथवा अन्य किसी को विचलित किए बिना यात्रा करता रहता है?
क्या मौन साथी है? क्या वह सहयात्री है? क्या वह व्यक्ति पर भार रूप है? मौन का आकार, मौन का कद कैसा होता है? मौन का रंग कैसा होता है? मौन की सुगंध कैसी होती है? मौन हमारे साथ रहता है? कितना समीप, कितना दूर रहता है? क्या वह हमारे भीतर ही रहता है? मौन हमें कहाँ ले जाता है?
कभी कभी वह हमारे साथ रहता है, इतना समीप कि हाथ बढाते ही मुट्ठी में आ जाए। तो कभी इतना दूर की उसे पकड़ ही ना पाएँ।

जब हमें उसकी तीव्र आवश्यकता हो, हम उसे पुकार नहीं सकते। जब हम किसी से भरपूर बातें करना चाहते हैं तब ना जाने कहाँ से हमारे साथ आ जाता है?

क्या यह वास्तविक है अथवा कोई छलना? यह सापेक्ष है अथवा सत्य? क्या यह है भी? अथवा यह भी ईश्वर की भांति कोई रहस्य ही है?

मौन का रहस्य कब खुलेगा?

मौन स्वयं ईश्वर है। उसके रहस्य को प्रकट करने का प्रयास ना करना। मौन का आनंद लो अथवा उस की पीड़ा का अनुभव करो। मौन के रहस्यों को ज्ञानीयों के लिए छोड़ दो। तुम ज्ञानी नहीं हो। मौन नाम के रहस्य को जानना तुम्हारा काम नहीं है।

वफ़ाई का मन जो यहीं कहीं भटक रहा था, वफ़ाई ने उस मन को आज्ञा दी।

किन्तु मेरा काम क्या था? जब मैं मौन भंग करती हूँ तो मैं क्या चाहती हूँ?

वफ़ाई दुविधा में रही, मौन रही। आसपास देखने लगी। जीत को देखते ही बोल पड़ी, “ओह, जीत भी है मेरे साथ! यह तो मैं भूल गई।” वफ़ाई ने जीत को कहा। जीत ने सुना और प्रश्न भरी द्रष्टि वफ़ाई पर डाली।

“मैं भूल गई थी कि तुम यहाँ हो, मेरे साथ। मैं कहीं विचारों में खो गई थी। मैं भी कितनी मूर्ख हूँ?” वफ़ाई ने स्मित दिया, जीत ने भी।

जीत ने तूलिका वहीं छोड़ दी, झूले पर जा कर बैठ गया। वफ़ाई को देखने लगा जो दूर खड़ी थी।

वफ़ाई ने जीत को केनवास से झूले तक जाते देखा था।

बात करने का समय आ गया है। अभी मैं जीत से बात कर सकती हूँ। लंबे समय तक मौन नहीं रह सकती मैं।

वफ़ाई भी झूले के समीप गई। वह झूले पर बैठना चाहती थी किन्तु वफ़ाई ने स्वयं को रोका। वह झूले के समीप ही खड़ी हो गई। झूले पर दो व्यक्ति के लिए पर्याप्त स्थान है किन्तु कभी भी उस दूसरे स्थान का उपयोग नहीं हुआ। एक स्थान सदैव रिक्त रहता है। एक बैठता है तो दूसरा खड़ा रहता है। जब से मैं यहाँ आई हूँ, ऐसा ही देखा है मैंने। मन तो करता है कि जीत के समीप झूले पर बैठ जाऊं, समीप से जीत के अस्तित्व का अनुभव करूँ। किन्तु मैं नहीं कर पा रही हूँ।

जीत ने कभी भी झूले पर उस के समीप बैठने का आमंत्रण नहीं दिया। मैंने भी तो उसे आमंत्रण नहीं दिया। बस यही कारण है कि दोनों के बीच अंतर है।

अंतर? मुझे अनेक अंतर पार करने बाकी है। एक दिवस मैं इन सभी अंतर पार कर लूँगी। लक्ष्य को पा लूँगी।

वफ़ाई, तुम्हारा लक्ष्य क्या है?

चुप ही रहो तुम तो।

वफ़ाई शांत हो गई। झूले के समीप खड़ी रह गई।

दोनों शांत थे। दोनों प्रतीक्षा कर रहे थे कि कोई बोले। दोनों मौन को भंग करना चाहते थे किन्तु कोई भी पहल करना नहीं चाहते थे। जीत झूले पर झूलता रहा, वफ़ाई मौन खड़ी रही।

मौन के लिए यह उत्तम समय था। वह अपने अस्तित्व का आनंद लेता रहा। उसे ज्ञात था कि किसी भी क्षण उस का अस्तित्व समाप्त हो सकता है। अत: मौन यथा संभव अपने होने का आनंद लेना चाहता था।

मौन, क्रूर मौन।

यही तो उचित समय है जीत के साथ नींबू रस पीने का। जीत से बातें करने का।
“हम एक प्रयोग कर सकते हैं?” अंतत: वफ़ाई ने पहल की।
“कैसा प्रयोग? क्या यह प्रयोग केनवास के साथ करना है?” जीत ने रुचि दिखाई।
“नहीं, यह नींबू रस के साथ है।”
“नींबू, पानी, नमक, चीनी, काली मिर्च के उपरांत इसमें और क्या कुछ करने का अवकाश बचा है?”
“श्रीमान चित्रकार, इस जगत में कुछ भी सम्पूर्ण नहीं है। कोई चित्र भी नहीं। प्रत्येक वस्तु में तथा व्यक्ति में परिवर्तन और सुधार के लिए सदैव अवकाश होता है।”
“प्रत्येक व्यक्ति से तुम्हारा संकेत मेरी तरफ है?”
“नहीं। क्या मैंने ऐसा कहा?”
“तो प्रत्येक व्यक्ति से क्या तात्पर्य है तुम्हारा?”
“मेरे शब्दों को अपने साथ मत जोड़ो।”
“कुछ शब्द सदैव किसी व्यक्ति की तरफ संकेत करते हैं।”
“छोड़ो यह सब। नींबू रस पर प्रयोग करते हैं।”
“जैसा तुम चाहो। बात करने के लिए ‘नींबू रस’ अच्छा विषय है, वफ़ाई।” जीत हंस दिया।
“तो मैं कह रही थी कि ठंडे नींबू रस के बदले गरम नींबू रस बनाते हैं।”
“वह क्या है? वह कैसे बनता है? उसका स्वाद कैसा होता है?”
“मैं नहीं जानती।” वफ़ाई कक्ष में जाने लगी, “चलो प्रयोग करके देख लेते हैं।” वह कक्ष में चली गई।
जीत विचारने लगा।
मैं भी कक्ष में जाऊँ और वफ़ाई के प्रयोग में उसकी सहायता करूँ।
तुम उसकी सहायता करना चाहते हो अथवा उसे निहारना चाहते हो? बंध कक्ष में वफ़ाई के सानीध्य का अनुभव करना चाहते हो?
मैं नहीं जनता, किन्तु मैं उसके पास दौड़ जाना चाहता हूँ।
तुम्हारा आशय....।
मेरे आशय पर संदेह करते हो? ठीक है, मैं वफ़ाई के पास नहीं जाता हूँ। यहीं बैठा रहूँगा। अब तो तुम प्रसन्न हो ना?
जीत कक्ष में नहीं गया, झूले पर बैठे वफ़ाई की प्रतीक्षा करने लगा।
गरम नींबू रस से भरे दो पात्र ले कर वफ़ाई आ गई। एक जीत को दिया और झूले के समिप खड़ी हो गई। दोनों ने एक एक घूंट पिया, उसके स्वाद का अनुभव किया।
अधरों पर रुके पात्र तथा आँखों के बीच के खाली स्थान में से दोनों ने एक दूसरे को देखा। क्षण भर के लिए समय स्थिर हो गया।
जीत, तुम इस मुद्रा में सुंदर लग रहे हो। मैं तुम्हारा ऐसा चित्र बनाउंगी।
वफ़ाई, इस भंगिमा में तुम कुछ समय स्थिर हो जाओ। मैं तुम्हारा चित्र रचता हूँ।
“इस क्षण को हृदय में अंकित कर लेना है।” दोनों ने एक साथ कहा।
“क्या?” दोनों ने एक साथ पूछा। दोनों हंस पड़े। लंबे समय के पश्चात मरुभूमि में मंद मंद पवन बहने लगी। दोनों को स्पर्श करती पवन चली गई।
“गरम नींबू रस से शीघ्र ही मैं नींबू सूप बनाना सीख लूँगी।”
जीत ने मौन सम्मति व्यक्त की।
“जीत, मौन क्या है? मैं कब से इस पर उलझी हूँ। इस रहस्य को पाने में मेरी सहायता करो।”
“मैं लेखक, तत्ववेता, संत अथवा ज्ञानी नहीं हूँ। मेरे पास इस रहस्य का कोई समाधान नहीं है। मुझे यह ज्ञात है कि मौन सुंदर है और मैं उसे पसंद करता हूँ। मौन से मुझे कोई समस्या नहीं है। उसे रहस्य ही रहने दो।”
“तो इस के समाधान में तुम मेरे साथ नहीं हो।”
“हम सत्यान्वेषि नहीं है। यह कोई वध, लुट जैसी अनिच्छनिय घटना नहीं है।”
“है। जीत यह ऐसी ही घटना है। यह वध, लुट, चोरी का किस्सा है।”
“ठीक है, ठीक है। जो भी कहना हो स्पष्ट कहो।”
वफ़ाई ने गहरी सांस ली और कहा, “जब मौन होता है तब शब्दों का वध होता है, विचारों की लुट होती है, भावनाओं की चोरी होती है। यह सभी अनिच्छनिय घटना तो है। श्रीमान सत्यान्वेषी, क्या अब तुम मेरी सहायता करोगे मौन नामक रहस्य का समाधान लाने में?”
“आपकी सभी बातें अकाट्य है, वकील जी। मेरा आपसे अनुरोध है कि आप शांत हो जाएँ तथा मौन के ऊपर लगे सभी अपवाद, सभी आक्षेप को निरस्त कर दें। उसे क्षमा कर दें। यह घटना को यहीं समाप्त कर दें।”
“तुम्हारा तात्पर्य है कि मौन निर्दोष है? इतने सारे अपराध के उपरांत भी? जीत।”
“ईश्वर अथवा प्रकृति के हम न्यायाधीश नहीं है। यह घटना सर्व शक्तिमान के न्यायालय में प्रस्तुत किया जाय। कुमारी वफ़ाई, तुम अनुचित न्यायालय में हो।”
“कुमारी वफ़ाई? मुझे केवल वफ़ाई कहो। और मैं वकील नहीं हूँ।”
“इन बातों का मैं ध्यान रखूँगा। अब ठीक है?” जीत ने शीश झुका दिया। वफ़ाई ने स्मित दिया।
“मेरा प्रश्न, मेरा रहस्य अभी भी रहस्य ही रहा।”
“वफ़ाई, उसे वहीं छोड़ दो। प्रत्येक रहस्य का अपना सौन्दर्य होता है जो अनुपम होता है।”
“तो तुम्हें सौन्दर्य पसंद है।”

“अवश्य। मैं उसे पसंद करता हूँ। उससे स्नेह करता हूँ। तुम्हारा क्या विचार है?”
“सौन्दर्य एक सापेक्ष भाव है। वह एक रहस्य भी है। तुम रहस्य तथा सौन्दर्य दोनों से स्नेह करते हो। तो हम उसे यहीं छोड़ देते हैं। ठीक है ना?“
“बड़ी चतुर हो तुम। तुम्हारी चतुराई की प्रशंसा करता हूँ।” जीत के शब्दों का वफ़ाई ने स्मित से उत्तर दिया।
जीत, तुम ऐसे प्रथम पुरुष हो जिसने मेरी चतुराई की प्रशंसा की है। बाकी सभी पुरुष मेरे शारीरिक सौन्दर्य की ही बात करते हैं। जीत, तुम अन्य सभी पुरुषों से भिन्न हो।
वफ़ाई ने मन ही मन जीत को धन्यवाद दिया।
“जीत, इस चर्चा पर तुम्हारा अंतिम मत क्या है?”
“ज्ञान से परे मैं बस इतना ही कहूँगा कि यदि किसी को कुछ देना चाहते हो तो उसे अपना मौन देना, भले ही वह रहस्य से भरा हो।”
“जीत, थोड़े शब्दों में तुमने सब कुछ कह दिया।”

45

“हाय अल्लाह। मुझे आश्चर्य है कि मैं इन अनपेक्षित गलियों में कैसे भटक गई? मैं उद्देश्य को भूल गई और अज्ञात-अनदेखे मार्ग पर चलती रही। जीत, मैं भी कितनी मूर्ख हूँ।”
“वफ़ाई, ज्ञात एवं पारंपरिक मार्ग पर चलने से तो अज्ञात−अनदेखे मार्ग पर चलना अच्छा है। इसका भी अपना सौन्दर्य है।”
“मुझे किसी नए मार्ग पर मत ले चलना। मुझे मेरे प्रश्न का उत्तर दे दो कि मैं किसका चित्र बनाऊँ। शब्दों से खेले बिना मेरा मार्गदर्शन करो।”
“मुझे थोड़ा विचार करने दो।”
“अनुमति है। किन्तु अधिक समय मत लेना। और हाँ, इस जगत को छोडकर कहीं और चले मत जाना।”
जीत विचार करने लगा। वफ़ाई जीत से प्रत्युत्तर की अपेक्षा में प्रतीक्षा करने लगी।
“तुमने कभी पर्वत का चित्र नहीं रचाया। वही बनाओ।” जीत ने सुझाया।
“उत्तम विचार। मैं अभी रचती हूँ।” वफ़ाई उत्साह और आनंद से भरी केनवास के पास गई, तूलिका उठाई तथा रंगों के साथ व्यस्त हो गई। जीत झूले पर झूलता रहा।
कुछ क्षणों के पश्चात वफ़ाई के केनवास पर पर्वत प्रकट हो गया। वफ़ाई प्रसन्न हो गई।
“जीत, यहाँ देखो। तुमने सुझाया और मैंने पर्वत रच दिया।” वफ़ाई ने जीत को आमंत्रित किया। जीतने झूला रोका, उठा और वफ़ाई के समीप गया।
“सुंदर, अति सुंदर पर्वत।” जीत के अधरों पर स्मित था, वफ़ाई के अधरों पर भी।
“गुरु जी, कोई सुझाव हो तो कहो।” वफ़ाई ने कहा।
कुछ क्षण पश्चात जीत ने कहा, “पर्वत की चोटियों पर तथा घाटियों में हिम होता तो?”
“वाह। वह तो मैं भूल गई। मैं अभी इन चोटियों को हिम से भर देती हूँ।”
वफ़ाई के पर्वत हिमाच्छादित हो गए।
“अब ठीक है?” वफ़ाई ने पूछा।
“बिलकुल। किन्तु अभी भी कुछ चित्रित किया जा सकता है।”
“जैसे?”
“पर्वत पर झरने, नदी एवं प्रपात हो तो? पर्वत हरे भरे हो तो?”
वफ़ाई जीत के सुझावों पर काम करने लगी। चित्र पूर्ण हो गया।

"अब? कैसा लग रहा है यह पर्वत?"
"अभी भी कुछ और।" जीत ने कहा।
"क्या है वह?।"
"कुछ घर, मार्ग, भवन भी तो होने चाहिए।"
"ठीक है, मैं प्रयास करती हूँ किन्तु मैं नहीं कर पाऊँगी। तुम मेरी सहायता करोगे?"
"प्रयास तो करो। मैं सदैव तुम्हारे साथ हूँ।" जीत ने मन ही मन पूछा, "किन्तु कब तक?" उसके मन ने कोई उत्तर नहीं दिया।
वफ़ाई ने घर, मार्ग तथा भवन भी चित्रित कर दिये। केनवास को छोड़ कर अपने ही नवीन चित्र को निहारने लगी।
पर्वत, उस पर हिम, झरने, जल प्रपात, मार्ग, नदी, घर, भवन। सब कुछ उस चित्र में था। उसे चित्र पसंद आया।
जीत वफ़ाई के चित्र को रस पूर्वक देख रहा था। किसी विचार में था। उस के मन में कुछ चल रहा था। वह जीत के प्रतिभाव की प्रतीक्षा करने लगी।
अंततः जीत आगे बढ़ा, तूलिका ली, रंगों में डुबोया; चित्र में हिम से ढंके मार्ग पर कुछ रेखाएँ खींची। वहाँ चौदह पंद्रह वर्ष की कन्या का चित्र उभर आया। उसने केनवास छोड़ दिया वफ़ाई के लिए।
वफ़ाई ने उसे देखा, देर तक देखती रही। वह कुछ नए भाव अनुभव कर रही थी, परिचित से भाव। उसने चित्र को बार बार देखा। यह स्थान नया नहीं है। मैं इसे जानती हूँ। समय के किसी बिन्दु पर मैं वहाँ रह चुकी हूँ। यह स्थान है कहाँ? मुझे स्मरण क्यों नहीं हो रहा?
जीत ने कहा, "वफ़ाई, इस स्थान को तुम भली भांति जानती हो। स्मरण करने का प्रयास करो।"
"किन्तु मेरे स्मरण में नहीं आ रहा। कहाँ है यह स्थान? यदि तुम जानते हो तो बताओ ना।"
"ओह छोकरी, कितनी शीघ्रता से तुम भूल जाती हो? यह तुम्हारा गाँव है। तुम्हें स्मरण नहीं आ रहा?"
वफ़ाई ने चित्र को पुनः देखा। अपने ही गाँव को याद करने में जुट गई।
वफ़ाई को सब कुछ स्मरण आ गया।
वफ़ाई प्रसन्न होते हुए बोली, "वाह जीत। केनवास के माध्यम से मुझे मेरे गाँव का स्मरण कराने के लिए धन्यवाद। इस स्थल को तुम कैसे जानते हो? तुम कभी वहाँ रहे हो?"
"नहीं। कभी नहीं। मैं तुम्हारे गाँव का नाम तथा ठिकाना भी नहीं जानता।"
"तो यह कैसे संभव हुआ?"
"मैंने तुम्हारे गाँव की तस्वीरें देखि है जो तुमने अपने केमरे जानु से खींची थी।"
"ओह, क्या बात है? किन्तु, मेरे केमरे का नाम जानु है वह तुम कैसे जानते हो?"
"उसे भी रहस्य ही रहने दो। मैंने कहा था ना कि रहस्यों के अंदर सौन्दर्य छिपा होता है।" जीत अपने ही शब्दों पर हंस पड़ा, वफ़ाई भी।
"जीत, मुझे मेरे गाँव का स्मरण हो रहा है। मैं पर्वत को देखना चाहती हूँ। वह घाटी, वह नदी, वह हिम। मेरे गाँव के लोग मुझे ...।"
"यह स्वाभाविक है।"
"किन्तु तुम्हारे साथ कुछ दिवस रहने से मैं पूरी तरह से भूल गई कि मैं पर्वत के उस गाँव की छोरी हूँ। उल्टा मुझे ऐसा लगता है कि मैं यहीं जन्मी हूँ, यहीं बड़ी हुई हूँ और यह मरुभूमि ही मेरा वतन है। जैसे मैं मरुभूमि की कन्या हूँ। जीत, मैं मरुभूमि सुंदरी हूँ।"
"ऐसा कैसे हो गया?"
"इसका कारण तुम हो श्रीमान चित्रकार।"
"यह प्रशंसा है अथवा अभियोग?"
"मैं क्या जानूँ? समझ लो यह प्रशंसा भी है, अभियोग भी है।"
"दोनों स्थिति में मैं प्रसन्न हूँ। मैं दोनों का स्वीकार करता हूँ।" जीत ने सस्मित कहा।
'यही तो कारण है। तुम मेरे साथ ऐसे प्रस्तुत होते हो कि मैं सब कुछ भूल जाती हूं। तुम कितने अच्छे हो, जीत।" वफ़ाई ने कहा और मन ही मन बोली, तुम स्नेह से भरे हो। मैं कहना चाहती हूँ कि मैं तुमसे प्रेम करती हूँ। किन्तु मेरे अधरों पर यह शब्द कैसे लाऊं?
जीत ने वफ़ाई के अनकहे भावों को पढ़ा। मैं जानता हूँ कि समय के साथ तुम मुझ से प्रेम करने लगी हो। किन्तु मैं इस मार्ग पर नहीं चलूँगा। तुम्हारी भावनाओं से अंतर ही रखूँगा। तुम्हें कभी यह अनुभव नहीं होने दूंगा। तुम्हारे भावों से अज्ञात ही प्रस्तुत होता रहूँगा। इस के लिए मेरे अपने कारण है। जीवन का मेरा अपना मार्ग है जिस पर मेरे साथ कोई नहीं चल सकता। इस पथ को कोई नहीं जानता। प्रत्येक क्षण मैं अपने लक्ष्य के समीप जा रहा हूँ। प्रत्येक श्वास उस लक्ष्य को निकट ला रहा है। मैं जानता हूँ कि मेरा लक्ष्य दूर नहीं है। शीघ्र ही मैं लक्ष्य प्राप्त कर लूँगा, अकेला ही। कोई मेरे साथ नहीं होगा। वफ़ाई तुम भी नहीं। मैं चलता ही रहूँगा, किसी एकल यात्री की भांति।
"जीत, तुम कहाँ हो? किन विचारों में खो गए हो?" वफ़ाई ने जीत के सामने ताली बजाई। जीत विचारों से जागा।
"मैं यहीं हूँ।"
"मेरे गाँव का, मेरे पर्वत का मुझे तीव्र स्मरण हो रहा है। मैं उसे एक बार पुनः देखना चाहती हूँ।"
"तो सामान बांधो और निकल पडो अपने गाँव।"
वफ़ाई का मन करने लगा कि वह भाग कर चली जाय अपने गाँव, किन्तु कुछ तो था जो उसे जाने से रोक रहा था।
जीत का साथ मन को शांत करता है, आनंद देता है, मन को भाता है। किन्तु जीत, तुमने कभी कोई संकेत नहीं दिये मुझे। मैं समझ नहीं पा रही हूँ तुम्हारा आशय। मैं क्या करूँ? एक तरफ मेरा गाँव, मेरा पर्वत मुझे स्मरण हो रहा है तो दूसरी तरफ कोई मुझे वहाँ जाने से रोक रहा है। कोई है जिसने मुझे उस गाँव से दूर कर दिया है। किसके लिए मैं वह जाऊं? दूसरी तरफ यह जीत, जो मेरा कुछ भी नहीं है किन्तु मुझे उसका साथ प्रसन्न रखता है। जीत में कुछ बात तो है। किन्तु क्या बात है जीत में?

जीत, नहीं नहीं, श्रीमान कलाकार, श्रीमान चित्रकार। तुमने मुझे सहज ही प्रेम करना सिखाया है। यही कारण है कि मैं यहाँ से भाग नहीं जाना चाहती।
तुम मानती हो कि तुम प्रेम में हो, जीत के प्रेम में?
अवश्य। कोई संदेह है क्या?
किन्तु जीत को तुम्हारे प्रेम में कोई रुचि नहीं लगती।
मुझे तो लगता है कि जीत भी मुझ से प्रेम करता है।
प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से जीत ने कभी यह दर्शाया नहीं। तो तुम कैसे मान बैठी?
मेरा प्रेम एक तरफा हो सकता है, तो क्या हुआ?
तुम मूर्ख तथा पागल छोकरी हो।
यह मूर्खता, यह पागलपन मुझे पसंद है।
ओह मूर्ख छोकरी।
“हाँ, मैं मूर्ख छोकरी हूँ।” वफ़ाई बोल पड़ी।
“नहीं, तुम मूर्ख छोकरी नहीं हो, वफ़ाई।” जीत ने कहा।
“तो मैं क्या हूँ? कौन हूँ?”
“तुम पर्वत सुंदरी हो जो अपने ही पर्वत, बादल, गगन, पवन, हिम, गाँव तथा लोगों से स्नेह रखती है।”
“तुम ठीक कहते हो, जीत। मैं इन सभी से स्नेह करती हूँ। सब को देखना चाहती हूँ। सब को मिलना चाहती हूँ।”
“तो शीघ्रता से निकल पड़ो। किसकी प्रतीक्षा कर रही हो तुम?”
“यहाँ से भाग जाना इतना सरल नहीं है। तुम जानते हो कि मैं एक अभियान पर हूँ, और उस अभियान पूर्ण करने से पहले मैं यहाँ से नहीं जा सकती।”
“भूल जाओ उस अभियान को और भाग चलो। यह मार्ग तुम्हें आमंत्रित कर रहा है।”
“मुझे इस बात पर बात नहीं करनी है। मैं जाना भी चाहती हूँ और नहीं भी।” कुछ क्षण वफ़ाई मौन हो गई। फिर बोली, “जीत, तुम मेरा साथ दोगे?“
“भाग जाने में? क्यों ऐसा पूछती हो? मैं सदैव तुम्हारा साथ दूंगा।”
“तो पहाड़ों पर मेरे साथ चलो। कुछ ही दिवस में मेरा अभियान सम्पन्न हो जाएगा फिर हम दोनों हिम से ढंके पहाड़ों पर जाएंगे। तुम मेरे साथ आओगे ना?”
जीत ने वफ़ाई को स्मित दिया, वफ़ाई ने जान लिया कि यह स्मित सहज नहीं था। उस स्मित में कुछ मिश्रित था। उस स्मित में पीड़ा थी।
“जीत, तुमने प्रतिभाव नहीं दिया। मैंने कुछ प्रस्ताव रखा था तुम्हारे लिए।”
क्या यह प्रेम का प्रस्ताव है? जीत ने स्वयं से पूछा।
“मैं उसको स्वीकार नहीं करूंगा।”
“तो तुम मेरे साथ नहीं चल रहे हो?”
“हाँ, यह स्पष्ट है।”
“क्या तुम पर्वतों को देखना नहीं चाहते? झरनों को, जल प्रपात को देखना नहीं चाहते?”
“पहाड़, हिम, प्रपात, झरने मुझे अत्यंत पसंद है, मुझे आकृष्ट करते हैं। मेरी इच्छा रही है कि मैं सदैव पहाड़ों की चोटियों पर रहूं।”
“तो तुम्हें कौन रोकता है पहाड़ो पर दौड़ जाने को? अपने पिंजरे से मुक्त हो जाओ, पहाड़ों पर दौड़ जाओ।”
“मुझे प्रेरणा देने के लिए धन्यवाद, वफ़ाई जी। किन्तु मैं इतना समर्थ नहीं हूँ कि मेरे इस पिंजर को तोड़ सकूँ।”
“क्या है वह? उसे कह दो। उसे रहस्य में मत रखो। कभी कभी मुझे लगता है कि तुम स्वयं ही एक रहस्य हो जो अभी तक खुला नहीं है। आज उस रहस्य को खोल दो। अभी ही खोल दो।” वफ़ाई ने जीत को उकसाया।
“मैं फिर से कहुंगा, रहस्य को अप्रकट ही रहने दो। अप्रकट रहस्य में सौन्दर्य छिपा हुआ होता है।”
“जीत, तुम सौंदर्य की इतनी चिंता क्यों करते हो?” जीत ने स्मित करने का प्रयास किया किन्तु वह स्मित निस्तेज था।
पश्चिम मे सूरज अस्त हो गया।
वफ़ाई अपने गाँव के चित्र को तृषातुर आँखों से देखती रही। उस रात वह सो नहीं पाई। जीत ने उस रात वफ़ाई को केनवास के समीप तीन बार देखा था। जीत समझ चुका था कि वफ़ाई के मन में उसके गाँव जाने की तीव्र अभिलाषा जन्म ले चुकी थी। फिर भी वह किसी विवशता से मरुभूमि में रह रही है।
जीत ने योजना बना ली। वह सूर्योदय की प्रतीक्षा करने लगा।

“वफ़ाई, मेरे पास एक योजना है। तुम्हें रुचि है इसे सुनने में?” जीत ने प्रभात में ही वफ़ाई से संवाद प्रारम्भ कर दिया।
वफ़ाई ने अभी अभी प्रभात की नमाझ पूर्ण की थी। वह नींबू सूप बनाने में व्यस्त थी। वफ़ाई जागते ही मौन थी, शांत थी। जीत के शब्द वफ़ाई के लिए बात करने, उत्तर देने अथवा स्मित देने के लिए पर्याप्त नहीं थे। वफ़ाई मौन ही रही। जीत ने अपने शब्द फिर कहे, लगभग वफ़ाई के कान में।
वफ़ाई का हृदय गति चूक गया, श्वास रुक गया और आँखें बंध हो गई।
जीत पहली बार वफ़ाई के अत्यंत निकट था। जीत की उपस्थिती, जीत का सामीप्य तथा जीत की सुगंध को वफ़ाई अनुभव करने लगी। पवन की उस लहर में वह बह गई। उस क्षण में स्थिर रहने की क्षमता वह खो चुकी थी।
वफ़ाई ने गहरी सांस ली, दोनों अधरों को चुस्त बंध कर दिया, बाएँ हाथ की मुट्ठी बंध कर ली। सब कुछ शांत था, स्थिर था, गतिहिन था। केवल गेस की ज्वाला गतिमान थी जिस पर नींबू सूप उबल रहा था। उबलता पानी ध्वनि उत्पन्न कर रहा था जो स्पष्ट सुनाई दे रहा था।
क्या केवल पानी ही उबल रहा है अथवा मेरा हृदय भी? वफ़ाई मौन ही रही।
उबलता पानी ज्वाला की उष्णता सह नहीं पाया, बर्तन की सीमाओं को पार कर गया। पानी छलक गया।
वफ़ाई ने आँखें खोली और गेस बंध कर दिया।
उबलता पानी शांत हो गया, ध्वनि अद्रश्य हो गए। जो कुछ गति में था वह स्थिर हो गया। एक तूफान शांत हो गया। वफ़ाई भी। जीत बाहर चला गया।
“सूप तैयार है। इसे पी लो।” वफ़ाई सूप के साथ बाहर आई। जीत केनवास पर रचे पर्वत के चित्र के समीप था।
“अवश्य। वफ़ाई झूले पर बैठो।” जीत ने वफ़ाई को आमंत्रित करते हुए एक पात्र ले लिया। दोनों धीरे धीरे, मौन रहकर, सूप पीने लगे। दोनों ने समय को बहने दिया।
“क्या योजना है तुम्हारी?” वफ़ाई ने सूप पूरा कर लिया था।
“सरल है। आज पूरा दिवस इस घर को छोड़कर भाग जाते हैं।”
“मैं इस स्थान को छोड़कर कहीं भी नहीं जाऊँगी जब तक मेरा अभियान पूर्ण न हो।” वफ़ाई अधीर हो गई।
“मैं तुम्हारे उत्साह तथा काम के प्रति समर्पण का सम्मान करता हूँ। किन्तु हे पर्वत सुंदरी, मुझे मेरे शब्द पूरे तो करने दो। क्या इसके लिए मुझे अनुमति है मेरे मित्र?” जीत ने विनम्रता से सिर झुकाया।
‘जी, अनुमति है।” वफ़ाई झूले पर बैठ गई, हाथों की अदब बनाकर। वह किसी पाठशाला की आज्ञांकित छात्रा लग रही थी।
“भोजन के पश्चात इस मरुभूमि में यात्रा की योजना बनाई है मैंने। इस मरुभूमि में एक पर्वत है। पर्वत है छोटा सा, किन्तु सुंदर है। इस पर्वत का नाम है काला डूंगर। क्या तुम वहाँ जाना पसंद करोगी?”
“पर्वत? इस मरुभूमि में? तुम सही कह रहे हो?” वफ़ाई उत्साह से भर गई।
“अवश्य ही मैं सही कह रहा हूँ।”
“अदभूत विचार है, जीत। कब जाना है? कैसे जाना है?” प्रसन्नता से वफ़ाई नाचने लगी।
“तुम्हारी जीप से तीन बजे चलेंगे। दो घंटे में पहोंच जाएंगे। रात्रि से पहले लौट आएंगे।”
“लंबे समय के पश्चात पर्वत देखने को मैं उत्सुक हूँ।” वफ़ाई झूले से उठी और कक्ष में चली गई। प्रवास की तैयारियां होने लगी जो 2.55 पर पूर्ण हो गई।
“जीत, तुम इस काले जींस तथा हल्के नारंगी टी-शर्ट में सुंदर लग रहे हो। अभी तक तुमने यह पहना क्यों नहीं? तुम्हारी चाल में भी एक भिन्न गति दिख रही है। मुझे तो तुम्हारा यह अवतार पसंद आया।”;वफ़ाई ने जीत को देखकर कहा।
“वफ़ाई, तुम भी तो जींस तथा टी-शर्ट में हो। बस रंग भिन्न है। सागर से नीले रंग के जींस में तथा गुलाबी टी-शर्ट में तुम भी मोहक लग रही हो। और यह खेल के जूते? वाह क्या बात है। मुझे भी तुम्हारा यह अवतार पसंद आया।” वफ़ाई ने स्मित से उत्तर दिया।
“जीत, तुम जीप चलना चाहोगे?” वफ़ाई ने जीप की चाभी जीत को दे दी। जीत चालक स्थान पर जा बैठा। वफ़ाई जीत के बाएँ की बैठक पर बैठ गई। जीप काले पर्वत की तरफ गति करने लगी।
“जीत, तुम इस मार्ग को जानते हो?”
“हाँ। किन्तु तुम्हारे लिए यह नया है। यही कारण है कि मैं इसे धीरे धीरे चला रहा हूँ। तुम इस मार्ग को निहार लो, इसका आनंद लो।”
मार्ग शांत था। एकांत से भरा था। दोपहर की धूप से गरम भी था। पवन कभी दोनों को छूकर बहती थी तो कभी दोनों के अंदर बहती थी।
दोनों मौन थे। जीत जीप चला रहा था तो वफ़ाई मरुभूमि के रूप को पी रही थी। मरुभूमि शांत थी। मौन थी।
समय स्थिर सा था। गगन भी स्थिर था। मार्ग भी इतना धीरे धीरे कट रहा था कि जैसे वह भी स्थिर हो। दिशाएँ स्थिर थी। गगन में सूरज भी इतनी मंद गति से चल रहा था कि वह भी स्थिर लग रहा था।
वफ़ाई ने जीत को देखा। वह सीधे मार्ग को देख रहा था। वफ़ाई उसे कुछ क्षण देखती रही किन्तु जीत ने उस पर ध्यान नहीं दिया।
वफ़ाई मन ही मन बातें करने लगी, क्या उसे घ्यान भी है कि मैं उसके साथ प्रवास में हूँ। उसके समीप बैठी हूँ।
मुझे ऐसा नहीं लगता। वह अपने काम में इतना डूब गया है…।
मैं ही उससे बात करती हूँ।
“जीत, इस एकांत से भरे दोपहरी मार्ग को देख कर क्या विचार कर रहे हो?”
जीत ने अपने गले को वफ़ाई की तरफ घुमाया जहां उसे वफ़ाई दिखाई दी।
“कुछ कहो…।” वफ़ाई के शब्द हवा में विलीन हो गए।
“शी….श…। समशीतोष्ण पवन की लहरों में मरुभूमि सोई हुई है। उसे बिना व्यवधान के सोने दो।”

“अर्थात मरुभूमि गहन निंद्रा में है?” वफ़ाई ने धीरे से जीत के कान में कहा।
“ना केवल गहन अपितु मीठी भी।” जीत ने कहा।
पवन का एक टुकड़ा वफ़ाई को छु गया। वफ़ाई को भा गया। वफ़ाई ने सोई हुई मरुभूमि को सोने दिया। वह मौन हो गई।
जीप चल रही थी, समय भी। मार्ग सब कुछ पीछे छोड़ रहा था। जीत तथा वफ़ाई मौन प्रवास कर रहे थे। लगभग डेढ़ घंटे की यात्रा के पश्चात जीप धीरे से रुक गई। वफ़ाई मरुभूमि की मोहकता से बाहर आई।
वफ़ाई ने आस पास देखा। वह पहाड़ी मार्ग पर थे। छोटी छोटी पहाड़ियों से वह घिरे थे। चोटियाँ हरी भरी नहीं थी किन्तु आकर्षक थी।
“क्या हम काले पहाड़ पार आ गए?” वफ़ाई ने उत्सुकता से पूछा।
“नहीं, अभी नहीं। किन्तु हम उसके निकट ही हैं।”
“तो यहाँ जीप क्यों रोक दी? लक्ष्य से पहले रुकना नहीं चाहिए।”
“हे पर्वत कुमारी, लक्ष्य पर पहोंचना और लक्ष्य प्राप्त करना, केवल यही बात सुंदर नहीं होती। लक्ष्य से भी अधिक सुंदर कई वस्तु, कई बात होती है।” जीत ने स्मित दिया।
“वह कौनसी बातें है?”
“कभी कभी लक्ष्य की तरफ ले जाने वाला मार्ग भी लक्ष्य से अधिक सुंदर होता है, मोहक होता है।”
“ऐसा क्या? इस मार्ग का सौन्दर्य क्या है, बताओ तो?”
“क्षण भर प्रतीक्षा करो। मैं सब बताता हूँ। एक बात और जान लो जो लक्ष्य से भी सुंदर है।” जीत ने वफ़ाई के मुख के भावों को देखा।
“शीघ्र ही बताओ।”/वफ़ाई ने रुचि दिखाई।
“कभी कभी, लक्ष्य की तरफ जाते मार्ग पर साथ चलने वाला साथी सबसे सुंदर होता है।”
“अर्थात, यदि लक्ष्य सुंदर है तो मार्ग की चिंता कैसी? और यदि मार्ग सुंदर है तो लक्ष्य की चिंता कैसी? यह तो सुना था। तुम तो इससे आगे कह रहे हो, कि यदि साथी सुंदर है तो मार्ग और लक्ष्य की चिंता क्यों करें? यही कह रहे हो ना तुम?”
“हाँ। तुमने बात का मर्म ही पकड़ लिया, चतुर छोकरी।”
“वह तो ठीक है। किन्तु यह तो कहो की यहाँ क्या सुंदर है? मार्ग, लक्ष्य अथवा साथी?”
जीत मैं जानती हूँ कि तुम यही कहोगे कि वफ़ाई नाम का साथी सबसे सुंदर है।
वफ़ाई ने आँखें बंध कर ली और जीत के आने वाले शब्दों पर ध्यान धरने लगी। उसके कानों पर जीत के शब्द पड़े, “इस क्षण, प्रवासकी सबसे सुंदर वस्तु इन तीनों में से कुछ भी नहीं है।”
शब्द सुनते ही वफ़ाई चकित हो गई, उसने आँखें खोल दी।
“जीत, मेरी धारणा थी कि ...।”
“सब गलत हो गई न? सबसे सुंदर है प्रवास का यह बिन्दु, यह स्थान।”
“अर्थात एक और वस्तु जो सुंदर है।”
“इस जगह को देखो, यह अजोड़ है।” जीत जीप से बाहर निकल आया। वफ़ाई भी।
जीत वफ़ाई को मार्ग से ऊपर तीस चालीस फिट ले गया। वहाँ लिखा था- ‘संभावित चुम्बकीय बिन्दु’।
वफ़ाई की आँखों मे प्रश्न था। जीत के पास उत्तर था।
“यह चुम्बकीय बिन्दु है। यहाँ, न्यूटन का गुरुत्वाकर्षण का नियम काम नहीं करता। न्यूटन का नियम कहता है कि प्रत्येक पदार्थ नी चे, धरती की तरफ गति करता है। सदैव ऊपर से नीचे की तरफ जाता है। यदि किसी पदार्थ को ढलान पर रखा जाय तो वह नीचे की तरफ सरकता है। किन्तु यहाँ, पदार्थ ऊपर की तरफ गति करता है। गुरुत्वाकर्षण के विरूध्ध।” जीत ने समझाया।
“यह पूर्णत: असंभव है। मैं नहीं मानती इस बात को।”
“तुम्हारी यही तो समस्या है, पर्वत कुमारी। किसी की मान्यता, विचार अथवा आवेग से वस्तुएं प्रभावित नहीं होती। वह जैसी होती है वैसी ही रहती है।”
“तुम उपहास तो नहीं कर रहे? क्या तुम अपनी बात सिध्ध कर सकते हो?” वफ़ाई ने जीत का आव्हान किया।
जीत ने उत्तर नहीं दिया। जीत ज़िप में बैठ गया। उसने उस बिन्दु पर जीप रख दी। जीप का एंजिन बंध कर दिया। हाथ वाली ब्रेक लगा दी।
“वफ़ाई, यहाँ आ जाओ। लो यह चाभी और चालक बैठक पर बैठ जाओ।” जीत ने जीप के आसपास रखाएँ अंकित कर दी।
“मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा है।” वह जीप में बैठ गई।
“अब हाथवाली ब्रे क को छोड़ दो और जो होता है उसे देखो, उसे अनुभव करो।” वफ़ाई ने वैसा ही किया।
जीप का एंजिन बंध था। जीप ढलान पर थी। नियम के अनुसार उसे नीचे की तरफ जाना था, किन्तु वह नीचे नहीं जा रही थी। जीप स्थिर थी।
कुछ क्षण में जीप चलने लगी। वफ़ाई ने देखा कि जीप चलने लगी है। धीरे धीरे जीप ऊपर की तरफ गति कर रही थी।
“यह केवल मेरा भ्रम है। जैसे कि मैं विचार कर रही हूँ कि जीप ऊपर कि तरफ गति कर रही है, मुझे वैसा ही भ्रम हो रहा है। यह सत्य नहीं, भ्रम ही है।”
वफ़ई ने जीत को देखा। वह दूर खड़े वफ़ाई को निहारता था। वफ़ाई के भाव तथा प्रतिभाव को देख रहा था। उसका स्मित कह रहा था कि जो घटना घट रही है वह विस्मय से भरी है।
“क्या वास्तव में ऐसा हो रहा है?” वफ़ाई ने पूछा। जीत ने उत्तर नहीं दिया, केवल स्मित दिया।
चार मिनिट बीत चुके थे। जीप ऊपर की तरफ जा रही थी।
“मैं क्या करूँ?” वफ़ाई विचलित हो गई। एक मिनट और व्यतित हो गया। वफ़ाई ने अपना धैर्य खोया और हाथ वाली ब्रेक खींच ली,

जीप का द्वार खोल दिया और बाहर आ गई। उसके माथे पर प्रस्वेद था।
वफ़ाई ने गहरी साँसे ली। जीत ने वफ़ाई को पानी धरा। वफ़ाई उसे एक ही घूंट में पी गई।
वफ़ाई शांत हो गई, जीत को देखने लगी। जीत के अधरों पर स्मित अभी भी था।
“तुम स्मित क्यों कर रहे हो?”
“शांत हो जाओ वफ़ाई। खुली आँखों से चमत्कार देखना अभी बाकी है। जीप के चक्रों को देखो।”
“उसे क्या हुआ? चारों के चारों ठीक तो है।”
“चक्र तो ठीक ही है। उस बिन्दु पर देखो जहां तुम्हारे जीप के अंदर जाते ही मैंने एक रेखाएँ रचायी थी।”
वफाई ने उन रेखाओं को देखा, “वह तो नीचे है, लगभग बीस फिट नीचे। अर्थात जीप ऊपर की दिशा में इतनी दूरी तक चली है, बिना ईंधन के, गुरुत्वाकर्षण बल के विरूध्ध। यह तो अदभूत है, यह चमत्कार है, यह अकल्पनीय है।
यह कैसे हुआ? जीत, कहीं तुमने तो कोई युक्ति नहीं की? क्या वास्तव में ऐसा हुआ है अथवा कोई भ्रम हुआ है।”
“कभी कभी हमारी आँखों के सामने जो घटता है उसे भी हम मान नहीं सकते। उसे घटते हुए हम अपनी खुली आँखों से देखते हैं किन्तु उसका स्वीकार नहीं कर सकते। उसे हम भ्रम अथवा चमत्कार मान लेते हैं। चमत्कार नाम की कोई भी बात नहीं है इस विश्व में। प्रत्येक बात, प्रत्येक घटना का एक तर्क होता है, कारण होता है। हमें उस घटना के मूल तक जाना होता है। वहाँ तक जाने का कष्ट लिए बिना ही हम उसे चमत्कार अथवा भ्रम कह देते हैं।”
“तो इसके पीछे का तर्क क्या है? कारण क्या है?”
“उस बिन्दु पर लिखे शब्दों को पुन: पढ़ो।”
“संभावित चुंबकीय बिन्दु।” वफ़ाई ने उसे पढ़ा। वफ़ाई अपने बालों को खींचने लगी।
“यह तो आश्चर्य है, विस्मय है।” जीत ने वफ़ाई को उस विस्मय की अनुभूति करने दिया।
जीत जीप मैं बैठ गया, हॉर्न बजाने लगा। वफ़ाई भी जीप में बैठ गई। जीप मार्ग पर चलने लगी।
वफ़ाई की आँखों में अभी भी विस्मय था। जीत कोई गीत गा रहा था।
कुछ ही क्षणों में पर्वत दिखने लगा।

“गाँव को छोड़ने के पश्चात पहली बार किसी पर्वत को देख रही हूँ। हे काले पर्वत, तुम अदभूत हो।” वफ़ाई काले पर्वत से मोहित हो गई। वह किसी भिन्न जगत में चली गई। जीत ने उसे उस जगत में रहने दिया।
“जीत, जीप की गति बढ़ाओ ना। मैं शीघ्र ही…।” वफ़ाई लौट आई इस जगत में।
“वफ़ाई, पर्वत पर पहोंचने से पहले पर्वत के प्रत्येक कण की अनुभूति तुम ले सको इसी लिए मैं जीप धीरे धीरे चला रहा हूँ।”
जीप धीरे धीरे पर्वत के निकट जा रही थी। पर्वत वफ़ाई में धीरे धीरे उतर रहा था।
"जीत, जीप चल भी रही है अथवा स्थिर सी रुकी हुई है?”
“मैं तुम्हारी अधीरता समझ सकता हूँ।” जीप द्रुत गति से चलने लगी।
“रुको। रुको। जीत, रुको।” वफ़ाई सहसा चीखी। जीत ने जीप को रोक लिया।
“एक क्षण पहले तो तुम जीप की गति बढ़ाने को कह रही थी। क्या बात है?” वफ़ाई मौन थी। किन्तु पीछे से गाड़ियों के हॉर्न की ध्वनि आ रही थी।
“ओह, मैंने जीप बीच मार्ग पर रोक ली है। इसे एक तरफ ले लूँ।” जीत ने जीप को मार्ग से हटा लिया। सभी वहाँ से चले गए किन्तु वफ़ाई के मुख पर भाव अभी भी स्थिर थे। जीत उसे समझ नहीं पाया।
जीत जीप से बाहर आ गया। पर्वत के जिस बिन्दु को वफ़ाई देख रही थी जीत वहाँ देखने लगा।
‘वह तो मंदिर है। वफ़ाई इस मंदिर को ही देख रही है। इस मंदिर में क्या बात है जो वफ़ाई उसे देखते ही मौन हो गई?’
जीत ने जीप का द्वार खोला और वफ़ाई को बाहर आने को कहा। वह बाहर आ गई। वह अभी भी दुविधा में थी, मौन थी।
“वफ़ाई, कभी कभी मौन, रहस्य का सर्जन कर देता है। उसे शब्दों से भेदना ही उचित होगा।”
“जीत, तुम ठीक कह रहे हो। मैं भी उसे भेदना चाहती हूँ किन्तु विफल हो गई हूँ।”
“जब तुम किसी स्थिति को समझने की स्थिति में नहीं हो तो साथी से सहायता मांगनी चाहिए। स्वयं उस स्थिति से लड़ लो अथवा किसी पर उस का भार डाल कर निश्चिंत हो जाओ। पसंद तुम्हारी।”
“जीत, यह सुझाव है अथवा आमंत्रण?”
“दोनों। चलो कहो क्या बात है? समय व्यतीत होता जा रहा है। अनेक काम करने हैं हमें यहाँ।”
“वहाँ देखो। पर्वत पर एक मंदिर है।”
“है। तो क्या हुआ?”
“वह हिन्दू मंदिर है।”
“मंदिर हिंदुओं के ही होते हैं, चर्च इसाइयों के, मस्जिद मुस्लिमों की तथा गुरुद्वारे सिखों के ही होते हैं। तो?”
“किन्तु मैं तो मुस्लिम हूँ, हिन्दू नहीं।”
‘तो?”
“मंदिर के कारण मैं पर्वत पर नहीं आउंगी।”
“यदि किसी स्थान पर मंदिर अथवा अन्य धर्म का पवित्र पुजा स्थान होगा तो तुम वहाँ नहीं जाओगी। है ना?”
“हाँ, मैं सभी पवित्र स्थानो का सम्मान करती हूँ। तो उचित तो यही रहेगा कि मैं उस से दूर ही रहूँ।”
“तुम मानती हो कि तुम जहां जाओगी वहाँ यदि अन्य धर्म के स्थान होंगे तो तुम्हारा वहाँ जाना उस स्थान का अपमान होगा?”
“यही तो। तुम मेरी बात भली भांति समझ गए।”
“असत्य। बिलकुल असत्य बात कर रही हो तुम, वफ़ाई।”
“कैसे? क्या अर्थ है तुम्हारा?” वफ़ाई ने अधीरता दिखाई।
जीत हंस पड़ा।
वफ़ाई मन में बोली, जीत जब भी किसी गंभीर बात पर हंस देता है तब निश्चय ही उसके पास कोई सशक्त तर्क होता है। उसके पश्चात प्रतितर्क का अवकाश नहीं रहता। किन्तु इस बार तुम्हारे पास कोई तर्क नहीं है, जीत। इस बार मैं हार नहीं मानूँगी। तुम से तर्क करती रहूँगी।
जीत ने हँसना रोक लिया, “तुम्हारे पर्वत वाले गाँव में कोई मंदिर, चर्च अथवा अन्य धार्मिक स्थल है? अथवा केवल मस्जिद ही है?”
“हनुमानजी का तथा कोई देवी का एक मंदिर है।”
“कोई अन्य स्थान?”
“नहीं, और कोई नहीं।”
“तो तुम उस पर्वत पर नहीं जाती हो क्यों कि वहाँ मंदिर है।”
“ऐसा नहीं है। मैं मंदिर नहीं जाती, पर्वत पर तो जाती हूँ। मैं उसी पर्वत पर तो रहती हूँ जहां यह सब मंदिर है।”
“तो इस पर्वत पर जहां मंदिर है, जाने मैं क्या समस्या है?”
“किन्तु मैं मंदिर कैसे जा सकती हूँ?”
“धन्यवाद। तुम पर्वत पर तो आ रही हो।”
”किन्तु मैं मंदिर में प्रवेश नहीं करूंगी।”
“क्यों नहीं जाओगी? कोई रोकता है क्या? ऐसा कोई नियम है कि जो हिन्दू नहीं है वह मंदिर नहीं जा सकते? अथवा तुम्हारा धर्म तुम्हें अन्य धर्मों के स्थान पर जाने से रोकता है?” जीत का तर्क था।
“मैं नहीं जानती। किन्तु मैं कभी भी अन्य धर्मों के स्थान पर नहीं गई। वर्षों से, कहो की जन्म से आज तक, किसी ने मुझे ऐसा करने के लिए प्रेरित भी नहीं किया। ऐसा विचार करने की भी स्वतन्त्रता नहीं मिली कभी। यह विषय अस्पृश्य रहा है। इस पर बात करने

की भी अनुमति नहीं है।"
"कई बात ऐसी होती है जो हमने भूतकाल में नहीं की होती है, इसका अर्थ यह नहीं कि बाकी के जीवन में भी हम वह नहीं कर सकते अथवा नहीं करेंगे। जीवन के किसी भी बिन्दु पर कोई नई बात, कोई नया काम कर सकते हैं। तुम कभी मरुभूमि में नहीं आई, ना ही कभी इस रेत से संबंध था तुम्हारा। किन्तु आज तुम हो इस मरुभूमि में।"
"तुम सत्य कह रहे हो किन्तु एक मुस्लिम छोकरी होते हुए मुझे संकोच होता है।"
"गोड, अल्लाह अथवा भगवान कभी भी अन्य धर्म के भक्तों में भेद नहीं रखते। कोई दंड भी नहीं करते।"
"इसमें तुम्हारा पूर्ण विश्वास है? मैं पापी नहीं बनना चाहती।"
"तुम्हारे सभी पाप मैं मेरे माथे पर ले ने को तैयार हूँ। उसे मेरे माथे पर भेज दो। तुम्हारे सभी पापों को मैं धारण करता हूँ।"
"तुम बड़े कृपालु हो, जीत।" वफ़ाई ने स्मित किया।
"तो तुम पर्वत पर आ रही हो।"
"हाँ, किन्तु मंदिर में नहीं।"
"अब क्या हो गया? गई भेंस पानी में।"
"मैं छोकरी हूँ। ऐसे कई धर्म स्थल है जहां छोकरी अथवा स्त्री को प्रवेश नहीं दिया जाता। हमारे धर्म में भी यही नियम है। कई धर्मों में स्त्रीयों के अलग धर्म स्थल भी होते हैं।"
"तुम्हारी बात से सम्मत हूँ। किन्तु यह बात पुरानी हो गई। समय एवं विचार बदल चुके हैं। हिम खूब पिघल चुका है। अब यह प्रतिबंध हट गए हैं। तुम्हें अनुमति है। आशा है तुम्हारे सभी संशयों का समाधान हो गया होगा। तुम मेरे साथ मंदिर भी आ रही हो।" जीत जीप में बैठ गया, वफ़ाई की प्रतीक्षा करने लगा। वह अभी भी वहाँ खड़ी थी। उस की भाव भंगिमा कह रही थी कि जीप में चलने का उसका कोई आशय नहीं था। वह अभी भी कोई दुविधा में थी जिसे जीत समझ नहीं पा रहा था।

“अब क्या है तुम्हारे मन में?” जीप बंध कर के जीत बाहर आ गया। “अब चलो भी।”
जीत चाहता था कि वफ़ाई का हाथ पकड़ कर उसे जीप में बिठा दूँ किन्तु उसने वह विचार छोड़ दिया। वफ़ाई की प्रतीक्षा करने लगा।
“जीत, मैं हाईझ हूँ।” वफ़ाई ने लज्जा से कहा।
“वह क्या होता है?” जीत ने पूछा।
“जब कोई लड़की हेईझ में होती है तो उसे हाईझ कहते हैं।” वफ़ाई ने जीत से आँखें चुराते हुए कहा। वफ़ाई कहीं दूर पर्वत पर देख रही थी।
“यह नई दुविधा ले आई तुम। हाईझ तथा हेइझ। यह सब क्या है। मैंने यह शब्द कभी नहीं सुने। तुम्हें जो कहना हो स्पष्ट कहो।” जीत वफ़ाई के सामने खड़ा हो गया। वफ़ाई ने आँखें पर्वत से हटाकर मार्ग पर घूमा ली।
“यह सब मैं कैसे समझाऊँ तुम्हें?” वफ़ाई लज्जा से गुलाबी हो गई।
“तुम यदि नहीं समझाओगी तो मैं गूगल पर ढूंढ लेता हूँ।” जीत मोबाइल पर देखने लगा। वहाँ नेटवर्क नहीं था। वह ढूंढ नहीं पाया।
“चलो छोड़ो, हम पर्वत पर चलते हैं। समय दौड़ रहा है। हमें भी भागना पड़ेगा।” जीत जीप की तरफ बढ़ गया। वफ़ाई ने उसे रोक लिया, “जीत, समझा करो, मैं हाईझ में हूँ।”
“मैं समझने को तैयार हूँ किन्तु तुम समझाओ तब ना?”
वफ़ाई ने साहस जुटाया और सीधे ही जीत की आँखों में देखा।
“मैं मासिक में हूँ। इस मासिक को इस्लाम में हाईझ कहते हैं। और जो स्त्री हाईझ में होती है उसे हेईझ कहते हैं। मैं हेईझ हूँ।” वफ़ाई एक ही सांस में बोल गई।
कुछ क्षण मौन हो गई।
मैं मासिक के विषय में तो जनता हूँ किन्तु यह शब्द नए थे मेरे लिए। जीत मौन रहा।
“हाईझ में कुछ बातों पर प्रतिबंध होता है।” वफ़ाई ने मौन भंग किया।
“यह मुझे ज्ञात है। हिंदुओं में भी प्रतिबंध होते हैं। जो स्त्री मासिक में होती है उस का रसोई तथा मंदिर में प्रवेश निषेध होता है। मुख्य कक्ष में नहीं बैठ सकती। उसे किसी बंध कक्ष में ही रहना पड़ता है। किसी को स्पर्श नहीं कर सकती। यदि कोई उसे स्पर्श कर लेता है, तो वह व्यक्ति अपवित्र हो जाता है। उसे पवित्र होने के लिए स्नान करना पड़ता है। जब तक वह स्नान नहीं कर लेता, किसी अन्य को वह स्पर्श नहीं कर सकता। वह किसी खेल में अथवा साहसिक प्रवृति में भाग नहीं ले सकती। ऐसे अनेक प्रतिबंध है। इस्लाम में भी ऐसा है क्या?”
“लगभग ऐसा ही है। कुछ भिन्न हैं।”
“वह भिन्न नियम बता दो।”
“मैं प्रयास करती हूँ।” वफ़ाई ने कुछ याद करते हुए कहा, “पाँच से छ: निषेध है। हेईझ नमाझ नहीं कर सकती। कुरान को स्पर्श नहीं कर सकती। मस्जिद तथा धर्म स्थान के आसपास जा नहीं सकती। रोझा नहीं रख सकती …।’
“कितने सारे प्रतिबंध। कितने तर्क हिन नियम! मैं इस नियमों को नहीं मानता। ना ही उनका अनुसरण करता हूँ।”
“नहीं जीत, हमें नियमों का पालन करना होगा। इसके पीछे कोई तर्क अवश्य होगा। हमारे पैगंबर अथवा संतों ने जो नियम बनाए होंगे उसके पीछे तर्क होगा ही क्यों कि वह सब ज्ञानी थे। हमें उसका विरोध नहीं करना चाहिए।”
“मैं उनका विरोध नहीं कर रहा हूँ। मैं सभी नियम का पालन करने को तैयार हूँ। केवल उसके पीछे का तर्क समझा दो मुझे।”
“तुम्हारे शब्दों में विद्रोह की गंध आ रही है, जीत।”
“शब्द विचारों को व्यक्त करते हैं। यदि इसे तुम विद्रोह कहती हो तो हाँ मैं विद्रोह पर हूँ।”
“किसी धर्म की परंपरा, नियम तथा प्रतिबंधों के विरूध्ध विद्रोह करना पाप है। और पापी नरक में जाते है।”
“तुम नर्क अथवा स्वर्ग में विश्वास करती हो? वास्तविक जीवन के पश्चात जहां काल्पनिक दुख अथवा आनंद मिलता है उस नरक अथवा स्वर्ग का अस्तित्व है क्या? किसने देखा है? कौन जानता है?”
“जीत, तुम्हारे शब्दों से मुझे भय लगता है। मैं मेरे धर्म के विरूध्ध नहीं होना चाहती।” वफ़ाई के मुख पर भय की रेखाएँ स्पष्ट थी।
“मैं तुम्हारे अथवा मेरे अथवा किसी भी धर्म के विरूध्ध नहीं हूँ।”
“तो तुम विद्रोह पर क्यों हो?”
“मैं अतार्किक बातों के विरूध्ध हूँ। यह भिन्न बात है कि वह धर्म से जुड़ी है।”
“मेरे धर्म में विद्रोह को स्थान नहीं। धर्म की बातों पर हम प्रश्न नहीं कर सकते। अत: मैं उस का आँखें बंध कर अनुसरण करती हूँ।”
“किसी भी बात का इस प्रकार से अनुसरण मैं नहीं करता।”
“तुम उत्साह से भरे हो। यह उत्साह तुम्हें लंबा जीवन देगा। इस उत्साह से तुम सौ वर्ष तक जीवित रहोगे।”
“तुम बात से बच रही हो। अत: विषय बदल रही हो। सौ वर्ष तो क्या सौ दिवस के मेरे जीवन का विश्वास नहीं है मुझे।” जीत ने गहरी सांस ली। “हम हाईझ तथा हेईझ की बात कर रहे थे। इस पर्वत पर मंदिर में जाने की बात कर रहे थे। उस पर ही बात करें तो उचित रहेगा।”
“बात और तर्क नहीं करूंगी मैं। बस मैं मंदिर नहीं आऊँगी। यह अंतिम निर्णय है मेरा। तुम यदि जाना चाहो तो जा सकते हो, मैं यहीं तुम्हारी प्रतीक्षा करूंगी।”
“इन शब्दों का क्या अर्थ है? मैं अकेला नहीं जाऊंगा। तुम्हें भी मेरे साथ चलना होगा।”

“किन्तु जीत, समझा करो। मैं विवश हूँ। मुझ में साहस नहीं है कि...।”
“साहस? तार्किक बातों को स्वीकार करने का साहस नहीं है तुम में?”
“जीत...।”
“स्त्री का मासिक आना एक शारीरिक प्रक्रिया है। इस का धर्म से कोई संबद्ध नहीं है। यह शुध्ध शारीरिक घटना है। यह प्रकृति अथवा ईश्वर अथवा अल्लाह की एक व्यवस्था ही है।”
“किन्तु यह रक्त, इस रक्त का बहना...।”
“यह रक्त भी आत्मा की भांति पवित्र है। जब तुम किसी प्रेमी को रक्त से पत्र लिखती हो तो उसे शृंगारिक माना जाता है। पवित्र माना जाता है। संवेदना पूर्ण माना जाता है। उस पत्र का सम्मान होता है। यह रक्त जो बह रहा है वह उस बात का विश्वास दिलाता है कि एक नए जीवन को इस धरती पर जन्म देने के लिए स्त्री सक्षम है। कितना सुंदर, कितना शाश्वत है यह? इस रक्त तथा इस घटना से पवित्र क्या हो सकता है? आनंद तथा उत्साह से हमें इन क्षणों का स्वागत करना होगा। यही एक मात्र पवित्र घटना है जिस के माध्यम से ईश्वर हमें संकेत देता है कि उस ने मानव जाती पर से विश्वास नहीं खोया। वह इस धरती पर नए जीवन को भेजने के लिए उत्सुक है। ईश्वर के होने का यह सशक्त प्रमाण है। कितना सुंदर, कितना अदभूत है यह?” जीत ने कह दीया।
“जीत, इतने सुंदर एवं पवित्र शब्द मैंने कभी नहीं सुने। मुझे ऐसी अपेक्षा भी नहीं थी। कुछ कहने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है।” वफ़ाई कुछ क्षण मौन हो गई। जीत के शब्द वफ़ाई के कानों में प्रतिध्वनित होते रहे।
“जीत, तुम्हारा प्रत्येक शब्द मुझे दैवी अनुभूति करा रहा है। क्या तर्क दिया है तुमने ! मैं तुम्हारी शरण में हूँ।” वफ़ाई जीप की तरफ बढ़ी, “जीत, मैं तुम्हारे साथ चल रही हूँ। किसी भी स्थान पर, किसी भी स्थिति में। तुम तैयार हो? अब चलो भी, हमारे पास समय का अभाव है।” वफ़ाई जीप में बैठ गई, जीत भी। जीप पर्वत पर जा कर रुकी।
जीत ने मंदिर में प्रवेश किया, वफ़ाई ने भी। मंदिर खाली था, कोई भक्त नहीं थे। जीत मंदिर में तो प्रवेश कर गया किन्तु उसने प्रार्थना नहीं की। वह एक कोने में खड़ा हो गया और आस पास देखता रहा।
वफ़ाई किसी भी मंदिर में प्रथम बार आई थी। “जीत, यह कौन से भगवन का मंदिर है? इस भगवान का नाम क्या है?” वफ़ाई के प्रश्न में जिज्ञासा थी।
“क्या अंतर पड़ता है इस से? हमें भगवान को नाम नहीं देना चाहिए। भगवान भगवान होते हैं।”
“किन्तु कोई नाम...।”
“हम भगवान का नामकरण करते हैं यही तो भूल करते हैं। भगवान अविभाज्य है, अखंड है। जब हम उसे नाम देते हैं तब हम उसके चरित्र का भंजन करते हैं। उसे हम सीमित कर देते हैं। नाम देकर उसे विभाजित कर देते हैं। हम कहने लगते हैं कि यह मेरा भगवान है, वह तुम्हारा भगवान है। किन्तु ईश्वर तो एक ही है, सभी के लिए। ईश्वर को नाम कभी मत दो। बस उसकी पुजा करते रहो।” वफ़ाई नि:शब्द हो गई। वह भगवान की तरफ घूमी और हिन्दू स्त्री की भांति दर्शन करने लगी। वफ़ाई ने घंट बजाया। एक मधुर ध्वनि उत्पन्न हुई जो पर्वत की घाटियों में व्याप गई।
वफ़ाई ने दुपट्टे से माथा ढंका। भगवान के समीप गई। दो हाथ जोड़े तथा आँखें बंध कर के नमन किया। कुछ बोली और आँखें खोल दी। कुछ क्षण भगवान की मूर्ति का ध्यान करने लगी। वफ़ाई के तन एवं मन में कुछ तरंगे बहने लगी। वह आनंदित हो गई। वह मुड़ी, अपने माथे पर कुमकुम का तिलक लगाया।
प्रार्थना, अर्चना पूर्ण कर के वफ़ाई जीत की तरफ घूमी। वह अभी भी मंदिर के कोने पर खड़ा था। वफ़ाई की प्रत्येक प्रवृति को देख रहा था। स्मित कर रहा था।
वफ़ाई जीत के सामने थी। जीत ने उसे माथे से पाँव तक देखा। वह चकित था। वफ़ाई एक भिन्न युवति बन गई थी। प्रथम बार उसने माथे पर दुपट्टा ढंका था। ललाट पर तिलक था। उस की आँखों में दैवी ज्योति थी। गाल लाल थे। अधरों पर स्मित था।
“वाह। वफ़ाई तुम कुछ भिन्न ही हो गई हो। तुम नए अवतार में...।”
“जीत, तुमने मुझे मुसलमान से काफिर बना दिया।” वफ़ाई ने सस्मित कहा।
“वह मेरा काम नहीं है, ना ही मेरा उदेश्य।” जीत हंस पड़ा। मंदिर में आनंद व्याप्त हो गया।
भगवान भी आज आनंद में था क्यों कि प्रथम बार किसी भक्त ने उस से कुछ मांगा नहीं था। केवल जीवन के प्रत्येक क्षण के लिए भगवान का धन्यवाद किया था।
एक छोटा बालक मंदिर में प्रवेश कर गया। उसके मुख पर निर्दोष एवं वास्तविक स्मित था। वफ़ाई एवं जीत ने उस को देखा, उस बालक को स्मित दिया तथा मंदिर से बाहर निकल आए।
“जीत, हमारे मौलवी कहते थे कि यदि नमाझ के पश्चात तुम किसी हँसते हुए बालक को देखो तो विश्वास कर लेना कि अल्लाह ने तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार कर ली है।”
“अर्थात तुम्हारी प्रार्थना सफल हो गई।”
“किन्तु जीत, तुमने तो प्रार्थना नहीं की। मैंने देखा था कि तुम कोने पर खड़े थे और कोई पुजा....।”
“तुम अपनी पुजा कर रही थी कि मुझे देख रही थी? प्रार्थना के समय तुम ईश्वर के साथ नहीं थी। तुम्हारा ध्यान मेरे पर था। ऐसी प्रार्थना अच्छी नहीं होती।” जीत ने स्मित किया।
“मुझे मेरे मुद्दे से भटकाओ नहीं। तुम ने प्रार्थना क्यों नहीं की?”
“मैं किसी मूर्ति से प्रार्थना नहीं करता। भगवान जब स्वयं मिल जाएंगे तब उस से प्रार्थना कर लूँगा।”
“तुम और भगवान एक दूसरे से मिलोगे?”
“हाँ, अवश्य।”
“कब? कहाँ? कैसे?”
“शीघ्र ही। भगवान के घर।”
“तुम उपहास कर रहे हो मेरा तथा भगवान का। यह उचित नहीं है।”

“नहीं, मैं पूर्ण रूप से गंभीर हूँ। शीघ्र ही भगवान से मेरी भेंट होगी।” जीत ने गगन की तरफ हाथ हिलाये। जीत के मुख पर अज्ञात स्मित था जिसे वफ़ाई समझ नहीं पाई।
“वफ़ाई, यहाँ अनेक बातें हैं अनुभव करने की। मंदिर एवं भगवान को यहीं छोड़ देते हैं और पर्वत पर चलते हैं।" जीत वफ़ाई को पर्वत पर ले गया।

49

“यह चोटी साढ़े चार सौ मिटर की ऊंचाई पर है। यह कच्छ का सर्वोच्च सूर्यास्त बिन्दु है।” जीत बताने लगा।
वफ़ाई ने उसके शब्द नहीं सुने। वह पर्वत के चारों तरफ देख रही थी। वह मुग्ध थी, मोहित थी। उसे अपने ही पर्वत जैसे तरंग अनुभव हो रहे थे।
“हे पर्वत, मुझे यह कभी अपेक्षा नहीं थी कि सुनी मरुभूमि भी अपने अंदर इतना सौन्दर्य धारण कर के बैठी है।” वफ़ाई ने दोनों हाथ छाती पर रख दिये तथा पर्वत को नमन किया।
गगन स्वच्छ था। एक-दो छोटे सफ़ेद बादल भटक गये थे जो गगन में विचर रहे थे। वफ़ाई एवं जीत पर्वत की चोटी पर चल रहे थे।
“पर्वत के आस पास देखने के लिए यह स्थान उचित रहेगा।” दोनों वहीं रुक गए।
वफ़ाई ने 360 अंश अपनी आँखें घुमाँई। सभी दिशाओं में सौन्दर्य अपने यौवन पर था। बांयी तरफ हरियाली से भरी घाटी थी, ज्यादा गहरी नहीं थी किन्तु आकर्षक थी। घाटी में अनेक घूमाव थे जो तीक्ष्ण थे।
दायीं तरफ पानी था, जिस में तरंगे थी।
“क्या यह समुद्र है?” वफ़ाई ने जीत से पूछा।
“हाँ, यह अरब सागर है। यहाँ खाड़ी है। समुद्र का पानी यहाँ तक घुस आता है।”
“पर्वत के चरणों में सागर! यह तो अदभूत है जीत।”
“थोड़ा और दायीं तरफ घूमो, देखो तथा कहो क्या दिख रहा है?” वफ़ाई ने उस तरफ ध्यान किया।
“यह तो सफ़ेद मरुभूमि है।” वफ़ाई नाच पड़ी।
“बिलकुल सही। उसे देखते रहो।”
वफ़ाई देखती रही। सूरज पश्चिम की तरफ गति कर रहा था। सूर्य किरणें सफ़ेद मरुभूमि पर प्रतिबिम्बित हो रही थी।
“सफ़ेद रेत पर पीली किरणें! वाह, जैसे सफ़ेद रेत पीला सोना हो गया हो। कैसा चमक रहा है!“ वफ़ाई मंत्र मुग्ध थी।
“थोड़ा और दाहिने घूमो, वहाँ देखो। पहाड़ियों की शृंखला दिख रही है?” जीत ने आदेश दिया।
“अरे हाँ। कितना सुंदर है। चलो वहाँ चलते हैं।” वफ़ाई उत्तेजित थी।
“यह जानकार मन तरंगित हो गया कि तुम अभी भी पर्वत से प्रीत करती हो। किन्तु यदि हमें वहाँ जाना हो तो हमारे पास पर्वतारोहण की क्षमता होनी चाहिए। तुम में है क्या?” जीत ने वफ़ाई की आँखों में चमक देखि। “तुम तो पर्वत कुमारी हो, तुम कर सकती हो।”
“हाँ। पर्वत पर रहने का इतना तो लाभ बनता है। वहाँ जाने का कोई मार्ग है क्या?”
“नहीं, वहाँ जाने का कोई मार्ग अथवा पगडंडी नहीं है।”



"ओह...।" वफ़ाई निराश हो गई।
"निराश ना हो। पर्वत का आनंद लेने के कई मार्ग है। वफ़ाई, तुमने 'धोलावीरा' का नाम सुना है, जो सिंधु संस्कृति का नगर था?"
"उत्खनन से मिला नगर?"
"हाँ, वही। भारत की प्राचीन नगर संस्कृति का नगर।"
"किन्तु यहाँ उस का उल्लेख क्यों?"
"यह पर्वत शृंखला के पार वह 'धोलावीरा' नगर स्थित है।" जीत ने संकेत किया।
"क्या बात है? यदि ऐसा है तो वहाँ चलते हैं और देखते हैं? मुझे मेरे दैनिक के लिए कहानी मिल जाएगी।"
"ओ तस्वीरी पत्रकार, मैं इतिहास के प्रति तुम्हारे उत्साह तथा उस नगर के प्रति तुम्हारे स्नेह की प्रशंसा करता हूँ। किन्तु वफ़ाई, अभी वहाँ जा पाना संभव नहीं।"
"इस लिए कि सूर्यास्त होने को है? मैं अंधकार तथा मार्ग के एकांत से भय नहीं रखती।"
"तुम साहसी छोकरी हो।"
"अवश्य। विशेष में तुम मेरे साथ हो। मुझे किसी से कैसा भय?"
"धन्यवाद, मुझ पर विश्वास रखने के लिए। धोलावीरा तक जाने के लिए हमें दो सौ किलोमीटर की यात्रा करनी पड़ेगी। तो फिर कभी चलेंगे।"
वफ़ाई तृषा भरी द्रष्टि से पर्वत को देखती रही।
"यह एक स्थान है जहां समुद्र, मरुभूमि तथा पर्वत एक साथ बसे हैं। जीत, यह अनुपम है। मुझे इस स्थान से परिचय करवाने के लिए तुम्हारा धन्यवाद।" जीत ने स्मित दिया। "क्या मैं यहाँ सूर्यास्त तक रह सकती हूँ?"
"नहीं। सूर्यास्त को अभी दो घंटे बाकी है और इतने लंबे समय तक हम यहाँ नहीं रुक सकते।"
"नहीं? पर्वत, गगन, यह सौन्दर्य तथा तुम। इन सब के साथ दो घंटे तो समय का केवल एक अंश मात्र है। हम सूर्यास्त तक रुकते हैं और इस सौन्दर्य का पान करते हैं। क्या इस घटना में तुम्हारी कोई रुचि नहीं है?"
"इन सब में मेरी सदैव रुचि रही है जो तुम जानती हो।"
"तो तुम लौटने को क्यों उतावले हो रहे हो?"
"हमारी प्राथमिकता कुछ और है। इस समय हमें यहाँ से चलना होगा।"
"प्रकृति के सिवा इस धरती पर हमारी कोई प्राथमिकता नहीं हो सकती, जीत।"
"इन बातों में व्यर्थ समय व्यय ना करो। तुम मेरा तथा मेरे शब्दों का अनुसरण करो। चलो मेरे साथ।" जीत चलने लगा। वफ़ाई जीत के पीछे चलने लगी।
एक स्थान पर जीत रुका, "यहाँ से लगभग चार किलोमीटर का एक छोटा सा मार्ग है। यह मार्ग चक्रीय है जो पर्वत को अपने अंदर समेट लेता है। हमें उस पर चलना है, तुम आओगी?" जीत ने वफ़ाई को आमंत्रित किया।
"ओह, चार किलोमीटर लंबा मार्ग?"
"लंबा है तो छोड़ देते हैं। हम नहीं...।"
"नहीं, नहीं। मैं तो उस मार्ग पर चलने को उत्सुक हूँ। कहाँ से प्रारम्भ करना है?" वफ़ाई चलने लगी।
"वफ़ाई, इस तरफ से चलो।" जीत एवं वफ़ाई मार्ग पर चलने लगे।
"यह मार्ग संकरा है। लगभग सात-आठ फिट चौड़ाई होगी इसकी। यह सीधा-सरल मार्ग नहीं है। यह पथरीला है। यह पत्थरों का रंग सोने जैसा पीला है। यह मार्ग असमान भी है। कहीं नीचे की तरफ जाता है तो कहीं फिर ऊपर की तरफ। यह धूल से भी भरा है।" जीत वफ़ाई को मार्ग की जानकारी देने लगा।
"देखो यहाँ देखो। अनेक औषधीय वनस्पति यहाँ लगाई गई है। प्रत्येक पर उस वनस्पति के विषय में लिखा हुआ मिलेगा जो विद्यार्थीयों के लिए अत्यंत उपयुक्त है।" जीत कहे जा रहा था। दोनों ने उन वनस्पतियों को देखा। वफ़ाई ने कोई विशेष रुचि नहीं दिखाई।
"जीत, यह प्रकृति, घुमावदार घाटियां, खड़क, धूल, पथ्थर, गगन, यह मार्ग, यह शांति, यह मौन। सब कुछ अनूठे है। सुंदर है। मोहक है। आकर्षक है। हमें अपनी तरफ खींच रहे हैं। मन तो करता है कि इस मार्ग पर जीवन भर चलते रहें। इस मार्ग में विलीन हो जाएँ।"
जीत मौन ही चल रहा था। वफ़ाई भी मौन हो गई। अब दोनों मौन थे। सारा पर्वत मौन था।
वहाँ पूर्ण मौन था। पूर्ण शांति थी। इतनी शांति कि कोई भी व्यक्ति अपने हृदय की ध्वनि भी सुन सके।
वहाँ कोई ध्वनि थी तो वह पवन की थी। खड़कों की थी। घाटी की थी। वह प्रत्येक ध्वनि स्पष्ट थी। प्रत्येक ध्वनि का अपना संगीत था। अपना लय था। अपना ताल था। वहाँ शाश्वत शांति थी। दैवी मौन था। फिर भी प्रत्येक वस्तु उन दोनों से बातें कर रही थी, बिना शब्द के, बिना ध्वनि के।
डेढ़ घंटे चलने के पश्चात मार्ग पूर्ण हुआ। जहां से प्रारम्भ किया था वहीं आ गए दोनों।
मोहक मार्ग पूर्ण हो चुका था। मौन यात्रा पूरी हो गई थी। पर्वत से हो रही मौन बातें समाप्त हो गई थी। किन्तु दोनों अपने अपने जगत में खोये हुए थे। मूर्ति की भांति उस मार्ग को देखते खड़े थे। कई क्षण वह वहीं खड़े रहे। अब मार्ग उन दोनों के भीतर चल रहा था।
"देखो, सूर्यास्त हो रहा है...।" कोई बोला। इस ध्वनि ने दोनों का ध्यान भंग किया। दोनों ने पश्चिम की तरफ देखा। दोनों के अधरों पर स्मित था।
सूर्य स्वयं के अस्त की तैयारी कर रहा था। पीला, बड़ा गोला क्षितिज से कुछ ऊपर था। वह तेजोमय था। क्षण प्रति क्षण वह समुद्र के प्रति गति कर रहा था।
"जीत, यह सूर्य समुद्र में आत्महत्या करने जा रहा है अथवा स्नान करने?"
जीत ने उत्तर नहीं दिया।
"सूरज बिलकुल भयभीत नहीं है, अत: मोहक लग रहा है। गगन भी रंग बदल रहा है। श्वेत से पीला, पीले से नारंगी। कहीं कहीं

गुलाबी भी। रंगीन किन्तु बादल रहित गगन।” वफ़ाई मन ही मन बोली, मौन हो गई।
वफ़ाई सूर्यास्त की क्षणों में मग्न हो गई। वह जीत, आसपास, लोग, पर्वत, घाटी, सब कुछ भूल गई। वह सूर्यास्त की उस घटना का आनंद ले रही थी जो उस के पर्वतीय गाँव में कवचित ही होती थी। जीत उसे बिना व्यवधान के निहारता रहा।
सूर्य, क्षितिज तथा वफ़ाई के बीच तादात्म्य रच गया जो कई क्षण तक रहा। अंतत: सुरज अस्त हो गया। लाल तथा नारंगी गगन काले रंग में बदलने लगा। अंधकार प्रवेश करने लगा। दोनों घर लौट आए। वापसी यात्रा अर्थपूर्ण मौन के साथ सम्पन्न हुई।

50

रात्री के अंधकार में घर की भित्ति से परे देखते हुए जीत स्वयं से बातें कर रहा था।
वहाँ अंधकार है। क्या यह रात्री के कारण है?
दिवस के प्रकाश में भी तो वहाँ....।
वह अंधकार नहीं एकांत होता है।
क्या अंतर है अंधकार तथा एकांत में? दोनों स्थिति में रंग एवं प्रकाश का कोई अर्थ नहीं होता।
तुम उस बिन्दु को क्यों देखते हो जो एकांत से भरा है? अंधकार से भरा है? जहां सब कुछ स्थिर है?
तो? कहाँ देखूँ?
घर के अंदर, भीत के इस तरफ झाँको। जहां वफ़ाई है। जहां साथी है। जहां प्रकाश है। जहां जीवन की तरंगें है।
“काले पर्वत के प्रवास का कौन सा हिस्सा सबसे सुंदर लगा, जीत?” भित्ति के इस पार से वफ़ाई ने प्रश्न पूछा और झूले पर बैठ गई।
भीत से बाहर झांक रहे जीत को वफ़ाई के इन शब्दों ने घर लौटा दिया। वह मौन रहा। समय चलता रहा।
वफ़ाई ने धैर्य खोया, जीत के समीप गई, “जीत, घर लौट आओ।” जीत तंद्रा से जागा।
“मैंने तुम्हें कुछ कहा। तुमने सुना?”
“नहीं तो? कहो, पुन: कहो।”
“काले पर्वत के प्रवास का कौन सा हिस्सा सबसे सुंदर लगा, जीत?” वफ़ाई ने पुन: कहा।
जीत हंस पड़ा। उसका हास्य मरुभूमि में प्रतिध्वनित हो गया।
“हमारा प्रवास तो एक ही हिस्से में था, अनेक हिस्सों में नहीं। मुझे तो पूरा प्रवास ही अद्भुत लगा।”
“मेरा तात्पर्य है कि कौन सी क्षण तुम्हें उत्तम क्षण लगी?”
“मेरे लिए प्रत्येक क्षण का अनुभव अच्छा था, प्रत्येक क्षण विशेष थी। वह एक पूर्ण अनुभव था जिसे मैं टुकड़ों में विभाजित नहीं कर सकता।”
“यह तो राजनीतिक उत्तर हो गया।”
“तो तुम ही कहो न तुम्हारे इस प्रश्न का उत्तर क्या है?”
“मुझे तो वह मार्ग पसंद आया जिस पर चलते हुए हमने सारे पर्वत की परिक्रमा की थी । तुम्हारा क्या विचार है?”
“तुम्हें वह क्यों सबसे अच्छा लगा?”
“उस मार्ग पर व्याप्त मौन के कारण।”
“तो तुम्हें मौन पसंद है, तुम मौन से प्रीत करती हो।”
“हाँ, अवश्य। जब हम मौन होते हैं तब हम स्वयं से बात करते है। आसपास की निर्जीव वस्तुओं से बातें करते हैं। और रसप्रद बात यह भी है कि यह निर्जीव वस्तुएं भी ह मारे साथ बातें करती है। यह भित्ति, यह झूला, तूलिका, केनवास, रेत, मरुभूमि; ऐसी सभी निर्जीव वस्तुएं हमसे बात करने को उत्सुक रहती है। तुम जानते हो? वह भी बातें करना चाहती है। हमसे बातें करने की प्रतीक्षा में होती हैं। और जब हम मौन धारण कर लेते हैं तब वह बोलना प्रारम्भ करती हैं। उन के पास कई कथाएँ होती हैं हमें कहने के लिए, किन्तु हम उस पर ध्यान ही नहीं देते। हम सदैव उन की ऊपेक्षा ही करते हैं।” वफ़ाई कहते कहते भीत की दूसरी तरफ चली गई।
“तुम्हारा तात्पर्य है कि निर्जीव वस्तुओं को भाषा होती है, शब्द होते हैं, वाचा होती है?”
“इतना ही नहीं, इन्हें भावना भी होती है। संवेदना होती है। स्नेह भी होता है। उनको हृदय भी होता है।”
“तो पर्वत कुमारी का कहना है कि निर्जीव वस्तुएं बिलकुल निर्जीव नहीं होती। वह जीवन से भरी होती है। वह शुष्क नहीं होती। गति हिन नहीं होती। वह आंदोलित होतीहै। कथाओंसे भरी होती है।”
“बिलकुल। यदि तुम उस हिस्से को चूक गए हो तो तुम पर्वत के हार्द से वंचित हो गए हो।”
“तो मेरा प्रवास व्यर्थ ही गया?”
“नहीं तो।”
“तो उन शब्दों का अर्थ तुम मुझे शब्दों से समझाओगी अथवा मौन से?” जीत ने पूछा।
“नहीं, तुम भूल गए कि हमने वार्तालाप की नयी भाषा ढूंढ ली थी। रंगों की भाषा, चित्रों की भाषा।”
“किन्तु इस क्षण मैं शब्दों के ही शरण में जाना चाहूँगा।”
“ठीक है, कहो जो कहना हो।” वफ़ाई प्रतीक्षा करने लगी।
“खड़क, पत्थर, मार्ग , धूल आदि निर्जीव वस्तुओंसे बातें करना मैं चूक गया।”
“तो दु:खी होने की आवश्यकता नहीं है। तुम्हें वह अवसर मिलेगा। कुछ भी नहीं छूट गया।”
“वह कैसे?”



“मौन की खोज में हमें कहीं जाने की आवश्यकता नहीं। यहाँ मौन सदैव व्याप्त रहता है। जैसे वह हमारा साथी हो। निर्जीव वस्तुएं भी यहीं है। और तुम भी यहीं हो।” वफ़ाई ने कहा।
“कौन सी ऐसी निर्जीव…।”
“यह भित्ति, धरती, मार्ग, तूलिका, रंग, चित्राधार, केनवास, झूला, रेत के कण, मरुभूमि, अंधेरी रात्रि, गगन…।”
जीतने आस पास देखा। उसे अनेक निर्जीव वस्तुएं दिखी।
“चलो मौन का अभ्यास करते हैं तथा इन निर्जीव वस्तुओं की ध्वनि सुनते हैं।” वफ़ाई ने सूचना दी और वह मौन हो गई। जीत भी।
मौन समय के लंबे अंतराल के पश्चात जीत ध्यानवस्था से बाहर आ गया। जीत के शरीर में विशेष ऊर्जा प्रवाहित होने लगी। मन आनंद का अनुभव करने लगा।
वफ़ाई अभी भी ध्यान मुद्रा में झूले पर थी। बाकी सारा संसार स्थिर था, मौन था।
जीत वफ़ाई की प्रतीक्षा करने लगा, किन्तु वफ़ाई का ध्यान संपन्न नहीं हुआ। अंतत: जीत ने धैर्य खोया और वफ़ाई के कानों में जाकर पूछा, “वफ़ाई, तुम्हारा जन्म दिवस कब है?”
वफ़ाई ध्यान से चौंक कर जागी, “क्या?”
“मैंने पूछा, तुम्हारा जन्मदिवस कब है?” जीत ने फिर पूछा।
“ओ श्रीमान, क्या आशय है तुम्हारा? मुझे तो कोई…।”
“कोई मलिन आशय नहीं है। मेरा विश्वास करो।”
“तो तुम मेरी जन्म तिथि तथा मेरी आयु क्यों पूछते हो? तुम्हें ज्ञात होगा कि स्त्री की आयु कभी नहीं पूछा करते।” वफ़ाई के मुख पर कृत्रिम रोष था।
“मुझे ज्ञात है। किन्तु तुम मार्ग भटक गई हो। मैंने तुम्हारी जन्म तिथि अथवा आयु कभी नहीं पूछी।
मैंने केवल जन्म दिवस पूछा है। मेरी धारणा है कि जन्म दिवस कभी किसी स्त्री की आयु का रहस्य प्रकट नहीं करता।”
“यह बात है? तो मेरा जन्म दिवस एक अप्रेल को है।”
“पहली अप्रैल? तुम उपहास कर रही हो।” जीत हंसने लगा।
“नहीं, मैं सत्य कह रही हूँ। पहली अप्रेल ही है मेरा जन्म दिवस।”
“ठीक है। मैं तुम्हारे जन्म दिवस पर तुम्हें कुछ उपहार देने को विचार कर रहा हूँ।”
“सुनकर अच्छा लगा। उपहार में क्या होगा?”
“कोई वस्तु उपहार में नहीं होगी।”
“ओह। मैं तो किसी विशेष वस्तु की अपेक्षा कर रही थी।”
“यह विशेष ही है जिसका भौतिक अस्तित्व नहीं है। इसे आकार, रंग तथा सुगंध नहीं है। तथापि यह सुंदर है। रंगों से भरी है। सुगंध से भरी है।”
“क्या है वह? जीत मैं अधीर हो रही हूँ।“
“तुम पहली अप्रेल तक प्रतीक्षा नहीं कर सकती?”
“स्वाभाविक रूप से नहीं। मुझे अभी बता दो और हो सके तो दे भी दो।”
“ठीक है। मेरा विचार है कि यदि हम किसी को कोई विशेष उपहार देना चाहते हैं तो उसे ’मौन’ का उपहार देना चाहिए।”
“अर्थात? मौन?”
“मौन ही तो है उत्तम उपहार। मौन ऐसी सशक्त वस्तु है कि उसमें सभी कुछ समाविष्ट होता है। उस में स्नेह, उत्साह, शब्द, वाक्य आदि भी होते हैं। मौन के अनेक मित्र होते हैं, मौन के शत्रु भी। मौन में अनेक घटनाएँ होती हैं, संगीत होता है, रंग होते हैं, भावनाएं होती हैं।”
“रुको रुको। जीत, रुको।” वफ़ाई ने जीत को रोका। जीत ने वफ़ाई को देखा, वह दुविधा में थी। मुख पर अनेक भाव थे जिसे देखकर जीत आनंद लेने लगा।
“जीत, तुमने कहा कि मौन के पास सब कुछ है। तुमने उस में से कई का नाम भी लिया। किन्तु धीरे धीरे कहो। मैं उन शब्दों तथा भावों का आनंद लेना चाहती हूँ।”
“आओ झूले पर बैठो।” वफ़ाई झूले पर बैठ गई, जीत समीप खड़ा हो गया।
“वफ़ाई, तुमने मुझे मौन का अभ्यास करवाया। हमने मौन रखा। मुझे मौन ध्यान से भी बढ़कर लगा। मौन सर्व श्रेष्ठ लगा। और उपहार में तो वही देते हैं जो सर्व श्रेष्ठ होता है।”
“अर्थात तुम्हारे पास जो सर्व श्रेष्ठ है वह मौन है।” जीत हंसने लगा, वफ़ाई भी।
“मेरे जन्म दिवस पर इस उपहार के लिए धन्यवाद, जीत।” वफ़ाई ने गगन कि तरफ हाथ उठा कर ऊपरवाले का भी धन्यवाद किया।
दोनों मौन हो गए। मौन रात भर वहीं रुक गया।

नींद से उठकर वफ़ाई द्वार पर खड़ी हो गई। बाहर अभी भी रात्रि का साम्राज्य था। सब कुछ शांत था, स्थिर था। रात्रि धीरे धीरे गति कर रही थी।
वफ़ाई ने झूले को देखा। जीत वहाँ बैठा था। "जीत सोया नहीं? अथवा जाग गया? ऐसा क्यों?" वफ़ाई मन ही मन बोली। वफ़ाई ने घड़ी देखि। रात्रि अधिक व्यतीत हो गई थी।
आधी से अधिक रात्रि बीत चुकी है किन्तु जीत जाग क्यों रहा है? वह कोई गहन चिंतन में है अथवा चिंता में? कुछ क्षण मैं जीत को देखती हूँ। समझ में तो आए कि बात क्या है?
वफ़ाई जीत को निहार रही थी उस बात से जीत अनभिज्ञ था।
गगन में चंद्र था किन्तु जीत गगन के किसी अंधेरे बिन्दु को देख रहा था। झूले का एक स्थान खाली था।
झूले का एक स्थान सदैव खाली ही रहता है। कभी दोनों स्थान भरे नहीं होते। जब भी मैं झूले पर बैठती हूँ जीत खड़ा रहता है। और जब वह झूले पर होता है उसने कभी मुझे साथ बैठने के लिए नहीं कहा।
वफ़ाई, तुमने भी तो कभी जीत के समीप बैठने का प्रयास नहीं किया ना ही पास बैठने के लिए जीत को आमंत्रित किया।
तूम ठीक कह रही हो। मैं अभी जा कर उस खाली स्थान पर बैठ जाती हूँ। किन्तु...।
किन्तु क्या?
मुझे संदेह है कि ऐसा करने पर जीत ...।
जीत उठ खड़ा हो जायेगा? अथवा यह भी हो कि...।
कि जीत को वह पसंद ना आए तो?
तो? तो क्या तुम जीत को खो दोगी?
हो सकता है, किन्तु मैं जीत को खोना नहीं चाहती। वह दूर रहे तो कोई बात नहीं किन्तु समीप जाने की लालसा में कहीं मैंने उसे खो दिया तो? नहीं वह दूर ही ठीक है। दूर से ही उसकी सुगंध आती रहे। मैं नहीं बैठूँगी झूले पर, जीत के समीप।
वफ़ाई, तुम सम्बन्धों का सम्मान करना जानती हो। दूर रहकर भी तुम प्रसन्न हो। किन्तु एक बात तो है, कि जब दो व्यक्ति हो, दोनों युवा हो, दोनों विजातीय हो, दोनों एक दूसरे के साथ प्रसन्न हो, झूले पर दो व्यक्तियों के लिए स्थान हो और झूले का एक स्थान सदैव खाली रहे। क्या यह विचित्र बात नहीं है?
हाँ, बात विचित्र तो है ही किन्तु मुझे चिंता है कि...।
तुम चिंता मत करो, तुम्हें कुछ नहीं खोना होगा। यदि जीत को तुम्हारे प्रति सम्मान होगा, कुछ स्नेह होगा, कोई भाव होगा तो वह ...।
मुझ में साहस नहीं है। मैं भीरु हूँ।
भीरु व्यक्ति कभी कोई यूध्ध नहीं जीतता।
यह यूध्ध नहीं है वफ़ाई।
यह स्नेह है, प्रिये। तुम प्रेम में हो वफ़ाई।
यह सत्य नहीं है।
भागो नहीं, स्वीकार करो। यह प्रेम है कोई पाप नहीं। अपनी ही ध्वनि को सुनो। उसे समझो तथा अनुसरण करो। यह ध्वनि वास्तविक है।
"नहीं, नहीं। मैं नहीं कर सकती, नहीं कर सकती।" वफ़ाई चीख पड़ी। शांत एवं अंधेरी रात्रि में वफ़ाई के शब्द प्रतिध्वनित होने लगे।
जीत ने उन शब्दों को सुना। उसने उस दिशा में देखा। वफ़ाई घर के द्वार पर खड़ी थी।
"वफ़ाई, तुम? इस समय?" जीत ने प्रश्न किए।
वफ़ाई भी जीत के प्रश्नों से विचलित हो गई। उस की तंद्रा टूट गई।
जीत वफ़ाई को देखता ही रहा। वफ़ाई द्वार पर खड़ी थी। वह ना तो घर के भीतर थी ना ही घर से बाहर थी। वह रात्रि के वस्त्र में थी। जीत ने वफ़ाई को इस वस्त्र में पहले कभी नहीं देखा था। रात्रि के समय वफ़ाई कक्ष में सोती थी और जीत झूले पर। जीत कभी भी रात्रि के समय वफ़ाई के कक्ष में नहीं गया। ना ही वफ़ाई रात्रि के समय घर से बाहर आती थी।
वफ़ाई ने पाजामा तथा टॉप पहना था। काला पाजामा ढीला था, किन्तु पाँव को पूरा ढँक रहा था। पाजामा में लाल फूल अंकित थे। टॉप गुलाबी था, जो लंबा था, पाजामा को थोड़ा ढंक रहा था। टॉप बिना बाजुओं के था। वफ़ाई के दोनों हाथ अनावृत थे। जीत ने वफ़ाई के खुल्ले हाथों को देखा। वह स्निग्ध थे, रेशमी थे, हिम की भांति श्वेत थे। उसकी कलाई पर घड़ी बंधी थी जिस के पास नारंगी रुमाल बंधा था।
वफ़ाई की खुली आँखों में निंद्रा थी। अधर आधे खुले थे, जैसे कुछ कहना चाहते हो। किन्तु शब्द अधरों के बीच कहीं अटक से गए थे। गालों पर गुलाबी आभा थी। उसके बाल खुले हुए थे तथा लटें गालों को तथा कानों को स्पर्श कर रही थी।
वफ़ाई ने दाहिना हाथ द्वार पर टिकाया था। बांया हाथ गालों पर उड़ रही लटों पर था। दोनों हाथ हिम की भांति शुध्ध थे, नग्न थे।
वफ़ाई की इस अदभूत मुद्रा को जीत ने पहले कभी नहीं देखा था। वह उसे देखते ही रहा, बिना पलक झपकाए।
वफ़ाई ने स्मित दिया किन्तु जीत उस स्मित का प्रतिभाव नहीं दे सका। वह अभी भी वफ़ाई को निहार रहा था।
लगता है जीत मेरी मुद्रा पर स्थिर हो गया है। जीत, तुम मुझे देखते रहो। अनुमति है तुम्हें। बस यही तो क्षण है जब तुम मुझे इतने स्नेह से देख रहे हो।
मेरे अंदर यह क्या प्रवाहित होने लगा है? यह कैसी तरंगें है? क्या यह समीर है? क्या यह प्रकाश है? अथवा अंधकार है? क्या यह लाल है, नीला है, काला है अथवा गुलाबी? क्या यह बादल है अथवा वर्षा है? यह चन्द्र है अथवा तारें? समुद्र है अथवा नदी है? झरना है अथवा गीत है? संगीत है अथवा श्वास? यह अग्नि है? उष्ण है अथवा शीतल है? मीठा है अथवा कड़वा? क्या है यह? मैं नहीं

जानती। किन्तु कुछ तो है जो मेरे भीतर है। जो अभी अभी जन्मा है।
वफ़ाई ने आँखें बंध कर ली और उसी मुद्रा में खड़ी रही।
जीत, मुझे देखो। पूरी तरह से देखो। पूरे मन से देखो। मैं तो सदैव चाहती थी कि तुम मुझे इसी प्रकार से देखो। किन्तु तुमने नहीं देखा। तुम आज जिस प्रकार से मुझे निहार रहे हो उसे देखते लगता है कि अल्लाह ने मेरी अभिलाषा पूरी कर दी है।
वफ़ाई मूर्ति कि भांति खड़ी रही। जैसे किसी शिल्पी ने किसी पत्थर से कोई मनोहर शिल्प रचाया हो और वह शिल्प जीवित हो गया हो। एक सुंदर प्रतिमा, एक अदभूत मुद्रा।
जीत संमोहित था।
मैं किस समुद्र के तरंगों में बह रहा हूँ? क्या यह वफ़ाई का सौन्दर्य है अथवा उसकी आभा? यह कैसा क्षण है? यह कैसी सभा है जहां प्रीत के शृंगारिक स्वर सुनाई दे रहे हैं।
झुकी झुकी सी दृष्टि...
गीत तो वफ़ाई को भी सुनाई दे रहा था। उसके स्वर थे
दबा दबा सा सही दिल मैं प्यार है कि नहीं?
वोह एक पल जिस में मोहब्बत जवान होती है,
उस एक पल का तुझे भी इंतझर है कि नहीं?
गझल पूरी हो गई। सभी स्वर रात्रि में विलीन हो गए। जैसे सब कुछ शांत हो गया।
मेरी प्रतीक्षा पूरी हो गई। यह क्षण आ गया है। यह क्षण स्थिर हो जाय, यहीं रुक जाय। हवा के कण कण में प्रेम बह रहा है। जीत की आँखों में भी। मेरी तरफ निहारने में भी तुम्हारा स्नेह छलक रहा है। तुम्हारे मौन में भी स्नेह है जो तुम कभी शब्दों से नहीं कह सके, जीत। अंतत: तुम्हारे हृदय में प्रेम जाग ही गया। प्रेम, प्रेम, प्रेम। मेरे चारों तरफ मुझे प्रेम ही का अनुभव हो रहा है। यदि यह अनुभव स्थिर हो जाय तो मैं मूर्ति बन कर ऐसे ही खड़ी रहूँ, जीवन भर।
वफ़ाई स्थिर सी खड़ी रही।
"वफ़ाई, तुम वहाँ क्या कर रही हो? तुम चाहो तो बाहर आ सकती हो।" जीत के शब्दों ने वफ़ाई के कानों को जागृत कर दिया। एक मूर्ति में जीवन आ गया।
मैं भीग कैसे गई? यह किस वर्षा का बादल जैसे मुझे स्पर्श करके, मेरे आरपार निकल गया? यह कैसी वर्षा है?
वफ़ाई ने आँखें खोली, सामने जीत दिखाई दिया।
जीत अभी भी वफ़ाई को निहार रहा था। उसकी आँखों में कोई आमंत्रण था। जीत ने अभी अभी शब्दों से जो आमंत्रण दिया था वही आमंत्रण था।
वफ़ाई जीत के समीप गई, उस की आँखों में देखा। वह आँखें वफ़ाई को ही देख रही थी। दोनों की आँखों में एक ही प्रश्न था, 'तुम अभी सोये क्यों नहीं हो?'
किसी ने उत्तर नहीं दिया इस प्रश्न का।
जीत उसे झूले पर बैठने के लिए कहेगा इस आशा में वफ़ाई झूले के समीप जा खड़ी हो गई। किन्तु जीत का ऐसा कोई आशय नहीं था।
अपेक्षा विफल हो जाने पर वफ़ाई ने साहस कर के पूछा, "जीत, तुम्हारे समीप झूले पर मैं बैठ जाऊँ?" वह झूले की तरफ बढ़ गई।
"अवश्य, तुम यहाँ बैठ सकती हो।" वफ़ाई प्रसन्न हो गई।
यह तो चमत्कार हो गया।
वफ़ाई झूले पर बैठ गई। जीत झूले को छोडकर उठ गया।
जीत क्या कर रहे हो? एक तरफ तो तुम मुझे यहाँ बैठने को कहते हो और तुम स्वयं ही उठ जाते हो? बात क्या है?
वफ़ाई ने जीत के भावों को देखा। मुख पर कोई क्रोध नहीं था। जीत शांत था, स्थिर था।
"जीत तुमने झूला क्यों छोड़ दिया? दो व्यक्तियों के लिए पर्याप्त स्थान है इस झूले पर। तुम्हें उठना नहीं था। आखिर बात क्या है?"
जीत निरुत्तर रहा। वह वफ़ाई को देखता रहा, स्मित करता रहा।
"जीत, मेरे साथ, मेरे समीप इस झूले पर बैठो ना।"
"मैं वहाँ कैसे बैठ सकता हूँ?"
"क्यों नहीं? कोई समस्या है? क्या मेरे तन से दुर्गंध आती है? अथवा मेरा सान्निध्य ..?"
जीत ने गहरी सांस ली, उसे कुछ क्षण धारण कर रखा, फिर छोड़ा, "मुझे संकोच होता है। मेरे भीतर कुछ है जो तुम्हारे समीप आने से मुझे रोक रहा है।"
"क्या है वह?"
"मैं नहीं जानता। कुछ तो है जिसे मैं परास्त नहीं कर सकता।" जीत ने नि:श्वास लिया।
"तो तुम्हें उस 'कुछ' से यूध्ध करना होगा। उसे परास्त कर दो। मैं तुम्हें मेरे समीप चाहती हूँ, इस झूले पर।"
जीत ने गहरी सांस ली तथा आँखें बंध कर ली। वफ़ाई के मन में विचार चलने लगे।
जीत मैं जानती हूँ कि तुम्हारे भीतर कोई यूध्ध चल रहा है। यह यूध्ध भीषण है, पीड़ादायक भी। तुम प्रत्येक पीड़ा को सहते हुए भी यूध्ध लड़ रहे हो, मेरे कारण। मेरे कारण ही तुम उस यूध्ध से हार नहीं मान रहे हो। सबसे कठिन यूध्ध होगा यह तुम्हारे लिए।
वफ़ाई ने मौन ही समय को बहने दिया।
अंतत: जीत के अधर हिले, जैसे जीत बाहर आने के लिए उत्सुक शब्दों को तैयार कर रहा हो। जीत ने आँखें खोली। अधर अभी भी बंध थे।
जीत झूले के समीप आया, झूले के सरिये को पकड़ा, क्षण भर रुका और झूले पर बैठ गया। दोनों झूले पर थे किन्तु दोनों के बीच कुछ अंतर था।

जीत, मुझे विश्वास नहीं था कि तुम मेरे समीप, मेरे साथ ऐसे बैठोगे। तुमने मेरी मनसा पूरी कर दी।
जीत, मुझे तुम से कई प्रश्न करने हैं। अनेक उत्तर पाने हैं। किन्तु मैं मौन ही रहूँगी। मैं बातों में इन अमूल्य क्षणों को व्यर्थ नहीं करना चाहती। मौन, तुम यहाँ रह सकते हो। वफ़ाई ने अपने विचारों को भी मौन कर दिया।
दोनों झूले पर थे, दोनों के पाँव झूले को गति में रख रहे थे। झूला तालबध्ध गति कर रहा था। झूले के प्रत्येक आवन जावन में शीतल मंद पवन दोनों को स्पर्श करता था।
जीत, तुम्हारे सान्निध्य की सुगंध मुझे आनंदित कर रही है। या अल्लाह यह सुगंध जीवनभर आती रहे। आमीन।
दोनों मौन थे। गगन को देख रहे थे। गगन में दो तीन बादल थे। आधी रात्रि का चंद्रमा था। चाँदनी भी थी और तारें भी थे। बादल धीरे धीरे चंद्रमा के प्रति गति कर रहा था, जैसे चंद्रमा को पकड़ कर उसे अपने अंदर छुपा देना चाहता हो। तारे इतनी मंद गति कर रहे थे जैसे वह स्थिर से हो। बादलों की भांति तारों का कोई आशय नहीं था चंद्रमा को पकड़ने का।
चन्द्र, तारें तथा बादल गतिमान थे फिर भी गगन शांत था, मौन था। किसी मुनि की भांति इन सभी गतियों से विरक्त था। सारी मरुभूमि भी शांत थी।
जीत, मैं इन क्षणों में बातें करना चाहती हूँ। इन क्षणों को पूर्ण रूप से जीना चाहती हूँ। किन्तु तुम हो कि मेरी तरफ देखते भी नहीं हो। कहीं तुम भूल तो नहीं गए कि मैं भी यहाँ हूँ तुम्हारे साथ, इस झूले पर। हम दोनों साथ साथ बैठे हैं, एक दूसरे के निकट बैठे हैं। तुम्हारा यह मौन मुझे विचलित कर रहा है, जीत। कुछ तो बोलो।
वफ़ाई ने जीत का ध्यान खींचने हेतु गहरी तथा तीव्र सांस ली किन्तु विफल रही।
कुछ तो करना चाहिए। मैं क्या करूँ?
वफ़ाई, तुम उसे नींबू सूप दे सकती हो।
उतम विचार। इसी कारण कुछ शब्द तो कहे जाएंगे। वफ़ाई कल्पना में खो गई।
जीत, हमारे दोनों के हाथ में नींबू सूप का पात्र है। दोनों उसे घूंट घूंट भर पी रहे हैं। एक दूसरे से वार्तालाप कर रहे हैं। झूले पर बैठे बैठे एक दूसरे को निहार रहे हैं। झूला मंद मंद गति कर रहा है। मेरा दुपट्टा बार बार तुम्हें स्पर्श कर रहा है। तुम दुपट्टे को देख रहे हो किन्तु उसे रोक नहीं रहे हो। तुम्हें भी दुपट्टे का स्पर्श अच्छा लगता होगा। मेरी लटें मेरे गालों पर उड़ रही है। कुछ लटें अतिक्रमण करती हुई तुम्हें भी स्पर्श कर रही है। कितना सुंदर क्षण है यह!
वफ़ाई विचारों से जागी, उस ने अपनी हथेली में देखा। हाथ खाली थे। नींबू सूप का कोई पात्र नहीं था। वफ़ाई ने जीत के हाथ देखे। वह भी खाली थे।
मैंने तो नींबू सूप बनाया ही नहीं। चलो अब बना लेती हूं।
नहीं, मैं नहीं जाऊँगी।
क्यों?
उसे बनाने में कुछ समय लगेगा। इतना समय मैं जीत से दूर रहूँगी। और इस समय में जीत ने विचार बदल दिया तथा झूले से उठ गया तो? तो वह फिर झूले पर मेरे साथ बैठेगा क्या? नहीं, मैं इन क्षणों को, इस अवसर को खोना नहीं चाहती। मैं बिना सूप के प्रसन्न हूं। किन्तु बिना जीत के नहीं।
तो बैठी रहो झूले पर, जीत के सामीप्य की अनुभूति करती रहो।
अवश्य। क्यों कि यही क्षण उत्तम है मेरे लिए।
अल्लाह शुक्र है तेरा कि मैं प्रेम में हूं। तुम कहते हो न कि प्रेम ही प्रार्थना है। प्रेम ही बंदगी है। प्रेम ही नमाझ है। प्रेम ही इबादत है। प्रेम ही पुजा है। प्रेम ही अल्लाह है। इस प्रेम के माध्यम से मैंने अल्लाह को पा लिया। या अल्लाह, कल प्रभात में मैं मेरी अंतिम नमाझ पढ़ूँगी। वह भव्य होगी। उस के पश्चात मैं कभी नमाझ नहीं करूंगी। मेरी अंतिम नमाझ का स्वीकार करना।
समय के अनेक खंड व्यतीत हो गए। रात्रि अपने अंतिम पड़ाव पर थी। वह प्रभात में परीवर्तित होने जा रही थी। समय के इस प्रवाह में एक दूसरे की निकटता से दोनों प्रसन्न थे। झूला दोनों के सान्निध्य का मौन दर्शक बनकर झूलता रहा।
गगन में एक पंखी उड़ा। वफ़ाई तथा जीत ने उसे देखा। पंखी अनेक बार उड़ा। फिर मधुर गीत गाने लगा- प्रभात का गीत, प्रेम का गीत। अनेक पंखी भी उस पंखी के साथ गीत गाने लगे। सारी दिशाएँ गाने लगी। पंखीयों के मधुर गीत से गगन भर गया। पूर्व से प्रकाश ने प्रवेश किया।
“वफ़ाई, पूरी रात्रि हमने झूले पर व्यतित कर दी।” जीत झूले से उठ गया।

“जीत, अभी ना जाओ। कुछ क्षण ओर बैठो मेरे समीप।” वफ़ाई ने जीत का हाथ पकड़ लिया। जीत ने वफ़ाई के हाथ को देखा, वफ़ाई के मुख के भावों को देखा तथा घात देकर अपना हाथ छुड़ा लिया। जीत दूर चला गया।
वफ़ाई ने घात का अनुभव किया, स्वप्न से जाग गई। निंद्रा टूट गई। वफ़ाई ने आँखें खोल कर देखा। वह बंध कक्ष में अपनी शैया पर थी। कक्ष में चारों तरफ देखा। वहाँ झूला भी नहीं था, जीत भी नहीं था। प्रति दिन की भांति वह अकेली ही थी।
वफ़ाई ने गहरी सांस ली, आँखें बंध कर ली, “सुंदर स्वप्न पूरा हो गया। मीठा स्वप्न पंखी बनकर उड़ गया।” वह खड़ी हुई, गवाक्ष से बाहर देखा। “यहाँ अभी भी रात्रि ही है। प्रभात कहीं नहीं।” वह उठी, द्वार तक दौड़ गई। “जीत तो झूले पर निंद्राधीन है। सब कुछ

वैसा ही है। स्वप्न में देखा था वैसा कुछ भी नहीं। स्वप्न। मन को लुभाने वाला स्वप्न हाथों से कहीं छुट गया।"
वफ़ाई स्वयं से बातें करनी लगी।
'वफ़ाई, वह केवल स्वप्न था। तुम्हारा स्वप्न कभी पूरा नहीं होगा।'
'स्वप्न ही था किन्तु सुंदर था। सत्य जैसा प्रतीत हो रहा था। श्रध्धा रखो, एक दिवस यह स्वप्न पूरा होगा।'
'मुझे तो कोई संकेत नहीं मिल रहे। तुम इस युवक के पीछे समय व्यर्थ ही खो रही हो। स्वप्न सदैव स्वप्न ही रहते हैं। वास्तविकता से उसका कोई संबंध नहीं होता है।'
'प्रत्येक वास्तविकता प्रथम तो एक स्वप्न ही होता है। केवल स्वप्न में ही यह शक्ति है कि वह उसे वास्तविक बना सके। मेरा स्वप्न एक दिवस सत्य होगा। कहते हैं ना कि प्रभात में देखे स्वप्न सत्य हो जाते हैं। ऐसा ही होगा।'
'किन्तु मुझे तो निकट भविष्य में ऐसे कोई संकेत नहीं मिल रहे।'
'वह क्षण के बीज अभी अपने गर्भ में है, अंकुरित हो रहे हैं। उसे उगने में समय लगेगा। मैं उस की प्रतीक्षा करूंगी। मैं समय व्यर्थ नहीं खो रही, मैं तपस्या कर रही हूँ।'
'ओह, तो तुम तपस्विनी हो?'
"चलो फिर कभी बात करूंगी तुम से। मेरे जागने का समय हो रहा है। नींबू सूप तैयार करना है। प्रभात के सूर्य का स्वागत करना है। पंखियों से बाते करनी है। प्रभात के क्षणों का आनंद लेना है। नमाझ करनी है। जीत से बातें करनी है।'
वफ़ाई उठी। सूरज आलसी बालक की भांति धीरे धीरे उग रहा था। वफ़ाई नमाझ में व्यस्त हो गई।
'या अल्लाह, तुम्हारी अनुकंपा, जो मुझे सदैव मिलती रही है, के लिए मैं धन्यवाद करती हूँ। किन्तु मैं नमाझ छोड़ रही हूँ। नमाझ से भी पवित्र कोई बात है, वह है प्रेम। प्रेम ही सर्वोच्च दैवी अनुभव है इस धरती पर। प्रेम की मेरी जो झंखना है वह मुझे जीत में दिख रही है। मैं नहीं जानती कि मैं जीत से प्रेम प्राप्त कर सकूँगी अथवा नहीं। किन्तु अब से प्रेम ही मेरे लिए नमाझ है। प्रेम ही प्रार्थना है। प्रेम ही पुजा है मेरे लिए।
नमाझ तो दिवस में पाँच बार ही करती रही किन्तु प्रेम तो मैं दिवस तथा रात्रि करती रहूँगी। प्रत्येक क्षण मेरी प्रेम से सभर होगी, यही मेरी प्रार्थना होगी।'
'वफ़ाई, तुम्हें विश्वास है कि वह तुम्हारी प्रार्थना सुनेगा।? तुम व्यर्थ ही...।'
'अल्लाह, मुझे तुम पर विश्वास नहीं है। तुम सुनते हो मेरी प्रार्थना? तुम स्वीकार करते हो? कब? कैसे? कहाँ? कोई नहीं जानता। फिर भी नि:सहाय मनुष्य तुम पर अपना समय व्यर्थ ही खोता है ना? मुझे तो यह भी ज्ञात नहीं कि तुम हो अथवा नहीं। तुम सत्य हो अथवा भ्रांति?'
'प्रेम भ्रांति के सिवा कुछ नहीं। कोई उसे प्राप्त नहीं कर सका।'
'प्रेम यदि भ्रांति है तो तुम से अधिक सत्य से भरी भ्रांति है। किसी दिवस प्रेम को पाने की संभावना है किन्तु कोई नहीं जानता कि तुम्हें कैसे प्राप्त किया जा सकता है। आज तक तुम किसी को नहीं मिले।'
'तुम मेरे अस्तित्व पर संदेह कर रही हो, वफ़ाई।'
'अवश्य। मुझे तुम्हारे अस्तित्व पर संशय है। किसने बनाया तुम्हें? हमने। हमने एक भ्रांति का सर्जन किया और उसे भगवान, ईश्वर, अल्लाह जैसे नाम दे दिये। मैं तुम में विश्वास नहीं रखती। अत: यह मेरी अंतिम नमाझ है। यह हमारा अंतिम मिलन है, अंतिम वार्तालाप है।'
'मैं सत्य हूँ, भ्रांति नहीं। मेरे पर श्रध्धा रखो।'
'तुम अपना अस्तित्व सिध्ध कर दो। तुम जीस दिवस यह सिध्ध कर दोगे उसी दिवस मैं तुम्हारे पास लौट आऊँगी। मैं उसी दिवस नमाझ करूंगी। तब तक...।'
अल्लाह के साथ वफ़ाई के वार्तालाप को सुने बिना ही जीत वफ़ाई को निहार रहा था।
जीत ने चित्राधार पर केनवास शीघ्रता से बदल दिया। रंगों को मिश्रित किया, केनवास पर तूलिका के कुछ प्रहार किए और एक चित्र रच दिया। फिर झुले पर जा बैठा।
वफ़ाई ने अपने हाथ पसार कर अल्लाह का धन्यवाद किया। अंतिम नमाझ पूर्ण की। वह प्रसन्न थी। उसने जीत को स्मित दिया। वह स्मित साधारण नहीं था, अलौकिक था। भिन्न तेज, भिन्न आभा वफ़ाई के मुख पर थी। जब मनुष्य अपने ही ईश्वर से लड़ता है, तर्क करता है तब उसके मुख पर दैवी आभा प्रकट हो जाती है। वही तेज वफ़ाई के मुख पर था। जीत ने भी वफ़ाई को स्मित दिया।
वफ़ाई ने केनवास को उड़ती आँखों से देखा और दूर चली गई। उसकी उस उड़ती द्रष्टि ने किसी आकृति को पकड़ लिया था। वह केनवास पर लौटी, फिर से उसे देखा। वह उस चित्र को देखती ही रह गई।
नमाझ करती हुई युवति का चित्र सामने था। वह स्थिर सी रुक गई, जैसे कोई प्रतिमा हो।
"यह तो अभी अभी रचा गया है। कितनी सुंदर रचना है यह। जैसे कोई कन्या आँखों के सामने ही नमाझ कर रही हो। कितना सुंदर, कितना वास्तविक! किन्तु यह कन्या तो, अरे, यह तो मैं ही हूँ। यह तो मेरा ही चित्र है।"
वफ़ाई जीत की तरफ मुड़ी, "हे चित्रकार, तुमने तो मेरा ही चित्र मेरे सामने रख दिया। इतना सुंदर, इतना मनोहर। जीत, मैं तुम्हें लाख लाख धन्यवाद देती हूँ।" वफ़ाई प्रसन्न हो गई। वह पुन: चित्र को देखने लगी, चित्र में खो गई।
जीत, झूले पर शांत बैठा था। वफ़ाई की क्रिया एवं प्रतिक्रिया, आनंद एवं आभा को देख रहा था। उसने वफ़ाई के आनंद में विक्षेप नहीं डाला।
वफ़ाई अपने ही चित्र के मोह में बंधी रही लंबे समय तक। सूर्य क्षितिज के समीप आ चुका था किन्तु अभी उगा नहीं था। वह धीरे धीरे

अपनी किरणें जुटा रहा था। पंखियों की एक टोली गीत गाती हुई आ गई, जीत के आसपास बैठ गई, कलरव करने लगी।
जीत झूले से उठा, पंखियों के साथ खेलने लगा। वफ़ाई ने खाली झूले को देखा और उस पर बैठ गई। जीत वफ़ाई से एक दो हाथ के अंतर पर ही था, पंखी भी। जीत के समीप होने का अनुभव करने लगी, वफ़ाई।
"जीवन के यह क्षण अमूल्य है।" वफ़ाई उन क्षणों को जीने लगी।
वफ़ाई ने नींबू सूप बनाया, दोनों ने साथ में उसे पिया और अपने अपने कार्य पर लग गए। दोनों चित्र रचने लगे।

53

"जीत, मेरे चित्र को देखो तो। देखो, मैंने आज कुछ नया किया है।" वफ़ाई उत्साह से भरी थी। जीत वफ़ाई के केनवास को देखने लगा। वफ़ाई झूले पर बैठ गई।
जीत ने केनवास को ध्यान से देखा। केनवास खाली था, श्वेत था। उस पर किसी भी रंग का एक भी बिन्दु नहीं था। वह सूरज के किरणों की भांति श्वेत था, गगन की भांति खाली था।



जीत ने पुन: केनवास को देखा यह निश्चित करने के लिए कि कहीं कुछ छुट तो नहीं गया।
“नहीं, कुछ भी नहीं है यहाँ। केनवास पर एक रेखा भी नहीं है। एक बिन्दु तक नहीं है।” जीत स्वत: बोला।
“वफ़ाई, क्या है? यहाँ तो कुछ भी नहीं है।” जीत ने प्रश्न भरी द्रष्टि वफ़ाई पर स्थिर कर दी।
“यह कैसे संभव हो सकता है? कुछ तो है वहाँ। अनेक चित्र हैं वहाँ। केनवास पर सब कुछ है। तुम ध्यान से देखो, पुन: देखो, जीत।”
जीत ने वफ़ाई के कहने पर पुन: केनवास को देखा। परिणाम वही था।
“मैंने पुष्टि कर ली है। वहाँ कुछ भी नहीं है। केनवास पूर्ण रूप से कोरा है, खाली है। यहाँ आकर देख लो अथवा मुझे केनवास पर चित्र दिखा दो।”
“देखो, वहीं है।”
“तुम मेरा उपहास कर रही हो? झूले से उठो, यहाँ आओ और मुझे तुम्हारा कला से भरा कार्य दिखाओ। तुम्हारे विशेष चित्र को दिखाओ।” जीत चित्राधार के एक तरफ़ खड़ा हो गया। वफ़ाई केनवास के समीप आ गई।
“दिखाओ मुझे, केनवास पर कुछ है क्या? कहाँ है तुम्हारा चित्र?” जीत अधीर हो गया।
“हे भगवान।” वफ़ाई बोल पड़ी, “मेरा कार्य कहाँ गया? जीत, कहीं तुमने मेरा केनवास बदल तो नहीं दिया?”
“नहीं, मैंने ऐसा नहीं किया। मुझे लगता है तुम मेरे साथ कोई...।”
“मेरा विश्वास करो, जीत। मैंने कुछ चित्र रचा था किन्तु अभी वह दिख नहीं रहा। मुझे लगता है कि वह अद्रश्य हो गया है।” वफ़ाई ने गंभीरता से कहा।
“ठीक है, मैं मान लेता हूँ कि तुमने कुछ चित्र रचा था। कहो, तुमने किसका चित्र बनाया था?”
“मैंने मेरे स्वप्न को चित्रित किया था।”
“तो कहाँ है वह? मुझे दिखाओ।”
वफ़ाई ने गगन को, बादलों को तथा सूर्य को देखा। अपने हाथ हिलाते हुए कहने लगी, “हो सकता है पवन के साथ, इस बादलों के साथ, यह सूरज के साथ वह कहीं उड़ गया।” जीत भी गगन को देखने लगा।
“उन बादलों को देखो। देख रहे हो ना तुम?” वफ़ाई कहने लगी, “उस पर ध्यान दो। तुम्हें वहाँ मेरा स्वप्न दिखाई देगा। हाँ, वह वहीं है, वहीं, वहीं। देखो ना।” वफ़ाई ने दूर गगन मे बादलों की तरफ हाथ खींच दिया।
“मुझे मूर्ख ना बनाओ, वफ़ाई।”
“मैं तुम्हें मूर्ख नहीं बना रही। मैं गंभीर हूँ। मैंने केनवास पर मेरे स्वप्न को रचाया था। मैं असत्य नहीं कह रही। मेरा विश्वास करो।”
“कोई अपने स्वप्न को कैसे चित्रित कर सकता है? तुम असत्य कह रही हो।” जीत के शब्दों में रोष था।
“जीत, स्वप्न के पंख होते हैं। है ना?”
“तो? क्या?”
“जिसे भी पंख होते हैं वह उड़ जाते हैं। जैसे मेरा स्वप्न।”
“स्वप्न कभी श्वेत – श्याम नहीं होते। उसे रंग होते हैं। वह रंगीन होते हैं। जो भी केनवास पर रंगों से प्रकट होता है, वह केनवास पर अपना प्रभाव छोड़ जाता है। उसे केनवास पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। किन्तु तुम्हारे केनवास पर तुम्हारे स्वप्न की एक भी रेखा अथवा एक भी बिन्दु तक नहीं। केनवास पर तुमने कभी कोई स्वप्न नहीं चित्रित किया।” जीत रुक गया।
वफ़ाई हंसने लगी। वह हास्य मीठा था। वफ़ाई के हास्य से जीत सदैव पिघल जाता था, आज भी पिघल गया। वफ़ाई के साथ वह भी हंसने लगा।
वफ़ाई ने हँसना रोका और गंभीर होते हुए कहा, “यही तो। मैं अपने स्वप्न को चित्रित नहीं कर सकी।” वफ़ाई ने नि:श्वास छोड़ा। निराशा उसकी आँखों में स्पष्ट उभर आई थी।
जीत उन आँखों को देखता रहा। उन आँखों में एक गहन समुद्र था जिस में जीत डूबता गया। उन आँखों में कुछ खो देने का भाव था। कुछ छूट जाने का भाव था जो उसके लिए अत्यंत अमूल्य था। उन आँखों की पीड़ा जीत अनुभव करने लगा।
“तुम क्यों तुम्हारे स्वप्न को चित्रित नहीं कर सकी?”
वफ़ाई ने जीत की आँखों में देखते कहा, “सूरज की प्रथम किरण के साथ मेरा स्वप्न उड़ गया। जैसे ही मैंने प्रभात में आँखें खोली, वह अद्रश्य हो गए। सब चले गए। सब कुछ खाली हो गया। यही कारण था कि मैंने केनवास को खाली रखा था। खाली खाली स्वप्न, खाली खाली केनवास; सब कुछ खाली खाली।” वफ़ाई अपनी खाली हथेलियों को देखने लगी। उस हथेली के खालीपन को जीत ने अनुभव किया।
जीत वफ़ाई को झूले तक ले गया। वफ़ाई झूले पर बैठी। जीत समीप खड़ा रहा। वफ़ाई को उसने पानी दिया। वफ़ाई धीरे धीरे स्वस्थ होने लगी। जीत शांत होकर प्रतीक्षा करने लगा।

“स्वप्न क्या होते हैं? कैसे दिखते हैं? उनका रंग कैसा होता है? कहाँ से वह आते हैं? क्यों आते हैं? कहाँ चले जाते हैं? वह अपने साथ क्या लाते हैं? हम से वह क्या छिन ले जाते हैं? यह स्वप्न, जैसे कोई पहेली हो। स्वप्न होते हैं किन्तु देखे नहीं जाते। उसे देखना हो तो बंध कर लो आँखें और यदि आँखें खुल गई तो वह उड़ जाते हैं। खुल्ली आँखों से उसे क्यों नहीं देख सकते? किसी वस्तु की भांति उसे अनुभव नहीं कर सकते। उसे स्पर्श नहीं कर सकते। उससे स्नेह नहीं कर सकते। उसे चूम नहीं सकते। उसे आलिंगन नहीं दे सकते। उसके साथ खेल नहीं सकते। उसके साथ बात नहीं कर सकते। उसके साथ गीत नहीं गा सकते, नृत्य नहीं कर सकते। क्यों उसे छाती से नहीं लगा सकते? क्यों उसे पकड़ नहीं सकते? क्यों उसे अपनी मुट्ठी में जकड़ नहीं सकते? अंतत: यह स्वप्न है क्या?” वफ़ाई के शब्दों में पीड़ा थी।
“स्वप्न कोई भेद है, कोई रहस्य है। किन्तु स्वप्न सदैव सुंदर होते हैं। हमें उसे प्राप्त करने का प्रयास करना होगा। इस की यही सुंदरता है कि उसे देखने के लिए आँखें बंध करनी पड़ती है किन्तु वह प्राप्त तो खुली आँखों से ही होता है। स्वप्न चंचल होते हैं, नाशवंत होते हैं। वह अल्पजीवी होते हैं। यदि हम उसे पकड़ने में, उसे धारण करने में चूक जाते हैं तो वह अद्रश्य हो जाते हैं, छटक जाते हैं। हमें उस के पीछे दौड़ना होगा। वफ़ाई, हमें उसे पकड़ना होगा। हमारे दौड़ने पर भी यह निश्चित नहीं है कि उसे हम पा सकेंगे अथवा नहीं।” जीत ने कहा।
“अर्थात स्वप्न भी प्रीत जैसे होते हैं। यदि उचित क्षण में उसे पकड़ लिया तो वह तुम्हारा हो जाएगा, और यदि वह क्षण चूक गए तो सदा के लिए उसे खो देते हैं हम। जीत, यह स्वप्न वास्तविक भ्रमणा ही है।”
“वास्तविक भ्रमणा क्या होती है? दोनों विरूध्ध होते हैं।” जीत ने पूछा।
“कुछ भ्रमणा वास्तविक रूप से भ्रमणा ही होती है। कुछ वास्तविकता, वास्तव में ही वास्तविक होती है। किन्तु स्वप्न वास्तविक भी होते हैं, भ्रमणा भी। उनका अस्तित्व होता है इस लिए वह वास्तविक होते हैं। किन्तु उसे प्राप्त करना कठिन होता है। यही कारण है कि हम मानने लगते हैं कि स्वप्न का अस्तित्व नहीं होता और वह केवल भ्रमणा ही होती है। वर्षों तक उसके पीछे दौड़ने के उपरांत भी हम उसे पकड़ नहीं सकते। भ्रम का एक आवरण होता है, जिसके हटते ही वास्तविकता हमारे सामने आ जाती है जहां हमारे स्वप्नों का कोई स्थान नहीं होता। तब हमें लगता है कि हम छले गए हो, ठगे गए हो। हमारे ही स्वप्न, हमारी ही वास्तविकता एवं हमारी ही भ्रमणा हमें छल जाते हैं।”
“वफ़ाई, इस तरह छला गया व्यक्ति क्या करेगा?”
“एक तो वह क्रोधित हो जाता है और पूरे विश्व से धृणा करने लगता है, स्वयं से भी। दूसरा...।”
“दूसरा क्या?” जीत ने उत्कंठा प्रकट की।
“दुसरा, वह अपने ही रचे जगत को पीछे छोड़ देता है और ऐसे स्थान पर भाग जाता है जहां कुछ भी ना हो। मित्रों को, परिवार को, संपत्ति को, सब को छोड़ देता है।”
“कहाँ चला जाता है? किस स्थान पर भाग जाता है?”
“जंगल में, पहाड़ाओं में, गुफाओं में तो कोई मरुभूमि में।” वफ़ाई ने जीत की आँखों में गहरे भाव से देखा। जीत वफ़ाई की उस द्रष्टि को सह नहीं सका। उसने मुख केनवास की तरफ घूमा लिया। केनवास अभी भी खाली था, जीत की आँखों की भांति।
“क्या थे तुम्हारे स्वप्न जिसे तुम प्राप्त नहीं कर सके, जिसके कारण तुम सब कुछ छोड़ कर इस मरुभूमि में आ गए?” वफ़ाई ने जीत के मन पर घात कर दिया।
“वह अतीत है, जो पीछे छुट गया है। मैं उसे छोड़ चुका हूँ। वह नष्ट हो चुका है, वह भस्म हो चुका है। हमें उसे छोड़ देना चाहिए, उसका उत्खनन नहीं करना चाहिए।”
“क्यों नहीं करना चाहिए?”
“जब हम अतीत को खोदते हैं तो हमारे हाथ हमारे स्वप्नों की राख, हमारे बीते हुए कल की राख ही हाथ लगती है।”
“जीत, फीनिक्स पंखी अपनी ही राख से पुन: जन्म लेता है। हम तो मनुष्य हैं। फिनिक्ष पंखी से कहीं अधिक सशक्त।”
“यही तो भ्रांति है। इस धरती पर सबसे दुर्बल प्राणी मनुष्य ही है।”
“तुम सत्य से भाग रहे हो, जीत। वास्तविकता से हम पलायन नहीं कर सकते। हम सबसे भाग सकते हैं किन्तु अपने ही मन से नहीं

भाग सकते। वह सदैव हमारे साथ…।"
"मैंने वचन दिया है कि उचित समय आने पर मैं मेरा पूरा अतीत तुम्हारे सामने रख दूंगा। समय की प्रतीक्षा करो, वफ़ाई।"
"वह समय कब आएगा?"
"तुम इस मरुभूमि को छोड़ोगी उस से पहले। तुम मुझे छोड़ दोगी उससे पहले।"
"अर्थात, तुम्हारे अतीत के उस रहस्य को जानने के लिए मुझे तुम्हारा त्याग करना होगा? क्या यह आवश्यक है? साथ रहते हुए उन क्षणों को बाँट नहीं सकते?"
"वफ़ाई, उचित समय की प्रतीक्षा करो।"
"मान लो कि मैं यहीं रह जाऊं सदा के लिए। तो? तो तुम कभी भी मुझे तुम्हारे स्वप्नों की कहानी नहीं कहोगे?"
"मैं नहीं जानता। मुझे इतना ज्ञात है कि सब को जाना होता है। सब किसी ना किसी को छोड़ जाते हैं। कोई सदा के लिए नहीं रहता। तुम कब तक रहोगी मेरे साथ? एक महिना? दो महिना? अथवा एक साल?"
"जीत, तुम पुन: भ्रांति में फंस गए हो। अपनी धारणा से मेरा आकलन ना करो। हो सकता है कि मैं यहाँ पूरा जीवन रुक जाऊँ। तुम मुझे…।" वफ़ाई ने शब्द अधूरे छोड़ दिये, स्मित करने लगी।
"यदि तुम यहाँ सदा के लिए रहना चाहती हो तो इसका अर्थ है कि तुम मेरे अतीत को जानने में रुचि नहीं रखती।" जीत भी हंसने लगा।
"तुम्हारे अतीत को जान लेने के बाद तुम्हारे साथ रहना संभव नहीं होगा? मुझे तुम्हारे अतीत से कोई भय नहीं है।"
"मुझे ज्ञात है। वफ़ाई तुम पागल हो गई हो, तुम बावली हो गई हो।"
"कुछ दिवस पहले तो मैं बावली नहीं थी। किन्तु मुझे स्वीकार करने दो, मैं अब बावली हूँ।"
"क्या तात्पर्य है तुम्हारा, वफ़ाई?"
"तुमने मुझे बावली बना दिया है। मुझे कहने दो कि तुमने मेरे बावलेपन को जन्म दिया है। इस के लिए तूम उत्तरदायी हो।" वफ़ाई मुक्त मन से हंसने लगी।
वफ़ाई झूले पर से उठी, मार्ग पर दौड़ गई, चीखती गई।
"मैं पागल हूँ, मैं बावली हूँ। हे मरुभूमि तुम सुन लो। मैं बावली हूँ। मैं पागल हूँ। रेत की प्रत्येक कण सुन लो, जान लो। वफ़ाई नाम की एक छोकरी पागल हो गई है, बावली हो गई है…।"

55

जीत वफ़ाई को देखता रहा। वह मार्ग पर दौड़ रही थी, जीत से दूर जा रही थी। जीत की आँखों से ओझल हो गई, रेत से भरे मार्ग पर कहीं खो गई।

समय रहते वफ़ाई लौट आई। जिस मार्ग से बावली बनकर वफ़ाई दौड गई थी, जीत अभी भी वहीं देख रहा था। बल्कि, जीत वफ़ाई के लौटने की प्रतीक्षा कर रहा था।

"मेरी प्रतीक्षा कर रहे हो तुम जीत, तुम ने मुझे मोह लिया। कितना अदभूत अनुभव होता है जब कोई तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हो। समय के कुछ क्षण व्यतीत होने पर भी जीत, तुम वहीं खड़े हो, वही प्रतिक्षा भरी मुद्रा में।" वफ़ाई स्वयं से कहने लगी।

"मेरे लिए समय कहीं गया ही नहीं। वह जैसे स्थिर हो गया हो। मेरी हथेली से एक भी क्षण सरका नहीं है, वफ़ाई।" जीत भी स्वयं से कहने लगा।

"कितनी सुंदर अनुभूति है?"

वफ़ाई रूक गई, आँखें बंध कर खड़ी रह गई।

जीवन के यह क्षण कितने अमूल्य है। समय के यह क्षण, तुम यहीं रुक जाओ। तुम्हें ज्ञात है, जीत एक मात्र व्यक्ति है जो मेरी प्रतीक्षा कर रहा है। यह अदभूत है, यह अनुपम है, यह उत्तेजना पूर्ण है। जीत, तुम प्रति दिन, प्रति समय मेरी इसी प्रकार से प्रतीक्षा करते रहो। जब जब मैं इस मरुभूमि में दौड़ जाऊँ, मरुभूमि में खो जाऊँ, तब तब।

"वहाँ रुको नहीं, वफ़ाई। अंदर आ जाओ। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।" जीत ने वफ़ाई को पुकारा।

"मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूँ। कितना सुंदर ध्वनि है यह? इस धरती के सबसे सुंदर शब्द हैं यह। कितने शाश्वत, कितने अलौकिक? यह क्षण अमूल्य है। जीत, इस बात पर धन्यवाद।"

जीत ने स्मित से स्वागत किया। वफ़ाई ने स्मित से उत्तर दिया। दोनों स्मित का संगम हो गया, जैसे नदी एवं समुद्र का संगम हो! संगम के पश्चात दोनों मौन हो गए।

लंबे मौन के पश्चात वफ़ाई ने पूछा, "जीत, तुम स्वप्न देखते हो?"

"हाँ, अवश्य देखता हूँ।"

"पिछली बार कब देखा था कोई स्वप्न?"

"मैंने तो आज ही देखा था, प्रभात के पहले प्रहर में।"

"ओह, क्या था वह? अपने स्वप्न के विषय में कुछ कहो, जीत।"

जीत कुछ समय तक विचार करता रहा। अनेक भाव उसके मुख पर थे। वह दुविधा में था कि स्वप्न के विषय में कहें अथवा न कहें।

"क्या बात है? कोई कुरूप स्वप्न देखा था क्या?"

"नहीं। नहीं।"

"तुम उस से भयभीत हो?"

"कभी कभी हम बातों से भयभीत नहीं होते हैं, किन्तु यह...।"

"जीत, यदि तुम किसी नए ज्ञान की बात करने जा रहे हो तो मुझे रुचि नहीं है।"

"किस में रुचि नहीं है?"

"तुम्हारे वह ज्ञान एवं तुम्हारे वह स्वप्न दोनों में। जाने दो, कुछ भी ना कहो।"

"क्रोधित नहीं होना है तुम्हें। मैं यह कर सकता हूँ कि...।"

"क्या कर सकते हो तुम, जीत?"

"मेरे स्वप्न को मैं केनवास पर प्रकट कर सकता हूँ, तुम उसे केनवास पर देखना चाहोगी?"

"तुम कहीं परिहास तो नहीं कर रहे?"

"नहीं तो। क्यों ऐसा पुछ रहे हो?"

"मैंने मेरा स्वप्न केनवास पर प्रकट किया था जो खाली था। कहीं तुम वही तो नहीं करने जा रहे?"

"मैं उसे वास्तव में चित्रित करूंगा। मेरे स्वप्न को केनवास पर प्रकट होने दो। थोड़ी प्रतीक्षा कर लो।"

“तो तुम भी मानते हो कि स्वप्न को चित्रित किया जा सकता है?”
“यह मेरा अनुमान है।” स्मित करता हुआ जीत चित्राधार तक गया, केनवास बदला, रंगों को मिश्रित किया, और उन्हें केनवास पर उतारने लगा।
जीत को केनवास पर छोड़ कर वफ़ाई कक्ष में अद्रश्य हो गई।

()()()

“वफ़ाई बाहर आ जाओ, मेरा स्वप्न प्रकट हो चूका है।”
वफ़ाई दौड़ी चली आई केनवास तक किन्तु चित्र को देख नहीं पाई क्यों कि जीत ने चित्र को अपने पीछे छुपा रखा था।
“जीत, हट जाओ। तुम्हारा स्वप्न दिखाई नहीं दे रहा।” वफ़ाई उत्सुक थी।
“धैर्य रखो। मेरा स्वप्न तथा यह केनवास कहीं भाग नहीं जाएँगे। दोनों यहीं रहेंगे। भाग जाना उसका स्वभाव नहीं है।”
“किन्तु मैं तो...।”
“तुम भी कहीं नहीं जाने वाली हो। कुछ क्षण प्रतीक्षा करो। पहले मुझे वचन दो कि तुम मेरे स्वप्न तथा मेरे चित्र को देखकर रुस नहीं जाओगी, क्रोधित नहीं होगी।”
“मैं कोई वचन नहीं दूँगी आज। आज मैं बावली हो गई हूँ। मैं नहीं जानती कि आज मैं कैसा व्यवहार करूंगी अथवा मेरा बावलापन मुझ से क्या करवाएगा।”
“हे ईश्वर, मेरी रक्षा करना।” जीत ने प्रार्थना की।
“टालो मत, अब दिखा ही दो। केनवास पर स्वप्न देखने को मैं आतुर हूँ। मैंने कभी स्वप्न को किसी आकार में, किसी आकृति में नहीं देखा। वह कैसे दिखते हैं, दिखाओ ना?” वफ़ाई ने जीत का अतिक्रमण करने का प्रयास किया।
“अवश्य। किन्तु जिस समय तुम मेरे स्वप्न को देखो उस समय मैं यहाँ से भाग जाना चाहूँगा। मेरे स्वप्न को मेरी अनुपस्थिति में ही तुम अनुभव करो।”
“तुम क्यों भाग जाना चाहते हो?”
“दो कारण है। एक, भाग जाने का अधिकार केवल छोकरियों का ही नहीं है। छोकरे भी भाग सकते हैं। क्या केवल वफ़ाई को ही भागने का अधिकार है? मैं यह सिध्ध करना चाहूँगा कि जीत भी भाग सकता है।”
“तुम मुझे चिड़ा रहे हो। मुझ पर व्यंग कर रहे हो। मैं कभी नहीं भागने वाली। तुम भागने का प्रयास कर सकते हो। वह तुम्हारी पसंद होगी। मैं तुम्हारे लौटने की प्रतीक्षा करूंगी, यहीं, तुम्हारे इसी घर में। दूसरा कारण क्या है?”
“दूसरा, मेरे स्वप्न का आकार तुम्हें विचलित कर सकता है। तुम उसे सह ना भी...।”
“यह भी कोई उचित कारण नहीं है। भागने से तो अच्छा है कि चित्र देखने के पश्चात यहीं खड़े रहकर मेरे मुख को देखो। मेरे भावों को, मेरी प्रतिक्रियाओं को, मेरे प्रश्नों को, मेरे विस्मय को देखो। वह क्षण अमूल्य होंगे। मेरा अनुरोध है कि तुम उन क्षणों को चुको नहीं। मैं यह तुम पर छोड़ती हूँ। आशा है तुम विवेकपूर्ण निर्णय करोगे। चलो, अब हटो और दलीलों में समय व्यर्थ खोये बिना मुझे चित्रित स्वप्न देखने दो।” वफ़ाई अधीर हो गई।
मन तो करता है कि तुम्हारा हाथ पकड़ कर तुम्हें खींच लूँ। किन्तु इस तरह तुम्हें स्पर्श करना तुम्हें उचित ना लगे, जीत। मुझे मेरी भावनाओं को नियंत्रित करना होगा। मौन हो कर प्रतीक्षा करनी होगी।
“देख लो उस के आकार को, उसके रूप को।” जीत स्वयं ही हट गया।
केनवास दिखने लगा। चित्र भी।
“क्या?” चित्र देखते ही वफ़ाई चौंक गई। उसकी आँखें खुली रह गई। परिचित एवं अपरिचित भाव मुख पर आ बसे। विस्मय वहाँ नृत्य करने लगा। सभी भाव वफ़ाई की संवेदना के साथ घुल गए।
वह केवल इतना ही कह सकी, “ओ...ह..।”
वफ़ाई के अधर अर्ध खुले रह गए। वह चित्र पर स्थिर हो गई, स्वप्न के आकार पर अटक गई। स्वप्न की मुद्रा से अचंभित रह गई। स्वप्न का ऐसा भी आकार होता है क्या? यह आकार अकल्पनीय है। यह मेरी छवि है, मेरी अपनी छवि। मैं घर के आँगन पर खड़ी हूँ। ना घर के अंदर, ना घर के बाहर। द्वार के बिलकुल मध्य में। मेरा दाहिना हाथ दीवार पर है, बांया हाथ हवा में है। मैं ना तो निंद्रा में हूँ ना जाग रही हूँ। मैं रात्रि के वस्त्रों में हूँ। इन वस्त्रों के रंग, इन के चित्र भी वही है जो मेरे रात्रि के वस्त्र में है। यह वस्त्र तो जीत ने कभी देखे ही नहीं। कल रात्रि मैं जिस मुद्रा में थी वही मुद्रा है। यह तो मेरे स्वप्न की प्रतिकृति है, प्रतिबिंब है। यह कैसे संभव हो सकता है? एक ही रात्रि में, एक ही समय पर दो भिन्न भिन्न व्यक्ति एक ही स्वप्न को, एक ही आकार में तथा एक ही रंग में कैसे देख सकता है? स्वप्न क्या है? हम स्वप्न क्यों देखते हैं? कैसे देखते हैं? वह क्या प्रतिबिम्बित करते हैं? वह क्या सूचित करते हैं? वह क्या संदेश देते हैं? स्वप्न सदैव मानव को कुछ संदेश देते हैं। हमें उसके अर्थ ढूँढने होते हैं। स्वप्न की अपनी भाषा होती है। उसे सीखना चाहिए, पढ़ना चाहिए। क्या वह भविष्य के जीवन का मार्ग दर्शक है? मुझे मेरे स्वप्न को, जीत के इस चित्र को समझना होगा।
यह आश्चर्य है। यह आनंदपूर्ण आघात है। वफ़ाई के मुख पर भावों का सागर उमड़ने लगा।
यह कैसा भाव है? एक तरफ आनंद है तो दूसरी तरफ दुविधा भी। अनेक प्रश्न जागे हैं मेरे मन में, मुझे उन सब के उत्तर पाने होंगे। एक ही स्वप्न, एक ही समय पर दो भिन्न व्यक्ति देखते हैं। दोनों उस स्वप्न का हिस्सा है। ऐसा कभी हुआ नहीं, कभी सुना नहीं। वफ़ाई अभी भी चित्र पर अटकी हुई थी।
क्या यह संभव है? क्या यह सत्य है अथवा अभी भी मैं स्वप्न में हूँ?
वफ़ाई जीत की तरफ मुड़ी। वह दूर खड़े वफ़ाई के भावों को, मनोव्यापार को देख रहा था।
वफ़ाई ने जीत की आँखों में देखा।
“जीत, तुमने तो कभी मेरे प्रति तुम्हारे मन के भावों को व्यक्त नहीं किया। तुम तो प्रत्येक बार मौन ही रहे। आज तुम पकड़े गए हो।

तुम्हारे भावों को, तुम्हारे संवेदनों को, तुम्हारे प्रेम को यह चित्र व्यक्त कर रहा है। यह चित्र मौन रहना नहीं जानता।" जीत वफ़ाई से द्रष्टि मिला नहीं पाया।
"मुझे अब यहाँ से भागना होगा।" जीत भाग गया। वफ़ाई से, घर से, अपने चित्र से, अपने स्वप्न से वह कहीं दूर चला गया। वफ़ाई ने उसे नहीं रोका। रेत से भरे मार्ग पर दौड़ते हुए जीत को वह देखती रही। कुछ क्षण वह अनिमेष खड़ी रही, जैसे कोई प्रतिमा हो। एक ऐसी प्रतिमा जिसे हृदय हो, भाव हो, श्वास हो तथा स्वप्न भी हो।

56

वफ़ाई लौट आई। झूले पर बैठ गई। एक स्वप्न, उस स्वप्न का चित्र जो जीत ने रचा था, वफ़ाई को विचलित कर रहा था। स्वप्न तथा उस के चित्र के संकेतों को समझने का प्रयास कर रही थी। अपने विचारों से, अपने प्रश्नों से वफ़ाई संघर्ष कर रही थी।
मुझे याद करना होगा मेरे स्वप्न के प्रथम क्षण से अंत तक।
वफ़ाई के मन में पूरा स्वप्न पुनरावर्तित हो गया।
इस स्वप्न एवं इस चित्र में कोई अंतर नहीं है। दोनों एक ही है इसमें कोई संशय नहीं है। मुझे जीत के लौटने की प्रतिक्षा करनी होगी।
जीत, स्वप्न के विषय में मुझे तुमसे बात करनी है, चर्चा करनी है और तुम हो कि भाग गए।
जीत लंबे समय तक नहीं लौटा।
अपने विचारों से वफ़ाई का संघर्ष सम्पन्न हो गया। वह केनवास के समीप गई। वह कुछ चित्रित करने लगी। चित्र पूर्ण होने को ही था तब जीत लौटा।
"वहीं रुक जाओ, यहाँ नहीं आना।" वफ़ाई ने आदेश दे दिया।
"कुछ अपराध हो गया मुझ से अथवा तुम मुझ पर क्रोधित हो?" जीत ने पूछा।
"हाँ भी, नहीं भी। किन्तु यहाँ नहीं आना है तुम्हें।"
"यदि आप अनुमति दें तो मैं झूले पर बैठ जाऊँ?"
"ठीक है किन्तु जब तक मैं यह चित्र पूर्ण ना कर लूँ, यहाँ नहीं आओगे तुम।"
"जो आज्ञा।" जीत झूले पर बैठ गया। वफ़ाई को तथा वफ़ाई के भावों को वह निहारता रहा।
वफ़ाई के भाव कह रहे थे कि उसका चित्र रसप्रद एवं अनूठा होगा।
अंतत: वफ़ाई ने चित्र पूर्ण किया। तूलिका को रंगों के अंदर रख दिया और तीन चार चरण पीछे हट गई, अपने चित्र को निहारने



लगी। वफ़ाई के अधरों पर स्मित था।
“मैंने भी कर दिखाया। यह बिलकुल समान है।” वफ़ाई प्रसन्न थी।
“क्या मैं तुम्हारे चित्र को देख सकता हूँ? आप का स्मित बता रहा है कि चित्र सुंदर होगा।”
“ओह। श्रीमान चित्रकार मेरे चित्र को देखने के लिए उत्सुक है। यह तो मेरा सौभाग्य है।” वफ़ाई हंसने लगी।
जीत केनवास की तरफ बढ़ने लगा, “रुको, रुको।”
“मैं तो...।”
“अपनी उत्कंठा को नियंत्रण में रखो। शीघ्र ही तुम इसे देख सकोगे।”
“अपने चित्र के विषय में कुछ कहो।”
“मैंने पुन: केनवास पर मेरा स्वप्न अंकित किया है।”
“क्या वह स्वप्न तुम्हारा है?”
“मेरा भी, तुम्हारा भी अथवा हम दोनों का भी। मैं स्पष्ट नहीं हूँ।”
“मुझे देखने दो।”
“वचन दो कि तुम क्रोध नहीं करोगे तथा भाग नहीं जाओगे।”
“मैं प्रयास करूंगा।”
“प्रयास नहीं, वचन दो।”
“मैं वचन नहीं दे सकता।”
“तो मैं इसे नष्ट कर देती हूँ। तुम इसे कभी नहीं देख पाओगे।” वफ़ाई केनवास तक भागी, केनवास खींच निकाला। जीत वफ़ाई की तरफ भागा।
“रुको, रुको। उसे नष्ट ना करो। मुझे तुम्हारी सब बातें स्वीकार है।”
वफ़ाई उसे नष्ट कर ही रही थी, रुक गई।
“उसे पुन: चित्राधार पर रख दो। हम दोनों साथ में मिलकर कला का आनंद लेते हैं।” वफ़ाई ने वैसा ही किया।
“वफ़ाई, अति सुंदर। यह तो सुखद आश्चर्य है।” जीत चित्र को देखकर कहने लगा, “यह झूला, झूले पर हम दोनों। झूला मंद मंद गति कर रहा है। मैं तुम्हें निहार रहा हूँ। तुम ने वही रात्रि वस्त्र पहने हुए हैं। तुम्हारी आँखों में भाव छलक रहे हैं। तुम्हारी लटें हवा में उड़ रही है। तुम गगन को देख रही हो जिस के आँचल में अर्ध-खिला चन्द्र है। धरती पर चाँदनी व्याप्त है। रात्रि शीतल तथा शांत है। यह सब क्या है, वफ़ाई?”
“यह स्वप्न है। मेरे स्वप्न का दूसरा हिस्सा है।”
“दूसरा हिसा?” जीत ने विस्मय से पूछा।
“तुमने मेरे स्वप्न का प्रथम भाग चित्रित किया था। मैंने मेरे स्वप्न का दूसरा भाग चित्रित कर दिया।”
“तुम्हारा स्वप्न? तुम्हारे स्वप्न का दूसरा भाग? वफ़ाई, वह मेरा स्वप्न था। और यह भी मेरे ही स्वप्न का दूसरा भाग है।”
“नहीं, यह मेरा स्वप्न है।”
“नहीं यह मेरा भी है।”
“यह कैसे संभव है? यह मेरा होगा अथवा तुम्हारा।” वफ़ाई ने कहा।
“तुम्हारा तुम जानो, किन्तु पीछली रात्रि अथवा कहो कि आज भोर के समय मैंने जो स्वप्न देखा था वह बिलकुल ऐसा ही है। मेरे स्वप्न में तुम आँखों में निंद्रा लिए कक्ष से बाहर आई थी। तुम वहाँ खड़ी रह गई थी। हाँ, वहाँ। कक्ष तथा आँगन के मध्य में। तुम रात्रि के वस्त्रों में थी, जैसा मैंने चित्रित किया है।” जीत ने अपनी बात कह दी।
“मैं वहाँ कुछ क्षण खड़ी रही वैसी ही मुद्रा में जैसी तुमने चित्र में रची है। तुमने मुझे बाहर आने को कहा था। मैं आई थी। तुम झूले पर थे। गगन को देख रहे थे। मैं तुम्हारे समीप झूले पर बैठी, तुम झूले से उठ गए। मैंने तुम्हें आग्रह किया कि तुम भी मेरे साथ झूले पर बैठो। तुमने थोड़े संकोच के पश्चात उसे स्वीकार किया। तुम मेरे साथ झूले पर थे जैसे मैंरे इस चित्र में है।” वफ़ाई ने अपनी बात कही।
“हाँ, बिलकुल ऐसा ही हुआ था।”
“हाय अल्लाह, मैंने भी वही स्वप्न देखा था।” वफ़ाई बोल पड़ी।
“अर्थात हम दोनों ने एक ही स्वप्न, एक ही समय पर, एक ही स्थान पर देखा था। यह तो अकल्पनीय है।” जीत उत्साहित हो गया।
“जीत, तुम सत्य कह रहे हो। किन्तु क्या यह संभव है? ऐसा कभी सुना है?”
“नहीं, कभी नहीं। किन्तु यह सत्य है, और वास्तविक है। यह हमारे साथ हुआ है। हमने जो स्वप्न देखा है हम उसकी उपेक्षा नहीं कर सकते।”
“ओह, कितना सुंदर। यह असाधारण है, यह अविश्वसनीय है। किन्तु सत्य है।” वफ़ाई प्रसन्नता से नाचने लगी।
“मनुष्य जो स्वप्न देखता है उस के विषय में हम क्या जानते हैं? कुछ भी नहीं। स्वप्न की अनेक दिशाएँ होती है। अनेक मोड होते हैं। अनेक विकृति भी होती है। जैसा हम दोनों ने देखा, एक ही स्वप्न, ऐसा कभी किसी ने देखा होगा भी किन्तु कौन जानता है? हो सकता है ऐसा सेंकड़ों बार हुआ होगा, हजारों व्यक्तियों ने देखा होगा। किन्तु मानव इतिहास ने कभी कुछ नहीं कहा इस विषय में। यह अनूभव अनूठा है। स्वप्न के इस भाग से यह संसार अनभिज्ञ है। हमें यह सारे विश्व को बताना होगा। विश्व को जानने दो यह बात। हो सकता है स्वप्न के अभ्यास में यह किसी के काम आए। एक बार यदि कोई स्वप्न की भाषा, स्वप्न के संकेत पढ़ लेगा तो उस का अर्थ भी समझ लेगा।” जीत ने उत्सुकता से वफ़ाई को देखा।
वफ़ाई अचंभित थी। वह कोई विचारों में थी, दूर कोई जगत में थी।
“वफ़ाई, तुम कहाँ हो? अपने स्वप्न के विषय में मैंने कुछ कहा। विश्व हमारे स्वप्न की प्रतीक्षा...।”
“विश्व से मेरा कोई संबंध नहीं है। मैं जगत की चिंता नहीं करती।”

“क्यों? इस से विश्व को लाभ होगा। उसे स्वप्न की भाषा…।”
“जगत को भूल जाओ। एक व्यक्ति जो इस स्वप्न को देखता है किन्तु उस का अर्थ नहीं समझ रहा है…।”
“क्या कहना चाहती हो तुम?”
“क्या तुम हमारे स्वप्न की भाषा को पढ़ सकते हो?”
“हाँ, अवश्य।”
“तो क्या निष्कर्ष है तुम्हारा?”
“यही कि य ह संभव है कि दो भिन्न व्यक्ति एक ही स्वप्न देख…।”
“न हीं, तुम नहीं समझे।”
“तो?”
“कहो कि यह क्या संकेत दे रहे हैं? ऐसे स्वप्न का संदेश क्या है?”
“संदेश है कि, कि..।” जीत नहीं कह सका।
“कहीं मैंने सुना अथवा पढ़ा था कि पुरुष कभी भी भावनाओं की भाषा, उस की उत्कटता तथा प्रकृति के संकेतों को नहीं समझ पाता। यह बात तुम पर सत्य सिध्ध होती है।”
“वफ़ाई, मैं तुम्हारी बातों का अर्थ नहीं समझ रहा हूँ।”
“यही तो समस्या है पुरुषों की। मुझे स्पष्ट कहना पड़ेगा कि पुरुष मूर्ख होते हैं । प्रीत एवं भावों का भेद कभी खोल नहीं सकते। प्रेम उसके लिए एक प्रश्न ही है जिसका उत्तर उसे नहीं आता। वह कभी उसका उत्तर पाने का प्रयास नहीं करता।”
“वफ़ाई, पुरुषों के लिए तो स्त्री ही एक प्रश्न है। एक रहस्य है, सदा के लिए। कोई उसे भेद नहीं पाया, आज तक। अत: तुम्हें जो कुछ भी कहना हो स्पष्ट शब्दों में कहो।”
वफ़ाई ने सीधे ही जीत की आँखों में देखा। वह द्रष्टि भिन्न थी, वह तीव्र थी, वह तीक्ष्ण थी। वह आँखों को भेद कर हृदय तक जा पहोंची।
वफ़ाई अनिमेष द्रष्टि से देखते देखते जीत के समीप जाने लगी। उसने दोनों के बीच रचे द्रष्टि के सेतु को टूटने नहीं दिया। वह धीरे धीरे जा रही थी। प्रत्येक पाद दोनों के बीच का अंतर घटा रहा था। दोनों के बीच का हिम पिघल रहा था। टूट रहा था। झरना बनकर बह रहा था वह हिम।
वफ़ाई जीत से एक हाथ जीतने अंतर पर थी। अभी तक की यह सबसे अधिक निकटता थी दोनों के मध्य।
जीत विचलित हो गया, वह अल्प अंतर पीछे हट गया। वफ़ाई और आगे बढ़ी। जीत और पीछे गया।
वफ़ाई जैसे जैसे जीत के समीप जाती थी, जीत पीछे हटता गया। वफ़ाई का प्रत्येक चरण द्रढ़ता से भरा था तो जीत का भय एवं दुविधा भरा था। दोनों के चरण चलते रहे।
अंत में जीत झुले तक आ गया, उस पर गिरते गिरते बचा। झूले को पकड़ लिया, गहरी सांस ली और बैठ गया। वफ़ाई झूले के समीप रुक गई, खड़ी हो गई, जीत को निहारने लगी। जीत वफ़ाई को देखते रहा।
कुछ समय तक वफ़ाई प्रतिमा की भांति खड़ी रही, फिर पलकें झुकाई, उठाई और दोनों के बीच का सेतु तोड़ दिया। जीत पर अंतिम द्रष्टि डाली और मूड गई, दूर चली गई।

57

सहसा जीत झूले से उठा और वफ़ाई की तरफ भागा। जाती हुई वफ़ाई के हाथ पीछे से पकड़ लिए। वफ़ाई के बढ़ते चरण रुक गये। वफ़ाई का शरीर आगे तथा दोनों हाथ जीत के हाथो में पीछे की तरफ हो गए। जीत की ऐसी क्रिया वफ़ाई को अनपेक्षित थी। वह स्तब्ध हो गई। जीत के स्पर्श से वफ़ाई के पूरे शरीर में एक अनाम प्रवाह प्रवाहित हो गया।
आँखें बंध करके, गहरी सांस लेते हुए वफ़ाई स्थिर हो गई। जीत अब क्या करेगा उसकी प्रतीक्षा करने लगी।
जीत के सामने वफ़ाई की पीठ थी। वफ़ाई के वस्त्र के रंग जीत की आँखों में छाने लगे। रंगों का एक समुद्र लहराने लगा।
वफ़ाई की पीठ पर उसके खुले केश थे जो मंद मंद हवा के कारण उसके कंधे पर लहरा रहे थे। उनमें से कुछ लटें नटखट थी जो वफ़ाई के शरीर की सीमा का उल्लंघन करती हुई जीत को स्पर्श कर रही थी। जीत उस लटों में खो गया, उसके मृदु स्पर्श का अनुभव करने लगा।
जीत ने वफ़ाई को स्नेह से पीछे खींचा। वफ़ाई ने विरोध ना करने के आशय से विरोध किया। उसने अपने शरीर को आगे की तरफ खींचा, जैसे वह जीत के हाथों से छुटना चाहती हो। सत्य तो यह था कि वह जीत के आलिंगन में रहना चाहती थी, उसके स्पर्श की ऊष्मा को अनुभव करना चाहती थी। किन्तु छूटने का अभिनय कर रही थी। वह नहीं कर सकी।
जीत ने धीरे से वफ़ाई को अपनी तरफ खींचा। वफ़ाई के चरण धीरे धीरे पीछे आने लगे। वफ़ाई ने स्वयं को जीत की तरफ खींचने दिया। जीत तक पहोंचने में वफ़ाई ने कुछ समय लिया। कुछ ही क्षणों में वफ़ाई की पीठ ने जीत की छाती को छु लिया।
एक विशाल तरंग खड़क से टकरा गई। तरंग ऊपर उठी, गगन को छूने लगी। वह वर्षा बनकर दोनों पर बरसने लगी। वह वर्षा उत्कटता की थी, भावनाओं की थी, अपेक्षा की थी, स्नेह की थी, एक दूसरे को समर्पित होने की थी।
जीत ने दोनों हाथों से वफ़ाई को घेर लिया। वफ़ाई जीत के आलिंगन में आ गई। वफ़ाई ने दोनों हाथ स्वयं की छाती पर रख दिये। जीत ने उन हाथों को भी घेर लिया।
वफ़ाई के मन में विचार चलने लगे।
जीत, मैं तेरे बाहुओं में बंदी हूँ। क्या यह हाथ ही है जो मुझे बंदी बना रहे हैं? अथवा कुछ और भी है? अथवा मैं ही चाहती हूँ इन हाथों के बंधन को?
वफ़ाई उसी अवस्था में स्थिर हो गई।
मैं इसी बंधन में रहना चाहती हूँ, जीत। इन क्षणों को जीना चाहती हूँ। तुम्हारे हाथों के कारावास में रहना मुझे अच्छा लगता है। मेरी पीठ तुम्हारी छाती का स्पर्श अनुभव कर रही है। तुम्हारी साँसे मुझे छु रही है। इन साँसों की उष्णता मुझे उत्तेजित कर रही है। जीत, मेरे साँसों की गति तीव्र हो रही है। तुम भी आँखें बंध कर लो। तुम भी मेरे साँसों को सुन लो। जीत, तुम्हारे हाथ मेरी छाती की पहाड़ियों को छु रहे हैं। मेरी इन पहाड़ियों के साथ तुम्हारे हाथ भी आंदोलित हो रहे हैं। मेरी छाती को घेर रहे तुम्हारे हाथ कंपन कर रहे हैं। प्रत्येक कंपन तरंग रच रहे हैं। क्या यह तरंगे तेरे हाथों को छूकर तेरे हृदय तक जाते हैं? तेरे हृदय का द्वार कहीं बंध तो नहीं, जीत। इन तरंगों के लिए तुम हृदय के द्वार खोल दो। मैं तुम्हारे हृदय में आ रही हूँ, जीत।
वफ़ाई के केश जीत को स्पर्श कर रहे थे। जीत भी उस स्पर्श से विचलित था। वह भी स्वयम से कह रहा था -
वफ़ाई, तुम्हारे केश में यह कैसी सुगंध है? यह सुगंध किसी पुष्प की नहीं, किसी अत्तर की भी नहीं। यह सुगंध कृत्रिम नहीं है, वास्तविक है। अन्य सभी सुगंध से भिन्न है। यह शुध्ध है। यह पवित्र है। यह कुंवारी है। यह उत्तम है। यह अनन्य है। तुम्हारी लटें मेरे गालों को स्पर्श रही है, जैसे किसी पंखी के मृदु पंख हो। कितना मधुर लगता है जब तुम्हारी लटें मेरे गालों से खेलती है, वफ़ाई। यह लटें हवा में शृंगारिक रस घोल रही है। इन हवाओं का प्रतिकार मैं कैसे करूँ? मैं इन की शरण में हूँ, वफ़ाई। यह लटें ऐसे ही उड़ती रहे, मेरे गालों को छूती रहे। कितने मधुर क्षण है यह।
मैं तुम्हारी लटों से, तुम्हारे कानों से कुछ कर बैठूँ तो मुझे क्षमा करना।
जीत के अधर आशा में, लालसा में हिलने लगे।
वफ़ाई के कानों में काले कर्ण-फूल थे। वह ऊपर से लंबे थे। उसके नीचे के हिस्से में चक्र लगे थे जो वफ़ाई के कंधो को स्पर्श कर रहे थे। कर्ण-फूल आकर्षक थे। जीत ने देखा कि कुछ लटें कर्ण-फूल के चक्र में जाकर बस गई है। वह उसे देखता रहा।
हे लटों, तुम मनोहर हो। मोहक हो। मादक हो। अपने साथ खेलने के लिए तुम मुझे आमंत्रित कर रही हो। तुम कुछ संकेत दे रही हो। मैं उन संकेतो को समजने लगा हूँ।
जीत अपने अधरों से उन लटों पर मंद मंद फूँक मारने लगा। लटें आंदोलित हो गई। लटें वफ़ाई के कंठ को स्पर्श करने लगी। स्थिर खड़ी वफ़ाई, लटों के स्पर्श से तथा जीत की फूँक की उष्णता से प्रवाहित हो गई। जीत के अस्तित्व का, जीत की निकटता का

अनुभव करने लगी। वफ़ाई का तन रोमांचित हो गया।
तन का रोम रोम उत्तेजित हो गया। वह रोमांच नसों के माध्यम से ह्रदय तक प्रवाहित हो गया। उस रोमांच में जीत की सुगंध थी।
जीत की एक फूँक ने वफ़ाई को पूर्ण रूप से बदल दिया। वफ़ाई बिखर गई। उस फूँक को समर्पित हो गई।
बांध आँखों से ही वफ़ाई जीत की तरफ घूम गई। वह अभी भी जीत के आलिंगन में थी। उसने धीरे से आँखें खोली, सामने जीत को पाया। दोनों ने एक दूसरे को देखा। चार आँखें मिली। दोनों ने गहरी सांस ली। दोनों की छाती एक साथ गति में आई। दोनों छातियों ने उस गति का अनुभव किया। दोनों के बीच एक सेतु रच गया जिस पर मुक्त रूप से संवेदन प्रवाहित होने लगे।
कुछ कहने के लिए जीत के अधर हिले। वफ़ाई ने उन अधरों को देखा। उसने जीत के अधरों पर अपनी उंगली रख दी, जैसे कह रही हो कि,
शब्दों से इस मौन का भंग ना करो, इन क्षणों को ना तोड़ो। इस समय शब्दों की आवश्यकता नहीं है। कुछ कहने के लिए स्पर्श ही पर्याप्त है।
दोनों के स्पर्श एवं संवेदनों ने अनेक बातें कर ली, जो अधरों से निकले शब्द कभी कह ना पाते।
वफ़ाई ने अपने बंध हाथ खोल दिये। उन हाथों से जीत को घेर लिया। जीत वफ़ाई के आलिंगन में था। दोनों एक दूसरे के आलिंगन में थे। अधूरा आलिंगन पूर्ण हो गया। वह आलिंगन अत्यंत उत्कट थे। दोनों भिन्न विश्व में खो गए।
सब कुछ स्थिर हो गया, शांत हो गया। पवन स्थिर थी। गगन स्थिर था। बादल स्थिर थे। झूला स्थिर था। रंग सभी स्थिर थे। केनवास स्थिर था। तूलिकायेँ स्थिर थी। भित्ति स्थिर थी। कक्ष स्थिर था। घर स्थिर था। रेत स्थिर थी। सब कुछ स्थिर हो गया। सागर की सभी तरंगे तट पर जाकर स्थिर हो गई थी। इस घटना को निहारने के लिए समय भी स्थिर हो गया। एक पंखी ने गीत गाया। एक काला बादल सूरज को ढँक गया। गगन में अब बादल भी थे और सूरज भी। अब कोई अकेला नहीं था।



वफ़ाई और जीत झूले पर थे, एक साथ, प्रथम बार, वास्तव में। दोनों एक दूसरे के अत्यंत समीप थे।
“पिछले सात घंटों से हमने एक भी रेखा, एक भी बिन्दु चित्रित नहीं किया, जानते हो तुम जीत?” सात घंटों के मौन के पश्चात वफ़ाई ने कुछ शब्द कहे।
“तो क्या हमने यह सात घंटे व्यर्थ नष्ट किए हैं?” जीत ने वफ़ाई को छेड़ा।
“चित्र कला की द्रष्टि से कहें तो हाँ, हमने नष्ट किए हैं यह सात घंटे।” वफ़ाई ने भी जीत को छेड़ा। वफ़ाई के अधरों पर नटखट स्मित था। जीत ने उत्तर में स्मित दिया।
जीत झुले से उठा और केनवास पर गया। उसने चित्राधार पर एक नया, सफ़ेद, खाली केनवास लगा दिया।
वफ़ाई झूले पर ही बैठी रही, जीत के कार्यों को निहारती रही।
“केनवास पर जो जीत है वह भिन्न है। कितना आत्म विश्वास से भरा है जीत! जीत तुम मुझे पसंद आने लगे हो।” वफ़ाई मन ही मन बोली।
“प्रीत किसी शुष्क ह्रदय में भी विश्वास भर देता है।” वफ़ाई बोली। उसे अपने ही शब्द पसंद आ गए। उस के अधरों पर स्मित था।
इस क्षण कोई चित्र रचाने मे वफ़ाई की रुची नहीं थी। नए नए बने स्नेह के विश्व में वह रहना चाहती थी। जब से जीत ने उस की प्रीत का स्वीकार किया था तब से प्रत्येक व्यतीत की गई क्षण को वह मन ही मन याद करना चाहती थी, उस में खो जाना चाहती थी। वह क्षण उसे आकर्षित कर रही थी। वह उस में खो गई। वह भूल गई कि उस की प्रीत, उस का जीत सब उस के सामने थे।
चित्र बनाते बनाते एक घंटा व्यतीत हो गया। जीत रुका, चित्र को निहारा, स्मित दिया और वफ़ाई की तरफ मुड़ा।
वफ़ाई कोई भिन्न विश्व में थी जैसे गहन ध्यानावस्था में हो। एक दिव्य प्रतिमा सी लग रही थी वह।
“वफ़ाई, अत्यंत मोहक मुद्रा है यह तुम्हारी। तुम्हें देख कर मेरे मन में एक विचार जन्मा है। मैं इस विचार को मेरी मुट्ठी में बंदी बना लेता हूँ।”
उस क्षण के मौन को भंग किए बिना, वफ़ाई को विक्षेपित किए बिना जीत ने केनवास बदल दिया। उस ने शीघ्र ही उसे रंगों से, आकारों से भर दिया। कुछ आकृतियाँ प्रकट हो गई केनवास पर। जीत ने पुन: वफ़ाई को देखा, वह अभी भी ध्यान मग्न थी।
जीत धीरे धीरे चलते हुए झूले पर वफ़ाई के निकट बैठ गया। एक मृदु घात को झूले ने झेला। किन्तु वफ़ाई उसे झेल नहीं सकी, वह ध्यान से जाग गई।
“जीत तुम?”
जीत स्मित कर रहा था।
“जीत, तुम हंस क्यों रहे हो?” वफ़ाई ने पूछा।
“कुछ भी तो नहीं।” जीत खुलकर हंस पड़ा।
“कहीं कुछ अनुचित तो नहीं…?”
“मुझे ऐसा नहीं लगता।”
“तो तुम क्यों हंस रहे थे?”
“मुझे आश्चर्य हो रहा है कि कैसे…?“
“क्यों आश्चर्य हो रहा है? मैंने तुम्हें तुम्हारे हंसने का कारण पूछा था। उत्तर देने से तो रहे तुम, तुमने एक नयी बात सामने रख दी। तुम मुझे दुविधा में डाल देते हो, जीत।”
“सभी लड़कियों में यह सौन्दर्य होता है, तुम भी…।”
“फिर नयी बात? तुम भी ना, बार बार नई बातें करते रहते हो।”
“क्रोध से तुम्हारे गाल लाल, नहीं, गुलाबी हो गए हैं। श्वेत गालों वाली पर्वत कुमारी के गाल गुलाबी हो गए। गालों का यह गुलाल सुंदर है, मन मोहक है। ऐसा प्रतीत होता है कि पुर्णिमा के चंद्र पर कोई गुलाब खिला हो। इन गुलाबी गालों को बस देखता रहूं।”
“ऐसे ना देखा करो। मैं…।” वफ़ाई ने पलकें झुका दी, “क्या देख रहे हो? यह भी कोई पहेली तो नहीं? मैं उस का भेद नहीं पा रही।”
“जब कोई लड़का गुलाब को देख रहा हो तो उस में विक्षेप नहीं किया करते। गुलाब को भी उस में विक्षेप नहीं करना चाहिए। बस, मुझे देखने दो।”
“ओह प्रीत कुमार।” वफ़ाई ने जीत का हाथ पकड़ा। जीत ने हाथ को देखा, गुलाबी रंग हाथों तक व्याप्त हो गया था।

“कहो हिम कुमारी, मैं आप की क्या सेवा कर सकता हूं?”
“जो भी पहेलियाँ अभी रची थी उस का भेद एक एक करके खोल दो।”
“अवश्य। गिनते रहना। यदि मैं कोई चूक जाऊं तो मुझे बता देना।”
“ओ छोकरे सीधे सीधे बात पर आ जा।”
“प्रथम, मैंने स्मित किया था क्यों कि तुम सुंदर दिख रही हो। उस अनुपम सौन्दर्य की आभा तुम्हारे मुख पर दिखाई दे रही है। मेरा स्मित मेरी प्रसन्नता प्रकट करता है।
दूसरा, मैं खुलकर हंसा था क्यों कि मैंने तुम्हारे अंदर आए परिवर्तन को देख लिया है। पहले मैं किसी भिन्न जगत में जी रहा था, जो मेरी कल्पना से भरा था, मेरे स्वप्न से भरा था। अब तुम जी रही हो ऐसे किसी जगत में।”
“क्या?”
“जब मैं चित्र रच रहा था तब तुम किसी भिन्न ब्रह्मांड में थी। मैंने सुना है कि वैज्ञानिकों ने नयी सूर्यमाला नया ब्रह्मांड तथा नई पृथ्वी भी खोज निकाली है। वह कहते हैं कि हजारों सूर्य है, हजारों सूर्यमाला है, हजारों ब्रह्मांड है। तो इस में से तुम किस पर थी?”
“यदि तुम जो कह रहे हो वह सत्य है तो उन में से किसी में भी मैं रहने को उत्सुक हूं। तुम चलोगे मेरे साथ? चलो चलते हैं।” वफ़ाई उत्तेजना से भरी थी।
“अवश्य। मैं तैयार हूं।”
“तो चलो।” वफ़ाई चलने लगी।
“रुको, वफ़ाई अभी रुक जाओ। अभी नहीं फिर कभी हम चलेंगे।”
“क्यों? अभी क्यों नहीं?”
“वहाँ तक यात्रा करने के लिए तुम्हारी जीप में पर्याप्त ईंधन नहीं है।” जीत की इस बात पर दोनों हंसने लगे।
“आगे कहो, चलो।”
“तुम्हारे जैसा सौन्दर्य...!”
“मेरे जैसा? अर्थात कैसा?”
“कृत्रिम क्रोध लड़कियों का सौन्दर्य होता है, तुम्हारे पास भी है। मुझे भा गया तुम्हारा यह क्रोध।”
“स्मरण रहे कि सहज क्रोध भी होता है। तुम उस क्रोध को सह नहीं सकोगे।”
“तुम कभी सहज क्रोध कर ही नहीं सकती।”
“तुम्हें मुझ पर अधिक विश्वास है।”
“मेरा विश्वास तो है कि मैंने सभी बात स्पष्ट कर दी है। पर्वत सुंदरी इस बात से सहमत है? संतुष्ट है?”
“मुझे देखने दो, कहीं कुछ छूटा तो नहीं।” वफ़ाई विचारने लगी, “एक बात तुम भूल गए।”
“बता दो।”
“तुम्हें विस्मय हुआ था।”
“मुझे विस्मय हुआ था। मुझे तो अभी भी विस्मय हो रहा है।”
“कहो। क्या है वह?”
“क्या प्रीत किसी व्यक्ति को भिन्न व्यक्ति बना देता है?”
“?”
“कल तक यह जगत तुम्हारे लिए वास्तविक जगत था और मैं जिस जगत को देखता था वह भिन्न था। मैं मानता था कि यह विश्व वास्तविक नहीं है, केवल भ्रांति है। अत: मैं सदैव भिन्न जगत में जीता रहता था। इस जगत में मेरी कोई रुचि नहीं रही थी। आज, मैं मानने लगा हूं कि यह जगत ही सत्य है। कल मैं इस जगत से भाग जाना चाहता था, किसी अन्य जगत में, भले ही उस जगत का कोई अस्तित्व हो अथवा नहीं हो।”
“बात तो तुम रसभरी कह रहे हो, जीत।”
“इस का दूसरा हिस्सा अधिक रुचिकर है।”
“दूसरा हिस्सा भी है? कहो।”
“हाँ, है। वह तुम्हारे विषय में है। मैं जब भी इस भिन्न जगत में रहता था तुम चिड जाती थी। आज जब मैंने चित्र पूर्ण किया तब देखा कि तुम उस जगत में थी। अब तुम मानती हो ना कि वह जगत का भी अस्तित्व है और उस में रहना तुम्हें पसंद है।”
“क्या नाम है उस विश्व का?”
“कोई नाम नहीं है। तुम उसे नाम दे सकती हो। वह जगत इस जगत से भिन्न है जहां कल्पना, स्वप्न, भाव, आनंद, प्रीत आदि रहते हैं। तुम उस जगत को कोई भी नाम दे दो। बस, इतना ध्यान रहे कि वह इस जगत से भिन्न है।”
“मुझे भी ऐसा ही प्रतीत हो रहा है।”
“किन्तु प्रश्न यह है कि कोई नहीं जानता कि कौन सा विश्व सत्य है और कौन सा भ्रांति?”
“यह भी रुचिकर बात है, जीत।”
“तो मुझे विस्मय यही है कि प्रीत ने हम दोनों को कैसे विरूध्ध भावों में बदल दिया।”
“तुम इस जगत को चाहने लगे हो और मैं उस जगत को।”
“यही तो मैं कह रहा हूं।”
“यह तो अदभूत है, जीत।” वफ़ाई गगन को देखती रही।
“इस वास्तविक जगत को छोडकर तुम इस मरुभूमि में क्यों रहने लगे?” वफ़ाई ने उस प्रश्न को छेड दिया जिसे जीत लंबे समय से

टाल रहा था।
‘वफ़ाई, मेरी दुविधा है कि मैं तुम से मेरी यह बात कहूँ अथवा नहीं।’ जीत ने स्वयं से कहा।
“मैंने जो अभी चित्र बनाया है उसे तुम देखना चाहोगी? आओ मेरे साथ।” जीत केनवास की तरफ चलने लगा।
“जीत, रुक जाओ। तुम्हारे चित्र से अधिक मेरी रुचि मेरे प्रश्न के उत्तर में है।”
जीत रुक गया, वफ़ाई की तरफ मूड गया। वफ़ाई के मुख पर अनुरोध था, रहस्य को खोल देने का। “वफ़ाई, मुझे ज्ञात है कि तुम्हारी यह आँखें मेरे इस रहस्य से अत्यंत पीड़ित हुई है। अब उस रहस्य को रहस्य रखने में…।”
जीत मौन हो गया। आँखें बांध कर ली तथा गहन विचार में डूब गया। लंबे विचार के पश्चात उसने निर्णय कर लिया, ‘इस समय मैं कुछ नहीं कहूँगा।’
वफ़ाई जीत के भावों को देख रही थी। उसके गुलाबी गाल भीगे थे। उसकी आँखों से अश्रुओं ने गालों तक यात्रा कर ली थी। वफ़ाई आक्रंद कर रही थी।
वफ़ाई की विलाप कर रही आँखें कई बात पूछ रही थी, ‘क्यों जीत अपना रहस्य खोल नहीं रहा? क्यों वह अपनी पीड़ा में मुझे हिस्सेदार नहीं बना रहा? क्यों वह अपने हृदय में मुझे प्रवेश नहीं करने दे रहा? वह मेरा विश्वास क्यों नहीं कर रहा? मैं उसे पत्येक मोड पर साथ देना चाहती हूं, साथ साथ चलना चाहती हूं, किन्तु वह मेरे साथ क्यों नहीं चल रहा? वह क्या है जो उसे मेरा साथ लेने से रोक रहा है?’
‘मैं तुम्हारे सभी प्रश्न जानता हूं, वफ़ाई।’ जीत स्वगत ही बोला।
जीत ने वफ़ाई की आँखों में देखा, वह अभी भी विलाप कर रही थी। वह निश्चल सी खड़ी थी। जैसे कोई आक्रंद करती प्रतिमा।
“वफ़ाई, तुमने आज पहली बार क्रंदन किया है। तुम तो द्रढ़ मनोबल वाली बाला हो। तुम्हारी द्द्ढता मेरी भ्रांति नहीं हो सकती।”
“जीत, द्रढ़ बाला के भीतर मृदु भावों वाली कोई बालिका भी होती है।” वफ़ाई के अश्रुओं की एक बूंद जीत के मन को स्पर्श कर गई। उस बूंद ने जीत की आँखों से भी कुछ बुँदे निकाल दी। जीत ने उसे बहने दिया। अनेक अश्रु बूंदें निकल आई।
जीत वफ़ाई के पास दौड़ गया। अपने हाथों से उन गालों की बूंदों को पोंछ दिया। कुछ नयी बूंदें गालों पार आ गई। जीत ने उसे भी पोंछ दिया।
वफ़ाई ने देखा कि जीत के गाल भी भीगे हैं, उस ने जीत के गालों से अश्रु बुँदे हटा दी।
वफ़ाई जीत के अश्रु पोंछते पोंछते पुन: रोने लगी। वह कंप रही थी। जीत ने उसे संभाल लिया, उस के माथे पर तथा केश में उँगलियाँ फेरने लगा। वह जीत को लिपट गई। जीत ने उसे अपने आलिंगन में बांध लिया। मृदु स्पर्श ने काम किया। वफ़ाई शांत हो गई, स्वस्थ हो गई। जीत के आलिंगन से मुक्त होकर वह झूले पर बैठ गई, जीत भी।
“जीत…।” जीत ने वफ़ाई के अधरों पर उंगली रख दी, वफ़ाई मौन हो गई।
“मुझ पर विश्वास रखो। मैं सब कुछ बता दूंगा। मुझे समय दो कि यह सब कहने के लिए मैं साहस जुटा सकूँ।”
“और अधिक कितना समय मांगोगे, जीत? मैं ने प्रथम दिवस से ही प्रतीक्षा की है, इतने दीवस तक मैंने धैर्य रखा है किन्तु अब नहीं। मेरा मन कह रहा है कि…।”
“वफ़ाई, बस कुछ घंटे की बात है। मैं वचन देता हूँ कि आज रात्रि तुम अपने प्रश्नों के उत्तर के साथ शयन करोगी।” जीत ने स्मित किया, वफ़ाई ने भी।

।

59

“यह सुंदर तो है।” जीत ने अभी अभी वफ़ाई का जो चित्र रचा था उसे देखकर वफ़ाई बोली।
जीत ने प्रतिक्रिया नहीं दी।
“जीत, तुम यदि किसी यौवना को केनवास पर चित्रित करना चाहते हो तो तुम्हें अधिक प्रयास करना होगा, अधिक अभ्यास करना होगा।” वफ़ाई ने तीन बार पलकें खोल बंध की।
“कैसा प्रयास? कैसा अभ्यास?”
“उतावले हो रहे हो तुम जीत। अब यह ना कहना कि तुम्हारे पास समय का अभाव है।” वफ़ाई हंसी।
यही सत्य है वफ़ाई, कि मेरे पास समय नहीं है। कैसे समझाऊँ मैं तुम्हें? जीत ने वफ़ाई को बोलने दिया।
“एक सुंदर यौवना सभी प्रकार से सुंदर होनी चाहिए, प्रत्येक भाव में, प्रत्येक मुद्रा में।”
“तो?”
“उत्तम कलाकार के पास यह क्षमता होती है कि वह इन भावों तथा इन मुद्राओं को पूरी उत्कटता से तथा पूर्णता से उस का सर्जन करें, उस सौन्दर्य को प्रकट करे।”
“वह कैसे?”
“नर के पास यह सौन्दर्य नहीं होता। नारी के बोले हुए शब्दों का अर्थ नहीं पकड़ सकते यह नर। उसे सीधे सीधे शब्दों में ही कहना पड़ता है। तुम, पुरुष, आँखों की भाषा, भावों की भाषा, स्त्री की भाषा क्यों नहीं समझते?” प्रश्नार्थ मुद्रा लेकर वफ़ाई देखती रही जीत को। जीत मौन रहा।
वफ़ाई अल्ल अंतर दूर गई और आकर्षक मुद्रा में परिवर्तित गई।
“इस मुद्रा में मैं कैसी लग रही हूँ?”
जीत ने उसे देखा। वह सात आठ फिट के अंतर पर थी।
वह बाँये घुटने पर थी। दाहिना घुटना पीछे की तरफ मुड़ा हुआ था। वह अर्ध खड़ी, अर्ध बैठी हुई थी। दाहिना हाथ दाहिनी जांघ के समीप था। बांया हाथ जमीन पर था। छाती दाहिने घुटन को स्पर्श कर रही थी। आँखें धरती को देख रही थी। कुंतर खुले थे, जो दो भागों में बंटे हुए थे, बांया भाग बांये हाथ पर था तो दाहिना हिस्सा कंधे पर था। मुख पर तथा अधरों पर शाश्वत स्मित था। प्रसन्न मुद्रा में थी वह।
“इस मुद्रा में मैं कैसी लग रही हूँ?” वफ़ाई ने पुन: पूछा। आँखें अभी भी धरती पर थी, पलकें झुकी हुई थी।
जीत उस आकर्षक मुद्रा को देखता ही रह गया। वफ़ाई के इस अनुपम रूप से वह मंत्र मुग्ध था। वह नि:शब्द था। उसके ह्रदय में कई लहरें उठने लगी।

वफ़ाई, मन तो करता है कि दौड़ कर तुम्हें पकड़ लूँ, मेरे बाहु पाश में जकड़ लूँ।
जीत ने स्वयं को नियंत्रित किया, स्थिर रहा।
वफ़ाई ने धरती से रेत उठाई तथा मुट्ठी में भर ली। उसने उसे हथेली से धीरे धीरे सरकने दिया। हथेली से गिरती रेत को जीत देखता रहा। वफ़ाई मूर्ति की भांति थी जिस की मुट्ठी अर्ध खुली थी और जिस में से रेत, धीरे धीरे, अत्यंत धीरे धीरे नीचे गिर रही थी, सरक रही थी। वफ़ाई की मुट्ठी रेत घड़ी सी लग रही थी जिस में से समय मंद गति से सरक रहा हो।
वफ़ाई अपनी मुद्राओं में, रेत घड़ी के साथ व्यस्त थी। जीत वफ़ाई की इस मुद्रा को शीघ्रता से केनवास पर रचने लगा। दोनों अपने अपने विश्व में थे।
वफ़ाई की मुट्ठी से पूरी रेत सरक गई। उस की हथेली खाली हो गई, विचार भी। वह अपने विश्व से जागी, जीत को देखा, जो अभी भी केनवास पर व्यस्त था।
“श्रीमान चित्रकार, केनवास से परे भी कोई विश्व है। उस को भी देख लिया करो।” वफ़ाई ने पलकें झपकाई।
“ओह, ऐसा क्या? कहाँ है वह विश्व?”
“मुझे देखो, वह मेरे निज में बसा है।”
“किन्तु मेरा जगत तो इस केनवास में है। आ कर देख लो।” जीत ने केनवास की तरफ संकेत किया। वफ़ाई अपनी मोहक मुद्रा को तोड़ कर केनवास पर दौड़ गई।
केनवास पर अपनी ही उस मुद्रा, जो क्षण भर पहले वह धारण किए थी, को वफ़ाई आश्चर्य से देखती रह गई।
“जीत, तुमने मेरी दोनों मुद्राओं को देखा है। एक, जो वास्तविक थी और दूसरी जो इस केनवास पर है। कौन सी अधिक सुंदर है?”
“दर्पण को देखकर तुम कह सकते हो कि क्या अधिक सुंदर है, तुम अथवा तुम्हारा प्रतिबिंब?”
“किसी बिम्ब एवं प्रतिबिंब में कोई अंतर नहीं होता। दोनों एक समान होते हैं।”
“यही तो उत्तर है तुम्हारे प्रश्न का। तुम पूर्ण रूप से वैसी ही दिख रही थी जैसी तुम अभी इस केनवास में अपनी प्रतिकृति को देख रही हो।” जीत ने स्मित दिया।
“जीत, तुम शब्दों से खेल रहे हो।” वफ़ाई हंसने लगी।
“क्या वह मुद्रा सुंदर थी?” वफ़ाई ने जीत की आँखों में देखा।
“क्या यह सुंदर है?” जीत ने केनवास के प्रति संकेत किया।
“पुन: तुम शब्दों से खले रहे हो।” वफ़ाई मुक्त मन से हंस पड़ी, जीत भी।
“हे कलाकार, क्या तुम किसी जीवंत प्रतिमा का चित्र रच सकते हो?”
“अवश्य। क्यों पुछ रही हो?”
“क्यों कि एक प्रतिमा यहां पर है और तुम चाहो वैसी मुद्रा, वैसी भाव-भंगिमा रचने को उत्सुक है। तुम तैयार हो?”
“हाँ। यदि प्रतिमा स्वयं ही सौन्दर्य हो। कहाँ है वह प्रतिमा?”
“कल्पना करो, धारणा करो।”
“मेरी धारणा है कि…।” जीत ने शब्दों को हवा में छोड़ दिये।
“धारणा करते रहो। मैं कुछ ही क्षणों में आई।” वफ़ाई जीत को छोड़कर कक्ष में चली गई। कक्ष में अदृश्य होती वफ़ाई को जीत निहारता रहा।
“आपकी प्रतिमा भाव-भंगिमा रचने को तैयार है।” कुछ क्षण के पश्चात बाहर आते हुए वफ़ाई के शब्दों ने जीत का ध्यान आकृष्ट किया।
जीत वफ़ाई को देखने लगा, देखते ही रह गया।आँखें खुल्ली ही रह गई। वफ़ाई कुछ क्षण द्वार के मध्य में ही रुक गई, स्थिर सी मुद्रा मे।
वह नीले तोलिए मे थी, जो उसके शरीर को कंठ से पैरों की पिंडियों तक ढंके हुए था। तोलिया बड़ी चुस्ती से बंधा था। उसकी काया पतली सी लगती थी। उसके तन के एक एक घुमाव को देखा जा सकता था, अनुभव किया जा सकता था।
क्या कन्याओं के शरीर इतने घुमावदार होते हैं? क्या यही घुमाव उनकी सुंदरता को निखारते हैं*?* क्या है यह वही घुमाव जो युवकों को विचलित कर देते हैं*?*
जीत ने वफ़ाई के पूरे तन को देखा, एक एक घुमाव को देखा। हर घुमाव पर वह विचलित होता रहा। हर घुमाव उसे मीठी पीड़ा देता रहा। वह छलनी हो गया, घुमावों के प्रहारों से। उसने आँखें बांध कर ली। वह सारे घुमाव बंध आँखों के आगे भी दिखने लगे। वह भाग नहीं सका वफ़ाई के किसी भी घुमाव से।
कुछ भी हो, कितनी भी पीड़ा हो, कितना भी विचलित हो यह मन, किन्तु घुमाव बड़े सुंदर है, लुभावने है, रुचिकर है। जीत ने स्वयं को घुमाव के समंदर में समर्पित कर दिया।
जीत ने फिर से वफ़ाई को उपर से नीचे तक देखा। वफ़ाई के तन के उस घुमावदार मार्ग पर जीत की आँखें चलने लगी। वह एक भयानक मार्ग था जो किसी अज्ञात पड़ाव पर जा कर पूर्ण होने वाला था। जीत सभी संभव परिणाम के लिए स्वयं को तैयार कर रहा था।
“श्रीमान, क्या देख रहे हो?” वफ़ाई ने हवा में उंगलिया उठाते हुए चुटकी बजाई। जीत ने उन उँगलियों का पीछा किया। उँगलियाँ वफ़ाई के मस्तक तक जाकर रुकी। उसका सिर, गुलाबी तोलिए से पूरा ढंका हुआ था। तोलिया भीगा था।
साबू और शेम्पू की ताजी सुगंध हवा मे घुल चुकी थी। स्नान से ताजे भीगे शरीर की सुगंध जीत के नाक तक फ़ेल गयी। उसने गहरी सांस ली और उस सुगंध को छाती के अंदर तक खींच कर बंद कर ली।
कोई भी पुरुष सद्य:स्नाता स्त्री केतन की सु गंध से ब चनहीं सकता, जीत भी नहीं।
वफ़ाई कक्ष से बाहर आई, जीत की तरफ़ चलने लगी। जीत के समीप से वह चलती हुई आगे निकल गई। हवा का एक टुकड़ा जीत

को स्पर्श कर गया, जो जीत को अपने साथ ले गया।

60

वफ़ाई झूले के निकट एक क्षण के लिए रुकी। झूले को पूरी शक्ति से धकेला और कूदकर झूले पर चढ़ गई, खड़ी हो गई। झूला गति में आ गया, वफ़ाई भी।
वफ़ाई के दोनों हाथ पूरे खुले हुए थे, जो झूले के दोनों तरफ फैले सरिये को पकड़े हुए थे। जीत ने वफ़ाई को ऊपर से निचे तक देखा। माथे पर तोलिया था जिस के अंदर उसके पूरे कुंतर बंदी थे।
पानी की कुछ बूंदें गालों पर टपक रही थी। लहराते झूले के कारण कुछ बूंदों ने विद्रोह कर दिया और गालों को छोड़ कर हवा में उड़ने लगी, हवा में घुलने लगी।
वफ़ाई की खुली आँखों में मादकता भर थी। वह आँखें कुछ कह रही थी, जीत उसे समजने का प्रयास करता रहा। कुछ समज आया, कुछ नहीं। उसने आँखों से आँखें मिलाई, पढ़ने लगा उन आँखों को।
वह आँखें बहुत बोलती थी। जीत भी उस से कुछ कहना चाहता था। जीत ने अपने होठों को खोलना चाहा, वफ़ाई ने उसे रोका।
“श्... श...श...” वफ़ाई ने आपने अधरों पर उंगली रख दी। जीत मौन हो गया। उन आँखों की बोली सुनता रहा। जीत का ध्यान होठों पर गया। वह मौन थे, स्मित कर रहे थे।
वफ़ाई की दोनों फैली भुजाएं वफ़ाई की छाती के पहाड़ों को अदभूत आकार दे रही थी। जैसे दो छोटे छोटे पर्वत उन्नत हो कर खड़े हो। वफ़ाई का कटि प्रदेश संकुचित लग रहा था अथवा था ही पतला? जीत उलझ गया।
एक अप्रतिम प्रतिमा अपना सौन्दर्य लेकर झूले पर झूल रही थी, हवा से खेल रही थी। हवा भी तो मदभरी हो गई थी। चंचल, मदमस्त और नटखट सी हवा!
जीत वफ़ाई को देखता रहा, फिर कुछ सोचा और चलने लगा।
वफ़ाई ने उसे रोका,“श्रीमान, कहाँ चले? क्या आपको मेरा यह रूप पसंद नहीं आया?”
“यह रूप तो घातक है, पसंद तो आएगा ही। मैं तो वध होने को खड़ा हूँ किन्तु...।”
“किन्तु क्या?”
“मैं इस क्षणों को बंदी बनाकर रखना चाहता हूँ, सदा के लिए।”
“तो फिर भाग क्यूँ रहे हो मुझ से?”
“मैं भाग नहीं रहा हूँ, बस अंदर जाकर तुम्हारा केमेरा ले कर आता हूँ। इस विपल को उस में बंद कर लेना चाहता हूँ।”
“श्रीमान, केमरे में कुछ तसवीरों को बंदी करना तो कोई कलाकारी नहीं हुई। उसमें आप का क्या चमत्कार होगा, जो होगा वह तो केमरे का ही होगा। यदि सच्चे कलाकार हो तो उसे केनवास पर उतार कर दिखाओ, तब मानूँ।” वफ़ाई ने कहा।
वफ़ाई को लिए झूला चल रहा था।
“मेरी बिल्ली मुझे ही म्याऊँ? मेरे ही शब्दों से मुझे छलनी कर दिया।”
“नहीं तो। बस मेरी प्रत्येक मुद्राओं को ह्रदय में अंकित कर लो और उसे केनवास पर उतार कर दिखाओ। बड़े चित्रकार हो न?”
वफ़ाई खुलकर हंसने लगी। उसकी हंसी को हवा अपने साथ लेकर पूरे रेगिस्तान में घूमा लायी।
सहसा वफ़ाई ने एक हाथ से माथे का तोलिया हटा दिया। तोलिया हवा में लहेरता हुआ जमीन पर आ गिरा। जीत की द्रष्टि तोलिए का पीछा करती रही।
“श्रीमान, गिरे हुए तोलिए का सौन्दर्य अपनी जगह है किन्तु उससे भी सुंदर कुछ है।” वफ़ाई के शब्द ने जीत का ध्यान वफ़ाई की तरफ खींचा।
खुले केशराग!
वफ़ाई के केश पूरी तरह तोलिए के बंधन से मुक्त थे, स्वतंत्र थे। लंबे केश खुलकर हवा में लहेरा रहे थे। कोई श्याम सा मेघ मुक्त आकाश में स्वैर-विहार कर रहा हो जैसे।
झूला आगे आता था तो केश पीछे की तरफ उडते थे और झूला लौटता था तो केश वफ़ाई की पीठ को लांघ कर कंधे पर बिखर जाते थे। छाती के दोनों भागों को ढँक लेते थे। बड़ा ही रोचक खेल कर रही थी हवा, इन खुले केश के साथ।

जीत की रुचि और तीव्र हो गई। वफ़ाई का लावण्य अपने यौवन पर था। उस मादक लावण्य में स्वयं को पिघला देना चाहता था, जीत। दौड़ कर उस प्रतिमा को छु लेने को, पकड़ कर अपने आलिंगन मे जकड़ लेने को एक तीव्र झंखना जीत के अंदर जन्म लेने लगी। ह्रदय उस झंखना को चाहने लगा, बुध्धी उसे रोकने लगी। इस संघर्ष में अपनी झंखना का जीत ने वध कर दिया। वह वहीं खड़ा रहा, देखता रहा।
वफ़ाई अभी भी झूले पर खड़ी थी, झूला अभी भी हवा की आज्ञा पर झूल रहा था। झूला निकट आता था, वफ़ाई भी। झूला दूर चला जाता था, वफ़ाई भी।
जीत एक एक क्षण, एक एक रोमांच, एक एक भाव-भंगिमा को आँखों के माध्यम से दिल में उतार रहा था। जीत प्रत्येक क्षण को जी रहा था, मन में उतार रहा था, जहां से वह उसे केनवास पर उतार सके।
वफ़ाई के भीगे केश से पानी की कुछ बूंदें वफ़ाई के गालों पर, कंधे पर तथा ललाट पर गिर रही थी, वफ़ाई ने अपने केश को समेटा, दो भागों में बाँट दिया। दोनों को छाती पर रख दिया। पानी की बूंदें अब वफ़ाई की छाती को भिगो रही थी।
झूला चलता रहा, हवा भी। हवा में झूलती वफ़ाई, उसके लहराते काले केश, फैली हुई दो बाजू और नीला तोलिया! एक लावण्यमय द्रश्य जीत की आँखों के सामने था। उसका वह पूर्ण आनंद ले रहा था।
वफ़ाई भी प्रसन्न थी, अपने आनंद में मग्न थी। वह झूले के साथ निकट आती थी, दूर चली जाती थी। किन्तु, वफ़ाई की नजर जीत पर ही टिकी हुई थी और जीत की वफ़ाई पर।
सहसा वफ़ाई के तन पर लिपटे तोलिए की गांठ ढीली पड़ने लगी, धीरे धीरे सरकने लगी। पर वफ़ाई अनभिज्ञ थी। वह अपनी क्रीड़ाओं मे व्यस्त थी।
गांठ पूरी खुल गयी। वफ़ाई का तोलिया खुल गया। वह अर्ध अनावृत हो गई। अर्ध खुले तोलिया के नीचे आंतर वस्त्र द्रष्टि गोचर हो रहे थे। बाकी का भाग अनावृत था।
जीत ने एक विहंग द्रष्टि वफ़ाई के अर्ध खुले तन पर डाली। वह सूडोल तन था। जैसे किसी मूर्तिकार ने रची हो कोई मनमोहक मूर्ति! एक तीव्र रेखा उसके दो स्तनो के बीच खींची हुई थी जो जीत को आकृष्ट कर रही थी, आमंत्रित कर रही थी। जीत ने फिर अपनी इच्छाओं पर अंकुश लगाया। बड़ी तेज गति से बाकी बचे तन पर डाल कर वफ़ाई के तन से द्रष्टि हटा ली।
द्रष्टि के टूटते सेतु को वफ़ाई ने देखा। उसे समझ में नहीं आया कि जीत ने क्यूँ दृष्टि हटा ली।
“श्रीमान, क्या हुआ?” वफ़ाई के शब्दों से जीत का ध्यान पुन: वफ़ाई की तरफ खींच गया। जीत ने संकेत से वफ़ाई को उसके अर्ध खुले शरीर की तरफ देखने को कहा।
“ओह यह कैसे हो गया?” वफ़ाई ने गिरते हुए तोलिए को पकड़ना चाहा किन्तु वह हाथ नहीं आया। वफ़ाई ने खुले केश से छाती को ढंकने का प्रयास किया। किन्तु, झूला जो अभी भी चल रहा था वह उन केश को उड़ा ले जा रहा था, वफ़ाई के तन को ढंकने के स्थान पर अधिक खुला कर रहा था।
वफ़ाई ने व्याकुलता में अपने तन पर तोलिया बांधने के लिए दोनों हाथ झूले से हटा लिए। झूला पीछे की तरफ जा रहा था। वफ़ाई अपना संतुलन खो बैठी और आगे की तरफ गिरने लगी।
जीत ने उसे गिरते हुए देखा। वह दौड़ा और वफ़ाई को गिरने से बचा लिया। वफ़ाई जीत के आलिंगन में थी। जीत उसे संभाले खड़ा था। वफ़ाई आँखें बांध करके मन ही मन सोचने लगी
यह जीत मुझे कभी गिरने नहीं देगा। ना ही कभी रुलाएगा। यह पुरुष सही है। जीत के आलिंगन में कितना सुख है*?* यह क्षण रुक जाए, समय थम जाए, बस यूं ही जीत मुझे...।
मैं अर्ध नग्न हु, एक युवक के बाहुपाश में हूँ जिसे मैं जानती नहीं थी। कुछ दिवस पहले मिली भी नहीं थी। वाह रे जिंदगी। आज मैं उसके आलिंगन में हूं, मेरी इच्छासे हूं, स्वयं को सुरक्षित अनुभव कर रही हूँ। प्रसन्न हूँ।
जीत तेरे आलिंगन में ऐसे ही झूलती रहूँ, सदा के लिए। समय के यह क्षण तुम रुक जाओ, मुझे इस क्षण को जी लेने दो।
वफ़ाई सोचती रही, सपनों को बुनती रही, जीत के आलिंगन के झूले में झूलती रही।
जीत ने वफ़ाई की तरफ देखा। वह अभी भी आँखें बंध कर के निश्चिंत सी झूल रही थी, केवल झुला बदल गया था।
“अरे जी, आँखें खोलिए और अपने पैरों पर खड़े हो जाइए। आप अब सुरक्षित हो।” जीत ने वफ़ाई को झकझोरा।
“सुरक्षित हूँ इसी लिए तो आँखें बंध कर के ...।”
“कब तक इस तरह सोये रहोगी? चलो उठो।”
वफ़ाई ने एक आँख खोली, वक्र द्रष्टि से जीत को देखा और फिर आँख बंध कर ली, “झूलने दो न थोड़ी समय तक। उस झूले से तो तुम्हारा यह हाथों का झूला...।”
जीत की सांस फूलने लगी। वह अब और समय तक वफ़ाई को अपने हाथों में झेल नहीं सकता था। हाथ काँप रहे थे। उसके हाथों से वफ़ाई सरक रही थी।
जीत ने पूरी शक्ति से वफ़ाई को झकझोरा और ऊपर की तरफ खींचा। वफ़ाई घात के साथ खड़ी हो गई, जीत से पृथक हो गई। जीत गिरते गिरते बचा। पीछे हट गया और भित्ति पकड़ कर खड़ा हो गया।
“ऐसे कोई किसी बालिका को धकेलता है? ऐसे झटकता है? कुछ क्षण और रहने देते मुझे तुम अपनी भुजाओं में। कितना आनंद था तुम्हारे आलिंगन में...।” वफ़ाई ने जीत की तरफ मुड़ते हुए मीठा सा क्रोध दिखाया।
जीत वहाँ नहीं था। वफ़ाई ने इधर उधर देखा। जीत दूर था, भित्ति के सहारे नीचे बैठ गया था। वह तेज गति से सांस ले रहा था। उसका मुख श्वेत पड गया था। शरीर चेतनाहीन लग रहा था।
वफ़ाई चौंक गई। उसके होठों पर क्षण भर पहले जो नटखट स्मित था वह अचानक ही हवाओं में विलीन हो गया। नटखट आँखें चिंतित हो गई।

61

“क्या हुआ, जीत?”
वफ़ाई जीत की तरफ दौड़ी, जीत का हाथ अपने हाथ में लिया, “जीत, जीत. तुम ठीक तो हो?” वफ़ाई के शब्द हवा में ही रह गये। जीत ने उसे नहीं सुना। जीत अभी भी हाँफ रहा था। उसे सांस लेने में कठिनाई हो रही थी।
वफ़ाई को कुछ समज नहीं आया कि क्या हो रहा है? क्या किया जाय? दो चार क्षण वह सोचती रही, फिर दौड़कर पानी ले आई, जीत को पिलाने लगी, “थोड़ा पी लो। तुम थोड़ा विश्राम करो। मैं कहीं से किसी डॉक्टर को लेकर आती हूँ।”
जीत ने पानी पिया। पानी ने असर दिखाया। ठंडी हवा ने भी अपना काम किया। जीत थोड़ा सा ठीक होने लगा। हाँफना थोड़ा मंद हुआ। कुछ क्षण वह वहीं बैठा रहा, वफ़ाई भी उसके पास बैठ गई।
एक भित्ति, उस भित्ति के सहारे, उसी भित्ति की परछाई में बैठे दो व्यक्ति। मध्धम धूप, मध्धम हवा और मौन। समय का एक टुकड़ा

कुछ क्षण वहाँ रुक गया।
“जीत, तुम विश्राम कर लो। मैं किसी डॉक्टर को बुलाकर आती हूँ।” वफ़ाई ने जीत के माथे पर अपना हाथ फेरते हुए कहा। जीत को लगा जैसे उसकी माँ उसे सुला रही हो।
“बालिकाएँ कितनी भी बड़ी हो या छोटी, जब किसी के माथे पर हाथ फेरती हो तो वह माँ बन जाती है। कैसा जादू है इनjके हाथों में?” जीत ने आँखें बंध रखते हुए कहा। “तुम कन्याएं शीघ्र ही नानी का और दादी का चरित्र निभाने लगती हो। कैसे कर लेती हो यह सब?”
वफ़ाई चुप चाप माथे पर हाथ फेरती रही। जीत को अच्छा लगने लगा।
“जीत, तुम्हें नींद आ रही है। तुम्हें थोड़ा सो जाना चाहिए। तुम अंदर चलो। चलो उठो।” वफ़ाई ने जीत को अपना हाथ दिया, पर जीत वहीं बैठा रहा। वफ़ाई के बढ़े हुए हाथ को देखता रहा।
“चलो उठो। चलो हाथ दो।” वफ़ाई ने पुन: आमंत्रित किया जीत को।
“नहीं, मैं यहीं ठीक हूँ।””
“तुम मेरे साथ भीतर चलो, कहा ना?”
“मैं यहीं विश्राम कर लेता हूँ। तुम अंदर जा सकती हो।”
“अर्थात तुम अभी भी मेरे कक्ष में जाना नहीं चाहते? जीत, तुम अंदर आ सकते हो। मेरे आने से पहले वह तुम्हारा ही तो था। अब भी तुम्हारा ही है। मैं तो केवल अतिथि हूँ।”
“अतिथि हो तो मेरा इतना ध्यान क्यूँ रखती हो?”
“वोह तुम नहीं समझोगे श्रीमान चित्रकार। और में समझाना भी नहीं चाहती। अब हठ छोड़ो और उठो यहाँ से नहीं तो मैं तुम्हें घसीट ले जाऊँगी। उठते हो या?” वफ़ाई ने रौद्र स्वरूप दिखाया।
“देखो फिर से तुम नानी तथा दादी बन गई।”
“तो? तुम्हें कोई समस्या?”
“समस्या तो गंभीर है। इतनी छोटी नानी तथा दादी कभी देखि नहीं न।” जीत ने दर्द को भूलकर हँसना चाहा, वह हंस न सका।
“जो भी हूँ, तुम्हें मेरे आदेश को मानना पड़ेगा। चलो उठो।” जीत उठा और झूले पर जा बैठा।
“क्या झूले पर ही सो जाना है?” वफ़ाई ने फिर डांटते हुए पूछा।
“नहीं, अब मुझे सोना नहीं है। तुम मेरे पास आकर बैठो। मुझे तुमसे कुछ बात करनी है।” जीत ने झूले को हल्का सा धक्का दिया। झूला धीरे धीरे चलने लगा।
वफ़ाई जीत के लिए निम्बू सूप लेकर आई, “अच्छे बालक की भांति लो इसे पी लो। कोई प्रश्न नहीं करना। क्या समझे?” वह झूले के पास खड़ी रही।
जीत वफ़ाई के हाथ को देखता रहा। कुछ भी बोले बिना बस देखता रहा।
“अरे, क्या देख रहे हो इस कटोरे को? देखने से नहीं इसे पीने से लाभ होता है।”
“कटोरे को कौन देख रहा है?”
“तो क्या देख रहे हो?”
“सत्य कहूँ?”
“असत्य तो बोलना ही नहीं।”
“जैसी आज्ञा। मैं तो तुम्हारे हाथ को देख रहा था।”
“क्या देखा इन हाथों में?”
“एक अज्ञात व्यक्ति, धरती के एक अज्ञात कोने से आकर इस अज्ञात से कोने में, अज्ञात घर में, मेरे जैसे अज्ञात व्यक्ति के लिए अपने उन हाथों से निम्बू सूप बनाती है जिन हाथों से वह केमरे से तस्वीरें खींचती थी। क्यूँ करती हो तुम मेरे लिए यह सब? यह सब…।” जीत आगे बोल नहीं पाया।
“अब ज्यादा भावुक होने की आवश्यकता नहीं है। चुप चाप इसे पी लो और सो जाओ।”
“पीना तो पड़ेगा ही। किन्तु सोच रहा हूँ कि क्या संबंध है? क्यूँ कोई इतना करता है किसी के लिए?”
“मैंने अभी अभी कहा था ना कि वोह तुम नही समझोगे चित्रकार। अब और कोई प्रश्न नहीं, कोई बात भी नहीं। बस, इसे पी लो।”
“तुम फिर माँ, नानी और दादी बन गई।” जीत हंस पड़ा, वफ़ाई भी। जीत निम्बू सूप पीने लगा। वफ़ाई अभी भी झूले के पास खड़ी, सूप पीते जीत को देख रही थी। जीत भी सूप पीते पीते वफ़ाई को देख रहा था। वफ़ाई के चेहरे पर मधुर सा स्मित था। जीत को वह स्मित नया सा लगा, सूप का रस भी। उसे लगा कि वह सूप नहीं अमृत पी रहा है।
अमृत*?* मेरे लिए अमृत तो अब इस मरुभूमि के मृगजल की भांति है, जो कभी हाथ ना आए। उससे पहले ही …
जीत आगे सोच नहीं पाया। सूप पूरा हो चुका था।
“चलो अब भीतर और सो जाओ। सब ठीक हो जाएगा।” वफ़ाई ने कक्ष की तरफ संकेत किया। जीत उसे टाल न सका।
“यह तो कभी सोचा ही नहीं था। कभी ऐसा स्वप्न भी नहीं आया कि इस मरुभूमि के इस घर में मेरे साथ अन्य कोई आयेगा और इस कक्ष में दोनों को साथ साथ सोना पड़ेगा।”
“और वह भी एक सुंदर युवती के साथ? जीत, तुम सपने तो ढंग के देखा करो।”
“सपने? तुम सपनों की बात करती हो, किन्तु मैंने तो, चलो छोड़ो उसे। तो मैं क्या कह रहा था? मैंने इस कक्ष में दो व्यक्तियों की कल्पना ही नहीं की थी, इस लिए …।”
“सो जाओ अब। मुझे भोजन बनाना है। तैयार होते ही जगा दूँगी।” वफ़ाई रसोईघर में चली गई।
जीत ने सोने के तमाम प्रयास किया किन्तु वह सो ना सका।
क्या अब समय आ गया है वफ़ाई को सब कुछ बता देने का*?* मेरे जाने का*?* क्या साँसों का रुक रुक कर आना कोई संकेत है*?*

कितना समय होगा मेरे पास?
मुझे ज्ञात नहीं।
तो सब कुछ बता दो वफ़ाई को।
क्यूँ बताना है वफ़ाई को? उसे बताना आवश्यक है? कुछ ही समय की तो वह अतिथी है। उसे क्यूँ मेरी पीड़ा से दुखी करना?। एक बार वह चली जाएगी बाद में इस जीवन में कभी नहीं मिलेगी। उसे कुछ नहीं बताना चाहिए।
वह अतिथि है नहीं, अतिथि थी। अब वह तुमसे ...।
नहीं। यह सत्य नहीं है। नहीं करना मुझे प्रेम उससे। कोई आशा, कोई अपेक्षा नहीं जगानी है मुझे।
किन्तु वह तो करती है प्रेम तुझसे। कितना अधिकार करती है? क्या ऐसे ही कोई इतना अधिकार करता है किसी पर?
पर मैं तो नहीं करता।
क्यूँ? क्यूँ भाग रहे हो प्रेम से? क्यूँ भाग रहे हो अपने आप से? वास्तव में तुम भी उससे प्रेम करने लगे हो। बस इस बात का स्वीकार करने का साहस नहीं है तुम में। कायर हो तुम। तुम क्या मृत्यु से लड़ोगे? तुम क्या जीने की इच्छा जगाओगे? तुम्हें तो मरना ही होगा। तुम्हें कोई नहीं बचा सकता आनेवाली मृत्यु से। तुम्हें मरना होगा, हाँ तुम्हें मरना ही होगा। यही तुम्हारी नियति है।
“नहीं, नहीं। मैं मरना नहीं चाहता। मैं जीना चाहता हूँ। मैं जीना चाहता हूँ।” जीत चिल्ला उठा। उसने हाथों की मुट्ठी बंध कर ली और उठ खड़ा हो गया। द्वार की तरफ मुडा।

द्वार पर वफ़ाई खड़ी थी। वह जीत को ही देख रही थी। जीत चौंक गया।
कब से वफ़ाई यहाँ खड़ी होगी? क्या वह मेरे मन में चल रहे द्वंद को देख रही होगी? जीत ने अपने आप को देखा। उसके दोनों हाथों की मुट्ठी अभी भी बंध थी। दाहिना हाथ हवा में उठा हुआ था। एक विचित्र मुद्रा थी वह।
जीत ने अपने उठे हुए हाथ को नीचे किया, हाथ की मुट्ठियाँ खोल दी, सीधा खड़ा हो गया। वफ़ाई को देखने लगा।
उसकी आँखों में एक आभा थी, होठों पर स्मित था। भिन्न सी आभा, भिन्न सा स्मित! जीत को लगा कि इस आभा और स्मित में कुछ बात है, कुछ खास है यह। वह स्मित, वह आभा जीत को भीतर तक छु गया।
क्या है यह स्मित? कैसी है यह आभा? इसमें कुछ तो है। क्या वह जीवन का संकेत है? क्या यह स्मित मुझे मेरी मृत्यु से बचा सकती है? यदि यह स्मित मेरे साथ रहे तो में मृत्यु से लड़ सकता हूँ, उसे हरा सकता हूँ।
जीत ने अपनी पलकों को क्षण भर के लिए झुकाई, बंध कर दी, फिर खोल दी। सामने वफ़ाई वही जीवन से भरपूर स्मित को लेकर खड़ी थी। जीत को विश्वास हो गया कि वफ़ाई और वफ़ाई का स्मित कोई भ्रम नहीं पर सत्य है, स्थायी है, चिरंजीवी है।
जीत ने अधूरे मन से स्मित करने का प्रयास किया। जीत के स्मित में वह प्रसन्नता नहीं थी, जो वफ़ाई के स्मित में थी। यदि कुछ था तो बस पीड़ा थी।
वफ़ाई अभी भी स्थिर सी खड़ी थी, वही स्मित को ओढ़े हुए, देख रही थी जीत के सारे मनोभावों को। जीत भी अब स्थिर हो गया। कुछ क्षण व्यतीत हो गए। वफ़ाई और जीत दोनों अपने अपने स्थान पर स्थिर खड़े थे। दोनों एक दूसरे को देख रहे थे, दोनों मौन थे। समय की एक तरंग भी दोनों के साथ वहीं रुक गई।
“चलो, भोजन तैयार है।” वफ़ाई ने रुके हुए समय को चलित किया। हवा भी चलने लगी, समय भी, जीत भी।
“भोजन से पहले मुझे तुमसे कुछ बात करनी है।” जीत ने साहस जुटाया।
“मुझे भी बहुत बातें करनी है। पर, पहले भोजन। उसके पश्चात सब कुछ।”
“किन्तु मेरी बात अत्यंत आवश्यक है।”
“संस्कृत के पंडितों ने कहा है कि कितने भी काम हो सब छोड़ कर भोजन ले लेना चाहिए।”
वफ़ाई चली गई।
“कितना धैर्य, कितनी स्थिरता है तुम में वफ़ाई? और मैं, अत्यंत विचलित।”
थालियाँ परोसी गई। दोनों चुप चाप भोजन करने लगे। जीत को लगने लगा कि इस अन्न के एक एक दाने में जीवन भरा हुआ है। अन्न के रस में जीवन रस है। उस मौन में कुछ पदचाप है जो जीवन से भरे है।
आज मुझे प्रत्येक बात में, प्रत्येक वस्तु में जीवन के संकेत दिख रहे हैं। मुझे अब मृत्यु से भयभीत नहीं होना है। मुझे जीना है। मैं जीना चाहता हूँ।
जीत के मन में जीवन की लालसा जाग उठी। एक जिजीविषा ने जन्म ले लिया।
भोजन सम्पन्न हो गया।

“मैं झूले पर हूँ, तुम शीघ्र वहाँ आ जाओ।” जीत चला गया।
वफ़ाई भी कुछ क्षण बाद झूले के पास आ गई। वफ़ाई जीत के समीप झूले पर बैठ गई। दोनों ने झूले को धकेला, झूला धीरे धीरे चलने लगा। कुछ क्षण मौन ही बीत गए।
“जीत, तुम्हें मुझसे कुछ कहना था।” वफ़ाई ने झूले को रोक दिया।
जीत इसी क्षण की प्रतीक्षा में था, “तुम तैयार हो सुनने के लिए?”
“हाँ बाबा हाँ। अब जो कहना है वह सीधे सीधे बता दो।” वफ़ाई जीत की तरफ मुड़ी। वह उत्साह से भरी थी।
आज जीत दिल की बात करेगा। प्रेम की बात करेगा।
वफ़ाई मन ही मन हंस पड़ी।
“मैं जो कहने जा रहा हूँ उस बात की तुम्हें लंबी प्रतीक्षा थी।”
“शिघ्रता से कह दो। मैं अधीर हो रही हूँ।” वफ़ाई की आँखें उत्सुक थी।
“ठीक है, ध्यान से सुनना।” जीत ने आकाश की तरफ देखा, वहाँ घूमते बादलों को देखता रहा।
“तुम जानना चाहती थी कि मैं जीवन के इस पड़ाव पर इस मरुभूमि में क्यूँ आया। मेरे जीवन का रहस्य क्या है?” जीत रुका।
“हाँ, जानना चाहती थी, किन्तु...।” वफ़ाई जीत की बात सुनकर निराश हुई। उसे जिस बात की अपेक्षा थी उस बात के बदले जीत दूसरी बात कह रहा था। वह मन ही मन सोचने लगी-
कल तक मैं अधीर थी यह जानने के लिए कि जीत का भूतकाल क्या है। ऐसी कौन सी बात है जिसने जीत को सब कुछ त्यागकर यहाँ मरुभूमि में आकर बस जाने को विवश किया? मैं जानने का प्रयास करती थी और वह हर बार उसे टाल देता था। कितना रोष आता था तब जीत पर? और आज वही बात जीत सुनाना चाहता है और मुझे रुचि नहीं है। क्यूँ?
क्यूँ कि आज तुम कुछ और सुनना चाहती थी। तुम्हें यह सुनने कि लालसा थी कि जीत कहे की मैं तुमसे प्रेम करता हूँ। और जीत तो कुछ और ही बात कह रहा है।
किन्तु जब जब मैं जो जो बात सुनना चाहती हूँ, वह बात तब तब क्यूँ नहीं होती?
हर बात का एक निश्चित समय होता है।
जो सदैव मेरी अपेक्षा से भिन्न होता है। ऐसा क्यूँ?
क्यूँ कि हमारी अपेक्षा का...।
नहीं सुननी मुझे तुमसे यह ज्ञान की बातें।
मत सुनो। पर जीत की बात तो सुननी ही पड़ेगी।
अब क्या अर्थ है उसके बीते हुए कल की बात सुनने का? मैंने तो उसे प्रेम किया है, बिना उसके भूतकाल को जाने हुए। मैंने तो उसके वर्तमान से प्रेम किया है और उसके भविष्य को मेरे भविष्य से जोड़ना चाहती हूँ। मुझे उसके बीते हुए कल से क्या संबंध? मुझे नहीं सुनना उस कल को, जो बीत चुका है।
किन्तु जीत के मन में वह समय अभी भी जीवित है। और जब तक उसके मन और हृदय से यह समय बीत नहीं जाता, वह वर्तमान में नहीं जी सकेगा। और यदि तुम उसे तुम्हारे वर्तमान में चाहती हो तो उसके भूतकाल को बह जाने दो, निकल जाने दो। जीत को वर्तमान में ले आओ। और उसके लिए उसे सुनना अनिवार्य है।
तो मैं क्या करूँ?
जीत को उसके भूतकाल से वर्तमान में आने में उसकी सहायता करो। उसकी बात का हाथ पकड़कर उसे तुम्हारे हृदय तक लेकर आओ। जब भी जीत वर्तमान में आ जाएगा, वह तुम्हारा हो जाएगा। केवल तुम्हारा। तुम भी तो यही चाहती हो। है ना?
हाँ। हाँ।
“वफ़ाई, तुम कहाँ हो?”
“कुछ नहीं जीत, तुम कुछ कह रहे थे। मैं तुम्हारे उस बीते हुए कल को सुनना चाहती हूँ। कहो न क्या रहस्य है? तुम्हारी बात बड़ी रुचिकर होगी। है न?” वफ़ाई ने पूरे उत्साह और अपेक्षा से जीत की तरफ देखा, उसकी आँखों में आँखें डाली और मौन स्मित लिए अपने अधरों को बंध कर दिया।
जीत ने बिखरे हुए अपने आपको समेटा। गहरी सांस ली, “वफ़ाई, मेरा भी एक परिवार था। पत्नी भी थी। अच्छा सा कारोबार था। जीवन की तमाम सुविधा थी, आनंद भी था।” वह रुका, आकाश की तरफ देखता रहा।
“फिर क्या हुआ?” वफ़ाई अधीर हो उठी।
“एक दिन हम दोनों घूमने के लिए किसी बर्फीले पहाड़ पर गए।” जीत ने पूरी जीवनी बता दी।
“तो तुम रोगी हो? तुम सोच रहे हो कि तुम्हारे पास समय नहीं बचा और शीघ्र ही तुम...।”
“किन्तु मैं मरना नहीं चाहता, मैं जीना चाहता हूँ।” जीत चिल्ला उठा। झूले पर से उठ खड़ा हुआ और दूर जा कर भवन की प्राचीर से सटकर खड़ा हो गया।
वफ़ाई जीत के पास गई और उसका हाथ पकड़ कर झूले पर ले आई।
“जीत, तुम बैठो यहाँ पर। सब ठीक हो जाएगा।”
वफ़ाई कक्ष में गई, पानी लेकर आई और जीत को अपने हाथों से पिलाया। जीत को अच्छा लगा। वफ़ाई के हाथों ने पिलाये पानी में जीत जीवन की संभावनाएं ढूँढने लगा। उसे धुँधलीसी कोई किरण दिखाई देने लगी, जो जीने के लिए प्रेरित कर रही थी। जिजीविषा करवट ले रही थी।
क्या था इस पानी में? जब से मैं यहाँ आकर रुका हूँ मैं यही पानी पी रहा हूँ। किन्तु आज इस पानी में प्रथम बार जीवन की अभिलाषा दिखाई देने लगी है। कुछ तो है।
जो भी है वह बात पानी में नहीं, वफ़ाई के हाथों में है।
हो सकता है। किन्तु...।

“यह तो कोई बात नहीं हुई। कोई ऐसे ही सब कुछ छोड़ कर चला नहीं जाता। तुम्हारी बात में अर्धसत्य है अथवा बात ही आधी है। मैं नहीं जानती।” वफ़ाई ने प्रश्न भरी द्रष्टि से जीत की तरफ देखा।
“तुम मेरी बात पर विश्वास क्यूँ नहीं करती? मैंने जो भी कहा सत्य ही कहा है।”
“हो सकता है की अधूरा कहा हो?”
“नहीं तो? यही सत्य है, पूरा सत्य। मेरा विश्वास करो।”
“कैसे करूँ? एक युवक विवाह कर लेता है, मधुरजनी हेतु हिम पर्वत पर जाता है और रोगी हो जाता है। रोग गंभीर अवश्य है किन्तु मृत्यु के इतनी भी समीप नहीं कि कोई मरने से पहले जीना छोड़ दे। और एक बात, आज कल विज्ञान के पास हर रोग का उपचार है। यदि उपचार नहीं है तो भी आशा तो है ही। कोई ऐसे ही केवल रोगी होने के कारण जीना नहीं छोड़ देता है। मुंबई जैसे महानगर में रहते थे, पत्नी थी, परिवार था, कारोबार था और उपचार के लिए पैसों की भी तो समस्या नहीं थी। ऐसे में कोई सब कुछ छोड़ कर, ज़िंदगी से हारकर भाग नहीं जाता। उसका पूरी शक्ति से सामना करता है। किन्तु तुम तो कायरों की भांति…।” जीत ने वफ़ाई की बात बीच में ही काट दी।
“मैं कायर नहीं हूँ, नहीं हूँ।” जीत उत्तेजित हो गया। हाँफ गया।
“तो पूरा सत्य क्या है? तुम्हें बताना पड़ेगा।” वफ़ाई ने जीत पर अधिकार प्रकट किया।
वफ़ाई का इस तरह अधिकार करना जीत को अच्छा लगा। मन ही मन बोला,
वफ़ाई की इस हठ में भी जीवन की अपार संभावनाएं है। जीवन के कैसे कैसे संकेत दे रही है यह हठ?
“तुम पूरा सत्य बताते क्यूँ नहीं?” वफ़ाई ने फिर पूछा।
जीत कुछ समय मौन रहा। सोचता रहा –
किस तरह से वह सब सत्य बता दूँ? दिलशाद तथा नेल्सन के विषय में क्या बताऊँ? कैसे बताऊँ? और यदि बता भी दूँ तो वफ़ाई क्या सोचेगी मेरे विषय में?
सोचना क्या है? वफ़ाई तो सोच ही चुकी है कि तुम कायर हो। तुम अपने आप ही हार गए हो।
तो क्या करता मैं? आँख बंध कर दोनों को देखता रहता? मन ही मन जलता रहता? वह आग में जलने से तो अच्छा ही था कि मैं भाग गया। जीवन की तमाम संभावनाएं उस आग में जल गई थी, राख़ हो गई थी।
पर अब हवा बदल गई है, समय ने करवट ली है। वफ़ाई के रूप में कोई आशा, कोई जीवन, कोई अपेक्षा द्वार पर आ खड़ी है, तुम्हें पुकार रही है। यदि उसे भी ठुकराना चाहो तो तुम्हारी इच्छा। यह क्षण जो एक बार बित गया तो फिर न लौटेगा।
“बता भी दो अब। कब तक कोई हृदय पर भार रखता है? मानवी का हृदय कोमल होता है, मृदु होता है। उसे अधिक कष्ट नहीं देते हैं। थक जाओगे ऐसे भार उठाते उठाते।”
“थक ही तो गया हूँ। मेरी मृत्यु अब बिलकुल सामने…।” जीत पूरी बात कह नहीं पाया।
“मनुष्य मृत्यु से नहीं मरता, पर मृत्यु की कल्पना से मरता है। मृत्यु की प्रतीक्षा में मरता है। तुम भी इसी तरह मर रहे हो।”
“मरना कौन चाहता है? मैं जीना चाहता हूँ। किन्तु …।” फिर कोई विषाद जीत के चेहरे पर आकर रुक गया।
वफ़ाई जीत के पास गई। उसके केश में उँगलियाँ पसारने लगी। जीत ने आँखें बंध कर ली, वफ़ाई के स्पर्श को अनुभव करता रहा। उसे अच्छा लगा। वफ़ाई ने पूरा समय दिया, जीत को। जीत संभलने लगा। शांत हो गया, स्थिर हो गया। हवा धीरे धीरे बहने लगी।
प्रत्येक मोड पर जीवन नई आशाएँ जगा जाती है। वफ़ाई का होना भी तो कोई संकेत है। उसके स्पर्श में कोई बात है, कोई विश्वास है। मैं उसे अपनी बात बता सकता हूँ। जीत ने मन मना लिया, मन बना लिया।
“उपचार के लिए मैं और दिलशाद डॉक्टर नेल्सन से मिले।”
“दिलशाद नाम है तुम्हारी पत्नी का! नाम तो बड़ा सुंदर है। स्वयं भी सुंदर ही होगी। मेरे से तो अधिक ही सुंदर होगी, है ना?“
जीत को यह छेडछानी अच्छी लगी। उसने स्मित दिया। उसे उस स्मित में ज़िंदगी दिखी।
यहाँ तो हर क्षण में, हवा की हर लहर में जीवन है, आश है। मैं ही मूरख था, उसे समझ ही नहीं पाया। जीत ने अपने आप से बात कर ली।
“इन बातों का कोई अर्थ नहीं है, वफ़ाई।” जीत ने कुछ क्षण पश्चात उत्तर दिया।
“छोड़ो उसे। आगे बताओ क्या हुआ?”
“उपयुक्त उपचार चलने लगा था। उपचार की प्रक्रिया में दिलशाद नेल्सन से मिलती रहती थी। दोनों के बीच कुछ जन्म लेने लगा और एक दिन…।” जीत ने उस संध्या की बात वफ़ाई को बताई जिस संध्या दिलशाद नेल्सन से मिलकर बिना ब्रा के लौटी थी।
“उस संध्या के पश्चात मैं विचलित हो गया। पहले तो मुझे दिलशाद पर क्रोध आया। किन्तु फिर सोचा कि उसने कुछ अनुचित नहीं किया। उसके सामने पूरी जिंदगी पड़ी थी और मेरी ज़िंदगी समय के किसी भी बिन्दु पर रुक सकती थी। नेल्सन से अच्छा साथी कौन हो सकता था? जब तक मैं सामने रहूँगा, दिलशाद दुविधा में ही रहेगी। और यदि वह छुप कर नेल्सन से मिलती रहेगी तो मैं भी दुखी रहूँगा। मुझे लगा कि मूझे हट जाना चाहिए। और मैं एक दिन सब कुछ छोड़ कर यहाँ चला आया। मेरा सब कुछ दिलशाद के नाम कर आया।”
वफ़ाई आक्रंद करने लगी जीत की बात सुनकर। जीत की पीड़ा का अनुभव करने लगी।
वफ़ाई को विलाप करते देख जीत भी क्रंदन करने लगा। एक नदी सब बंधन तोड़कर बहने लगी।
वफ़ाई ने जीत को अपने आँचल में छुपा लिया। स्वयं विलाप करती रही, जीत को भी करने दिया।
कुछ क्षण पश्चात वफ़ाई ने स्वयं को संभाला, स्वयं से बातें करने लगी।
लगता है जीत महीनों से रोया नहीं होगा! पुरुष होकर विलाप करना कितना कठिन होता होगा? कोई पुरुष यूं ही नहीं रोता। जब कोई हिम विशाल अग्नि से पिघलता होगा तब जाकर कोई पुरुष रोता होगा। और बिना अग्नि के कोई हिम नहीं पिघलता, यह तुमसे अच्छा कौन जानता है, हिम सुंदरी?

हिम सुंदरी, कितना अच्छा नाम है? जीत तो तुम्हें इसी नाम से पुकारता रहता है ना?
हां। किन्तु समय हो गया इस शब्द को जीत ने नहीं कहा। वह कहता भी तो कैसे। तुम तो जानती हो कि किस स्थिति में है वह।
अच्छा हुआ तूने उसे आक्रंद करने में सहायता की। अन्यथा भीतर ही भीतर वह मर जाता।
नहीं मरेगा वह अब। मैं नहीं मरने दूँगी उसे।

63

“उठो चलो, कहीं बाहर चलते है। कुछ अंतर साथ साथ चलते हैं।” वफ़ाई ने कहा।
“इस मरुभूमि में कहाँ जाएँगे हम?”
“क्यूँ? मरुभूमि में नहीं चल सकते क्या? चलने के लिए पथ ही तो चाहिए।”
“चरण भी तो चाहिए।”
“चरण तो सब के पास होते हैं, उसे उठाने का साहस चाहिए श्रीमान।”
“यह साहस कहाँ से आता है?”
“मैं तो चली, तुम आ जाओ मेरे पीछे पीछे।” वफ़ाई चल पड़ी।
“अरे, रुको। मैं भी...।” जीत पुकारता रहा, वफ़ाई चलती रही। जीत ने गति बढाई, वफ़ाई के साथ हो गया।
दोनों साथ साथ चलते रहे। मरुभूमि खाली थी, मौन थी। दोनों के चरणों की ध्वनि आती रही। मरुभूमि की हवा भी कुछ कहती रही। मौन की ध्वनि भी सुनाने लगी। हवा में एक संगीत बह रहा था, वफ़ाई उसे सुनती रही तो जीत उस संगीत के संकेतों को पकड़ने का प्रयास करता रहा।
दोनों लौट आए।
दूर सूरज अपने घर की तरफ चल पड़ा था। गगन अपना रंग बदल चुका था।
वफ़ाई नींबू रस ले आई, “लो इसे पी लो।”
जीत ने रस लिया, वफ़ाई की आँखों में देखा। उन में भी जीत को एक रस दिखा, जीवन रस। एक संकेत दिखा, जीवन संकेत। जीत ने स्मित किया। वफ़ाई ने स्मित से जवाब दिया। वह हाथों में रस कटोरी लिए ढलते सूरज को देखने लगी। सूरज ढल जाए उस से पहले, सूरज के बिलकुल समीप दूज का चंद्र निकल आया था। वफ़ाई प्रसन्न हो गई।
“जीत, वह सूरज देख रहे हो?” वफ़ाई ने मौन तोड़ा।
“हाँ, थोड़ी ही देर में वह भी ढल जाएगा।” जीत ने अधूरे मन से जवाब दिया।
“ढलना तो उसकी प्रकृति है। ढलेगा तब तो कल फिर उगेगा।”
“पर आज तो वह ढल रहा है। उसे ढलने से कोई नहीं रोक सकता।”
“किन्तु कल तो वह...।”
“कल किसने देखा है? कल अज्ञात है, कल...।” जीत ने बात अधूरी छोड़ दी।
“तुम हर बात पर निराश क्यूँ हो जाते हो? हर बात को तुम अपने साथ क्यूँ जोड़ देते हो?” वफ़ाई क्रोधित हो गई।
“क्यूँ की यही मेरा सत्य है।”
“किन्तु इसी ढलते सूरज में कहीं कुछ उगने का संकेत है, कहीं जीवन भी है। बस दिखना चाहिए।”
“मुझे तो कुछ नहीं दिख रहा।”
“वह दूर देखो, सूरज के निकट। एक पतली चमकती रेखा दिख रही है?” वफ़ाई ने अपने हाथ को चन्द्र की दिशा में खींचा।
“नहीं। मुझे तो कुछ भी नहीं दिखता।”
“इधर आ जाओ।”
जीत वफ़ाई के पास जा कर खड़ा हो गया। वफ़ाई ने फिर से चंद्र की तरफ निर्देश किया, हाथ खींचते हुए कहा,“देखो, मेरे हाथ की दिशा में देखो। वहीं दूर एक छोटा सा दूज का चंद्र दिख रहा है ना?”
जीत वफ़ाई के खींचे हुए हाथ को देखने लगा। जीत की रुचि चंद्र से ज्यादा वफ़ाई के हाथ में थी। उस खींचे हुए हाथ में भी जीत को भरपूर जीवन दिखने लगा।
“दिखाई दिया?” वफ़ाई ने फिर से पूछा।
जीत ने अपना ध्यान वफ़ाई के हाथ पर से खींचे हुए हाथ की दिशा में घुमाया। दूर उसे दूज का चंद्र दिखाई दिया।
“हां, दिख रहा है। कितना छोटा सा है?”
“किन्तु सुंदर है। है ना?” वफ़ाई की बात में उत्साह था, उमंग था।
“जीत, तुम जानते हो? जब मैं छोटी थी तब मेरी मां मुझे प्रत्येक माह दूज का चंद्र अचूक दिखाती थी। मैं भी हर माह उसे देखने को उत्सुक रहती थी। कारण जानते हो?” वफ़ाई ने मुख जीत की तरफ घूमाया।
उस मुख में भी जीत को जीवन संकेत दिखे।
“नहीं जनता। अभी कुछ ही दिन तो हुए हैं हमें मिले हुए। और तुम अपने बचपन की बात मुझे पूछ रही हो। बावली हो तुम...।” जीत ने परिहास किया।
“बात तो उचित है तुम्हारी। बावली तो मैं हूँ ही। नहीं तो इस मरुभूमि में एक अज्ञात युवक के साथ ऐसे इतने दिनों तक थोड़ी न

रहती?” वफ़ाई हंस पड़ी। जीत भी।
“तुम ऐसे ही हँसते रहो, जीत। अच्छा लगता है।” वफ़ाई और जीत फिर से हंसने लगे, मुक्त मन से।
“तुम अपने बचपन की कुछ बात कह रही थी।” जीत ने याद दिलाया।
“दूज का चंद्र अमावस्या के बाद निकलता है। यह संकेत देता है कि अंधकार से भरी रात्रियाँ व्यतीत हो चुकी है। दूसरी बात, दूज के चंद्र के बाद हर रात्रि चंद्र बढ़ता जाता है। तमस् घटता जाता है, प्रकाश बढ़ता जाता है। इसे शुभ माना जाता है।”
“देखो बातों बातों में सूरज डूब गया, साथ में चंद्र भी। कितनी छोटी आयु होती है दूज के चंद्र की?”
“तुम फिर निराश हो गए? क्या हो गया है तुम्हें? तुम जीना नहीं चाहते?” वफ़ाई ने गुस्सा दिखाया।
“जीना तो प्रत्येक व्यक्ति चाहता है, मैं भी।”
“तो चिंतित क्यूँ हो? जीवन की आशा को जीवंत रखो, सब कुछ ठीक हो जाएगा।”
“जब जब जीवन की आशा जागती है, ज़िंदगी मुझे छल जाती है और मृत्यु के अधिक समीप लाकर खड़ी कर देती है। मैं भयभीत हो गया हूँ।”
“तुम ऐसा क्यूँ सोच रहे हो?”
“समय ने मुझसे मेरी दिलशाद छिन ली। गेलिना आंटी को भी छिन लिया। मुझे संदेह है कि कहीं तुम भी मुझे...।”
वफ़ाई मौन रही।
“जीवन से मेरा विश्वास उठ गया है। मैं क्षण क्षण मेरी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। किन्तु मृत्यु भी तो आती नहीं। मैं थक गया हूँ इस तरह प्रतीक्षा करते करते।”
वफ़ाई अभी भी मौन थी।
जीत भी मौन हो गया। उसे वफ़ाई के संग जीवन की कोई आश देखने की अपेक्षा थी, किन्तु वफ़ाई तो मौन थी।
वफ़ाई ने कोई संकेत नहीं दिया। वह लौट गई कक्ष में। क्षितिजें रात के अंधेरे से ग्रस्त हो गई । जीत विषाद ग्रस्त हो गया।
मरुभूमि रात का मौन ओढ़े सो गई। वफ़ाई कक्ष में थी और जीत झूले पर। दोनों सोने का प्रयास कर रहे थे, पर कोई सो नहीं पाया।
मध्यरात्रि तक जब वफ़ाई को नींद नहीं आई तो वह कक्ष से बाहर निकली, दरवाजे पर खड़ी हो गई और जीत को देखने लगी।
जीत, झूले पर बैठा था। उसकी आँखें खुली थी और गगन की तरफ ताक रही थी।
मुख पर अभी भी पीड़ा है। संध्या के समय थी उससे भी अधिक पीड़ा है। कितना दुखी है यह? कितनी पीड़ा सह रहा है वह और में विवश हूँ। उसकी पीड़ा को जरा सा भी हर नहीं सकती। कितना कष्ट, कितना आघात झेला होगा उसने? समझ नहीं आ रहा है कि मैं करूँ तो भी क्या करूँ? वह क्षण क्षण मर रहा है। वह जीवन की इच्छा को खो चुका है। मैं विवश होकर देख रही हूँ। मैं कुछ नहीं कर सकती।
वफ़ाई सोचते सोचते जीत के पास आ गई। जीत अनभिज्ञ था। वफ़ाई ने चादर में छुपे जीत के मुख को ध्यान से देखा, वह चौंक पड़ी। जीत तेजी से सांस ले रहा था, हाँफ रहा था। वफ़ाई ने जीत के माथे पर हाथ फेरा, वह गरम था। तेज ज्वर से जीत तप्त था।
“तेज ज्वर है तुम्हें। चलो उठो और अंदर चलो। कुछ दवाई ले लो।” वफ़ाई ने जीत को हाथ से पकड़ा और कक्ष में ले गई। वफ़ाई जीत के लिए दवाई ढूँढने लगी।
“जीत, कहाँ होगी दवा?” वफ़ाई ने पूछा।
“मुझे कोई दवा नहीं लेनी है। तुम उसे मत ढूंढो।” जीत हाँफते हुए बोला।
“तो तुम क्या चाहते हो? दवाई नहीं लोगे तो मर जाओगे। वेदना देखी है कभी अपनी?” वफ़ाई ने जीत को डांटा।
“मैं मरना नहीं चाहता, मैं जीना चाहता हूँ।”
“तो क्या मैं तुम्हें मारना चाहती हूँ? जीने के लिए ही तो दवाई देना चाहती हूँ। तुम समझते क्यूँ नहीं हो?”
“नहीं, मेरा कहने का तात्पर्य वह नहीं था।” जीत ने गहरी साँसे ली, “किन्तु मैं जानता हूँ कि मेरे पास समय बहुत ही अल्प है। अब इन दवाओं से कब तक जीता रहूँगा?”
जीत वफ़ाई की आँखों में देखने लगा। वफ़ाई शांत हो कर जीत को सुनती रही, देखती रही।
जीत आगे न बोल सका। हाँफ गया। वफ़ाई उसके माथे पर हाथ फेरती रही। उसे अच्छा लगा।
“तुम तो बोलो न कुछ। मैं ही बोले जा रहा हूँ। तुम कुछ कर सकती हो?” जीत ने आशा भरी नजरों से वफ़ाई को देखा।
“मैं नहीं जानती, मैं क्या कर सकती हूँ। किन्तु तुम तो कर सकते हो। मरने से पहले जो चाहे, जैसा चाहे जी तो लो।”
“वह कैसे?”
“जो भी मनसा हो, पूरी कर लो। क्या चाहते तो तुम इस बचे हुए समय में?”
जीत कुछ सोचता रहा।
क्या चाहता हूँ मैं? मुझे जब ज्ञात है कि मेरे पास समय नहीं है तो मैंने क्या किया? कुछ भी तो नहीं। बस केवल प्रतीक्षा ही करता रहा।
तुम चाहते तो बहोत कुछ कर सकते थे, इस समय में। अपने लिए तो जी ही सकते थे।
मैं क्या कर सकता था? मैं तो हार ही गया था ज़िंदगी से। अब तो विलंब हो गया है।
अब भी कर लो जो चाहो। अब भी जी लो अपनी मनसा से। कौन रोके रखा है?
पर मुझे ध्यान ही नहीं कि मैं क्या चाहता हूँ, मेरी इच्छा क्या है।
तुम चाहते थे झरनों के साथ बहना। उड़ते पंखीयों को देखना। बरसती वर्षा की बूंदों को हथेलियों में लेकर उसे मुट्ठी में बंदी करना, सागर की लहरों में भीगना...।
और मैं आ गया इस मरुभूमि में।
मरुभूमि का भी अपना सौन्दर्य होता है। तूने उसका भी आनंद नहीं लिया। यहाँ की ऋतु भी लुभावनी होती है। किन्तु तुम तो बैठ गए अपने आप को इस घर में बंध कर के। तुम बंदी हो गए हो अपने ही कारावास में। बस, मृत्यु की प्रतीक्षा करते रहे हो, जो तुम्हें भी

ज्ञात नहीं है कि कब आएगी? तुम कुछ नहीं कर सकते।
मैं कुछ करना चाहता हूँ। मैं इस मरुभूमि से भाग जाना चाहता हूँ।
कहाँ जाओगे?
उसी पहाड़ पर, जहां से यह पीड़ा मिली है। संभव है कि उसी पहाड़ के पास इस पीड़ा का उपचार हो। यदि उस पहाड़ के पास उपचार नहीं मिला तो दूसरे पहाड़ पर जाऊंगा। प्रत्येक पहाड़ पर जाऊंगा, पीड़ा दो है तो औषध भी वही देगा। मैं उससे औषधि माँगूँगा।
और नहीं मिली तो?
कोई बात नहीं। कुछ क्षण जी तो लूँगा, अपनी इच्छा से।
“कहाँ खो गए, चित्रकार? केनवास पर तो तुम अच्छा चित्र बना लेते हो किन्तु स्वयं की जिंदगी के चित्र को बनाने में विफल हो गए हो तूम।” वफ़ाई ने जीत के मन में चिंगारी जलाने का यत्न किया।
“अब बस भी तो करो। और कितना टोकोगी?” जीत धुंधला गया।
“मैं क्यूँ टोकने लगी? अब कोई लाभ है क्या?” वफ़ाई ने ज्वाला में घी डाल दिया।
“है ना। मैंने निश्चय कर लिया है कि मैं मेरे बचे हुए समय को अपनी इच्छा से जीऊंगा।”
“वह कैसे?”
“मैं पहाड़ों पर जाना चाहता हूँ, ठीक उसी पहाड़ पर। हिम से घिरे पहाड़ पर, जिसने मुझे यह रोग दिया है। तुम मेरा साथ दोगी? हम कल ही चलते हैं।”
“मैं ही क्यूँ?”
“क्यूँ कि तुम हिम सुंदरी हो। हिमाच्छादित पहाड़ों से तुम्हारी पुरानी मित्रता है।” जीत ने आशा भरी आँखों से वफ़ाई को देखा।
“मैं नहीं आ सकती। मैं एक अभियान पर हूँ और जब तक मेरा कार्य पूर्ण नहीं हो जाता, मैं यहाँ से नहीं जाने वाली। हमारे विश्व में प्रतिबद्ध्ता का बड़ा ही महत्व होता है। और मैं मेरी प्रतिबद्धता पर अडग हूँ। यदि तुम जाना चाहो तो कल ही निकल जाओ, अकेले ही। मैं सब व्यवस्था कर दूँगी।” वफ़ाई ने अपना निर्णय सुना दिया।
जीत पुन: निराश हो गया। जीवन की जितनी भी आशाएँ और संभावनाएं उसे संकेत दे रही थी वह सब उसे भ्रामक लगने लगी। वह टूट गया। झूले पर जा बैठा। वफ़ाई देर तक क्षितिज में देखती रही। दूर सुदूर रात यौवन पर आ गाइ। वह लौट गई अपने कक्ष में।

वफ़ाई के मन में कई योजनाएँ आकार ले रही थी।
रोग तथा मृत्यु से अधिक मृत्यु का भय और दिलशाद के द्वारा किया गया विश्वासघात जीत की समस्या है। जीत में जीवन अभी भी बाकी है। जीत अब जीना चाहता है। पहाड़ों पर जाना चाहता है। हिम से लड़ना चाहता है। उससे ही रोग की दवा भी चाहता है।
तो तुम कुछ करो ना?
मैं क्यूँ करूँ कुछ?
इस क्यूँ का जवाब तो तुम भली भांति जानती ही हो। मुझ से क्यूँ पूछती हो?
नहीं। बिलकुल नहीं जानती। तुम ही बताओ ना?
देखो बता तो दूँ, किन्तु स्वीकार भी करना पड़ेगा। बोलो स्वीकार्य है?
यदि सत्य होगा तो मैं स्वीकार कर लूँगी। चलो अब बता दो कि मैं जीत के लिए क्यूँ कुछ करूँ।
क्यूँ कि तुम उस को पसंद करने लगी हो। उसको प्रेम करने लगी हो। तुम उसे अपना हृदय दे चुकी हो।
अरे, अरेरे। नहीं, नहीं।
अब संकोच क्यूँ कर रही हो?
क्यूँ कि ऐसी कोई बात ही नहीं है। मैंने अपना हृदय किसी को नहीं दिया। देखो वह अभी भी मेरे पास ही है।
वफ़ाई ने दोनों हाथ बायीं छाती पर रख दीए। हृदय के स्पंदनों को सुनने की चेष्टा करने लगी। वह शांत हो गई। एकदम शांत। स्पंदन धीरे धीरे स्पष्ट होने लगे। वह उस स्पंदनों को सुनने लगी जो अब पूर्णत: स्पष्ट थे।
वह चौंक गई।
यह क्या? यह कैसी ध्वनि है? ड़ीक, ड़ीक, ड़ीक। जीक, जीक, जीत, जीत, जीत…।
यह जीत जीत क्यूँ बोल रही है?
तुम्हारे सभी प्रश्न का उत्तर यह ध्वनि ही है। क्या अब भी कोई संशय बाकी है?
नहीं भी, हाँ भी।
हृदय की ध्वनि हंमेशा सुना करो। उस के पास प्रत्येक प्रश्न का उत्तर होता है।
किन्तु उत्तर ही अनेकों प्रश्न ले कर आए तो?
कौन से प्रश्न? कैसे प्रश्न?
मैं जीत के लिए क्या कर सकती हूँ? कैसे कर सकती हूँ?
उस की इच्छाओं को समझो। तुम उस के साथ पहाड़ों पर जाओ। नदियों को मिलो। झरनों के प्रवाहों की ध्वनि सुनो। पंखियों की भांति उड़ो। बादलों की भांति बरसो। गगन की भांति सदैव जीत के साथ रहो। प्रत्येक क्षण उसे प्रसन्नता दो। प्रत्येक क्षण उस के हृदय में जीवन की इच्छा एवं अभिलाषा जगाओ। जब तक उस में जीने की उत्कट भावना जीवित है तब तक वह जिजीविषा उसे मरने नहीं देगी। तुम्हें उस जिजीविषा को जीवित रखना है, अंत तक। यह केवल तुम ही कर सकती हो।
यह सब मैं कर तो लूँ किन्तु मैं जो काम हेतु आई थी वह तो अभी भी शेष है। उस काम को अपूर्ण छोड़ कर मैं कैसे भाग जाऊं? मेरा काम पूरा होते ही मैं उस के साथ… ।
अर्थात तुम उसे जीवन की आशा नहीं देना चाहती।
ऐसा नहीं है। मैं तो केवल कुछ दिनों का समय मांग रही हूँ। ततपश्चात मैं… ।
मृत्यु कभी किसी की प्रतीक्षा करता है क्या? तब तक जीत जीवन से ही हार गया तो?
तो?
वफ़ाई चौंक गई, विचलित हो गई। वह पूरी रात्रि सोचती रही कि यह कैसी दुविधा है? काम भी आवश्यक है तथा जीत भी।
रात्रि बीत गई। वफ़ाई जब जागी तो नया प्रभात आ चुका था। जीत भी जाग चुका था और दोनों के लिए नींबू सूप बना चुका था।
"कुछ शीघ्र जाग गए तुम?" वफ़ाई ने कल रा त सेदोनों के बीच आबसे मौन को तोड़ते हुए पूछा।
"जरा अपनी घड़ी तो देखो। मैं जल्दी से नहीं किन्तु तुम विलंब से जागी हो।" जीत ने कहा।
वफ़ाई जीत को निहारती रही। जीत जीवन की आशाओं से भरपूर था। वफ़ाई को अच्छा लगा। वफ़ाई के अधरों पर स्मित था। रात भर के संघर्ष का जैसे समाधान मिल गया हो।
इस मुख पर से यह भाव मैं लुप्त नहीं होने दूँगी। वफ़ई ने मन ही मन निश्चय कर लिया।
"ठीक है श्रीमान, मुझे ही विलंब हो गया जागने में।" वफ़ाई ने जीत की तरफ स्मित भेजा, "किन्तु तुम्हें मुझे समय पर जगा देना चाहिए था। तुम यदि जगा देते तो …।" वफ़ाई ने बात अपू र्ण ही छोड़ दी।
जीत कुछ ना बोला, नींबू सूप वफ़ाई के सामने धर दिया। वफ़ाई ने ए क अंगडाइ ली और जीत के हाथ से सुप ले लिया।
वफ़ाई की उस अंगड़ाई में भी जीत को जीवन की आश दिखाई दी। जीत की आँखों की उस आश को वफ़ाई ने प ढ़ लिया।

वफ़ाई केनवास के समीप गई। चित्राधार पर केनवास चढ़ाया, रंगों को भार, इधर उधर पड़ी विभिन्न तूलिका को समेटा और केनवास के पास रख दिया।
वफ़ाई जीत की तरफ मुड़ी, "श्रीमान चित्रकार, यह केनवास, यह रंग, यह तूलिका बड़े समय से निश्चल से पड़े है, उन्हें कुछ जीवन दे दो।"
"मैं कौन होता हूँ किसी को जीवन देने वाला?"
"मैं कुछ नहीं जानती, बस आज फिर से इस केनवास पर कोई आकृति बना दो। सब कुछ छोड़ कर, सब कुछ भूल कर तुम अपनी चित्रकारी करो। चलो आओ इधर।" वफ़ाई ने जीत को आमंत्रित किया।
जीत आगे बढ़ा, तूलिका हाथ में पकडी, रंगों को देखा, रंगों को खोला, तूलिका को रंगों में डुबोने लगा।
वफ़ाई जीत को देखती रही। उसे जीत की भाव भंगिमा सकारात्मक लगी। वह मन ही मन प्रसन्न हो उठी।
कुछ समय तक रंगों से क्रीड़ा के पश्चात जीत तूलिका ले कर केनवास की तरफ मुडा। जीत ने केनवास पर पहली रेखा खींची और वफ़ाई की तरफ देखा। वफ़ाई वहाँ नहीं थी। वह कमरे की तरफ जा रही थी। जीत को वफ़ाई की पीठ दिखी।
"वफ़ाई, तुम कहाँ चली? यहाँ बैठो ना मेरे पास। देखो मैं कैसा चित्र बनाता हूँ।"
वफ़ाई मुड़ी, स्मित दिया तथा बोली, "चित्रकार जी, आप चित्र बनाइये। मुझे कई काम निपटाने हैं। मेरे पास समय नहीं है। फिर कभी बैठूँगी तुम्हारे पास, अभी मुझे जाने दो।"
"ऐसे कौन से अबिवार्य काम आ पड़े हैं कि तुम अभी इतनी व्यस्त हो गई? कल तक तो तुम्हारे पास समय ही समय था। आज सहसा यह क्या हो गया?"
"वोह तुम नहीं समझोगे श्रीमान चित्रकार।"
"अरे ओ हिम सुंदरी, सुनो तो...।" वफ़ाई बिना सुने ही आँखों से अदृश्य हो गई, कक्ष में चली गई।
"स्त्री जब सुनना नहीं चाहती तब किसी की भी बात नहीं सुनती, चाहे कुछ भी कर लो।" जीत अकेले अकेले बड़बड़ाया और तूलिका की तरफ देखकर बोला, "अरे ओ तूलिका, तुम भी तो स्त्री जाती ही हो। क्या तुम मेरी बात सुनोगी? मैं जो चित्रित करना चाहता हूँ उसे चित्रित करोगी? अथवा तुम भी इस वफ़ाई की भांति अपनी ही मनमानी करोगी?"
तूलिका ने कोई प्रतिभाव नहीं दिया। जीत भी मौन हो गया। केनवास, रंग, तूलिका तथा चित्र में खो गया।
तीन चार घंटे बीत गए। वफ़ाई कक्ष से बाहर आई। जीत अभी भी अपने चित्र में व्यस्त था। वफ़ाई चुपचाप झूले पर बैठ गई। अनायास ही झूले को चलाने लगी। झूला धीरे धीरे झूलने लगा, वफ़ाई को झूलाने लगा।
वफ़ाई ने आस पास द्रष्टि घुमाई। प्रत्येक वस्तु को ध्यान से देखने लगी, जैसे उन सभी वस्तुओं को मन भर देख कर मन के किसी कोने में छुपाकर रखना चाहती हो, सदैव के लिए।
"अरे, तुम कब यहाँ आकर बैठ गई?" झूले की आवाज सुन कर जीत ने झूले की तरफ देखा। वफ़ाई मंद मंद झूल रही थी।
"यूं समझ लो कि जब तुम्हारी मुझ पर द्रष्टि पड़ी बस तब ही।" वफ़ाई ने झूले को रोका और खड़ी हो गई। जीत के पास जा पहोंची।
"बातें वातें सब बाद में। सब से पहले भोजन लिया जाय। चलो आ जाओ।"
जीत ने तूलिका को डिश में रखा और वफ़ाई के पीछे पीछे भोजन के लिए कक्ष में प्रवेश कर गया। कक्ष को देखकर वह चौंक गया।
"यह सामान, तुम कहीं जा रही हो क्या?" जीत के सामने बंधा हुआ वफ़ाई का कुछ सामान था।
"हाँ।"
"कहाँ? कब? क्यूँ?"
वफ़ाई ने अपने होठों पर उंगली रखकर संकेत में ही कहा कि वह भोजन के बाद सब बताएगी।
दोनों ने मौन ही भोजन समाप्त किया।
"मैं झूले पर तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।" जीत बाहर आ गया।
वफ़ाई जब आई तो जीत ने फिर वही प्रश्न किया। अनेकों बार पूछने पर भी वफ़ाई ने कोई उत्तर नहीं दिये।
"तुम मेरे प्रश्नों के उत्तर क्यूँ नहीं दे रही हो?" जीत चिढ़ गया।
"धैर्य रखो, समय आने पर मैं सब कुछ बता दूँगी।" वफ़ाई ने बात टाल दी।
वफ़ाई, जब तक तुम स्वयं नहीं बताती, मैं तुमसे कुछ नहीं पूछूंगा। बस मौन रहकर ही सब देखता रहूँगा। जीत ने भी निश्चय कर लिया।
दो दिन बीत गए। क्वचित ही दोनों में से कोई कुछ बोला होगा इन दो दिनों में। जीत चित्रों को बनाता रहा, वफ़ाई सामान बांधती रही। वफ़ाई ने लगभग पूरा सामान बांध लिया। उसने सभी चित्रों को भी बांध लिया।
तीसरे दिन वफ़ाई सूरज निकलने से पहले ही जाग गई। बंधा हुआ सब सामान जीप में डाल दिया। जीत के जागने से पहले वह यात्रा के लिए तैयार हो गई।
"मैं कहीं जा रही हूँ। मैं आज नहीं लौट पाऊँगी। कल दोपहर तक लौट आऊँगी। तुम अपना ध्यान रखना।" वफ़ाई ने जीप की तरफ जाते जाते जीत को सूचित किया।
जीत वफ़ाई को देखने लगा। नारंगी टीशर्ट, नीचे काली जींस की पेंट, खेल के जूते, आँखों पर एनक, खुले केश तथा उँगलियों पर जीप की चाभी घुमाती हुई वह बड़ी ही सुंदर चाल चलती हुई जीप तक जा पहुंची। उसने जीप का दरवाजा खोला, कंठ में लटक रहे चित्रक को समीप वाली सीट पर रखा और स्वयं चालक स्थान पर बैठ गई।
"अरे ओ हिम सुंदरी, यह आग सी चाल ले कर कहाँ चल दी? किसको जलाने का आशय है?" जीत ने मन की बात छुपाकर वफ़ाई को छेड़ा। किन्तु उन शब्दों में वह उत्साह नहीं था जो एक तरुण एक तरुणी को जब छेड़ता है तब होता है। वफ़ाई ने केवल स्मित किया।
"तुम लौट कर तो आओगी ना?" जीत ने संदेह व्यक्त किया।
"तुम मेरा विश्वास कर सकते हो।" वफ़ाई ने चाभी घुमाई, जीप चालू हो गई।

“यदि तुम लौटकर नहीं आई तो?”
“प्रतीक्षा करो। समय सभी प्रश्न का उत्तर देता है। मेरी प्रतीक्षा करना। अपना ध्यान रखना।”
वफ़ाई ने जीप दौड़ा दी। जीप के मार्ग की रेत, जो कई दिनों से आलसी होकर रास्ते पर पड़ी रही थी, जाग उठी और जीप के चलते ही जमीन से उठकर हवा में उड़ने लगी। रेत के बादलों में जीप धूमिल हो गई, खो गई। जब रेत शांत हो कर पुन: मार्ग पर लेट गई तब तक जीप दूर जा चुकी थी।
जीत भीतर लौट गया। पुन: अकेला हो गया। झूले पर जा बैठा। मन में विचारों का प्रवाह चलने लगा, झूला भी।

65

मैं बार बार क्यूँ अकेला हो जाता हूँ? जब भी कोई मेरा साथी बन जाएगा ऐसी अपेक्षा जागती है तब ही वह मुझसे बिछड़ जाता है। यह कैसा खेल है मेरे साथ, ए जिंदगी तेरा?
किन्तु यह अकेलापन तो तुमने ही पसंद किया था। तुम ही तो चले आए थे इस मरुभूमि में। तो अब क्या हो गया?
मेरे इस अकेलेपन को क्यूँ भंग कर देता है मेरा भाग्य? क्यूँ बार बार कोई आशा जगा कर चला जाता है?
ना तो तुम अकेले हो और ना ही कोई तुम्हें छोड़ कर गया है।
तो यह क्या है? तुमने भी तो देखा है न कि वफ़ाई अभी अभी यहाँ से गई है? और अब यहाँ कोई नहीं है।
तुम सोचते ही मिथ्या हो।
तो सत्य क्या है?
सत्य तो यही है कि कहने को तो तुम अकेले हो किन्तु थोड़ी भिन्न द्रष्टि से देखोगे तो पाओगे कि तुम अकेले नहीं रहोगे। तुम्हारे साथ वफ़ाई होगी। पिछले दिनों वफ़ाई ने तुम्हारे जीवन को रस से भर दिया है। यहाँ के कण कण में तुम्हें वफ़ाई के होने का अनुभव होगा। यहाँ की हवा में, रेत में, भित्ति में, केनवास में, रंगो में, चित्रों में, तूलिका में, कक्ष में, भोजन में, नींबू सूप में और सब से विशेष इस झूले में जिस पर तुम अभी बैठे हो, तुम्हें वफ़ाई का स्मरण आता रहेगा। वफ़ाई ने यहाँ की प्रत्येक वस्तु को अपने स्पर्श से जीवंत बना दिया है। अब तुम पर है कि तुम इन सब में वफ़ाई के होने का अनुभव कैसे करते हो।
तुम ठीक कह रहे हो। मैं यह कैसे भूल गया? तुम्हारा धन्यवाद मुझे यह सब स्मरण कराने के लिए।
इन स्मरणों के साथ दिन व्यतीत कर लो। कल तो वफ़ाई लौट आएगी।
क्या वफ़ाई लौट आएगी?
इतना तो विश्वास होना चाहिए तुम्हें। और यदि नहीं है तो तुम वफ़ाई का परिचय करने में भूल कर बैठे हो।
नहीं नहीं। मेरा विश्वास कहता है कि वफ़ाई अवश्य आएगी।
वह अकेलापन कुछ भिन्न था। जीत के साथ वफ़ाई का स्मरण था। वफ़ाई के लौटने की आशा थी। वफ़ाई के साथ रहते हुए जागी जिजीविषा थी। साथ में एक संशय भी था कि वफ़ाई लौट कर आएगी अथवा नहीं?
आशा और संशय मिश्रित भावों के साथ जीत ने झूला चला दिया।
वास्तव में कुछ दिवस ही तो हुए थे, वफ़ाई को यहाँ आए हुए। किन्तु ऐसा क्यूँ प्रतीत होता है कि जैसे वफ़ाई महीनों से, वर्षों से, अथवा जन्मों से मुझ से जुड़ी हो? लोग तो कहते हैं कि यदि तुम कोई बात इक्कीस दिवस तक करोगे तो वह बात स्वभाव बन जाती है। किन्तु वफ़ाई को तो अभी इतने दिवस हुए भी नहीं। तो वफ़ाई का साथ मेरा स्वभाव कैसे बन गया? लोग असत्य कहते हैं।
तो सत्य क्या है?
जो तुम स्वयं अनुभव कर रहे हो। कोई बात जब स्वभाव बन जाती है तो वह किसी नियमों को नहीं मानती। बस स्वभाव बन जाती है।
ठीक है। चलो छोड़ो। आज तो रसोई मुझे ही बनानी पड़ेगी। अकेले ही भोजन करना पड़ेगा। कोई नहीं आएगा।
जीत ने घड़ी देखि। यही समय है रसोई बनाने का। वह झूले से उठा, रसोई घर की तरफ चला। एक द्रष्टि झूले पर डाली। वह अभी भी धीरे धीरे झूल रहा था। जीत को आभास हुआ कि धीरे धीरे झूल रहे झूले पर वफ़ाई झूल रही है। वफ़ाई के खुल्ले केश हवा में लहरों की भांति उड रहे हैं। वफ़ाई के अधरों पर मीठा सा स्मित है। आँखों में एक भाव है जो उसे आमंत्रित कर रहा हो!
जीत दौड़ गया झूले तक। दोनों हाथ फैलाकर वफ़ाई को अपने आलिंगन में लेने के लिए आगे बढ़ा। वह झूले से टकरा गया, गिर पड़ा। वहाँ कोई नहीं था।
यह कैसा भ्रम है?
जीत धीरे से उठा। वह रसोई घर लौट आया। रसोई बनाने के लिए बर्तन ढूँढने लगा।
अभी तो कुछ ही दिन हुए हैं और मैं यह सब भूल गया? जैसे मैं इस रसोई घर में पहली बार आया हूँ।

तुम जिस रसोई घर को जानते हो वह वफ़ाई के हाथों कब का नष्ट हो गया है। यह बिलकुल अज्ञात है।
मैं भी तो यही कह रहा हूँ।
जहां जहां किसी स्त्री के हाथ लगते हैं वहाँ वहाँ सब कुछ बदल जाता है। उनके के स्पर्श में कोई जादू होता है।
मैं भी तो बदल गया हूँ इन दीनों में।
पुन: बदल जाओ और खाना बना लो अन्यथा भूखे ही रह जाओगे।
किन्तु बर्तन मिले तब न? कहते हैं स्त्रीयां घर की हर वस्तु उचित स्थान पर रखती है। किन्तु ना जाने वफ़ाई ने उन बर्तनों को कहाँ रख दिये हैं जो मुझे अभी चाहिए।
तुम वस्तु को क्यों खोजते हो?
तो?
तुम उचित स्थान को खोज निकालो, वस्तुएं स्वयं मिल जाएगी।
ठीक है।
जीत एक कोने में जाकर खड़ा हो गया। पूरे रसोई घर को ध्यान से देखने लगा। यह रसोई घर उसे अपरिचित लगा।
जीत ने देखा कि सामने गेस का चूल्हा था, स्टव था और उस पर कुछ बर्तन पड़े थे। बर्तन ढंके हुए थे। उसने स्मित किया।
अरे। बर्तन तो यहीं पर पड़े हैं जिसे मैं ढूंढ रहा था। कैसी है यह बाला भी। कल रात्रि से यह सब यहीं पड़े होंगें और झूठे भी होंगें। पहले इन सबको धोना पड़ेगा तब रसोई बनेगी। चलो भाई, लग जाओ काम पर।
जीत बर्तन की तरफ बढ़ा। ऊपर पड़े ढक्कन को हटाया। कागज का एक टुकड़ा उड कर नीचे गिरा। जीत ने कागज उठा लिया। उस पर कुछ लिखा हुआ था।
जीत,
तुम जब बर्तन पर ढंके ढक्कन को उठाओगे तब यह कागज उड़कर नीचे गिरेगा। तुम उसे पकड़ने के लिए ढक्कन को उसी स्थान पर ढँक कर दौड़ोगे। तुम ढंके हुए बर्तन में क्या है उसे देखोगे भी नहीं।
जीत ने बर्तन की तरफ देखा। वह अभी भी ढंका हुआ था। क्या होगा इस बर्तन में? जीत ने स्वयं से पूछा। हाथ में कागज लिए वह बर्तन की तरफ बढ़ा। ढक्कन पुन: उठाया और भीतर देखा। उसमें खाना था। जीत प्रसन्न हो गया। वह कागज आगे पढ़ने लगा।
तुम इस कागज को आगे पढे बिना ही बर्तन की तरफ जाओगे और खोल कर देखोगे कि इसमें क्या है? तुमने बिलकुल यही किया ना?
जीत ने बर्तन की तरफ देखा और हंस पड़ा। आगे पढ़ने लगा।
पुरुष सदैव उतावले ही होते हैं। कभी उसका ध्यान लक्ष्य पर नहीं होता। लोग कहते हैं कि स्त्रीयां चंचल होती है किन्तु वास्तव में पुरुष अधिक चंचल होते हैं।
तुम्हें भूख लगी होगी और पिछले कुछ दिनों से खाना बनाना छूट गया है। निश्चिंत रहो। तुमने देख ही लिया है कि बर्तन में खाना तैयार पड़ा है। समय पर खा लेना। कल शाम तक जब मैं लौट आऊँगी तब तक के लिए तुम्हारे खाने का प्रबंध कर रखा है। समय समय पर खा लेना और दवाइयाँ लेना मत भूलना। नहीं तो मैं माँ-दादी-नानी बनकर डांट दूँगी।
मैंने यह पहली बार तुम्हें पत्र लिखा है। यह मैंने मेरे ही हाथों से लिखा है, और आज ही लिखा है। कोई संशय मत करना। इस में अभी भी स्याही की सुगंध आ रही होगी।
जीत ने पत्र को सूंघा। स्याही की सुगंध अभी भी आ रही थी।
तुम पूरा पढे बिना ही स्याही को सूंघने लगोगे। तुमने पत्र को सुंघा ना? स्याही की सुगंध कैसी लगी?
जीत हंस उठा।
वफ़ाई भी ना, सब कुछ जानती है। मैं क्या करूंगा, कब करूंगा। वह पत्र में भी लिख कर गई है। यह छोकरी भी अजीब है। छोकरे के मन को कैसे पढ़ लेती है? यह लड़की भी, क्या नाम है? हाँ याद आया। यह वफ़ाई भी न।
जीत पत्र को आगे पढ़ने लगा।
चलो अब बहुत हो गया। सीधे सीधे खाना खा लो, दवाइयाँ खा लो और चित्र बनाने लगो। हो सके तो मुझे भी याद कर लेना। यह मत भूलना कि मैं लौट कर आऊँगी।
पत्र पढना कैसा लगा? मुझे तो पत्र लिखने में अत्यंत आनंद आ रहा है। किन्तु इसे यहीं पूर्ण करना होगा।
वफ़ाई।
वफ़ाई, केवल वफ़ाई। और कुछ नहीं।
इतना तो लिखती, 'तुम्हारी वफ़ाई'।
ऊपर भी कहीं नहीं लिखा कि 'प्रिय जीत'। केवल जीत लिख कर छोड़ दिया।
यह सब अपेक्षाएँ समय से पहले की है।
हो सकता है। किन्तु एक बात निश्चित है कि वफ़ाई मेरा पूरा ध्यान रखती है।
जीत ने खाना थाली में परोसा। पहला निवाला मुंह में डाला।
आज इस रसोई का स्वाद भिन्न सा क्यूँ है?
भिन्न सा ही नहीं अधिक रसपूर्ण भी है।
अधिक स्वादिष्ट भी है।
है तो सही पर ऐसा क्यूँ है? क्या कारण है?
वह तो तुम जानो। किन्तु कुछ तो है।
तो उस कुछ को ढूंढो ना।
पहले खाना खा लें बाद में देखा जाएगा।
जीत के पास वह कुछ का कोई उत्तर नहीं था। वह मौन ही खाने लगा।
जीत झूले पर आ बैठा। मन फिर से विचार में मग्न हो गया

आज खाना इतना स्वादिष्ट क्यूँ था? क्या विशेष बात थी?
झूला चलता रहा, हवा भी।

66

संध्या ढलने को थी। समय, एक लंबी यात्रा करके सूरज को पश्चिम दिशा तरफ ले जा रहा था। जीत ने आँखें खोली तब गगन के रंग बदल गए थे। स्वच्छ नीले गगन पर कहीं कहीं सफ़ेद हिम जैसे बादलों की टोली घूम रही थी। कोई पंखी दूर दूर उन बादलों को स्पर्श करने की अपेक्षा लिए ऊंचे, अधिक ऊंचे उड़ रहा था। जीत की द्रष्टि ने उस पंखी का पीछा किया। पंखी अत्यंत ऊपर तक जा पहुंचा, जीत की द्रष्टि भी।
कुछ क्षण तक वह उस ऊंचे उड़ते पंखी को, भागते बादलों को, रंग बदलते गगन को देखता रहा।
“क्या रंग निखारे हैं गगन ने? वफ़ाई, देखो तो।” जीत बोला।
किसी ने उत्तर नहीं दिया। जीत पीछे मुडा, कक्ष की तरफ अपेक्षा से देखने लगा। वहाँ कोई नहीं था। वह निराश हुआ।
जीत, उठो और जा कर गगन के इस द्रश्य को केनवास पर उतार दो। तुम तो…।
जीत चौंक गया।
यह किसके शब्द थे? वफ़ाई के? नहीं, नहीं। वफ़ाई तो यहाँ है ही नहीं। तो ?



जीत ने नयन बंध कर दिये। दाहिना हाथ बायीं छाती पर रख कर ह्रदय के स्पंदनों को सुनने लगा। धीरे धीरे सब शांत होता गया। पुन: वही शब्द उसे सुनाई पड़े। वह शब्द स्पष्ट थे। वह वफ़ाई की ध्वनि नहीं थी। वह ध्वनि उसके ही ह्रदय से आई थी। जीत ने अपने ह्रदय की ध्वनि को माना, केनवास पर गगन के उस अप्रतिम द्रश्य को उतार दिया।
जीत कैनवास के चित्र को देखने लगा। गगन में देखा। गगन के कैनवास पर जो चित्र कुदरत ने रचा था वही चित्र जीत के कैनवास पर भी था। जैसे बिम्ब और प्रतिबिंब!
जीत प्रसन्न हुआ। बड़े दिनों के पश्चात उसने गगन की तस्वीर को कैनवास पर उतारा था। जीत ने कुछ और चित्र गगन के बना डाले। दूर क्षितिज में सूरज डूब गया। गगन ने फिर रंग बदल लिया, जीत के कैनवास ने भी।
चन्द्र निकल आया।
आज कल चन्द्र अल्प समय के लिए निकलता है, डूब जाता है। यह शुक्ल पक्ष का चन्द्र भी मेरे मन की भांति ही है। मेरे मन में जीवन की अभिलाषा जाग जाती है, छोटी छोटी बातें जीने की लालसा जगाती है, लालसा बढ़ाती है और उस लालसा को समझूँ, अनुभव करूँ उससे पहले ही वह हाथों से छुट जाती है। कितनी अल्पजीवी है यह लालसा? कितनी चंचल है यह आशाएँ? जैसा आज कल का चन्द्र।
देखते ही देखते चन्द्र अस्त हो गया। पश्चिम के उस कोने में जाकर अस्त हो गया जहां कुछ क्षण पहले सूरज भी डूब गया था। अब ना तो सूरज है ना चन्द्र। केवल खुला गगन, जिसके आँचल में कुछ भी नहीं है। ना तारे हैं ना बादल। यह गगन भी कितना अकेला है? बिलकुल मेरी भांति।
अकेला? मैं अकेला हूँ?
वफ़ाई के यहाँ आने के पश्चात यह प्रथम अवसर है कि वफ़ाई नहीं है। इतने दिनों पश्चात अकेलेपन का अनुभव कितना सताने लगा है, डराने लगा है।
नहीं, मुझे डरना नहीं है।
तुम अकेले हो। वफ़ाई कहीं नहीं है इस बात को स्वीकार कर लो।
वफ़ाई नहीं है तो क्या हुआ? वफ़ाई के होने की अनुभूति तो मेरे साथ है।
कहाँ है वह अनुभूति?
वफ़ाई की अनुभूति इस झूले में, इस कैनवास में, इस भित्ति में, इस कक्ष में, इस घर में, इस रसोई में, इस हवा में, इस रेत के कण में, मौन दिशाओं में है।
“जीत, कहाँ खो गए हो?” जीत के बिलकुल समीप बैठते हुए वफ़ाई ने पूछा।
“मैं तो बस यूं ही...।”
“तुम मेरे विचारों थे ना?” वफ़ाई हंस पड़ी। उसका स्मित मरुभूमि की शांत दिशाओं में व्याप गया। दिशाओं ने उसकी प्रतिध्वनि जीत के कानों में डाल दी। जीत ने दिशाओं की तरफ देखा। दिशाएँ बिलकुल शांत थी। कहीं कोई ध्वनि नहीं थी, ना ही प्रतिध्वनि थी। जीत ने झूले को देखा। वहाँ कोई नहीं था।
अभी तो यहीं थी, कहाँ गई वफ़ाई?
जीत तुम बावले हो गए हो। यहाँ कोई नहीं है। वफ़ाई भी नहीं है। तुम अकेले ही हो, बिलकुल अकेले।
तो फिर यह स्मित किसका था? कौन मेरे पास आकर मुझसे प्रश्न कर गया? कोई तो था? कौन था वह?
वह तुम्हारा भ्रम था, भ्रम।
ओह, भ्रम था तो क्या हुआ? था तो मीठा सा, सुंदर सा, मोहक सा।
भ्रम तो भ्रम ही होता है, ना मीठा, ना सुंदर और ना ही मोहक। जिस बात का भ्रम होता है उस बात का कोई अस्तित्व ही नहीं होता। उसका स्मित, उसका प्रश्न, कुछ नहीं होता।
तो फिर यह सब क्या था? क्यूँ बार बार मुझे वफ़ाई के यहाँ मेरे पास होने की, मेरे साथ होने की अनुभूति हो रही है? क्यूँ उसकी बनाई हुई रसोई आज अधिक मीठी लगती है, भिन्न लगती है, स्वादिष्ट लगती है? क्यूँ ऐसा लगता है कि क्षण क्षण वह मेरे साथ है, मुझ से बात कर रही है? जैसे वह कहीं गई ही ना हो। क्या यह सब मेरा भ्रम है?
अब तो यह भ्रम भी नहीं रहा।
तो क्या है?
यह सब प्रेम है। प्रेम, प्रेम है, प्रेम।
प्रेम? जीत ने अपने दोनों हाथ अपनी छाती पर रख दिये।
हाँ जीत हाँ। यह प्रेम है।
यह प्रेम क्या होता है?
जब कोई व्यक्ति हम से दूर होता है, तब वह हमारे सबसे निकट होता है। किसी के होने से भी अधिक किसी के ना होने की अनुभूति सुंदर लगने लगे तब जो होता है, उसे प्रेम कहते हैं।
तुम्हारी यह बात सुनकर मेरा ह्रदय कहीं कोई स्पंदन चूक ना जाए।
जीत ने दोनों हाथ छाती पर दबा दिये। आँखें बंद कर ली। मौन सा बैठा रहा। झूला धीरे धीरे चलता रहा।
जीत ने जब आँखें खोली तब रात्रि लंबी यात्रा कर चुकी थी। भोर होने को थी। गगन फिर से रंग बदल रहा था। वह झूले पर पड़े पड़े गगन को देखता रहा। गगन के बादलों को देखता रहा, बादलों के बदलते आकारों को देखता रहा।
कितना अधीर होता था मैं इन बादलों के बदलते आकारों के लिए? उसे अपने कैनवास पर उतार लेता था। और आज देखो, इतने सारे आकार बदल रहे हैं यह बादल, और मैं उसे सोते सोते ही देख रहा हूँ। कितना उत्कंठ था मैं तब? और अब? कहाँ गई वह उत्कंठा? मैं नहीं जानता।
जीत झूले पर से उठा। धीरे धीरे कैनवास की तरफ बढ़ा। पुराने कैनवास को हटाया और नया लगा दिया। वह उसे देखता रहा। सफ़ेद

कैनवास। पूर्ण सफ़ेद। कोई रंग नहीं, कोई रेखा नहीं, कोई चित्र नहीं और ना ही कोई दाग।
“कितना सुंदर लग रहा है?” जीत ने केनवास से कहा। “सुंदर तो लग रहे हो किन्तु पूर्ण रूप से अकेले लग रहे हो कैनवास जी। अकेले में क्या सुख? यदि मैं तुम पर कुछ रेखाएँ खींच दूँ तो? तुम्हारा एकांत भी दूर हो जाएगा और तुम रंगो से भी भर जाओगे। कैसा लगेगा? खींच दूँ कुछ लकीरें? डाल दूँ कुछ रंग?” जीत ने पुछ लिया। उत्तर में कैनवास मौन ही रहा। वह और कर भी क्या सकता था?
“अकेला तो मैं भी हूँ। अब मैं तुम पर कुछ रेखाएँ खींच कर, कुछ रंग डाल कर वफ़ाई का चित्र बनाता हूँ, तब देखना एक साथ हम दोनों का एकांत दूर हो जाएगा।” जीत ने फिर से कैनवास से बात की।
हवा की एक लहर आई और कैनवास एक छोर से मूड गया, जैसे जीत की बात से सहमत हो।
जीत ने कैनवास ठीक किया।
वफ़ाई की कौन सी मुद्रा को कैनवास पर उतारूँ?
जीत सोचने लगा। वह बीते हुए प्रत्येक क्षण को पुन: जीने लगा।
कितनी सारी मुद्राएं है वफ़ाई की? प्रत्येक मुद्रा सुंदर, प्रत्येक मुद्रा अप्रतिम, प्रत्येक मुद्रा मेरे ह्रदय के निकट।
पर तुम्हें किसी एक को पसंद करना होगा। नहीं तो यह कैनवास कोरा ही रह जाएगा, अकेला ही रह जाएगा। और साथ में तुम भी तो अकेले ही रह जाओगे।
कौन सी मुद्रा को तस्वीर में उतार लूँ?
वह तुम जानो। जो भी करना है उसे शीघ्र करना। दोपहर होते होते तो वफ़ाई लौट आएगी।
तो क्या होगा?
ज्यादा कुछ नहीं। फिर तुम अकेले नहीं रह जाओगे। वफ़ाई तुम्हारे सामने होगी किन्तु यह कैनवास अकेला रह जाएगा।
तो?
हो सकता है यह कैनवास रूठ जाय।
नहीं मित्र, कैनवास को रूठने नहीं दूंगा। मैं कोई न कोई मुद्रा ....।
जीत पुन: सोचने लगा। देर तक सोचने के पश्चात जीत तस्वीर बनाने लगा।
कैनवास पर आकृति बनती रही, रंग घुलते रहे और कोई तस्वीर प्रकट होने लगी। तस्वीर पूरी हो गई। जीत ने तूलिका को डिश में रखा, बनी हुई तस्वीर को देखने लगा।
“वाह, क्या बात है। यह तो बिलकुल वैसी ही है। तब वह बिलकुल ऐसी ही दिखती थी। यही मुद्रा, दो हाथों का इसी तरह ताली बजाना, यही मुख, मुख पर यही स्मित, मुक्त झरने की भांति बहता उसका स्मित, हवा में उड़ती वह लट, मुख पर बालक से विस्मय के भाव। हाँ बिलकुल यही तो थी तस्वीर जब वह पहली बार मेरे सामने आई थी। मैं यहीं पर था, धरती पर झुक कर रंग और तूलिका समेट रहा था, कैनवास जमीन पर गिरा पड़ा था, एक बड़ा सा धमाका हुआ था और वह ना जाने कहाँ से आकर कैसे छत पर पहुँच गई थी। वह छत पर थी। वहाँ, हाँ, बस वहाँ ही थी, मुझे देख रही थी, हंस रही थी, मैं क्रोधित था। किन्तु मेरे क्रोध का उस पर कोई प्रभाव नहीं था। वह हँसे जा रही थी। वह छवि, वह मुद्रा। ओह, क्या मुद्रा थी? अदभूत! ह्रदय के आर पार निकल जाने वाली वह मुद्रा। वह प्रथम मिलन, वह प्रथम दर्शन, कोई कैसे भूल सकता है?” जीत स्वयं से बातें करता रहा। कुछ दूर कैनवास पर अभी अभी जन्मी वफ़ाई की तस्वीर जीत को देख रही थी। जीत पर हंस रही थी।
जीत भी उस तस्वीर को देखता रहा। उसे आनंद प्राप्त हो रहा था। कुछ समय तक ऐसे खड़े रहने पर जीत थक गया। उसने कैनवास को झूले की तरफ मोड दिया, झूले पर जाकर बैठ गया। झूले से तस्वीर को देखता रहा, झूले पर झूलता रहा। मन में थोड़ा विषाद, थोड़ी आशा थी। वह संतुलित था।
सूरज माथे पर आ गया था। मध्धम शीतल हवा और सूरज की मध्धम किरणें। ना उष्णता, ना शीतलता। जैसे दोनों का संतुलित संमिश्रण।

भोजन का समय हो गया। जीत प्रतीक्षा करने लगा कि अभी वफ़ाई कहेगी, “जीत, भोजन तैयार है। आ जाओ।”
वह प्रतीक्षा करता रहा। कोई आमंत्रण नहीं आया।
अभी तक वफ़ाई ने पुकारा क्यूँ नहीं?
वह नहीं पुकारेगी।
क्यूँ?
वफ़ाई होगी तो पुकारेगी ना? वह तो अब तक लौटी ही नहीं।
नहीं लौटी? वह तो कहकर गई थी कि भोजन के समय से पहले वह लौट आएगी। भोजन साथ साथ करेंगे। उसे अब तक तो लौट आना चाहिए था।
किन्तु सत्य तो यही है कि वह अब तक लौटी नहीं है।
वह लौट आएगी, अवश्य लौट आएगी। मैं प्रतीक्षा करता हूँ।
यदि वह नहीं आई तो?
ऐसा कैसे हो सकता है? उसका नाम ही वफ़ाई है।
यदि उसने बेवफाई कर दी तो?
वफ़ाई कभी बेवफाई नहीं कर सकती। देखो, समझो। उसका नाम ही वफ़ाई है। वफ़ाई, वफ़ाई आएगी।
ठीक है, कर लो प्रतीक्षा।
जीत ने स्वयं को विश्वास दिलाया और प्रतीक्षा करने लगा।
समय व्यतीत होने लगा किन्तु वफ़ाई नहीं आई। जीत का धैर्य विचलित होने लगा। जीत का विश्वास टूटने लगा, बिखरने लगा।
जीत ने गगन को देखा। सूरज अब धीरे धीरे पश्चिम की तरफ गति कर रहा था। जीत ने दूर क्षितिज की तरफ देखा जहां सदैव सूरज डूब जाता है। उसने सूरज को देखा। दोनों के बीच के अंतर को मन ही मन नाप कर हिसाब लगाने लगा कि सूरज को डूबने में कितना समय शेष बचा।
क्या सूरज डूबने से पहले वफ़ाई लौट आएगी? जीत ने स्वयं को प्रश्न किया, जिस का कोई उत्तर जीत के पास नहीं था। जीत फिर मौन हो गया। प्रतीक्षा करने लगा। समय व्यतीत होने लगा, किन्तु वफ़ाई लौटकर नहीं आई। जीत निराश हो गया।
सूरज पश्चिम की तरफ थोड़ा अधिक गति कर गया। संध्या का समय निकट आ गया। वफ़ाई की प्रतीक्षा में विषादग्रस्त जीत व्याकुल होने लगा। मन ही मन द्वंद चलने लगा। मन का एक हिस्सा कह रहा था कि वफ़ाई लौट आएगी। दूसरा हिस्सा कह रहा था कि सत्य तो यह है कि वफ़ाई लौटी नहीं थी, ना ही उसके आने के कोई संकेत थे।
जीत की द्रष्टि दूर कैनवास पर हँसती हुई वफ़ाई की तस्वीर पर पड़ी। वफ़ाई हंस रही थी।
कितना निर्दोष स्मित है?
नहीं, यह स्मित निर्दोष नहीं है। यह तो मेरी इस स्थिति पर हंस रही है, व्यंग कर रही है।
नाम वफ़ाई और कर रही है बेवफाई।
गुणों के अनुरूप नाम रखे जाते हैं। किसने इसका नाम वफ़ाई रख दिया?
जीत, वह बहाना कर के निकल गई तुम्हारे जीवन से। उसे समझ में आ गया कि तुम्हारे पास अल्प समय बचा है। अब क्यूँ वह साथ रहे? डूबती नैया पर कोई सवार होता है क्या?
नहीं , वफ़ाई ऐसी नहीं हो सकती।
यह तुम्हारा भ्रम है। वफ़ाई ऐसी ही है। अब तुम करते रहो प्रतीक्षा दोनों की।
दोनों की? क्या अर्थ है तुम्हारा?
हाँ दोनों की। एक, वफ़ाई की। दूसरी, अपनी मृत्यु की। तुम मरोगे तो भी अकेले और जब तक जियोगे तो भी अकेले। तुम्हें मरना होगा, अकेले-अकेले।
दूर सूरज डूब गया। वफ़ाई नहीं आई। जीत के कानों मे, जीत के ह्रदय में, जीत के समग्र अस्तित्व में एक ही ध्वनि गूंज रही थी, तुम्हें मरना होगा, अकेले-अकेले।

जीत निराश हो गया, अपने ही विश्वास पर से उसका विश्वास उठ गया। अपने ही धैर्य से धैर्य खो बैठा। वह एक यूध्ध हार गया। जीत के तन से सारी शक्तियाँ लुप्त होने लगी। शरीर ठंडा पड़ने लगा। चक्कर आने लगे। जीत संतुलन खोने लगा। वह जमीन पर ही बैठ गया। सांसें ठंडी पड़ने लगी। जीत को अनुभव होने लगा कि शरीर से कुछ अलग हो रहा है।
क्या आत्मा मेरे शरीर का साथ छोड़ रही है? क्या यही स्थिति को मृत्यु कहते हैं? क्या हो रहा है यह मुझे? दिशाएँ क्यूँ इतनी धुंधली सी हो रही है? हवाएँ बह रही है या थम सी गयी? यह रेत भी शीतल होती जा रही है? यह रेत है अथवा हिम? यह हिम ही है।
जीत ने रेत के कणों को स्पर्श करना चाहा। उसने हाथ पसारने का प्रयास किया। हाथ थोड़ा सा हिला, रेत का स्पर्श हुआ।
कितनी शीतल है यह? हिम से भी शीतल।
कहाँ गई रेत की वह ऊष्मा? क्या मेरे रक्त की ऊष्मा की भांति रेत की ऊष्मा भी लुप्त हो गई? हिम इतना घातक होता है क्या?
हाँ हिम तो घातक ही होता है। यही हिम जो तेरे भीतर है वही तो है घातक। वह हिम अपनी शीतलता दिखा रहा है। अपनी शीतलता से तेरे रक्त की ऊष्मा को हर रहा है। हिम का एक टुकड़ा और सब कुछ समाप्त, जीवन भी।
हिम के एक टुकड़े से मुझे नहीं मरना है। मैं इस छोटे से टुकड़े से हार नहीं मानूँगा। यदि मुझे मरना ही है तो मैं हिम के उस विशाल पहाड़ पर जाकर ही मरूँगा। हिम के उसी पहाड़ पर जाऊँ, मरने से पहले पुन: एक बार जी लूँ।
नहीं, मैं यहाँ नहीं मरना चाहूँगा। मैं यहाँ नहीं मर सकता, नहीं।
जीत के अंदर जिजीविषा जागने लगी। जीत ने हाथ से उसी रेत कणों को स्पर्श किया। रेत के वह कण उष्ण थे। जीत ने पूरी शक्ति से उस रेत के कणों को अपनी मुट्ठी में जकड़ लिया। रेत की ऊष्मा बंध हथेलियों में बहने लगी। शीतल हो रही हस्तरेखाएँ उष्ण होने लगी। धीरे धीरे यह ऊष्मा सारे शरीर में प्रवाहित होने लगी। एक नयी चेतना का अनुभव होने लगा।
जीत ने वफ़ाई की तस्वीर को देखा। वह अभी भी स्मित कर रही थी। वफ़ाई के उस स्मित पर जीत को क्रोध आया। जीत ने अपनी तमाम शक्ति एकत्र की और उठा, कैनवास तक गया, तूलिका हाथ में ली और काले रंग में डुबो दी।
तुम स्मित कर रही हो? तुम क्या समझती हो कि मैं तुम्हारे बिना मर नहीं सकता? मैं तुम्हारे इस स्मित को ही विकृत कर देता हूँ। तुम्हारे अधरों को काले रंग से रंग देता हूँ। तत्पश्चात तुम दिखाना स्मित करके।
मैं तुम्हारे बिना भी मर सकता हूँ। हाँ मैं तुम्हारे बिना भी मर सकता हूँ। सुना तुमने? वफ़ाई। सुना तुमने?
जीत ने काले रंग में डुबी तूलिका को वफ़ाई के चित्र में रहे होठों को काला करने के लिए कैनवास पर रखा ही था कि उसके कानों पर ध्वनि आई।
“हाँ, मेरे बिना तुम मर तो सकते हो किन्तु मेरे साथ होते हुए तुम मर नहीं सकते। मैं तुम्हें मरने नहीं दूँगी।” किसी ने जीत को पीछे से पकड़ लिया। जीत के हाथ मे रही तूलिका छुट गई। गिरते गिरते वह कैनवास को स्पर्श कर गई। वफ़ाई के चित्र को स्पर्श करते वह धरती पर गिर गई। जीत गिरती हुई तूलिका को देखता रहा। नीचे झुककर जीत ने उसे उठाना चाहा किन्तु पीछे से किसी की पकड़ ने उसे ऐसा करने से रोका। जीत स्थिर हो गया।
“कौन हो तुम? यह क्या कर रहे हो?” जीत धुंधलाकर बोला। जीत ने पीछे मूड कर उसे देखना चाहा किन्तु उस व्यक्ति की पकड़ चूस्त थी तथा जीत में वह शक्ति नहीं थी। वह चुपचाप खड़ा रहा।
“मैं तुम्हें मरने नहीं दूँगी।” यह शब्द अभी भी जीत के कानों पर पड रहे थे। जीत ने उन शब्दों पर ध्यान दिया। यह ध्वनि तो परिचित सी है।
“अरे, यह तो वफ़ाई की ध्वनि ..।” जीत मन ही मन बोला। जिन हाथों ने पकड़े रखा था उन हाथों को देखा और आश्वस्त हो गया,“हाँ, यह वफ़ाई ही है।”
“जीत, मैं ही हूँ। वफ़ाई।” वफ़ाई ने जीत को मुक्त किया। जीत ने गहरी सांस ली, पीछे मुडा और वफ़ाई को देखता रहा।
वफ़ाई ने स्मित किया। जीत ने उसका कोई उत्तर नहीं दिया। वह अभी भी वफ़ाई के मुख को देख रहा था, वहाँ स्मित के साथ थोड़ा क्रोध भी था। जैसे वह डांट रही हो जीत को, किसी बात पर।
जीत को कुछ भी समज नहीं आ रहा था, वह खड़ा रहा शून्यमनस्क सा।
“क्या कर रहे थे? मरने के लिए इतने उतावले हो क्या? तो जाओ मरो। करो अपने मृत्यु की प्रतीक्षा। जब तुम जीना ही नहीं चाहते तो फिर कोई क्या करे?” वफ़ाई ने पूरे गुस्से से जीत को डांटा। वफ़ाई के शब्द तथा मुख के भाव इतने तीव्र थे कि जीत को लगा कि वह उस आग में जल जाएगा, भस्म हो जाएगा।
जीत ने द्रष्टि नीचे झुका ली, मौन खड़ा रहा।
“अब यूं पुतले की तरह खड़े क्यूँ हो? जाओ न, जा कर ...।” वफ़ाई की बात पूरी नहीं हो पायी थी कि जीत बोल उठा,“बस भी करो। कुछ रोष बचा कर भी रखना। अभी कई अवसर आएंगे मुझे डांटने के।”
जीत की इस बात ने वफ़ाई के क्रोध को शांत कर दिया।
“अर्थात तुम आज नहीं मरना चाहते?” वफ़ाई ने भी व्यंग का तीर चलाया।
“तुम आ गयी हो तो अब मरने का कार्यक्रम निरस्त।” जीत ने वफ़ाई के बदले मूड पर सवार होना ही उचित समझा। जीत हंस पड़ा।

68

"तुम्हारे आने की, तुम्हारे पदचाप की ध्वनि सुनाई नहीं दी। जीप की ध्वनि भी नहीं सुनाई दी। मुझे ध्यान ही नहीं रहा तुम्हारे आने का।" जीत ने द्वार की तरफ देखा। जीप वहाँ खड़ी थी।

"मैं कोई छुपते छुपाते नहीं आई। ना तो मेरे पदचाप मौन थे ना जीप की ध्वनि। कुछ भी असाधारण नहीं किया मैंने।"

"सब साधारण सा था तो फिर मैं ने कुछ भी सुना क्यूँ नहीं?"

"जीत,जब हमारे अंदर कोलाहल हो तो बाहर की ध्वनि नहीं सुनाई देती। जब अंदर की ध्वनि तीव्र हो तब हमारे कान दूसरी किसी भी ध्वनि को नहीं पकड़ पाते।" वफ़ाई का उत्तर जीत को समझ नहीं आया। वह मुख पर प्रश्न लटकाए वफ़ाई को देखता रहा।

"प्रतीत होता है, मेरी बात तुम्हें समझ नहीं आई।" वफाई ने जीत को देखा, समिट किया,

"मैं समझाती हूँ। भीतर का कोलाहल अर्थात तुम्हारे भीतर चल रहे विचारों की ध्वनि। मन के भीतर चल रहे द्वंद की ध्वनि। वफ़ाई लौटेगी या नहीं? वफ़ाई को आने में विलंब हो गया। वफ़ाई कहीं छोड़ कर चली तो नहीं गई? ऐसी कई बातें जब तुम्हारे मन में चल रही थी तब तुम्हारे भीतर का कोलाहल प्रचंड था, प्रखर था। मेरी जीप उसकी स्वाभाविक ध्वनि से चलती हुई घर के द्वार तक आ चुकी थी। इस मरुभूमि के नीरव मार्ग पर हमारे पैरों की ध्वनि भी स्पष्ट सुनाई देती है वहाँ जीप की तेज और कर्कश ध्वनि ना सुनाई दे ऐसा हो नहीं सकता। किन्तु उस ध्वनि से भी तुम्हारे कोलाहल की ध्वनि अधिक तीव्र थी। जो अधिक तीव्र हो वह सुनाई देता है

जिसके कोलाहल में बाकी की ध्वनि दब जाती है।"
"तुम ठीक कह रही हो। कोलाहल, ध्वनि, प्रचंड तथा प्रखर ध्वनि। कितने बड़े बड़े शब्द हैं।"
"जब कोलाहल होता है तब कलरव नहीं सुनाई देता।" वफ़ाई ने कहा। जीत समज गया कि वफ़ाई प्रसन्न मुद्रा में है। मुझे उस प्रसन्नता को बनाए रखना होगा।
"पत्रकार लोग शब्दों से क्रीड़ा करना अच्छी तरह जानते हैं। कोलाहल, कलरव। क्या बात है?" जीत हंस पड़ा।
"क्या यहीं खड़े खड़े ही सब बातें कर लेनी है?" वफ़ाई भी हंस पड़ी। एक ठंडी हवा बह गई।
"तुम जरा बैठो, यहाँ झूले पर। यात्रा से आई हो। थक गई हो। मैं तुम्हारे लिए पानी लाता हूँ।" जीत ने झूले की तरफ संकेत किया और कक्ष में चला गया।
वफ़ाई झूले पर जा बैठी। धीरे धीरे झूलने लगी। घर को देखने लगी। क्या कुछ बदला है इन बीते छत्तीस घंटों में? वफ़ाई ने एक विहंग द्रष्टि चारों तरफ फैलाई। उसे कुछ भी तो नया नहीं दिखाई पड़ा। सब कुछ वैसा का वैसा था। वफ़ाई को समझ नहीं आया कि इस बात पर वह प्रसन्न हो या उदास। दोनों भावों ने उसके भीतर जन्म ले लिया।
'पिछले छत्तीस घंटों में जीत ने क्या किया होगा? मेरे बारे में ही सोचता रहा होगा? कुछ काम भी किया होगा? मेरे पर विश्वास किया होगा? संदेह किया होगा? मैं लौटकर ना आऊं तो? भोजन भी किया होगा अथवा वैसे ही पड़ा होगा? चल रसोई में जाकर देखती हूँ।'
वफ़ाई घर में प्रवेश कर गई। जीत अभी भी पानी भरने के लिए बर्तन ढूंढ रहा था। वह एक पात्र तक नहीं ढूंढ पाया।
"इस तरह तो मैं तृषा से ही मर जाऊँगी, श्रीमान चित्रकार।" वफ़ाई के शब्दों ने जीत को चकित कर दिया।
"अरे यहीं तो कहीं रखा था, मैं लाता हूँ न पात्र में पानी भरकर। तुम बैठो न झूले पर।" जीत पात्र ढूंढ नहीं पाया।
"छोड़ो, तुमसे न होगा यह। मैं ही ...।" वफ़ाई ने एक विहंग द्रष्टि दौड़ाई पूरे कक्ष में।
"यह रहा। यह यहाँ पर है।" दोनों एक साथ पात्र की तरफ बढ़ते हुए बोले। दोनों एक साथ पात्र तक पहोंचे, एक साथ पात्र को उठाया। दोनों की टक्कर हो गई। दोनों को एक दूसरे का स्पर्श हुआ, अच्छा लगा। दोनों की द्रष्टि भी टकराई, और स्थिर हो गई एक दूसरे पर। देर तक दोनों एक दूसरे को देखते रहे। चार आँखों में नयी तृषा जागी, तृषा बढ़ने लगी।
जीत ने स्वयं को संभाला। उसने द्रष्टि झुका ली, हाथ छुड़ा लिया और पीछे हट गया।
"तुम स्वयं ही पानी भरकर पी लो। तुम्हारी तृषा तृप्त करने का सामर्थ्य ही नहीं मुझ में।" जीत कक्ष से बाहर चला गया। वफ़ाई ने अपने तृषातुर नयन झुका लीये।
वफ़ाई पानी पीकर बाहर आई। जीत झूले के पास खड़ा था, मौन। वफ़ाई झूले पर जा बैठी। वह भी मौन हो गई। दोनों के मौन ने समय को बितने दिया, समय बीतता रहा।
सूरज पूरा ढल गया। आधा सा चन्द्र निकल आया, अपनी मध्धम सी चाँदनी लेकर। चंद्रमा की चाँदनी कैनवास पर बरसने लगी। वफ़ाई ने उस पर टंगे चित्र को देखकर मौन तोड़ा, "जीत, यह तुमने क्या कर दिया?"
"कुछ भूल कर दी क्या?"
"ध्यान से देखो। कुछ तो है। कुछ विशेष ही है यह चित्र। इन आँखों के भाव अदभूत लग रहे है। गालों के खंजन, अधरों का यह स्मित, गाल और कान के बीच एक नटखट लट, खुले केश का कंधों पर लहराना, वर्षा से भरे मेघ जैसी छाती।" वफ़ाई एक क्षण रुकी, जीत की तरफ घूमी, "तुमने अब तक जीतने भी मेरे चित्र बनाए हैं उन सब में यह श्रेष्ठ है, सुंदरतम है।"
"नहीं, तुम असत्य कह रही हो। मैं इस चित्र को श्रेष्ठ ही बनाना चाहता था किन्तु मेरे ही मन के भावों ने इसे ...।"
"क्यूँ? क्या हुआ?"
"इस में एक दाग लग गया है। तुम्हें लौटने में विलंब हुआ तो मेरे मन में तुम्हारे लिए धृणा के भाव जाग गए इसलिए मैं तुम्हारी इस छवि को विकृत कर देना चाहता था। मैंने काले रंग में डुबोई तूलिका भी हाथ में ले ली थी और इस छवि को विकृत करने ही वाला था कि तुम आ गयी और तुमने मुझे जकड़ लिया। मेरे हाथ से तूलिका गिर पड़ी। गिरते गिरते वह कैनवास को स्पर्श कर गई, अपने भीतर भरे काले रंग को छवि पर डालती गई।" जीत ने दीर्घ सांस ली।
"और छवि को विकृत कर गई। है न?"
"हाँ।"
"मुझे तो इस छवि में कोई विकृति दिखाई नहीं दे रही। तुम दिखाओ भला।"
"इधर आओ, निकट आओ। दूर से सब कुछ सुंदर ही दिखता है। विकृति तो तब दिखती है, जब हम अत्यंत निकट होते हैं।" जीत छवि के बिलकुल निकट गया, वफ़ाई भी।
"यह अधर, नीचे वाला आधार देखो। इस दाहिने छोर को देखो। क्या दिख रहा है?"
"कुछ विशेष नहीं। केवल एक काला सा बिन्दु दिख रहा है। तुम इसी की बात कर रहे हो क्या?" वफ़ाई ने पूछा।
"हाँ, वही। देखो इतने सुंदर होंठों पर यह काला बिन्दु, कितना विकृत लग रहा है?" जीत निराश हो गया।
"जीत, मुझे तो इस में कुछ विकृति नहीं दिख रही। बल्कि मैं तो कहूँगी कि यह काला बिन्दु ही इन होंठों की शोभा बढ़ा रहा है। गोरे होंठों पर एक काले तिल सा। हाँ, यही इस होठों की अप्रतिम सुंदरता है।" वफ़ाई उत्साहित गई।
"किन्तु तुम्हारे अधरों पर तो ऐसा तिल नहीं है ना? तो फिर यह विकृत ही हो गया ना?"
"तुमने कैसे जाना कि मेरे अधरों पर तिल नहीं है? तुमने कभी देखे हैं मेरे अधरों को?" वफ़ाई ने दोनों अधर आपस में भीड़ दिये।
"नहीं, मैंने कभी नहीं देखा।"
"तो फिर तुम कैसे कह सकते हो?"
"बस, यूं ही मान लिया।" जीत सफाई देने लगा।
"तुम यही भूल करते हो। अपने मन में कुछ धारणा बना लेते हो और उस को ही सत्य मान लेते हो। कभी सत्य तक जाकर उसे परखने का साहस तो कर लेते।"

“अब इतना साहस कहाँ बचा है मेरे में? मुझ से ना होगा यह।”
“ऐसा नहीं है। आज तो तुम्हें ऐसा साहस करना ही होगा। देखना चाहोगे मेरे अधर?”
“न, ना...।” जीत दुविधा में पड गया।
“कभी तो खुलकर बोला करो, कभी तो खुलकर जिया करो। आओ मेरे पास।” वफ़ाई ने जीत को अपने अधर दिखाये।
‘वफ़ाई, यह कैसा विस्मय है? तुम्हारे नीचे वाले अधर पर वास्तव में एक काला तिल है। वह ठीक उसी स्थान पर है जहां तुम्हारे इस चित्र में है। क्या यह कोई संयोग है? अथवा किसी संकेत का संकेत है?’ जीत विचार में पड़ गया।
“क्या हुआ श्रीमान?” वफ़ाई ने कहा।
“मेरा विश्वास करो, मैंने कभी तुम्हारे अधरों को नहीं देखा। यह जो भी हुआ है अनायास ही हुआ है। एक अकस्मात ही है। संयोगवश ही हुआ है। मैं, मेरा..।” जीत के शब्द और विचार कांपने लगे। जीत का मुख पीला पड़ने लगा, जैसे कोई चोरी करते हुए चोर को रंगे हाथ पकडा गया हो।
“मैंने कब कहा कि तुमने यह सब देखकर किया है? चिंतित मत हो, विचलित मत हो। मुझे तुम पर पूरा विश्वास है। शांत हो जाओ।” वफ़ाई के शब्दों ने जीत को कुछ शांत कर दिया।
“यदि यह एक अकस्मात ही है, तो यह एक सुंदर अकस्मात है। आनंद आ गया श्रीमान चित्रकार। कुछ बात तो है तुम में कि तुम अपनी तीसरी आँख से ही उस बात को देख लेते हो जो तुम्हारी दोनों आँखों ने कभी देखि ही नहीं। मान गए गुरु।” वफ़ाई नटखट हो गई।
“यह तीसरी आँख क्या है? कहाँ है?”
“तुम्हारी यह तूलिका है ना, वही तुम्हारी तीसरी आँख है। वह सब कुछ देख चुकी है मुझमें जो तुम अभी तक देख नहीं सके।”
वफ़ाई की इन बातों ने जीत को संभलने में सहायता दी।
अभी भी एक और बात उसे व्यथित कर रही थी। वह दुविधा में रहा, ‘इस बात का उल्लेख करूँ अथवा रहने दूँ?’
“जीत, अब क्या है?”
“अभी भी एक बात इस चित्र की है जो मुझे उचित नहीं लग रही।” जीत चित्र की तरफ बढ़ा।
“अभी भी कुछ बचा है कहने को? चलो वह भी बता दो।”
“इसे देखो, तुम्हारे माथे पर यह ..।”
“माथे पर फैले कुंतर और बिखरी लटें तो बिलकुल सही है। कितनी सुंदर है! वास्तविकता से भी सुंदर। आ...हा..। क्या बात है, जीत?” वफ़ाई उत्साहित थी।
जीत अभी भी मौन था, चित्र को देख रहा था, चित्र के माथे को देख रहा था।
जीत से कोई प्रतिभाव ना पाकर वफ़ाई जीत की तरफ मुड़ी।
“तुम कुछ कहोगे भी अथवा अपने ही द्वारा सर्जित चित्र के केश और लटों से प्यार हो गया है जिसमें कहीं खो गए हो? यदि इन केश में, इन लटों में ही उलझना है तो चित्र को क्यूँ देख रहे हो? मेरी तरफ देखो। मैं जीवित हूँ, चित्र की भांति स्थिर अथवा निश्चल नहीं हूँ। वही केश, वही लट तुम्हारे सम्मुख है।” वफ़ाई थोड़ी अधिक चंचल हो गई। वफ़ाई ने एक घातक मुद्रा से अपने बंधे हुए केश खोल दिये। खुले केश वफ़ाई के कन्धों पर फेल गए। गगन में चन्द्र को एक बदरी ने थोड़ा सा ढँक दिया। कुछ आवारा लटें गालो पर लहराने लगी। हवा की मंद लहरों से वह गालों पर नर्तन करने लगी।
जीत दुविधा में पड़ गया। क्या अधिक सुंदर है? यह चित्र या स्वयं वफ़ाई? वह निर्णय नहीं कर पाया। वह देखता ही रहा, कभी वफ़ाई को, कभी वफ़ाई के चित्र को।
वफ़ाई ने अपने माथे को झटका, खुले केश हवा में लहराते हुए जीत को स्पर्श कर गए। जीत एक क्षण के लिए विचलित हो गया। वफ़ाई की तरफ आकृष्ट हो गया। कुछ पूरी तरह जीत को भीतर से घायल कर गया। जीत ने वफ़ाई के केशराग पकड़ा, क्रीड़ा करने लगा उससे। केश के मार्ग से जीत के हाथ वफ़ाई के कंधों से थोड़े ऊपर कंठ तक जा पहुंचे। वफ़ाई की खुली ग्रीवा का स्पर्श जीत को रोमांचित कर गया। जीत से भी अधिक रोमांच वफ़ाई के भीतर बहने लगा। वफ़ाई का अंग अंग उमंग से भर गया। वह आँखें बंध कर के उस क्षण को जीने लगी। उस क्षण के आनंद को अनुभव करने लगी। उस क्षण के भीतर उतरने लगी। वह क्षण उसे गहराई की तरफ खींचता चला जाता था और वह गहरी, और गहरी उतर रही थी। मन ही मन वह प्रसन्न हो रही थी। एक ऐसी अनुभूति को वह पा रही थी जो संभवतः अदभूत थी, अलौकिक थी।
वफ़ाई ने अपनी सांसें रोक दी। साँसो की ध्वनि भी बंध हो गई। एक समग्र शांति व्याप गयी। कोई ध्वनि नहीं, कोई व्यवधान नहीं। जीत का स्पर्श वफ़ाई को भावनाओं के समंदर के मध्य में खींच गया। वह उठती, बहती, छूती और शांत हो जाती प्रेम की लहरों में डूबती जा रही थी।

सहसा जीत ने अपने हाथों को खींच लिया। वफ़ाई की प्रेम की लहरें ज्वाला में बदल गई। अग्नि का एक समुद्र उभर आया जो धधक रहा था। वफ़ाई उस ताप में जलने लगी।
वह चिख उठी, "जीत, मत जाओ, मुझे स्पर्श करो, मेरा हाथ पकड़ो, मेरे समीप आओ, मुझे आलिंगन दो, जीत।"
वफ़ाई की चीख मरुभूमि की नि:शब्द रात्री में विलीन हो गई। वह फिर चीखी। चीख फिर से विलीन हो गई। वह तड़प उठी। उस अग्नि को वफ़ाई सह न सकी। वफ़ाई ने आँखें खोल दी। वह जीत को ढूँढने लगी। जीत कहीं नही दिखा।
वफ़ाई ने गगन की तरफ देखा। चन्द्र अभी भी उस गगन की शोभा बन बैठा था। वफ़ाई को शीतल और श्वेत चन्द्र लाल दिखने लगा। वह चन्द्र को देखती रही। देखते ही देखते चंद्र जलने लगा। वफ़ाई की अगन ज्वालाओं में जलकर भस्म हो गया। गगन में चारों तरफ धूँआ छा गया।
"जीत, कहाँ हो तुम?" व्याकुल वफ़ाई फिर चीखी। चित्र के पीछे से जीत ने ध्वनि दी, "मैं यहाँ हूँ।"
"बाहर आ जाओ। ऐसे कब तक छिपे रहोगे?"
"मैं ... ।"
"तुम बाहर आ जाओ फिर कहो जो कहना हो।"
"कहीं तुम क्रोध तो नहीं?" संकोच के साथ जीत वफ़ाई के सामने आया।
"क्रोध? मैं तो नाराज भी हूँ। पर तुम्हें क्या?"
"नाराज मत हो, वफ़ाई। मुझे तुम्हारी चिंता ...।"
"यदि होती तो इस तरह चले नहीं जाते। बीच सागर मुझे छोडकर भाग नहीं जाते। तुम जानते भी हो कि मैं किस आग से ...?"
"मैं सब जानता हूँ।"
"तो फिर? सब कुछ जानते हो फिर भी तुम मुझे तड़पा रहे हो। किस बात का प्रतिशोध ले रहे हो तुम?"
"वफ़ाई, मैं तुम्हें कोई आश नहीं बंधाना चाहता हूँ। तुम्हें तड़पाने का कोई आशय नहीं है मेरा। किंतु...।"
"किंतु क्या? क्या चाहते हो तुम?"
"मैं कुछ बचे क्षण हूँ और तुम एक पूरा युग हो। मैं युग तक चल नहीं सकता। कुछ क्षण भर के कर्मों का दंड पूरा युग भुगते ऐसा मैं नहीं चाहता। मैं तुम्हें कुछ क्षण ही दे सकता हूँ, युग नहीं।" जीत ने कहा।
"युग क्या होता है? क्षण क्षण के बिंदुओं का एक दरिया? युग के सागर से क्षण की एक बूंद भी हटा कर तो देखो, सारा दरिया खाली हो जाएगा। युग का होना अथवा कल का होना केवल एक भ्रम ही तो है। छल के सिवा कुछ नहीं है यह सब। कल ना तो था ना ही होगा। युग भी तो नहीं था और ना होगा। सत्य है तो केवल यही क्षण जो तुम अभी जी रहे हो। जो क्षण वर्तमान में है उस के सिवा समय का कोई अस्तित्व ही नहीं है। जो क्षण हाथ से छुट गया वह समय मर गया, दफन हो गया, जलकर राख हो गया। अगले क्षण आने वाला क्षण भी अभी तो केवल एक पुतला सा ही तो है। उस क्षण में ना तो जीवन होता है ना जीवन का रस। एक शव और एक पुतले के बीच हमें जीना होता है, वही जीवन है, वही शाश्वत है।" वफ़ाई के शब्दों में हाथ से छुट गए क्षण की पीड़ा थी, वेदना थी। वफ़ाई अभी भी एक अग्नि में जल रही थी।
वफ़ाई की उस अग्नि को अपने हाथों से शांत कर देना चाहता था जीत, किंतु वह विवश था। अपने विचार एवं धारणाओं में बंदी था वह। जीत ने उस कारावास को तोड़ने का प्रयास नहीं किया। वह एक पुतले सा स्थिर ही रहा।
"जीत, तुम कुछ कह रहे थे इस चित्र के विषय में।" वफ़ाई ने अपने अंदर की अग्नि को शांत करने के प्रयास में बात का बदलना चाहा। वह विफल रही।
"वफ़ाई, मैं एक शव भी हूँ और पुतला भी हूँ। मेरे में जो कुछ भी था, मर चुका है। बीते हुए कल का मृत शरीर अपने कंधों पर लिए फिर रहा हूँ। यह बोझ मुझे आगे चलने नहीं दे रहा। आने वाला क्षण, आने वाला कल अनिश्चित है। कितने क्षण आएंगे वह भी तो नहीं ज्ञात मुझे... ।"
"तो क्या मैं कोई अमरत्व लेकर आई हूँ? तुम क्या समझते हो कि मेरे पास कभी ना खाली होने वाले क्षणों का भंडार भरा है? कोई नहीं जानता कि आनेवाला क्षण किसके लिए क्या लेकर आएगा। तुम मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे हो और मैं मृत्यु को सोचती भी नहीं। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि तुम्हारी मृत्यु से पूर्व मेरी मृत्यु नहीं हो सकती। हो सकता है तुम्हें डराकर मृत्यु मुझे ले जाय। मृत्यु का लक्ष्य तूम ना होकर मैं होऊँ। तुम कभी इसकी माया नहीं जान सकते। यह मृत्यु बड़ा मायावी होता है....।"
जीत वफ़ाई के शब्द सह नहीं पाया। जीत नाम का एक शव विचलित हो गया, जीत नाम का एक पुतला जीवित हो उठा। जीत वफ़ाई के पास दौड़ गया। जीतने वफ़ाई के अधरों पर हाथ रखा दिया, "बस। आगे और कुछ मत कहना।" वफ़ाई मौन हो गई।
जीत ने वफ़ाई के कंधों पर दोनों हाथ रख दिये, वफ़ाई की आंखों में आँखें डाल दी। ऊन आँखों में अनगिनत भाव थे, जीत ने उसे पढ़ने की चेष्टा नहीं की।
एक गहरी सांस लेकर जीत ने वफ़ाई को अपनी तरफ खींचा और अपने आलिंगन में ले लिया। वफाई को अच्छा लगा। वह स्वयं जीत के आलिंगन में बस गई। वफ़ाई ने अपनी पलकें झुका दी। जीत ने वफ़ाई को और समीप खींचा।
समय का एक क्षण भी नहीं बिता था कि वफ़ाई ने जीत को पीछे धकेला और जीत से पृथक हो गई। वफ़ाई दो चरण पीछे गई। जीत भी तो दो चरण पीछे चला गया था। दोनों के बीच का अंतर जो क्षण भर पहले शून्य था, अब चार पाँच चरण का हो गया था। जीत चौंक गया।
क्या चाहती है वफ़ाई? एक क्षण तो वह समीप आने के लिए खुला आमंत्रण देती है तो दूसरे ही क्षण निकट आते ही दूर धकेल देती है। आखिर बात क्या है?
"क्या बात है वफ़ाई? तुम क्या?"

“दूर ही रहो तुम मुझ से।” वफ़ाई ने रोष दिखाया, बल्कि अप्रसन्नता भी प्रकट की। उस ने अपने दोनों हाथों को झटक दिया, जैसे किसी वस्तु को अपने आप से दूर कर रही हो। जीत इस रोष का, इस अप्रसन्नता का कारण समझ नहीं पाया।
“वफ़ाई यह क्या? एक तरफ तुम मुझे जीवित शव और पुतला बताती हो और इन दोनों के बीच जो क्षण है उसे ही सत्य मान कर जीने को कहती हो। और जब मैं उस क्षण को पकड़कर चलने लगा तो तुम मुझ से दूर जा रही हो। मुझे दूर कर रही हो, मुझे दूर ही रहने को कह रही हो। तुम्हारी आँखों में आया हुआ यह रोष और यह अप्रसन्नता का अर्थ क्या है? कुछ तो है जो मैं समझ नहीं पा रहा हूँ। कहो न क्या बात है?”
“सुनना चाहते हो इस बात का अर्थ? साहस है इतना तुम में?” वफ़ाई ने जीत को उकसाया।
“तुम्हारे साथ ने मुझे साहसी बना दिया है। तुम कहो, बिना भय के कहो।”
“दो बातें है जो तुम समझ नहीं पाए। एक, तुमने सदैव मुझ से अंतर ही रखा है। जब भी मैंने तुम्हारे समीप आने का प्रयास किया है, तुम मुझ से पहले से भी अधिक दूर हो जाते हो। अर्थ इस का यह है कि तुम मुझे तुम्हारे समीप नहीं चाहथे हो।”
“किंतु मैं ही तो आया था तुम्हारे समीप अभी अभी।”
“नहीं। तुम स्वयं मेरे पास नहीं आये हो। तुम अपनी इच्छा से मेरे समीप आते तो यह बात नहीं होती।”
“तो यह क्या था?”
“मेरे कहे गए कुछ शब्द तुम्हें मुझ तक खींच लाये थे। मैंने जब मेरी मृत्यु की बात कही तब तुम मेरी तरफ बढ़े। क्या मेरे पास तुम तब ही आओगे जब मेरी मृत्यु आएगी और मैं एक शव बन जाऊँगी? यदि ऐसा ही है तो फिर क्या? तुम शव बने रहो अथवा मैं शव बन जाऊँ। क्या दो जीवित व्यक्ति एक दूसरे के समीप, एक दूसरे के सानिध्य में नहीं रह सकते? जब तक तुम मुझे अपने भीतर से नहीं चाहोगे तब तक तुम मुझे पा नहीं सकोगे। तुम्हें मुझे अपने हृदय से, भीतरसे, गहनता से चाहना होगा।” वफ़ाई ने एक गहरी सांस ली और मौन हो गई।
जीत मौन ही था, मौन ही रहना उचित समझा। क्षणों को बितने दिया दोनों ने।
शव और पुतले के बीच का क्षण काल गति से बीतता रहा। पुतले वाला क्षण वर्तमान में और वर्तमान का क्षण शव में बदलने लगा। ना जाने कितने क्षण ऐसे ही शव बन गए, दोनों को ज्ञात नहीं रहा। इन क्षणों के साथ साथ चन्द्र भी गगन में चलता रहा। हवा भी चलती रही। कुछ बादल भी चलते रहे। स्थिर थे तो केवल दो व्यक्ति- वफ़ाई और जीत। दोनों खड़े थे अपने अपने स्थान पर, चार पाँच चरणों के अंतर पर। दोनों की द्रष्टि झुकी हुई थी, जैसे धरती के अंदर छिपी किसी वस्तु को खोज रही हो।
“कब तक मौन रहने की इच्छा है?” जीत ने मौन के भार को हटाने का प्रयास किया।
“मेरी इच्छा से क्या होता है?” वफ़ाई ने अभी भी सुर नहीं बदला था।
“तुम कह रही थी कि मैं दो बातें नहीं समझ पाया। यह दूसरी वाली बात कौन सी है?”
“दूसरी बात कदाचित तुम अभी भी समझ ना पाओ।”
“तुम बताओ तो सही। मैं पूरा प्रयास करूंगा, हो सकता ही कि समझ आ जाय।” जीत ने वफ़ाई को स्मित देने का प्रयास किया। वफ़ाई ने उस स्मित की उपेक्षा की।
“तो सुनो। तुम जानते हो, प्रत्येक क्षण अपने साथ एक भाव लेकर आता है। जिस क्षण में मैं तेरी झंखना कर रही थी वह क्षण मेरे भीतर एक उन्माद था। प्रत्येक क्षण का एक उन्माद होता है। उस क्षण को हमें पकड़ना चाहिए। अब वह क्षण बीत गया। वह शव बन गया। शव का कोई उन्माद नहीं होता। अब यह क्षण शांत है। उन्माद वाला वह क्षण जब कभी आए तो उसे खो मत देना।”
“तो यह क्षण कौन सा भाव लेकर खड़ा है हम दोनों के बीच?” जीत ने दुविधा में पूछा।
“यह क्षण रोष भी है और अप्रसन्नता भी है।” वफ़ाई ने अपना ध्यान जीत पर से हटा दिया। वह जीत द्वारा बनाई गई अपनी ही छवि को देखने लगी।
जीत ने अति सुंदर चित्र बनाया था वफ़ाई का। आँखों में जो भावों का सर्जन किया गया था वह भी अदभूत था। कदाचित जीत का यह सर्व श्रेष्ठ चित्र था। वफ़ाई को अपना ही चित्र लुभाने लगा, मोहीत करने लगा। उसका क्रोध मंद होने लगा। वह विचारों में खो गई।
सत्य क्या है? मैं जो यहाँ स्वयं जीवित हूँ वह अथवा यह छवि जो जीवित नहीं हो कर भी जीवित सी लगती है?
मैं क्या हूँ? मैं कौन हूँ? मेरा अस्तित्व सत्य है या इस चित्र का? मैं बिम्ब हूँ या प्रतिबिंब? मैं सत्य हूँ या कोई भ्रम? अपनी ही छवि में स्वयं को ढूँढने लगी हूँ मैं। स्वयं से ही उलझ गई हूँ मैं।
कुछ क्षण पश्चात वफ़ाई शांत हो गई।
“जीत, तुम कुछ कह रहे थे इस चित्र के विषय में।”
“हाँ, मैं कह रहा था कि,” जीत चित्र के पास गया, हाथ में तूलिका ली, रंग में डुबोया, “यहाँ देखो। यह तुम्हारे माथे पर एक काली सी बिंदी दिख रही है?” जीत तूलिका को वहाँ तक ले गया।
“हाँ, दिख रही है। बड़ी सुंदर लग रही है।”
“नहीं वफ़ाई, यह सुंदर नहीं है। वास्तव में यह तूलिका जब मेरे हाथ से गिर रही थी तो उसने होठों के साथ साथ माथे पर भी यह काला रंग छोड़ दिया था। मेरे मूल चित्र में यह नहीं था। यह ...।”
“तो क्या हुआ? तूलिका भी उचित स्थान देख कर ही अपना रंग छोड़ती है।”
“तुम तो कभी माथे पर बिंदी नहीं लगाती हो।”
“तो क्या हुआ?”
“मेरा मानना है कि तुम बिंदी पसंद नहीं करती। यदि तुम्हारी पसंद नहीं है तो फिर चित्र में भी वह नहीं होनी चाहिए। चित्र अवास्तविक लगेगा।”
“किस ने कहा कि मैं बिंदी पसंद नहीं करती?”

“मैंने कभी तुम्हारे माथे पर बिंदी देखि ही नहीं।”
“हाँ, यह बात भी है कि मैंने कभी बिंदी लगाई ही नहीं। अरे, मेरी पर्स में भी बिंदी नहीं है।”
“तो मैं इस बिंदी को यहाँ से हटा देता हूँ।”
“बिंदी चित्र से हट सकती है किंतु इस समस्या का समाधान और भी तो हो सकता है।”
“वह क्या है?”
“मेरे माथे पर भी तो बिंदी लगा सकते हो।”
“तुम्हारे माथे पर? मतलब यह कि तुम अब बिंदी लगाना चाहती हो? नहीं मैं यह नहीं कर सकता। मैंने मेरे चित्र में जो भूल की है उसे मिटाना चाहूँगा। मैं दूसरी कोई भूल नहीं करना चाहता।”
“ऐसा क्यूँ?”

“क्यूँ कि तुम एक मुस्लिम स्त्री हो। तुम्हारा धर्म तुम्हें इस बात की अनुमति नहीं देता। माथे पर बिंदी लगाना, श्रुंगार करना आदि तुम्हारे धर्म के विरूध्ध है। यह सब हिन्दू कन्याओं के लिए ही है। तुम इसे रहने दो।”
वफ़ाई सोच में पड गई।
जीत सत्य कह रहा था। इस्लाम में यह अनुमति नहीं है।
गहरी सांस लेकर वफ़ाई बोली, “यह सत्य है कि इस्लाम मुझे इस बात की मनाई करता है। किंतु यदि मैं बिंदी लगा लूँ तो कौन सी कयामत आ जाएगी?”

“मैं नहीं जानता। मैं तो बस तुम्हारे धर्म का सम्मान करता हूँ और तुम्हें भी यही बात याद दिला रहा हूँ।”
“जीत, यह धर्म क्या होता है? क्या वह अल्लाह अथवा ईश्वर को प्राप्त करने का कोई मार्ग है? पुजा का कोई प्रकार है? उस सर्व शक्तिमान से जुडने का माध्यम है? क्या है यह धर्म?”
“धर्म केवल धर्म है। उसकी व्याख्या नहीं की जाती। उस पर संशय नहीं किए जाते। हमारे धर्म की पुस्तकों में जो कहा गया है वह सत्य होता है। हमें बस उसे मानना होता है। उस का अनुसरण करना होता है। इस से आगे मुझे कुछ भी नहीं पता।”
“नहीं जीत। यह धारणा असत्य है। हमारे धर्म ग्रंथ सही हो सकते हैं, शत प्रतिशत नहीं। यह धर्म ग्रंथ भी तो किसी मनुष्य ने ही लिखे हैं। कोई भी मनुष्य कितना भी महान क्यूँ ना हो, वह सम्पूर्ण नहीं होता। उस पर संशय किया जा सकता है, उस पर चर्चा की जा सकती है। उस की अपूर्णता को ललकारा जा सकता है।”
“यह पाप होगा। हमें ऐसा नहीं करना चाहिए।”
“नहीं जीत। यह पाप, यह पुण्य, यह सत्य, यह असत्य, यह सब बातें प्रत्येक व्यक्ति के लिए भिन्न भिन्न होती है। समय और स्थल के अनुरूप इसके अर्थ बदलते हैं। कोई भी बात कभी भी सम्पूर्ण सत्य अथवा सम्पूर्ण असत्य नहीं होती। हम इसके विरूध्ध बोल सकते हैं। असत्य को बदल भी सकते हैं। और हमें बदलना भी चाहिए।”
“मुझे इस गहरी चर्चा में नहीं पड़ना। मैं तो बस इस चित्र के माथे से बिंदी हटा देता हूँ।”
जीत चित्र की तरफ बढने लगा।
“रुको। कुछ क्षण के लिए भी रुक जाओ। वफ़ाई चिल्लाई।
“वफ़ाई...।” जीत रुक गया। वहीं स्थिर सा खड़ा हो गया। तूलिका पकड़ा हुआ दाहिना हाथ हवा में ही रह गया। जीत की आँखें चित्र के माथे पर लगी बिंदी पर स्थिर हो गई। एक विचित्र सी आकृति बनाकर वह खड़ा था। उसे देखकर वफ़ाई को हंसी आ गई। वह हंस पड़ी। जीत विचलित हो गया, थोड़ा चीड भी गया। उसने मुड़कर वफ़ाई को देखा। वफ़ाई अभी भी हंस रही थी।
“जीत, सीधे हो जाओ। इस मुद्रा में ठीक नहीं लगते हो। देखो एक हाथ ऊपर है और एक पैर भी हवा में उठा हुआ है। आराम से सहज मुद्रा में आ जाओ।” वफ़ाई ने होठों पर स्मित के साथ कहा।
जीत कुछ समज नहीं पा रहा था, समज ने का प्रयास कर रहा था। कुछ भी समज नहीं आने पर वह सहज ही खड़ा हो गया। हवा में उठे हाथ को नीचे कर दिया और पग धरती पर रख दिया। वफ़ाई को विस्मय से देखता रहा।
“तुम कुछ व्याकुल हो, कुछ दुविधा में हो। एक काम करो। तुम झूले पर बैठ जाओ। हम वहाँ बैठ बातें करते हैं। और हाँ, तूलिका को वहीं छोड़ देना। अब इसकी कोई आवश्यकता नहीं है।”
वफ़ाई झूले की तरफ जाने लगी। जीत भी अनायास ही उसके पीछे चलने लगा। जीत के हाथ में अभी भी तूलिका थी।
“जीत, सूप पियोगे?” वफ़ाई ने पूछा।
“नहीं, वफ़ाई। रहने दो। अभी सब कुछ छोड़ कर मेरे पास बैठो, मेरे साथ रहो।” जीत झूले पर बैठ गया।
“तुम भी आ जाओ, यहाँ, मेरे पास।” जीत ने वफ़ाई को आमंत्रित किया। वफ़ाई जीत के समीप बैठ गई।
दोनों के पग अनायास ही चलने लगे, झूला धीरे धीरे गति करने लगा। ठहरी हुई हवा में जीवन प्रवेश करने लगा। वह गतिमान हो गई। संध्या की मध्धम-सी ठंडी हवा दोनों के अंग अंग को स्पर्श करती चलने लगी। कुछ क्षण मौन ही व्यतीत हो गए। समय भी धीरे धीरे चलता रहा। जैसे आज कोई भी उतावला न था। ना हवा, ना समय, ना जीत, ना वफ़ाई। कितना ठहराव था उन क्षणों में जो उस समय वहाँ रुकी हुई थी !
सहसा, समय उस तंद्रा से जाग उठा।
मैं समय हूँ। मुझे चलते रहना है। ठहरना मेरा स्वभाव भी नहीं और अधिकार भी नहीं। मुझे चलना होगा। मैं रुक नहीं सकता।
ठहरा हुआ समय तेज गति से चलने लगा। हवा भी तेज चलने लगी। तेज हवा की लहर से वफ़ाई के केश की लटें उड़ती हुई जीत को स्पर्श करने लगी। जीत की तंद्रा टूटी।
जीत ने वफ़ाई की तरफ देखा। वह अभी भी झूले पर धीरे धीरे झूल रही थी। उसकी लटें हवा में लहराती थी, कुछ लटें जीत के साथ खेल रही थी। वफ़ाई अभी भी ठहरे हुए समय में गुम थी, एक पुतले की तरह स्थिर थी।
जीत ने झूले को रोक दिया। ठहरे समय के पानी में जैसे किसी ने कंकर मार दिया हो। झूला रुक गया। ठहरा समय आगे निकल गया। वफ़ाई चलित हो गई। पुतला जीवित हो उठा।
“जीत, हम कहाँ हैं?” वफ़ाई की आँखों में विस्मय था। जैसे किसी अज्ञात प्रदेश में आ गई हो।
“वफ़ाई, तुम यहीं रुको। मैं थोड़ा पानी लाता हूँ। तुम्हें स्वस्थ होने में यह सहायता करेगा।”
“नहीं जीत। कहीं मत जाओ। बस मेरे पास बैठे रहो। बातें करते रहो।” वफ़ाई ने जाते हुए जीत का हाथ पकड़ लिया। जीत ने हाथों की तरफ देखा।
किस में इतना साहस होगा इस हाथ से हाथ छुड़ने का? जीत ने मन ही मन निश्चय कर लिया और वह रुक गया।
“बैठो ना।” वफ़ाई के शब्दों पर जीत बैठ भी गया।
“हाँ तो हम कहाँ थे? किस विषय पर बात कर रहे थे?” वफ़ाई ने छूट गए उस क्षण को पकड़ने की चेष्टा की।
“उस छूटे हुए क्षण और इस क्षण के बीच जो क्षण बीत गए वह सब क्षण की अनुभूति कुछ खास थी, है न वफ़ाई?” वफ़ाई ने अपनी पलकें झुकाई और फिर खोल दी। आँखों ने ही जीत के प्रश्न का उत्तर दे दिया।
“तो उस क्षण से पून: तार जोड़ दो, जीत।”
“जैसी आपकी आज्ञा, देवी वफ़ाई।” जीत ने नाटकीय मुद्रा से सर झुका दिया। वफ़ाई हंस पड़ी।
“जीत, मैं भी यदि तुम्हारे उस चित्र की भांति मेरे माथे पर बिंदी लगा लूँ तो?” जीत समज़ नहीं पाया कि वफ़ाई प्रश्न कर रही है अथवा आमंत्रित कर रही है। वह प्रश्न भरी द्रष्टि से वफ़ाई को देखने लगा।
“जीत, मैं भी बिंदी लगाना चाहती हूँ।” वफ़ाई ने जीत के उस प्रश्न का उत्तर दे दिया जो जीत ने पूछा ही नहीं था।
“किन्तु यह ठीक होगा क्या? तुम्हारा समाज, तुम्हारा धर्म तुम्हें इस बात की अनुमति देगा? क्या तुम अपने समाज की जीवन रीति से

भिन्न कुछ करना चाहोगी? कर पाओगी?” जीत के शब्दों में संशय भी था और आव्हान भी ।
“यह समाज, यह धर्म ,यह जीवन रीति, क्या होता है यह सब? क्या मैं एक स्वतंत्र व्यक्ति नहीं हूँ? क्या मेरा स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है? क्या मैं मेरी इच्छा के अनुरूप जीवन नहीं जी सकती? कौन होते हैं यह सब लोग मेरे जीवन के निर्णय करने वाले? मैं इस समाज, धर्म और जीवन रीति को नहीं मानती।” वफ़ाई के भाव उग्र हो गए।
“अर्थात तुम इन सब से विद्रोह कर रही हो?”
“विद्रोह भी और त्याग भी। मैं किसी भी बंधन से स्वयं को मुक्त घोषित करती हूँ।”
“शांत हो जाओ, वफ़ाई। तुम जो चाहो वही होगा। तुम स्वतंत्र हो।” जीत ने वफ़ाई के हाथ पर एक संवेदना से भरा स्पर्श किया। जीत के उस स्पर्श में बसी शीतलता ने वफ़ाई को शांत कर दिया। वफ़ाई ने जीत के उस हाथ को पकड़ लिया।
“जीत, आओ मेरे साथ।” वफ़ाई झूले से उठ खड़ी हो गई, जीत भी। वफ़ाई जीत को चित्र के समीप ले गई।
“जीत, तूलिका उठाओ, उसे लाल रंग में डुबो दो और उस लाल रंग की बिंदी मेरे माथे पर लगा दो।” वफ़ाई ने अपने माथे पर फैली केश की लटों को पीछे की तरफ धकेला। वफ़ाई का ललाट अब पूरी तरह से खुला था, उस कोरे केनवास की तरह जो किसी चित्र की प्रतीक्षा में होता है।
जीत ने अपने आप में साहस जुटाया, तूलिका को पकड़ा, लाल रंग में डुबोया और वफ़ाई के माथे पर बिंदी लगा दी। वफ़ाई की आँखें चमक उठी। एक ऐसे भाव तैरने लगे उन आँखों में जिसे देखकर कोई भी तपस्वी अपनी तपस्या छोड़ दे।
यह तो जीत था, कोई तपस्वी थोड़े ना था? वह डूब गया उन आँखों के उन भावों के दरिया में।
वफ़ाई के श्वेत माथे पर लाल बिंदी चमकने लगी। उधर दूर गगन में चंद्र निकल आयाथा, आधा चन्द्र, श्वेत चन्द्र।

71

ललाट की उस बिंदी ने वफ़ाई के भीतर नया उन्माद जगा दिया। वफ़ाई विचलित हो गई, चंचल हो गई। जीत ने वफ़ाई के उन्माद को, उस क्षण के उन्माद को परख लिया। उसने वफ़ाई को अपने आलिंगन में ले लिया। वफ़ाई ने दोनों हाथों से जीत को कसा। जीत ने भी वही किया। दोनों के बीच कोई अंतर नहीं रहा। दोनों इतने समीप थे कि हवा भी बीच में आने का साहस न कर पाई।
दोनों ने एक दूसरे की आँखों में देखा। आँखों ने आँखों से कुछ बात कही, आँखों ने आँखों की बात सुनी, समजी और अधरों ने अधरों से मिलन कर दिया। दोनों का अस्तित्व एक दूसरे में विलीन हो गया। दूर गगन से चंद्र निर्लज्ज हो कर सब कुछ देखता रहा।
रात्रि भर चंद्रमा जीत और वफ़ाई को देखते देखते थक गया, अस्त हो गया। भोर ने जब जगाया तो जीत ने स्वयं को झूले पर पाया। वफ़ाई झूले पर नहीं थी।
जीत कक्ष में गया। वफ़ाई वहाँ सो रही थी। वफ़ाई के ललाट की लाल बिंदी अभी भी वहीं थी। वफ़ाई को वह और शृंगारित कर रही थी। वफ़ाई के मुख पर शांति थी, परम शांति थी। कोई पीड़ा, कोई उन्माद वहाँ नहीं था।
क्या यह शांति ही शाश्वत है? जीत ने स्वयं से प्रश्न किया।
वफ़ाई को वहीं छोड़ कर जीत चल पड़ा मरुभूमि की तरफ, बिना किसी कारण के, बिना किसी उद्देश्य के। जीत रेत पर चलता रहा। उसे यह रेत अपरिचित सी लगी, मानो वह यहाँ पहली बार आया हो। कुछ समय तक वह चलता रहा, फिर घर को लौट आया। झूले पर जाकर बैठ गया। एक ठंडी हवा उसे स्पर्श कर निकल गई।
मैं कई महीनो से रेत पर चल रहा था और वफ़ाई के आते ही रेत का वह मार्ग कहीं पीछे छुट गया। जैसे मैं जीवन के मार्ग पर लौट आया। वफ़ाई का मिलना, वफ़ाई का होना ही जैसे जीवन हो।
“वफ़ाई। ओह वफ़ाई। कहाँ हो तुम?” जीत झूले से उठा और कक्ष के भीतर गया।
“वफ़ाई, कहाँ हो?” कक्ष के भीतर द्रष्टि करते ही जीत के शब्द अटक गए। वह चौंक गया। वफ़ाई ने कुछ सामान बांध दिया था और कक्ष के एक कोने में रख दिया था।
“वफ़ाई, कहाँ हो? और यह क्या? फिर कहीं जाने की तैयारी कर रही हो?”
“हाँ, अवश्य। तुम्हें कोई आपत्ति तो नहीं?” वफ़ाई ने बड़े ही मधुर भाव से पूछा।
“मुझे क्यूँ आपत्ति होगी।” जीत को कुछ समझ नहीं आ रहाथा।
“?”
“हाँ, हाँ। कहा ना मुझे क्यूँ होनी है आपत्ति? मुझे क्या, तुम कहीं भी जाओ। मैं तो जानता ही था कि अतिथि को एकना एकदिवस जाना ही होता है।”
“तो इतने उखड़े उखड़े से क्यूँ हो?” वफ़ाई ने जीत को छेडा। जीत ने कोई उत्तर नहीं दिया।
“चलो छोड़ो भी न। मेरी तरफ देखो। मेरी बात ध्यान से सुनो।” वफ़ाई जीत के समीप गई और जीत का हाथ पकड़ लिया। दोनों की आँखें मिली। वफ़ाई ने पलकें झुकाई, उठाई और जीत को स्मित दिया।
“कहो, क्या कहना चाहती हो?”

"पहले थोड़ा स्मित करो, बाद में हम बात करते हैं।" जीत ने स्मित किया पर वह स्वाभाविक स्मित ना था।
"सुनो, यह सामान मेरी अकेली का नहीं है, तुम भी चल रहे हो मेरे साथ। हम दोनों जा रहे हैं।"
"हम दोनों? कहाँ? कब? कयूं? कैसे?" जीत ने एक साथ अनेक प्रश्न पुछ डाले।
"आओ कक्ष से बाहर चलते हैं। वहीं झूले पर बैठ कर बातें करते हैं। मैं सब कुछ बताती हूँ।" वफ़ाई झूले पर बैठ गई।
"अब बैठ भी जाओ, जी....त...।" वफ़ाई ने जीत को खींचा, जीत झूले पर बैठ गया।
"हम दोनों जा रहे हैं। इस मरुभूमि से कहीं दूर, किसी पहाड़ पर जा रहें हैं। और हाँ, वह पहाड़ हिमाछादित भी है। आज ही, कुछ समय में हमें जाना होगा।" वफ़ाई रुकी।
"अभी भी मेरे दो प्रश्नों के उत्तर नहीं दिये तुमने, वफ़ाई।"
"कौन से दो प्रश्न?"
"हम क्यूँ जा रहे हैं और कैसे जा रहे हैं?" जीत ने झट से बताया।
"मृत्यु से पूर्व हम जीना चाहते हैं। वही हिम से भरे पहाड़ पर तुम जाना चाहते हो न जहां से तुम्हें यह रोग लगा है? हम वहीं जा रहे हैं।"
"क्या? तुम सत्य कह रही हो?" जीत ने विस्मय से वफ़ाई को देखा।
"सोला आने सच। तुम्हारी सौगंध जीत।" वफ़ाई ने जीत के माथे पर हाथ रख दिया।
"ओह वफ़ाई, तुमने मेरी बुझ रही पाति में प्रकाश के कुछ क्षण डाल दिये। यह बताओ कि कैसे जाएंगे वहाँ तक?" जीत उत्साह से भर गया। जीत के सारे शरीर में एक नई ऊर्जा प्रवाहित हो गई।
"वाह, क्या बात है जीत। जरा दर्पण में अपने आप को देखो तो सही। बड़े सुंदर लग रहे हो।"
"दर्पण तक कौन जाए, बस तुम ही बता दो मैं कैसा लग रहा हूँ।"
"तुम चाहो तो मेरी आँखों में स्वयं के प्रतिबिंब को देख सकते हो।" वफ़ाई हंस पड़ी, जीत भी।
अचानक जीत गंभीर हो गया।
"क्या हुआ? तुम कुछ चिंतित हो क्या?" वफ़ाई ने जीत के कंधे पर हाथ रख दिया।
"हाँ, दो तीन बातें हैं।"
"जीत, तुम सोचते अधिक हो, जीते कम हो। इतना सोचना भी ठीक नहीं। खुल कर जिया करो। चलो कहो क्या चिंता है?"
"वफ़ाई, तुम अपना काम अधूरा छोड़ कर जा रही हो। इतने दिवस तक प्रतीक्षा की है और अब कुछ ही दिवस पश्चात पुर्णिमा का दिवस, अरे रात्रि आयेगी। वह काम पूरा कर लो।"
"मैं तब तक नहीं रुक सकती।"
"तुमने लंबी प्रतीक्षा की है, एक तपस्या की है और जब तुम्हारा काम पूरा होने में चार पाँच दिवस ही बचे हैं तो ...।"
"चार पाँच दिन भी अधिक होते हैं। तब तक हम रुक गए तो विलंब हो जाएगा।"
"अर्थात तुम्हें कुछ बात की शीघ्रता है।"
"देखो जीत, समय रहा तो कभी भी इस श्वेत सफ़ेद मरुभूमि के चंद्रमा को चित्रक में बंदी कर लूँगी किन्तु अभी तो हमें उस जीवन को जी लेना है जो हम जीना चाहते हैं। हमारे पास अब समय...।" वफ़ाई ने शब्दों को रोक दिये।
"तो तुम भी मेरे साथ साथ मेरी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रही हो।" जीत भावुक हो गया।
"नहीं। मैं भी तुम्हारे साथ जीवन जी लेना चाहती हूँ, जो मैंने आज तक नहीं जिया।"
"मेरे पर इतनी कृपा क्यूँ वफ़ाई जी?"
"मैं आप पर कोई कृपा नहीं कर रही श्रीमान जी। इस में मेरा ही स्वार्थ निहित है।"
"वह कैसे?"
"जीत, तुम से मिलने से पहले मैं कई युवकों से और अनेक पुरुषों से मिली हूँ। हर कोई व्यक्ति की आँखों में मैंने मेरे लिए एक वासना देखी है। उन आँखों में मैंने एक कुरुपता देखी है मेरे सौन्दर्य के प्रति। जैसे मैं कोई शिकार हूँ और वह शिकारी। मेरे मन में पुरुषों के प्रति धृणा घर कर गई थी। मैं मानने लगी थी कि पुरुष के साथ जीवन के क्षण आनंदमय कभी नहीं होते। इसी कारण मैं सभी पुरुषों से अंतर बनाए रखती थी। इसी धारणा के कारण मैं भी तो मेरा जीवन जीना भूल गई थी।" वफ़ाई रुकी,"किन्तु तुम से मिलने के पश्चात मुझे लगा कि प्रत्येक पुरुष एक सा नहीं होता। तुम उन सब से भिन्न हो। मैंने सदैव तुम्हारी आँखों में मेरे प्रति सन्मान देखा है।"
"बस, इतनी सी बात? यह तो कोई कारण नहीं है।"
"बस इतनी सी ही बात है।"
"वफ़ाई, कोई व्यक्ति इसी कारण से छोड़े हुए व्यक्ति के पास नहीं लौट आती। तुम मुझे छोड़ कर भाग चुकी थी। तो लौट क्यूँ आई? कुछ तो है जो तुम मुझ से छुपा रही हो।"
"जीत, तुम अभी भी उसी बात पर अटके हो? वह तो...।" वफ़ाई मौन हो गई।
वफ़ाई ने गहरी सांस ली। गगन को देखा, द्रष्टि झुका ली और आँखें बंध कर ली।
जीत उसे देखता रहा। वफ़ाई जैसे किसी बीते हुए पलों में चली गई हो। उस की बंध आँखों के अंदर कुछ चल रहा हो, कुछ टूट रहा हो, कुछ बिखर रहा हो। और वफ़ाई इस सब को समेटना चाहती हो, संभालना चाहती हो। जैसे वह किसी यूध्ध को अपने अंदर लड़ रही हो। कुछ क्षण बीत गए। वफ़ाई का यूध्ध समाप्त हो गया। सब कुछ जैसे शांत हो गया।
"जीत, चलें?"
"चलना तो है ही हमें। वफ़ाई, यदि चलने से पूर्व तुम उस रहस्य को प्रकट कर सको तो...।"
"वैसे तो ऐसी कोई बात नहीं है।" वफ़ाई के शब्दों में कोई वेदना थी जिसे जीत ने पढ़ लिया।
"यदि तुम्हें उसे बताने में कष्ट हो रहा हो, पीड़ा हो रही हो तो मैं उस बात को यहीं छोड़ देता हूँ।" जीत ने वफ़ाई को आश्वस्त किया।

“स्त्रीयों को समजना अत्यंत जटिल है।” जीत बड़बड़ाया।
“जीत, स्त्रीको समजना जितना जटिल होता है, उतना ही सरल उसका स्नेह होता है। मेरा स्नेह भी सरल है। उसके पीछे रही जटिलता समय आने पर बता दूँगी।”
वफ़ाई के अधरों पर हवा की भांति स्मित लहराया, और उसने आँखें खोली। जीत अभी भी पूरे धैर्य के साथ वफ़ाई को ही देख रहा था। जीत ने भी वफ़ाई को स्मित दिया।
“चलो अब और कोई प्रश्न नहीं, जाने की तैयारी कर लो। शाम चार बजे भुज से हमारी हवाई यात्रा प्रारंभ होगी।” वफ़ाई ने जीत का हाथ पकड़ लिया। हाथों में हाथ डाले दोनों घर के अंदर गए।
जब घर से बाहर निकले तो साथ में सामान था।
“वफ़ाई, हम इस घर में कभी लौट कर आएंगे क्या?”
“कदाचित।” वफ़ाई के इस शब्द ने अनेक संभावनाओं को जन्म दे दिया।
“अर्थात, यदि हम इस घर पर लौटे तो तुम भी मेरे साथ होंगी।”
वफ़ाई घर को ताला लगाने लगी।
”इस घर को खुला ही रहने दो। इस घर में ऐसा कुछ भी कीमती नहीं जो चोरी हो सके। और हाँ, कब और कहाँ से फिर कोई वफ़ाई आ जाए तो....।”
वफ़ाई ने ताला लगा दिया और मुड़कर बोली, “वफ़ाई तो सदा आती रहेगी किन्तु वहाँ अगर कोई जीत नहीं मिला तो वफ़ाई अकेली क्या करेगी? और हाँ, इस घर में मेरी सबसे कीमती वस्तु बंद है, जिसे चोरी होने से बचाना है।”
“वह क्या?”
“तुम्हारे साथ व्यतीत किए क्षणों का स्मरण।”
“वह तो कोई तुमसे चुरा नहीं सकता कारण कि स्मरण घर में नहीं ह्रदय में बसते है।”
वफ़ाई ने ताला लगाकर घर की चाबी अपने पास रख ली। जीत को वफ़ाई का इस तरह घर पर अधिकार व्यक्त करना पसंद आया।
“जाने से पहले कुछ क्षण यहाँ बैठो।” वफ़ाई जीत को झूले तक खींच लाई। दोनों झूले पर समीप बैठ गए, एक दूसरे का हाथ हाथ में लिए धीरे धीरे झूलने लगे। कोई कुछ नहीं बोला। झूला चलता रहा, मंद मंद पवन बहता रहा। मौन बोलता रहा। समय बीतता रहा।
“वफ़ाई, काश यह समय इसी तरह यहाँ स्थिर हो जाय, रुक जाय, और हम दोनों झूलते रहें!”
“रुकने का नाम नहीं है जीवन। जीवन चलने का नाम, चलते रहो सुबह शाम...।” वफ़ाई ने झूला रोक दिया, खड़ी हो गई।
“अब तो मुझे भी चलना ही पड़ेगा।” जीत हंस पड़ा। दोनों चल पड़े।
जीप चालू करने से पहले वफ़ाई नीचे उतरी, घर की तरफ गई। उस घर की रेत को झुक कर नमन किया, झुले के पास गई और उसे लिपट गयी, चूम लिया और लौट आई।
जीत ने उसे रोका। जीत ने वफ़ाई को आलिंगन दिया। उत्कट आलिंगन के माध्यम से दोनों ने अपनी अपनी ऊर्जा प्रवाहित की। नई ऊर्जा समेटे हुए दोनों चल पड़े भुज की तरफ, जहां एक विमान उनकी प्रतीक्षा में था।

* *

“रुको। बस यहीं। यह जो चोटी दिख रही है न, बस यहीं पर। बस यहीं से मैंने जीवन जीना खो दिया था।” जीत ने हिम से ढँकी पहाड़ी की तरफ संकेत किया।
“तो यह है वह पहाड़ी? क्या नाम होगा इसका?” वफ़ाई ने पहाड़ी की तरफ देखते देखते कहा। वह अभी भी पहाड़ी की ऊंचाई और फैले हुए हिम को देख रही थी। वफ़ाई को उस पहाड़ी ने चुंबक की भांति खींच रखा था। वह उसे देखती रही।
“चोटियों के नाम नहीं हुआ करते। यहाँ इसे नंबर से जाना जाता है। तुम इस चोटी को इस तरह से क्यूँ देख रही हो? तुम तो हिम से भरी पहाड़ियों पर रहनेवाली पहाड़ी सुंदरी हो। तुम्हारे लिए तो यह सब सामान्य है, हर पहाड़ी की भांति। क्या कुछ विशेष बात है इस चोटी में?”
“बात तो विशेष ही है इस में। मैं तो इस पहाड़ी का धन्यवाद कर रही हूँ।” वफ़ाई ने पहाड़ी की तरफ झुककर नमन किया।
“वफाई, तुम जानती हो कि इसी पहाड़ी ने मुझे मृत्यु की तरफ धकेला है। यहीं से मैंने जीवन...।”
“और यही पहाड़ी तुम्हें जीवन देगी, जीत। इस पहाड़ी की मैं आभारी हूँ। यदि इस पहाड़ी तुम्हें यह रोग ना देती तो तुम और मैं कभी मिल नहीं पाते और मैं कभी जीवन को जी नहीं पाती।”
“यह पहाड़ी मुझे कैसे जीवन देगी?”
“वह मुझे ज्ञात नहीं किन्तु इस पहाड़ी से आती हवा अपने साथ जो संदेश लेकर आई है उसे मैं पढ़ सकती हूँ। वह कह रही है कि यहाँ जीवन है। इन संकेतों को मैंने पढ़ लिया है।” वफ़ाई ने जीत का हाथ पकड़ा और दौड़ गई पहाड़ी पर। जीत में भी ना जाने कहाँ से

ऊर्जा आ गई कि वह भी दौड़ता हुआ चढ़ गया पहाड़ पर।
दोनों जा पहुंचे चोटी पर।
“वाह, वफ़ाई। इन हवाओ में कुछ तो है जो जीने की नयी आशा जगाती है। मैं तुम्हारा धन्यवाद करता हूँ मुझे यहाँ लाने के लिए, मेरे अंदर जिजीविषा जगाने के लिए।”
“यदि तूम मेरी उंगलि पकड़कर चलना सीख लेते हो, जीना सीख लेते है तो…।”
“तो उन उँगलियों को मैं इस तरह से चूम लूँगा।” जीत ने वफ़ाई के हाथों की उँगलियों को चूम लिया।
“तो फिर चलो, जी लेते हैं जीवन के इस मधुर क्षणों को। इस वर्तमान को।” वफ़ाई ने जीत को आमंत्रित किया।
“एक शव और एक पुतले के बीच का समय, जो हमारी मुट्ठी में बंध है।” जीत खुल कर हंसा, वफ़ाई भी।
पहाड़ की चोटी से वफ़ाई नीचे की तरफ सरकने लगी।
तीव्र गति से वह नीचे की तरफ जाने लगी,“जीत, आ जाओ।”
जीत ने भी साहस किया और कूद पड़ा, नीचे जाने लगा। धीरे धीरे गति तीव्र होने लगी।
क्या मैं इसी तरह नीचे ही नीचे जाता रहूँगा अथवा यह कभी रुकेगा भी? जीत थोडा भयभीत हो गया। वह अभी भी नीचे की तरफ सरक रहा था। उसने एक क्षण के लिए आँखें बंध कर ली।
“जीत, आ जाओ। मैं यहाँ हूँ।” वफ़ाई के शब्द सुनाई दीये। जीत ने गहरी सांस ली, स्वयं को संभाला और आँखें खोल दी। नीचे की तरफ देखा, वफ़ाई नीचे तक जा चुकी थी। जीत भी नीचे तक जा पहुंचा। वफ़ाई ने जीत को अपना हाथ दिया। जीत वफ़ाई का हाथ पकड़कर उठ गया।
“कितना आनंद आया, है ना?” वफ़ाई रोमांचित थी।
“अरे, एक क्षण के लिए तो मैं जैसे मर ही गया था। किन्तु आनंद आया। चलो पुन: करते हैं।” जीत ने उत्साह दिखाया।
“चलो, इस बार तुम्हें पहले जाना है, मैं पीछे पीछे आती हूँ।” वफ़ाई ने जीत का साहस बढ़ाया।
दोनों ऊपर गए, जीत पहले नीचे गया, वफ़ाई पीछे पीछे नीचे पहुंची। इस बार जीत ने वफ़ाई को हाथ दिया और वफ़ाई जीत का हाथ पकड़कर उठ गई।
“चलो कुछ और करते हैं।” वफ़ाई ने हिम के टुकड़े को हाथ में लिया, गोला बनाया और जीत की छाती पर मार दिया।
“अरे, यह क्या कर रही हो? तूम जानती है ना कि यही हिम ही तो मेरे रोग का कारण है।” जीत जरा चिड गया।
“जीत, भयभीत ना हो। अब क्या, जो होना था सो हो गया। अब यह हिम तुम्हें कुछ क्षति नहीं पहुंचा सकता। खुलकर आनंद लो। यही क्षण है जीवन के। हो सके इतना जी लो।” वफ़ाई ने दूसरा गोला भी जीत को मार दिया।
इस बार जीत डरा नहीं, अपितु आनंदित हो उठा।
जीत ने भी हिम उठाया, गोला बनाया और वफ़ाई को मार दिया। वफ़ाई जीत के वार से बचने के लिए हट गई। हिम का वार खाली गया।
“बड़ी चतुर हो। मेरे वार से बच नीकली, किन्तु मैं छोडुंगा नहीं।” जीत आक्रामक हो गया। दो चार हिम के गोले वफ़ाई को मार दिये। वफ़ाई प्रत्येक बार बच निकली।
जीत जिद पर आ गया। उसने बरफ का गोला लिया और वफ़ाई की तरफ भागा। वफ़ाई भी भागने लगी। आगे वफ़ाई, पीछे जीत। जीत उसे पकड़ना चाहता था, पकड़कर वफ़ाई को हिम का गोला मारना चाहता था किन्तु वफ़ाई जीत के हाथ नहीं आ रही थी। कुछ देर तक दौड़ते रहने पर जीत थक गया। रुक गया।
“अब रुक भी जाओ वफ़ाई। मेरे से अब दौड़ा भी नहीं जाता, चला भी नहीं जाता।” जीत हिम पर ही बैठ गया, लेट गया। वफ़ाई रुकी, मुड़ी और जीत के पास जा पहुंची।
वफ़ाई के समीप आते ही जीत ने हाथ में छुपा रखे हिम के गोले को वफ़ाई पर मार दिया। गोला वफ़ाई की छाती के बिचों बीच, दो पहाड़ियों के बीच लगा। वफ़ाई ने शीघ्रता से अपने दोनों हाथ कसकर छाती पर रख दिये।
कुछ हिम वफ़ाई की छाती और हथेलियों के बीच दब गया, पिघलने लगा, पिघल गया।
वफ़ाई के अंदर भी कुछ पिघलने लगा, पिघलकर बहने लगा, नसों में बहते बहते सारे शरीर में प्रवाहित हो गया। वफ़ाई को यह प्रवाह परिचित लगा, अपना सा लगा। वफ़ाई उस प्रवाह में बहने लगी। जीत ने वफ़ाई को पकड़ लिया, हिम के गोलों की बौछार करने लगा। वफ़ाई अब भीग चुकी थी, भीतर से भी, बाहर से भी।
वफ़ाई को यह भिगना मनभावन लगने लगा। वफ़ाई ने कोई विरोध नहीं किया। वफ़ाई प्रसन्न थी कि जीत धीरे धीरे सामान्य होता जा रहा था, पुन: जीने लगा था।
ठंडी हवा की लहर दोनों को स्पर्श करती निकल गई, जैसे कह रही हो कि मैं भी यहाँ हूँ। जीत जाती हुई ठंडी हवा के टुकड़े को क्षण भर देखता रहा, अचानक ही उस हवा को पकड़ने के लिए दौड़ पड़ा। हवा जीत से अधिक तेज गति से दौड़ रही थी, जीत के हाथ नहीं आई। जीत ने हिम का गोला हाथ में लिया और जाती हुई ठंडी हवा पर मार दिया। हवा और आगे निकल चुकी थी। जीत निशाना चूक गया। जीत रुक गया, वफ़ाई की तरफ मूड गया। वफ़ाई हंस रही थी।
“मेरे पराजय पर तुम हंस रही हो?” जीत ने हिम का गोला वफ़ाई को मार दिया। वफ़ाई ने उससे बचने का कोई प्रयास नहीं किया। गोला वफ़ाई के गालों पर लगा, टूट गया।
“नहीं जीत, मैं तुम्हारे पराजय पर नहीं किन्तु तुम्हारे अंदर जन्मे बालक पर हंस रही थी। तुम बिलकुल बालक की भांति सहज हो, निर्दोष हो।”
“तो इसमें हंसने वाली बात क्या है?”
“यही कि तुम भी बालक की भांति यह नहीं जानते, नहीं समजते कि जाती हुई हवा हो अथवा जाता हुआ समय हो, उसका पीछा नहीं किया करते। उसकी तरफ ऐसे पत्थर नहीं उछाला करते। और तुम्हारे भीतर जागे हुए बालक ने मुझे आनंदित होने का अवसर दे दिया।”

“यह बात है?” कहते हुए जीत भी हंस पड़ा। समय के कुछ टुकड़े दोनों के हास्य से पिघल गए।
“चलो कुछ और करते हैं। क्या करेंगे? तुम कुछ बताओ।” वफ़ाई ने कहा।
“अरे रुको, रुको। मुझे पहले हंस लेने दो। बाद में सोचते हैं।” जीत पुन: हंसने लगा। वफ़ाई भी साथ हो ली।
जीत आज भरपूर हंस रहा था, खुल कर। वफ़ाई ने उसे नहीं रोका। अंतत: कुछ और टुकड़े समय के पिघल गए तब जा कर जीत शांत हुआ।
“हाँ तो तुम क्या कह रही थी?” जीत पूछा।
“हाँ तो मैं क्या कह रही थी?” वफ़ाई ने जीत के शब्दों को दोहराया।
“अरे , मेरे ही शब्दों को…?” जीत चिढ़ गया। वफ़ाई हंस पड़ी।
“बिलकुल ही बच्चे हो गए हो तुम जीत।”
“ठीक है। ठीक है। चलो आगे कहो, तुम क्या कह रही थी?”
“चलो अब कुछ और करते हैं। कुछ नया, कुछ भिन्न करते हैं।”
”हिम के पहाड़ों पर भिन्न सा क्या हो सकता है?”
“कुछ भी हो सकता है। जैसे दौड़ा जाय, अथवा…।”
“अथवा क्या?“
“अथवा कोई गीत गाया जाय।” वफ़ाई ने कहा।
“गीत, इस पहाड़ पर?”
“हाँ, जब मनुष्य अत्यंत आनंदित होता है तो कोई मधुर गीत गाता है।”
“तो ठीक है, चलो गाओ कोई गीत।”
“दिल ढूँढता है फिर वही…।” वफ़ाई गाने लगी। जीत भी जुड़ गया।
“यह गीत तो पूरा हो गया।”
“कोई नया गीत गाएँगे।” वफ़ाई उत्साह से बोली।
“वह भी पूरा हो जाएगा तो?”
“तो दूसरा, तीसरा…गाते ही रहेंगे।”
“कब तक गाते रहोगी?”
“जब तक गीत गाते गाते थक ना जाएँ।”
“और जब थक जाएंगे तो क्या करेंगे?”
“तब की तब सोचेंगे। अभी तो गीत गा लें।” वफ़ाई ने कोई नया गीत गया। जीत साथ साथ गाता रहा।
जीतने याद थे वह सारे गीत गा चुके दोनों। दोनों थक गए, मौन हो गए।

“वफ़ाई, देखो आज सूरज नहीं निकला।”
“हाँ, पहाड़ियों पर दिवसों तक सूरज नहीं निकलता।”
“ऐसा क्यूँ होता है?”
“यहाँ यह सामान्य बात है। अनेक बार सूरज संध्या के समय पर भी निकल आता है, जब वह डूबने वाला होता है।”
“तो क्या आज सूर्यास्त से पहले सूरज निकलेगा?”
“मैं क्या जानुं? मैं थोड़े ही न सूरज की माँ हूँ?”
“ओ सूरज की नानी। तुम भी…।”
“क्या?”
“चलो छोड़ो यह सब। हम सूरज को प्रार्थना करते हैं। संभव है वह हमारी बात सुन ले।”
“मुझे तो नहीं आती सूरज की कोई प्रार्थना, तुम्हें आती है?” वफ़ाई ने पीठ घूमा ली।
“वह तो मुझे भी नहीं आती।” जीत ने हार मान ली।
“जीत, तुम तो हिन्दू हो। आप लोग तो सूरज की प्रार्थना करते रहते हो। तो तुम्हें अवश्य आती होगी। याद करो न।”
“बचपन में माँ ने कुछ तो सिखाया था। आज याद नहीं आ रहा।”
कुछ क्षण मौन हो गए दोनों।
“एक काम करते हैं।” जीत बोला।
“क्या? शीघ्र बताओ।” वफ़ाई कूद पड़ी।
“क्यूँ ना हम मिलकर एक गीत बना लें, जो सूरज के लिए हो। सूरज की प्रार्थना हो।”
“जीत, अब यह भी?”
“क्या?”
“तुम से मिलकर ना, मैं क्या क्या हो गई? पहले चित्रकार बन गई। अब कहते हो गीतकार बन जाओ।”
“यह तो तुम्हारे आंतरिक एवं छिपी प्रतिभा स्वयं प्रकट हो रही है। बस उसे प्रकट होने में तुम सहायता करो”
“वाह, क्या बात है, जीत।”
“तो करो प्रारम्भ, वफ़ाई।”
दोनों शब्दों को खोजने लगे, खोजते रहे।
“मैं ने कुछ बनाया है, सुनोगी?”
“बोलो बोलो।”
“तो सुनो,
ओ गगन विहारी इतना कर दे,
धूप का एक नन्हा टुकड़ा दे दे।”
“आगे, आगे बोलो।”
“इससे आगे मुझे नहीं आता। अब तुम ही कुछ जोड़ दो।”
“मैं थोड़ी ना कवि हूँ?”
“प्रयास तो करो। मैं भी तो कवि नहीं हूँ। चलो अब तुम्हारी बारी। मैं कुछ ना जानुं।”
वफ़ाई सोच में पड गई। आगे की पंक्ति खोजने लगी। जीत वफ़ाई को निहारता रहा।
“मेरी तरफ ऐसे मत देखा करो, जीत।” वफ़ाई ने जीत की आँखों को रोका।
“‘ऐसे’ का क्या अर्थ होता है? और क्यूँ ना देखूँ?”
“मैं आगे की प्रार्थना नहीं जोड़ पा रही हूँ। कृपया तुम कुछ क्षण कुछ और देखो, मुझे ध्यान केन्द्रित करने दो।”
“ठीक है, वफ़ाई। पर आज हमें प्रार्थना पूरी करनी है और सूरज को गगन पर विहरते भी देखना है।”
जीत वफ़ाई को छोड़ कर सारे पहाड़ को देखने लगा। वफ़ाई गीत की पंक्तियाँ खोजने में लग गई।
जीत ने बादलों को देखा। प्रात: जो बादल काले और घने थे वह अब धीरे धीरे धूमिल होने लगे थे। प्रकाश और अधिक निखरा हुआ था।
“जीत, सुनो, मैंने कुछ…।”
“वाह, कहो क्या लिखा?” जीत ने अपनी द्रष्टि को संकोरा और वफ़ाई को देखने लगा।
“सुनो,
कोई हिम पिघल जाये, झरना बनकर बह जाये।
कोई नदी जा कर अपने सागर से मिल जाये।
धूप का एक नन्हा टुकड़ा दे दे,
ओ गगन विहारी इतना कर दे।”
“वफ़ाई, क्या खूब लिखा है?”
“तुम्हें पसंद आया?”
“मुझे ही क्या, सूरज को भी पसंद आएगा। उन्हें आना पड़ेगा, हमारी प्रार्थना सुनकर।”
“तो चलो मिलकर एक साथ यह गीत गाते हैं।”
दोनों एक साथ गाने लगे।

ओ गगन विहारी इतना कर दे
धूप का एक नन्हा टुकड़ा दे दे
कोई हिम पिघल जाये, झरना बनकर बह जाये
कोई नदी जा कर अपने सागर से मिल जाये...
ओ गगन विहारी....
ओ गगन विहारी...
दोनों कई बार बार इस प्रार्थना को गाते रहे, गगन की तरफ देखते रहे। किन्तु सूरज नहीं आया।
“सूरज तो हमारी प्रार्थना सुनता ही नहीं। तुम तो सूरज को भगवान मानते हो न, जीत? यह ईश्वर ऐसे क्यूँ होते हैं?” वफ़ाई निरा श हो गई।
“सूरज किसी के साथ भेद नहीं रखता। यदि वह ईश्वर है तो तुम्हारा भी है और मेरा भी है। सारे संसार का है।”
“जोभी हो, पर वह ऐसे क्यूँ है? प्रार्थना सुनते ही नहीं।”
“सुना है कि प्र त्येक प्रा र्थना सुनी जाती है, स्वीकार की जाती है। बस उचित समय की हमें प्रतीक्षा करनी होगी। आज भी हमारी प्रार्थना सुनी जाएगी।”
“तुम कितने बदल गए हो जीत?”
“क्या तात्पर्य है तुम्हारा, देवी वफ़ाई?”
“इतनी श्रद्धा, इतना विश्वास। कहाँ छिपा कर रखा था इन्हें इतने दिवस तक?”
“यह तो मेरे पास सदैव से रहा है।”
“तो तुम उस मरुभूमि में मृत्यु की प्रतीक्षा करते करते मर क्यूँ रहे थे?” वफ़ाई ने चोट कर दी।
“ओह। तब मेरा विश्वास विचलित हो गया था। क्या करता?”
“तो अब यह कहाँ से आ गया?”
“तुम जो आ गई मेरे जीवन में। अन्यथा यह श्र्धा और विश्वास कभी लौट नहीं आता। तुम ने मुझ से मेरा परिचय करा दिया।” जीत भावुक हो गया। जीत ने वफ़ाई का हाथ पकड़ लिया।
“चल झुठा कहीं का।” वफ़ाई हाथ छुड़ाकर कहीं दूर दौड़ गई। जीत उसे जाते हुए देखता रहा। वफ़ाई अभी भी दौड़े जा रही थी, दूर निकले जा रही थी।
“वफ़ाई, रुको, रुको।”
वफ़ाई दूर ही दूर जा रही थी। कदाचित वफ़ाई जीत को नहीं सुन पा रही थी। बस दौड़े ही जा रही थी। और जीत पुकारता ही जा रहा था।
“वफ़ाई....वफ़ाई...वफ़ाई...।”
जीत के शब्द घाटी में घूमकर प्रतिध्वनित होते रहे। जैसे पहाड़ के प्रत्येक कोने से हर एक कोना वफ़ाई को पुकारता हो।
वफ़ाई... वफ़ाई... वफ़ाई...।
देखते ही देखते वफ़ाई जीत की द्रष्टि से अदृश्य हो गई। श्वेत हिम के वन में वफ़ाई खो गई। जीत व्यग्र हो गया, विचलित हो गया। बस पुकारता रहा,
वफ़ाई... वफ़ाई... वफ़ाई...। किन्तु वफ़ाई कहीं नहीं थी।
पराजित होकर जीत शांत हो गया। पहाड़ की घाटियों में अभी भी ‘वफ़ाई... वफ़ाई’ की प्रतिध्वनि सुनाई दे रही थी। कुछ क्षण के पश्चात वह भी शांत हो गई। दिशाएँ शांत हो गई। हवाएँ शांत हो गई। पहाड़ी शांत हो गई। घाटियां शांत हो गई। जैसे सब कुछ शांत हो गया।
पहाड़ के बीच उग गए शांति के वन में जीत खो गया। जीत ने स्वयं को अकेला पाया इस वन में। जीत ने आँखें बंध कर ली।
“जीत... जीत.... जीत...।” जीत के कानों में यह ध्वनि पड़ने लगी। जीत जागृत हो गया।
क्या कोई मेरा नाम पुकार रहा है? क्या कोई मुझे बुला रहा है? अथवा यह केवल मेरा भ्रम है? शांति सदैव भ्रमित कर देती है।
फिर से जीत के कानों में वही ध्वनि गूंजने लगा... जीत.... जीत.... जीत... जीत उस ध्वनि को झेल नहीं पाया, उस ने आँखेँ खोल दी और चारों दिशाओं में देखने लगा। वहाँ कोई नहीं था। किन्तु उस के नाम की ध्वनि अविरत रूप से कानों पर पड रही थी।
नहीं, यह भ्रम नहीं है, यह सत्य है। कोई मुझे पुकार रहा है। कौन है? किसकी ध्वनि है यह? जीत ने उस ध्वनि पर ध्यान केन्द्रित किया। ध्वनि धीरे धीरे स्पष्ट होती जा रही थी।
जीत... जीत... जीत...
यह तो वफ़ाई की ध्वनि लग रही है, हाँ हाँ यह वही है। वफ़ाई मुझे पुकार रही है।
“वफ़ाई, कहाँ हो तुम? यहाँ आ जाओ....।” जीत पूरी शक्ति से चिल्लाया। जीत बार बार वफ़ाई को पुकारने लगा।
वफ़ाई... वफ़ाई... वफ़ाई...
वफ़ाई भी जीत को पूकार रही थी, अविरत।
जीत... जीत... जीत...
पहाड़ की वादियों में दो ध्वनि एक साथ सुनाई दे रही थी,
वफ़ाई... जीत... वफ़ाई ... जीत...
धीरे धीरे दोनों ध्वनि एक दूसरे में घुल गए और जो ध्वनि उत्पन्न हो रही थी वह कुछ विचित्र सी थी।
वफ जी...त...ई .... जी...वफा...ई...त....
वफ़ाई और जीत दोनों एक दूसरे को खोजने लगे, इधर से उधर दौड़ने लगे, एक दूसरे को पुकारने लगे। घाटियों में दो नाम गूंजने लगे।
अंतत: वफ़ाई ने जीत को देख लिया, जीत को खोज लिया। वफ़ाई जीत की तरफ दौडी और जीत को पीछे से पकड़ लिया।

“कहाँ खो गई थी तुम? इस पहाड़ियों पर, इस हिम के वन में मुझे ऐसे अकेले छोड़कर न जाया करो।” जीत ने कहा।
“भयभीत हो अभी भी? अथवा स्वयं से भाग रहे हो?” वफ़ाई बोली।
“जब से जीवन जीने की इच्छा जागृत कर दी है तुमने, तब से भय अधिक रूप से बढ़ गया है।” जीत कुछ क्षण विचार में डूब गया, गहरी सांस ली और बोला, “यह कैसा है वफ़ाई? जब मैं मृयु की प्रतीक्षा करता था तो जीवन से भय लगता था। अब जब जीने की मनसा जागी है तो वही भय मृत्यु से भी लगता है। यह कैसी स्थिति है? मैं उलझ जाता हूँ इन सब विचारों में।”
वफ़ाई ने जीत को अपने आलिंगन में ले लिया, “शांत हो जाओ, जीत। समय को प्रवाहित होने दो। वह अपना कार्य करता रहेगा। तुम बस इस क्षण को, एक एक क्षण को मन भर जीते रहो।”
“किन्तु यह सब क्यूँ होता है? तुम जानती हो इस बात का रहस्य?”
“जीत तुम्हारे मुख पर अभी भी संशय के भाव दिख रहे हैं। यह रहस्य को तो कोई योगी अथवा मुनि भी समज नहीं पाया, तो हम क्यूँ उलझ जाएँ इसमें? हम तो साधारण मनुष्य ही हैं, हमें तो प्रत्येक क्षण को जी लेना चाहिए।”
“किन्तु, यह…?”
“जीत, विषाद से ऊपर उठो। देखो आने वाला क्षण हमारी प्रतीक्षा कर रहा है।”
“कहाँ है वह क्षण? मैं भी तो देखूँ जरा।”
“देखना चाहते हो ना? तो दूर दूर गगन में देखो।” वफ़ाई ने दूर क्षितिज की तरफ अंगुली निर्देश किया और कहते कहते रुक गई।
“कहो ना, वफ़ाई, रुक क्यूँ गई?”
“दूर दूर देखो। गगन दिखाई दे रहा है। उसे ध्यान से देखो।”
“वहाँ? दूर, दूर?” जीत पश्चिम दिशा में क्षितिज की तरफ देखने लगा।
“देखो गगन अपना रंग बदल रहा है। तुम्हें दिख रहा है, जीत?”
“हाँ, दिशाओं में पीला रंग, थोड़ा गुलाबी भी। अरे, और भी अनेक रंग बिखर रहे हैं। कितना अदभूत, कितना मनोहर, कितना सुंदर दिख रहा है यह गगन? वफ़ाई, यह कोई संकेत है क्या?”
“हाँ, यह संकेत है कि सूरज ने हमारी प्रार्थना सुन भी ली है और स्वीकार भी कर ली है। बादल बिखर गए हैं और सूरज निकल रहा है। सूरज…।”
“यह तो चमत्कार हो गया, वफ़ाई। किन्तु यह समय तो सूरज के अस्त होने का है। अभी सूरज के निकलने से क्या लाभ?”
“जीत, तुम अति अधीर हो रहे हो। अभी सूरज अस्त होने में कुछ समय बाकी है। यह पूरा समय सूरज हमारे साथ रहेगा।”
“उस के पश्चात वह अस्त हो जाएगा।” जीत निराश हो गया।
“तुम सोचते अधिक हो और बिना काम के सोचते हो। यदि सोचना ही है तो कुछ सकारात्मक ही सोचो।”
“क्या तात्पर्य है तुम्हारा?”
“जीत, हिम की पहाड़ियों पर सूर्योदय और सूर्यास्त विरल घटनाएँ होती है। कई बार दिनों तक सूरज नहीं दिखता। हम भाग्यशाली हैं कि हम आज सूर्यास्त देख पाएंगे।”
“क्या तुम सत्य कह रही हो?”
“मिथ्या कहने पर मुझे क्या लाभ होगा?” वफ़ाई ने पूछा।
“इन बातों में समय व्यतित नहीं करना है हमें। चलो सूर्य की गति का आनंद उठाते हैं।” जीत एवं वफ़ाई मौन हो गए, सूरज के आगमन की प्रतीक्षा करने लगे।
सूरज ने अधिक प्रतीक्षा नहीं करवाई, धीरे धीरे निकल आया। पूरा पर्वत एक नए प्रकाश से नहाने लगा। श्वेत हिम पर ढलते सूर्य की कोमल किरनें आलिंगन देने लगी। हिम भी इस स्पर्श से जीवंत हो उठा। हिम का हृदय पिघलने लगा। पूरा गगन इस मिलन से आनंदित हो गया। गगन अनेक रंगों से भर गया।
“जीत, चलो थोड़ा निकट चलते हैं, इस घाटी की तरफ। सूरज यहीं से अस्त होगा।” वफ़ाई ने जीत का हाथ पकड़ लिया और चलने लगी। जीत अनायास ही वफ़ाई के साथ चल पड़ा।
“बस, यहीं रुको। यहाँ से नीचे तक घाटी दिख रही है।” वफ़ाई रुक गई, जीत भी।
“यह तो अदभूत है, वफ़ाई। घाटी गहरी है पर सुंदर है। क्या सूरज यहाँ से नीचे कूद पड़ेगा? फिर तो बचेगा नहीं यह सूरज।” जीत गंभीर मुद्रा लेकर वफ़ाई के सामने खड़ा हो गया।
“जीत, तूम भी न? वह सूरज है, मनुष्य नहीं। सूरज कूदता नहीं अस्त होता है। कल फिर से उदय होने के लिए।”
“देवी वफ़ाई, क्रोध मत करो। मैं तो केवल…।”
“वत्स जीत…।” वफ़ाई के मुख से गांभीर्य ओझल हो गया। स्मित कर बेठी वफ़ाई।
सूरज घाटी के छोर पर आ गया। धीरे धीरे नीचे उतरने लगा। घाटी प्रकाशमान होने लगी। सूरज और नीचे गया।

74

“जीत, कितना मनोहर है न यह द्रश्य? सूरज का इस तरह अस्त होना। चारों दिशाओं में हिम से आच्छादित पर्वत हो। नयनरमय घाटी हो। रंग बदलता सूरज हो।” वफ़ाई बोले जा रही थी। जीत ने कोई प्रत्युत्तर नहीं दिया। वह बस सूरज को, घाटी को और क्षितिज के रंगों को देखता रहा।

वफ़ाई चिढ़ गई, “जीत, कुछ बोलो ना, कुछ कहो ना। तुम मेरी बात सुन रहे हो ना?”

“शी...श....श..।” जीत ने वफ़ाई के अधरों पर उँगलियाँ रख दी। वफ़ाई मौन हो गई। जीत की भांति वह भी अस्त होते सूरज को देखती रही। धीरे धीरे सूरज और गहरी घाटी में उतरने लगा। अंतत: अस्त हो गया, कहीं दूर क्षितिज में विलीन हो गया।

वफ़ाई ने क्षण भर के लिए आँखें बंध कर ली, फिर खोल दी। जीत की तरफ देखा।

जीत अभी भी गगन को देख रहा था, पश्चिम की तरफ क्षितिज को देख रहा था, अपलक नयनों से।

वफ़ाई जीत से बात करना चाहती थी किन्तु जीत कोई भिन्न विश्व में था। वफ़ाई इधर उधर देखने लगी। कुछ ही क्षण में वफ़ाई का मन भर गया। फिर से वह स्वयं को जीत से कहीं दूर अनुभव करने लगी।

वफ़ाई ने अधीरता से जीत के हाथ को पकड़ा और उसे अपनी छाती से लगा लिया।

जीत की तंद्रा टूटी, पुन: वास्तविक जीवन में प्रवेश कर गया।

“वफ़ाई, क्या कर रही हो?”

“बस, किसी मार्ग से भटके हुए यात्री को...।”

"उस यात्री को अधिक भटका रही हो।"
"क्या?"
"ऐसे तुम अपनी छाती पर मेरा हाथ रख दोगी तो मैं तो क्या कोई भी यात्री भटक जाएगा।"
"चुप हो जाओ भटके हुए यात्री।"
"वफ़ाई, मुझे समज नहीं आ रहा है कि तुम्हारे साथ रहकर मैं मार्ग से भटक जाता हूँ अथवा मुझे मार्ग मिल जाता है?"
"यह सब दुविधाओं को छोड़ो और कहो कि यह घाटी में सूर्य का अस्त होना कैसा लगा?"
"अदभूत। आनंदमय। मैं तो उस क्षण, उस घटना के भीतर ही खो गया था।"
"तभी तो लंबे समय तक बस देखते ही रहे उसे। सूरज के अस्त होने के पश्चात भी तुम उसे निहारते रहे थे।"
"हाँ, उस क्षण की अनुभूति अलोकिक थी। सूरज का धीरे धीरे घाटी के अंदर उतरना, जैसे कोई पंखी अपने पंख फैलाये गगन में विहार कर रहा हो, धीरे धीरे उड़ने का आनंद ले रहा हो, मार्ग में आ रहे प्रत्येक जीव से मिलता जा रहा हो, प्रत्येक कण को स्मित दे रहा हो। जैसे वह सब को अपना प्रकाश दे रहा हो। अपने रंग में रंग रहा हो। और किसी ऋषि की भांति निर्लेप होकर, सब कुछ छोड़ कर चल पड़ा हो अपने अगले लक्ष्य की तरफ। क्या यह सूरज जोगी होता है?"
"सूरज तो सूरज ही होता है। जोगी हो अथवा भोगी हो, हमें क्या? मुझे यह सब का ज्ञान नहीं है।" वफ़ाई ने कहा।
"जो भी हो किन्तु वह द्रश्य अनुपम था। मन कर रहा है कि उस द्रश्य को केनवास पर उतार लूँ। जीवन भर स्मृति में..।" जीत की आँखों में चमक आ गई।
"मन तो मेरा भी कर रहा था कि मैं इसे मेरे चित्रक में बंद कर लूँ, सदा के लिए। किन्तु क्या करूँ? मेरा चित्रक, मेरा जानु साथ में नहीं है।"
"वफ़ाई, तुम बिना चित्रक के चली आई? कहाँ हैं जानु? और हाँ, कहाँ है मेरा केनवास, मेरी तूलिका, मेरे रंग?"
"वह सब तो मैंने मेरे गाँव भेज दिया। मेरा जानु भी।" वफ़ाई ने जवाब दिया।
"क्या? तुम ने क्यूँ किया ऐसा, वफ़ाई?"
"शांत हो जाओ, जीत।"
"अरे तुम यूं ही निकल पड़ी बिना चित्रक के? हमारी इस यात्रा को यदि चित्रक में बंद कर लेती तो जीवनभर स्मृति बन जाती। तुम इन क्षणों को ...।"
"मैं ने इन क्षणों को मेरे ह्रदय में उतार लिये है। वहाँ से वह जीवनभर मिटेंगे नहीं।"
"बिना चित्रक के?"
"जीत, तुम ही तो कहते थे कि चित्रक की छवि आभासी होती है, कृत्रिम होती है। किन्तु यदि उस क्षण को ह्रदय से जी लो तो वह छवि स्वाभाविक होगी, शाश्वत होगी।"
"हाँ मैं ने ऐसा ही कहा था। किन्तु, तुम केनवास भी साथ नहीं लायी। अब मैं चित्र कैसे बनाऊँगा? तुम भी।"
"यदि तुम केनवास पर चित्र खींचना चाहते हो तो तुम्हें मेरे गाँव आना पड़ेगा। आओगे ना जीत?"
"यदि जीवन रहा तो अवश्य आऊँगा।" कहते कहते जीत फिर से उदास हो गया।
जीत फिर से मृत्यु के विषय में सोचने लगा है। मुझे उस का ध्यान कुछ और बात में लगाना पड़ेगा। वफ़ाई ने बात बदल दी,"मुझे तो भूख लगी है। यहाँ कुछ भी तो नहीं मिल रहा। तुम्हें भूख लगी है क्या?"
"भूख तो मुझे भी लगी है। यह सूरज भी अपनी मोहक मुद्राओं से ऐसा मोह लेता है कि भूख और तृषा सब भूल जाता है मनुष्य।"
"तो हमें चलना चाहिए।"
वफ़ाई और जीत लौट गए।

***

"कल भी हम यही पहड़ियों पर चलेंगे, वफ़ाई।" जीत ने सोने से पहले कहा।
"इसी पहाड़ी पर क्यूँ?" वफ़ाई भी थक चुकी थी।
"कितना मनोहर स्थान है वह। मुझे तो उस ने मोहित कर दिया। आज हमने सूर्यास्त देखा था, कल सूर्योदय भी देख लें तो?"
"हाँ, कल सूर्योदय तो देखना है किन्तु इसी पहाड़ी पर क्यूँ? कितनी सारी पहाड़ियाँ है यहाँ? तो किसी और पर चलते है।"
"तुम जानती हो इन सब पहाड़ियों को?"
"मैं पहाड़ की बेटी हूँ।" वफ़ाई ने जीत को अपने मोहक स्मित का टुकड़ा धर दिया। जीत ने उसे स्वीकार कर लिया।
"ओ हिम सुंदरी, तो बताओ कि कल हम कहाँ जाएंगे?"
"बस इतना जान लो कि हमे कल सूरज निकलने से पहले ही चलना है।"
"वफ़ाई, इतने सवेरे सवेरे? किन्तु क्यूँ?"
"सूर्योदय जो देखना है। आगे तुम्हारी इच्छा।"
"सूर्योदय दिखेगा तो सही न?"
"जीत, जब मैं बच्ची थी तब मेरी माँ कहती थी कि जिस दिन तुम पाप करोगे उस दिन सूरज नहीं निकलेगा।"
"तो क्या मैं पापी हूँ?"
"तुम्हारी तुम जानो, मैं तो चली सोने। प्रभात के प्रथम प्रहर चलना है हमें, स्मरण रहे।" अपनी मोहक मुद्राओं को वहीं छोड़ कर वफ़ाई अपनी शैया पर चली गई। जीत उन मुद्राओं को बनाता रहा, मिटाता रहा। वफ़ाई के मधुर शब्दों की ध्वनि में संगीत का अनुभव करता रहा। अंतत: निंद्रा के मोहपाश में बन्ध गया।

***

“वफ़ाई, इतने सवेरे सवेरे जाना आवश्यक था क्या? अभी तो कितना अंधकार है? सारा नगर सो रहा है। हमारे दोनों के उपरांत कोई नहीं है इस मार्ग पर। ठंड भी कितनी है। नींद भी पूरी नहीं हुई और हम चल दिये।” वफ़ाई के पीछे पीछे विवशता से चल रहे जीत बोले जा रहा था। वफ़ाई आगे ही आगे जा रही थी।
“वफ़ाई, थोड़ा रुक जाओ न। यहाँ विश्राम करते हैं। फिर चलेंगे ना।”
वफ़ाई बिना रुके चलती रही। जीत भी।
“मैं क्यूँ बोले जा रहा हूँ? कोई सुनता ही नहीं। कदाचित यहाँ मैं अकेला ही हूँ। मेरे उपरांत कोई है ही नहीं जो सुने।”
जीत ने आगे पीछे देखा।
“हाँ, वास्तव में यहाँ कोई नहीं। संभव है कहीं दूर कोई हो। मुझे जरा ऊंचे स्वर में बोलना पड़ेगा।”
जीत एक बड़े से पत्थर पर चड गया और चिल्लाने लगा, “कोई हैं यहाँ? मुझे कुछ कहना है। यदि तुम मुझे सुन रहे हो तो…।”
जीत की ध्वनि घाटियों में व्याप्त हो गई। प्रतिध्वनि बनकर सुनाई पड़ने लगी। वफ़ाई रुक गई, इन प्रतिध्वनियों को सुनकर।
“जीत, शांत हो जाओ। सोते पहाड़ को इस तरह जगाया नहीं करते।”
“सोते हुए जीत को जगाया जा सकता है तो पहाड़ों को क्यूँ नहीं? यह तो पक्षपात है, अन्याय है।”
“जीत, बस भी करो अब। चलो।”
“वफ़ाई, यह पहाड़ भी सो जाते हैं क्या?” जीत वफ़ाई के समीप जाकर वफ़ाई के कानों में धीरे से बोला।
“नहीं जीत। पहाड़ कभी नहीं सोते।”
“तो यह स्थिर खड़े पहाड़, शांत उपत्यकाएं, युगों से एक ही मुद्रा में खड़ी इन चोटियाँ, कोई पगरव नहीं, कोई परिवर्तन नहीं, यह सब क्या है? वफ़ाई इन पहाड़ों का रहस्य क्या है?” जीत गंभीर हो गया।
“पहाड़ों का रहस्य अति गहन होता है। युगों से ऋषि मुनि इन पहाड़ों पर तप करते आए हैं इसी रहस्य की खोज में। मैं नहीं जानती कि कितने ऋषि महर्षि इन रहस्यों को जान पाये होंगे। जिस जिस ने जाना होगा उन में से किसी ने उन रहस्यों को बाकी संसार के साथ कभी नहीं बांटा। कदाचित यही कारण है कि मनुष्य यहाँ खींचा चला आता है।”
“किन्तु यह पहाड़ स्थिर होकर करते क्या है?”
“तुम ही बताओ। तुम्हारा क्या मत है इस विषय में?” वफ़ाई ने बात को जीत की तरफ मोड दिया।
“मुझे तो लगता है कि यह पहाड़ ही स्वयं कोई ऋषि मुनि है और युगों से अपने तप, योग और साधना में लिन है। कोई इसे कहो कि तप करते करते उसे नींद आ गई है। किसी ना किसी को तो उसे जगाना चाहिए ना?”
"तो कोई जगा देगा उसे। तुम क्यूँ चिंता करते हो? तुम स्वयं जाग जाओ। सोया हुआ व्यक्ति किसी दूसरे को जगा नहीं सकता। यह सब बातें छोड़ो और सीधे सीधे चलते रहो।”
“किन्तु हमें जाना कहाँ है, इतने सवेरे सवेरे?”
“मैं एक ऐसे स्थान पर ले जाना चाहती हूँ जहां कुछ ही लोग जा पाते हैं। जो सौभाग्यशाली होते हैं वही उस स्थान पर जा पाते हैं।” वफ़ाई चलते चलते बोले जा रही थी।
“क्या तात्पर्य है?”
“बस देखते जाओ।”
“देखूँ भी तो कैसे? चारों तरफ कितना अंधकार है?” जीत ने फिर रोना प्रारम्भ कर दिया।
वफ़ाई ने जीत का हाथ पकड़ लिया और उसे खींचने लगी। जीत, विवश बच्चे की भांति चलने लगा।
एक स्थान पर वफ़ाई रुक गई। प्रभात हो रहा था किन्तु अभी भी सूरज निकला नहीं था। अंधकार भी व्याप्त नहीं था। कुछ व्यक्ति दिखाई दे रहे थे। कदाचित पहाड़ यहाँ अपना तप भंग कर चुका था। जीत को यह देखकर अच्छा लगा।
“सूरज अभी भी नहीं निकला और तुम मुझे यहाँ तक ले आई। अब यह बता दो कि हम कहाँ आ चुके हैं?” जीत एक कोने पर खड़ा हो गया।
“अभी हमें रुकना नहीं है। थोड़ा और चलना होगा।”
“अभी और चलना होगा? और अर्थात कितना और? बड़ा सताती हो तुम।”
“अब अधिक नहीं, बस कुछ ही क्षण।”वफ़ाई फिर चलने लगी।
“तुम्हारे उस कुछ क्षण के पश्चात मैं नहीं चलने वाला। चाहे कुछ भी हो जाय। सुना तुमने?” जीत ने पीछे पीछे चलते हुए विद्रोह कर दिया।
ठीक बारह मिनट बाद दोनों रुके।

“जीत, हम अपने लक्ष्य के निकट ही हैं।” वफ़ाई ने जीत की तरफ देखा। जीत ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह थोड़ा आगे जाकर रुक गया।
“जीत, सुनो तो…। कुछ…।”
“श…श…श…।” जीत ने वफ़ाई को रोका। जीत दूर कहीं देखने लगा। वफ़ाई भी उस दिशा में देखने लगी। वफ़ाई को कुछ समझ

नहीं आया। उसने जीत की तरफ प्रश्नार्थ द्रष्टि से देखा। जीत ने दूर घाटी की तरफ हाथ का संकेत किया। वफ़ाई ने उस बिन्दु पर ध्यान केन्द्रित किया।
“दूर पेड पर जमी हुई श्वेत हिम के बीच कुछ रंग दिखाई दे रहे हैं?” वफ़ाई ने उत्तर में नयन झुका दिया।
“यह रंग यहाँ कैसे आ गए? हिम तो कभी रंगीन नहीं होता। वह रंग चलित भी हो रहे हैं। हिम तो सदैव स्थिर रहता है। तो यह…?” जीत की आँखों में विस्मय था। वफ़ाई जीत के विस्मय को देखकर प्रसन्न हो रही थी। वह मन ही मन प्रार्थना करने लगी, ‘जीत के मुख पर ऐसे अनेक विस्मय जन्म लेते रहे, अनंत काल तक।’
“वफ़ाई, कहो न यह रंग कैसे?”
“जीत एक काम करते हैं।”
“क्या?”
“तुम ही बताओ यह रंग यहाँ इस श्वेत धरती पर क्या कर रहे हैं? कुछ धारणा करो।”
वफ़ाई उस रंगों को देखने लगी, जीत भी।
‘वहाँ दूर तक कोई मनुष्य तो जा नहीं पाएगा। अर्थ यह है कि उस रंगों का कारण मनुष्य नहीं है। तो फिर किसी मनुष्य का रंगीन कपड़ा उड़कर वहाँ चला गया हो। नहीं, नहीं। यह भी संभव नहीं। एक तो कोई मनुष्य यहाँ तक कदाचित ही आ पाएगा और दूसरा यदि वह कपड़ा है तो चलित क्यूँ है? हवा तो जरा सी भी नहीं चल रही। तो कोई फूल होगा। फूल बड़े रंगीन होते हैं। हाँ फूल ही होगा। किन्तु किसी भी एक फूल के अनेक रंग तो नहीं होते और ना ही वह बिना हवा के चलित हो पाते हैं। रंगों का ऐसे चलित होना ही कोई रहस्य है। अथवा यही रहस्य का उत्तर है। कुछ तो है। कोई निर्जीव वस्तु बिना हवा के चलित नहीं होती। इसका अर्थ स्पष्ट है, यह कोई जीवित वस्तु, वस्तु कहाँ, जीव कहना उचित रहेगा, तो हाँ यह कोई जीव, कोई प्राणी होगा।’ जीत अपने ही विचारों के द्वंद को जीतकर प्रसन्न हो उठा। उसने वफ़ाई की तरफ किसी विजेता की द्रष्टि से देखा। वफ़ाई जीत के बदलते भावों को ही निहार रही थी।
“कहो किस निष्कर्ष पर पहोंचे हो तुम, जीत?”
“वह रंग किसी प्राणी अथवा किसी पंखी के हैं। क्या मेरी धारणा सही है, पर्वत सुंदरी वफ़ाई?”
“शत प्रतिशत सही है। वह पंखी ही है।”
“क्या नाम है उस पंखी का?”
“वह पंखी है, मनुष्य नहीं। नाम तो मनुष्यों के होते हैं, पंखियों के नहीं।”
“किन्तु कुछ तो नाम होगा। तुम जानती हो उसका नाम?”
“हाँ। जानती हूँ।”
“तो कहोना। मुझे जानना है।”
“क्या करोगे जानकर?”
“मेरे इस प्रवास के वह सह-प्रवासी है। सह-प्रवासी का नाम तो ज्ञात होना चाहिए न?”
“सह-प्रवासी का नाम पूछा नहीं करते। यदि इन बातों में उलझ गए तो लक्ष्य हाथ से छूट जाएगा। सह-प्रवासी का साथ होना पर्याप्त नहीं है क्या?” वफ़ाई के शब्दों ने जीत को मौन कर दिया। कुछ समय बाद जीत ने बात बदल दी।
“कितना अदभूत और अनूठा है इन हिम से आछादित पहाड़ियों के बीच भी कोई जीवन का होना। प्रकृति के इस रूप को मेरा वंदन।” जीत ने भाव पूर्वक शीश झुका दिया।
फिर कोई कुछ नहीं बोला, दोनों रंगों को देखते रहे।
कुछ समय व्यतीत हो गया। जीत पहाड़ को, आकाश को, हिम से ढंकी चोटियों को, घाटियों को, जम कर स्थिर हो गए झरनो को, बादलों को देखने लगा। वहाँ की प्रत्येक वस्तु, प्रत्येक कोना, प्रत्येक कण उसे रोमांचित करने लगा। वह प्रसन्न हो उठा।
“कितनी ऊंचाई पर होंगे हम?” जीत की जिज्ञासा जाग गई।
“यही प्रश्न तो मैं तुम्हें पूछने वाली थी। चलो धारणा लगाओ और कहो।”
“यह सही नहीं है वफ़ाई।”
“क्या हुआ अब?”
“देखो, हम तुम्हारे प्रदेश में हैं। तुम इसकी प्रत्येक बातों का ज्ञान रखती हो। मैं तो प्रवासी हूँ। मुझे क्या ज्ञान होगा यहाँ की किसी भी बात का?“
“तो?”
“तो क्या? मुझे जब जिज्ञासा हुई तो मैंने प्रश्न कर दिया और…।”
“प्रश्न करना तो अच्छी बात है।”
“मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं देना तो अच्छी बात नहीं है ना? जब भी मैंने प्रश्न किया, तुमने उत्तर देने के बदले मुझे ही धारणा लगाने को कह दिया। यह तो उचित नहीं है।”
“जिसे जिज्ञासा होती है वही प्रवासी बनता है। और प्रवासी अपनी जिज्ञासा की तृषा को स्वयं ही तृप्त करता है। यही तो आनंद है, यही तो रोमांच है, यही तो सुख है प्रवासी होने का। मैं वह सुख, वह आनंद और वह रोमांच का अधिकार तुमसे छीनना नहीं चाहती।” वफ़ाई ने उत्तर टाल दिया। जीत विद्रोह कर बेठा।
“अरे ओ दिशाओ, ओ पहाड़ियों, ओ घाटियों, सुनो, सुनो, सुनो। यह वफ़ाई…।” चिल्लाते हुए जीत को वफ़ाई ने रोका।
“शांत हो जाओ जीत। यह हमारा नगर नहीं है।”
“यही तो। यहाँ कोई नहीं रहता। मेरे चिल्लाने से किसी को क्या व्यवधान होगा?”
“यहाँ कुछ प्राणी और पंखी रहते हैं। यहाँ की प्रकृति में शांति है। यही शांति इन प्राणियों और पंखीयों का जीवन है। हमारे ऊंचे बोलने

से वह शांति भंग हो जाएगी और उसे व्यवधान पहोंचेगा। उसका संगीत, उसका लय बिखर जाएगा। हम ऐसा नहीं कर सकते।"
"यदि हम ऐसा करेंगे तो कौन हमें रोकेगा?"
"तु म उसको अपना सह-प्रवासीकहते हो ना?"
"हाँ। तो?"
"तो तुम्हें ही स्वयं को रोकना पड़ेगा। अपने सह-प्रवासी का इतना तो ध्यान रख ही सकते हो ना?"
जीत के पास उन शब्दों का उत्तर नहीं था। जीत धारणा लगाने में व्यस्त हो गया।
"हम बीस से बाईस हजार फीट, नहीं पचीस हजार..।" जीत की धारणा पर वफ़ाई हंस पड़ी।
"तुम हंस क्यूँ रही हो?"
"इस धारणा पर हंस रही हूँ।"
"तो तूम ही बता दो। एक तो मैं प्रश्न करता हूँ तो उत्तर नहीं देती और मुझ से ही उत्तर मांगती है। जब मैं उत्तर देता हूँ तो हंसती रहती हो।"
"अठारह हजार फीट से ऊपर की ऊंचाई पर जन जीवन अत्यंत कठिन होता है। लगभग सत्रह हज़ार फीट पर हम हैं।"
"सत्रह हजार फिट।" जीत ने दोहराया।

"य ह ऊंचाई अधिक होती है किसी भी मैदानी मनुष्यों के लिए। कैसा अनुभव हो रहा है यहाँ आकर?"
"क्या इस अनुभव को शब्दों के द्वारा व्यक्त किया जा सकता है?"
"मैं नहीं जानती।"
"तो तुम जानतीक्या हो?"
"मैं जो जानती हूँ वह दिखाने जा रही हूँ तुम्हें।"
"क्या इससे भी अधिक सुंदर कोई नया अनुभव होना है? कहो क्या है वह?"
"जोगी, ऋषि और सिध्ध पुरुष ऐसे ही स्थान पर रहते हैं यह तो सुना ही होगा, जीत।"
"तो क्या हम किसी तपस्वी से मिलने जा रहे हैं?"
"नहीं, तपस्वी नहीं। तपस्विनी को मिलने जा रहे हैं।"
वफ़ाई के इन शब्दों को विक्टर के चित्रक से लगे ध्वनियंत्र ने पकड़ लिया। विक्टर सतेज हो गया। वह चित्रक की तरफ भागा।
"याना, कुछ सुना तुमने?"
चित्रक में से वफ़ाई और जीत को देखते हुए याना बोली, "हाँ विक्टर, सात सात दिवसों से जिसकी प्रतीक्षा में हम यहाँ बैठे हैं, वह

क्षण निकट लग रहा है।"
"हाँ, हमारी तपस्या अब सफल होती दिख रही है। यह तुम्हारी योजना का ही फल है।"
"वह कैसे?"
"तुम्हारे कहने पर हमने हिन्दी सीख ली। यदि हम हिन्दी नहीं सिखते तो यह शब्दों का अर्थ ही नहीं जान पाते और महीनों तक यहाँ बैठे रहने पर भी उस तपस्विनी तक जा नहीं पाते।"
"तुम्हें विश्वास है कि यह दोनों उस तपस्विनी से ही मिलने जा रहे हैं?"
"हाँ, बातों से यही प्रतीत होता है।"
"मुझे भी लगता है कि वह लड़की, क्या नाम बता रही थी अपना?"
"वह लड़का उसे बार बार वफ़ाई के नाम से पुकारता है तो वफ़ाई ही नाम होगा और लड़के का नाम जीत लग रहा है।"
"मुझे लगता है कि यह वफ़ाई इस पहाड़ी के विषय में अच्छा ज्ञान रखती है।"
"एक मिनिट, जरा रुको। देखो वह दोनों कहीं जा रहे हैं। लगता है कि वह तपस्विनी के पास ही जा रहे हैं। हमें उसके पीछे पीछे चलना चाहिए।"
"तो चलो। पर दो बातों का ध्यान रखना। एक, चित्रक सतत उन दोनों पर ही रखना। एक क्षण के लिए भी वह चित्रक की द्रष्टि से दूर नहीं होने चाहिए। हमें उनकी बातें बराबर सुनते रहना होगा। दूसरा, उनको ज्ञात नहीं होना चाहिए कि हम उनका पीछा कर रहे हैं।"
"ठीक कहा तुमने। यहाँ इतनी शांति है कि हमारे पग की ध्वनि भी उनके कानों तक जा सकती है।"
"एक और बात। यदि हमारा उनसे सामना हो गया तो हम केवल जर्मन भाषा में ही बातें करेंगे। हिन्दी में नहीं, अंगेजी भी नहीं।"
"ठीक है।"
विक्टर और याना ने अपने अपने थेले और साधन सामान संभाले। वफ़ाई तथा जीत का पीछा करने लगे।
वफ़ाई और जीत अपने आनंद में मग्न थे, चलते जा रहे थे। वह प्रकृति का आनंद उठा रहे थे।
"वफ़ाई, यह अनुभव इतना अदभूत है कि...।"
"तुम बोलते अधिक हो।" वफ़ाई ने जीत को टोक दिया, रोक दिया। वह बस चलती रही, जीत भी।
सब कुछ शांत था, पूर्णत: शांत। कोई ध्वनि नहीं। केवल पगरव। दिशाएँ शांत। पथ शांत। हवाएँ शांत। वफ़ाई शांत। जीत भी शांत। इतनी शांति में जीत को कुछ सुनाई देने लगा। जैसे कोई जीत से बातें कर रहा हो। जीत क्षण भर के लिए रुक गया। आँखें बांध कर ली, सांस को भी रोक लिया। जीत ने उन ध्वनियों की तरफ ध्यान केन्द्रित किया।
'पहाड़ की एक चोटी दूसरी चोटी से कुछ बात कर रही है। अथवा उपत्यकाएँ आपस में बातें कर रही है। अथवा उपत्यका चोटी को कुछ कह रही है। अथवा चोटी उपत्यका से कुछ कह रही है। किन्तु यह तो किसी एक की ही ध्वनि है। क्या उपत्यका अथवा चोटी अकेली ही बोले जा रही है और बाकी सब श्रोता बनकर सुन रहे हैं? अथवा स्थिर से रुके झरनें, अथवा वह पंखी। कोई तो है जो कुछ कह रहा है। यदि कोई कह रहा है तो कोई सुन भी रहा होगा ना? कौन बोल रहा है और कौन सुन रहा है? कुछ समझ ही नहीं आ रहा है। देखूँ तो चारों दिशाओं में...।'
जीत ने आँखें खोल दी। सब कुछ वैसे का वैसा ही था। सब कुछ शांत, सब कुछ नीरव।
कोई बोल नहीं रहा था। कोई सुन नहीं रहा था। तो यह क्या था? कोई भ्रम था क्या?
जीत दुविधा में पड गया, वफ़ाई आगे निकाल गई। जीत चलने लगा।
वफ़ाई दुर्गम मार्ग पर चल रही थी, जीत भी। विक्टर और याना भी। वफ़ाई और जीत की प्रत्येक क्षण विक्टर और याना के चित्रक में बंध होती जा रही थी।
वफ़ाई एक स्थान पर रुक गई। आगे मार्ग बंध था। जीत भी रुक गया।
"क्या हम भटक गए हैं? यहाँ तो अब कोई मार्ग है ही नहीं।" जीत ने वफ़ाई की तरफ देखा।
विक्टर ने भी याना की तरफ देखा, "क्या यह लड़की जान गई है कि हम उसके पीछे पीछे चल रहे हैं और वह जान बूझकर हमें भटका रही है।"
"हमारे साथ ऐसा अनेक बार हुआ है। यह स्थानीय लोग पर जितनी बार हमने विश्वास किया है, उन्होंने ने हमें इसी तरह भटका दिया है। वफ़ाई भी यही कर रही है।"
"किन्तु मुझे लगता है कि वफ़ाई..., रुको। देखते रहो।"
याना वफ़ाई को देखने लगी। चित्रक भी वफ़ाई को ही देख रहे थे।
वफ़ाई पहाड़ पर जमे हिम के एक बिन्दु पर हथौड़ी से प्रहार करने लगी। हिम अत्यंत कठोर था। वफ़ाई के प्रहार का उस पर कोई प्रभाव नहीं हो रहा था।
"यह क्या कर रही हो?" जीत ने पूछा।
"तुम बस देखते जाओ। हमारा लक्ष्य इस हिम के बिलकुल पीछे ही है। बस एक बार यह हिम टूट जाय।"
"यह तो अत्यंत कठोर दिख रहा है। यह ऐसे नहीं टूटेगा।"
"टूटेगा। हिम ऐसे ही टूटेगा। प्रयास करते रहना पड़ेगा।"
"ठीक है किन्तु यदि यह टूट भी जाय तो हमें क्या मिलेगा? हम आखिर कर क्या रहे हैं? जा कहाँ रहे हैं?" वफ़ाई ने कोई उत्तर नहीं दिया, बस प्रहार करती रही। अंतत: थक गई।
"मैं प्रयास करूँ?" जीत ने प्रस्ताव रखा। वफ़ाई ने जीत को हथौड़ी पकड़ा दी और एक तरफ हो गई। जीत प्रहार पर प्रहार करने लगा किन्तु कठोर हिम पर कोई प्रभाव नहीं हुआ। वह निश्चल खड़ा था।
जीत थक गया। उसकी साँसे फूलने लगी। वह एक तरफ बैठ गया। ज़ोर से साँसे लेने लगा। वफ़ाई दौड़ी,"यह लो, ऑक्सीज़न की नली लगा लो नाक पर।"

जीत ज़ोर ज़ोर से ऑक्सीज़न को अपनी साँसों में भरने लगा। कुछ समय बितने पर वह थोड़ा स्वस्थ हुआ।
"लगता है आज हमारे भाग्य में नहीं है। यह हिम टूटने का नाम ही नहीं ले रही।" वफ़ाई भी निराश हो गई।
"वफ़ाई, आज से पूर्व कभी तुमने यह स्थान पर से हिम तोडी भी है?" जीत ने संदेह प्रकट किया।
"तो क्या मैं यहाँ...?" वफ़ाई आगे कुछ बोल ना सकी। जीत भी मौन रहा।
जीत ने ऑक्सीज़न हटा दिया। सामान्य रूप से साँसे लेने लगा। कुछ क्षण दोनों को कुछ भी नहीं सुझा। समय व्यतीत होता गया। विक्टर और याना भी धैर्य धारण किए प्रतीक्षा करने लगे।
"विक्टर, हमें अब प्रकट हो जाना चाहिए। हमारे साधनों से उस हिम को हम सरलता से काट सकते हैं। क्या कहना है तुम्हारा?"
"हमें सहाय तो करनी ही चाहिए किन्तु ...।" विक्टर ने संदेह जताया।
"जो होगा देखा जाएगा। चलो चलते हैं।" याना जीत एवं वफ़ाई की तरफ चलने लगी। विक्टर भी। दोनों उन दोनों के सामनेप्रकट हो गए। जीत और वफ़ाई चौंक गए।

77

"नमस्ते। हमें आप अपना मित्र समझें। मैं याना और यह विक्टर।"
"नमस्ते। किन्तु...।" वफ़ाई ने प्रत्युत्तर दिया, किन्तु वह विस्मय से भरी थी।
"आप हम पर विश्वास कर सकते हो। हम आपको कोई...।"
विक्टर की बात सुनकर जीत ने कहा, "ठीक है मित्रों। किन्तु आप तो कहीं विदेश से आए लगते हो। यह हिन्दी?"
"हमने सीख ली। हम जर्मनी से हैं। यह बातें तो होती ही रहेगी। क्या हम इस हिम को तोडने में आप की सहायता कर सकते हैं?" याना ने कहा।
जीत ने उत्साह जताया, "वाह, यह तो बड़ी अच्छी बात कही आपने। वफ़ाई यह लोग...।" जीत ने वफ़ाई की तरफ देखा। वफ़ाई ने संकेतों से ही जीत को मौन रहने को कहा। जीत रुक गया।
"आपका धन्यवाद। किन्तु अब हमें इसे तोड़ने की आवश्यकता ही नहीं है।" वफ़ाई ने बात टाल दी।
"अभी तो आप दोनों इस को तोड़ने के लिए पूरे प्रयास कर रहे थे। तो अब क्या हुआ?"
"कुछ नहीं। कुछ नहीं।" वफ़ाई ने कोई उत्साह नहीं बताया।
"ठीक है, किन्तु यह तो बता दो कि इस हिम को तोड़ने से क्या मिलता? क्या इस हिम के पीछे कोई नया मार्ग है? अथवा कोई गुफा है? क्या है इस के पीछे?" याना ने जीत की तरफ देखा।
"मैं नहीं जानता। वफ़ाई जानती है यह सब।" जीत ने वफ़ाई की तरफ संकेत किया।
"मैं कुछ नहीं जानती। ना ही मैं कुछ बताना चाहुंगी।" वफ़ाई ने स्पष्ट कर दिया।

“कोई बात नहीं। आप दोनों को नहीं बताना हो तो ठीक है। हम दोनों स्वयं ही इसे तोड़कर देख लेते हैं।” विक्टर ने अपने साधन हाथ में लिए और हिम काटने आगे बढ़ गया। याना भी साथ हो गई।
“आप लोग ऐसा नहीं कर सकते। आप इसे मत काटो। वहाँ...।” वफ़ाई ने रोकना चाहा किन्तु रोक नहीं पाई।
“जीत, इन लोगों को रोको।” किन्तु जीत भी नहीं रोक पाया।
विक्टर और याना ने हिम तोड़ दिया। हिम के टूटते ही विक्टर, याना एवं जीत के सामने विस्मय का नया विश्व खुल गया। वफ़ाई उस विश्व से परिचित थी। उसे कोई विस्मय न हुआ। उल्टा वह क्रोधित हो गई।
“यह क्या कर दिया? मैंने रोका था ना आपको किन्तु आप नहीं रुके। और यह क्या? आपने सारी घटना को चित्रक में अंकित कर लिया?”
तीनों में से किसी ने वफ़ाई की बात नहीं सुनी। तीनों सामने दिख रहे विश्व में खो गए थे।
“विक्टर, यह तो अदभूत है। लगता है यहाँ से कोई मार्ग कहीं जा रहा है।”
“याना, यह देखो। किसी नगर के प्रवेशद्वार जैसा लग रहा है। और प्रकृति का खेल भी कैसा कि उसने यह पूरा द्वार हिम से ढँक दिया। किसी को ध्यान में ही नहीं आएगा कि इससे आगे कोई मार्ग भी हो सकता है।”
“मुझे तो यह किसी परिकथा सा लगता है। यह रास्ता कहाँ जाता होगा? चलकर देखें?” जीत ने उत्साह व्यक्त किया।
“वफ़ाई, चलो आगे चलते हैं। तुम बताओ यह मार्ग कहाँ जाता है? इस मार्ग पर और क्या क्या विस्मय भरे पड़े है?” जीत ने वफ़ाई को भी आमंत्रित किया।
“मैं ना तो कुछ कहूँगी और ना ही साथ चलूँगी। और आप तीनों को भी कहती हूँ कि इससे आगे मत जाना।” वफ़ाई अभी भी विचलित थी।
“यदि आगे मार्ग है तो जाने में क्या...?” जीत ने कुछ कहना चाहा, वफ़ाई ने उसे रोक दिया।
“विक्टर, इस मार्ग पर निश्चय ही कोई रहस्य है जिसे यह लड़की छुपाए रखना चाहती है। तुम...।” ”मेरा नाम वफ़ाई है।”
“ठीक है वफ़ाई। किन्तु तुम किस बात को छुपाना चाहती हो? कुछ तो बताओ कि बात है क्या?”
“याना, मैं कुछ नहीं बता सकती, ना ही बताना चाहती हूँ। बस आप लोग आगे जाने का आग्रह ना करें। उचित होगा कि हम सब लोग यहीं से लौट जाएँ।”
“वफ़ाई, मान लेते हैं तुम्हारी बात। किन्तु जब यह गुफा और मार्ग सामने ही खुला पड़ा है तो इस मार्ग पर थोड़े दूर तक जाने में क्या आपत्ति है? मैं तो जाना चाहता हूँ। सात आठ मिनट में लौट आऊँगा।”
जीत ने गुफा के अंदर प्रवेश कर दिया। वफ़ाई उसे जाते हुए देखती रही। विक्टर और याना ने भी जीत को जाते हुए देखा, वफ़ाई के मुख पर बदलते भावों को भी देखा। वफ़ाई के मुख पर मिश्रित भाव थे। वह जैसे जीत को रोकना भी चाहती थी और नहीं भी। वफ़ाई बड़ी ही दुविधा में थी-
मैं तपस्विनी से जीत को मिलाना तो चाहती हूँ किन्तु यह दो परदेशी*?* यह दोनों नहीं आते तो जीत मैं तुम्हें स्वयं उससे मिलाने ही वाली थी। यदि यह दोनों ना आते तो हम अभी उस तपस्विनी के सानीध्य में ही होते।
और यदि यह दोनों नहीं आते तो*?* तो हिम टूटता नहीं। और यदि हिम नहीं टूटता तो*?* तो कभी भी उस से नहीं मिल पाते। यह हिम मेरी धारणा से अधिक कठोर निकला। जीत में इतनी शक्ति कहाँ थी कि वह हिम तोड़ पाता।
यह दोनों ना आते तो जीत को मैं तपस्विनी से कभी नहीं मिला पाती। जीत को यह अवसर दूसरी बार नहीं मिलने वाला। तो क्या इन दो परदेशीयों को लेकर मुझे अंदर जाना चाहिए*?*
वफ़ाई विचार मग्न थी तभी अंदर से कुछ ध्वनि आई। वफ़ाई की विचार यात्रा अटक गई। वह गुफा की अंदर दौड़ी, याना और विक्टर भी।
अंदर जीत हाँफ रहा था। उस की सांसें फूल रही थी। जीत के समक्ष एक बडा सा हिम का टुकड़ा गिर कर पड़ा था।
“यह तो हिम गिरने की ध्वनि ही थी। जीत, क्या यह टुकड़ा अभी अभी गिरा है?” विक्टर ने जीत का हाथ पकड़ लिया। जीत की आँखों में देखा। वह भयभीत था। वहाँ शून्यता थी। वहाँ स्तब्धता थी। और जीत के अधरों पर था मौन। एक भयग्रस्त मौन।
भय से जीत के ह्रदय की गति तेज हो गई थी। विक्टर ने शीघ्रता से ओकसीजन की नली को जीत के नाक से जोड़ दिया। जीत ज़ोर से साँसे लेने लगा। विक्टर जीत के हाथ को घिसने लगा। किन्तु जीत का शरीर ठंडा पड रहा था। वफ़ाई भी विक्टर के साथ जुड़ गई। याना सब कुछ चित्रक में अंकित कर रही थी। याना ने देखा कि स्थिति गंभीर होती जा रही है। ऑक्सीज़न होते हुए भी सांसें मंद हो रही थी। याना ने एक स्थान पर चित्रक रख दिया। वहाँ से वह सब कुछ अपने आप में मुद्रित करता रहा।
याना गुफा के बाहर दौड़ गई। अपने सामान में कुछ ढूँढने लगी। किन्तु जिस वस्तु की खोज थी वह उसे नहीं मिल रहा था। वह पूरा समान उठाकर अंदर चली आई।
“विक्टर, तुम दवाइयाँ ढूंढो, मुझे मिल नहीं रही है। तब तक मैं और वफ़ाई जीत को संभालते हैं।”
याना भी वफ़ाई के साथ जुड़ गई। विक्टर ने कुछ गोलियां ढूंढ निकाली।
“वफ़ाई, किसी भी तरह से यह गोली जीत को खिला दो। जल्दी करो।”
“किन्तु गोली खाने के लिए यहाँ पानी ही नहीं है। चारों तरफ हिम ही हिम है। यह कैसे...?”
याना ने कहा, “इस गोली को पानी की अवश्यकता ही नहीं। तुम जीत का मुंह खोलो मैं गोली अंदर डाल देती हूँ। गोली अंदर जाते ही स्वयं पिघलने लगेगी। मुंह खोलो जीत का, वफ़ाई, थोड़ा अधिक, हाँ ठीक है।” वफ़ाई के प्रयासों से जीत का मुंह थोड़ा खुला और याना ने गोली अंदर डाल दी।
अंदर जाते ही गोली असर दिखाने लगी। पिघलने लगी।
“क्या इस गोली से जीत ठीक हो जाएगा?” वफ़ाई ने चिंता व्यक्त की।
“अभी भी जीत का मुंह खुला है। याना, वफ़ाई, कैसे भी कर के जीत का मुंह पूरा बंध कर दो।”
विक्टर भी याना और वफ़ाई के साथ जीत के मुंह को बंध करने में लग गया। जीत की सांसें अभी भी तेज चल रही थी। ऑक्सीज़न

की नली नाक पर ही थी। मुंह में गोली भी थी किन्तु मुंह खुला रहने के कारण हिम की ठंडी हवा मुंह के मार्ग से शरीर के अंदर घुस रही थी जिसके कारण गोली की असर नहीं हो रही थी।
तीनों ने खूब प्रयास किए पर जीत का मुंह बंध ही नहीं हो रहा था। जीत का शरीर ठंडा पड रहा था। ह्रदय की गति भी मंद पड रही थी। साँसे तेज हो रही थी। आँखें अभी भी भय से ग्रस्त खुली ही थी। और जीत यह सब बातों से अलिप्त था। उसे ज्ञात ही नहीं था कि उसे क्या हो रहा था? उसके साथ यह तीन लोग क्या कर रहे थे? वह स्थिर सा, निस्तेज सा, निर्लेप सा था। और अब वह धीरे धीरे निर्जीव सा होता जा रहा था। तीनों के तमाम प्रयास विफल होते जा रहे थे। जीत का शरीर कोई प्रतिभाव नहीं दे रहा था। याना ने जीत की नस को जांचा।
“विक्टर, वफ़ाई। जीत के नसों की गति मंद होती जा रही है, अत्यंत मंद हो गई है। किन्तु अभी भी कुछ किया जाय तो...।”
“तो? तो का क्या अर्थ है याना?” वफ़ाई विचलित हो गई।
“वफ़ाई धैर्य रखो। हम प्रयास कर ही रहे हैं ना। याना एक काम कर सकते हैं। जीत को उठा कर इस गुफा से बाहर निकालते हैं।” विक्टर जीत की तरफ बढ़ा।
“इससे क्या होगा?”
“वफ़ाई, इस गुफा का तापमान गुफा से बाहर वाले स्थान से कहीं नीचा है। चार से पाँच डिग्री नीचा होगा। याना, तुम उसके हाथ पकड़ो, मैं उसे कंधे पर उठा लेता हूँ।”
“विक्टर, याना, कुछ भी हो जाय किन्तु जीत को कुछ नहीं होना चाहिए।” वफ़ाई भी विक्टर तथा याना का साथ देने लगी।
किसी भी तरह विक्टर ने जीत को कंधे पर उठा लिया और दो तीन चरण चला ही था कि किसी की ध्वनि ने उसे रोक दिया।
“उसे वहीं छोड़ दो। डरने की कोई आवश्यकता नहीं है।”
सभी उस नई ध्वनि की दिशा में मूड गए। सम्मुख सब के एक स्त्री खड़ी थी। उसके मुख पर दिव्य शांति थी।

78

“आप? आप यहाँ कैसे?” वफ़ाई ने विस्मय प्रकट किया। वफ़ाई के शब्दों में आनंद भी था और विश्वास भी। वह उस स्त्री की तरफ दौड़ी।
“वफ़ाई आओ। आप सभी का मेरे आँगन में स्वागत है।” उसने प्रसन्न स्मित से सब का स्वागत किया।
“किन्तु यह जीत? इसकी यह स्थिति?” वफ़ाई उद्विग्न थी, चिंतित भी।
“वफ़ाई, तुम निश्चिंत रहो। जीत को कुछ नहीं होगा।”
वह आगे बढ़ी।
उसने आदेश दिया,“जीत को आप अपनी गोदी में सुला दो।”
विक्टर ने याना और वफ़ाई की गोदी में जीत को सुला दिया।
“आप दोनों इसे जीत के हाथ और पाँव पर घिसो। और तुम जीत की छाती पर यह लेप लगा दो।” वफ़ाई, विक्टर और याना उस स्त्री के आदेश का अनुसरण करने लगे।
उस स्त्री ने जीत के अधरों पर हाथ फेरा, जीत के खुल्ले मुंह को सहज रूप से बंध कर दिया। जीत के माथे पर स्नेह से भरे हाथ फेरने लगी।
कुछ क्षण इस तरह बीत गए। प्रत्येक व्यक्ति जीत को बचाने के लिए अपने हिस्से का कार्य कर रही थी, वह स्त्री भी।
धीरे धीरे जीत के शरीर में ऊष्मा आ रही थी, किन्तु अभी भी वह निश्चेत था।
“तत्काल तो जीत किसी भी चिंता से मुक्त है। किन्तु उसे उपचार की आवश्यकता है। जीत ठीक हो जाएगा। आप सब मेरे साथ चलिये।” वह चल पड़ी।
वफ़ाई और विक्टर जीत को साथ लेते हुए उसके पीछे पीछे चलने लगे। याना ने अपना सामान संभाला और वह भी पीछे चलने लगी।
वह स्त्री तीव्र गति से चल रही थी। वह आगे निकल गई। बाकी तीनों लोग पीछे रह गए। वह उन तीनों की द्रष्टि से भी आगे चली गई।
“कदाचित वह गुम हो गई है। हमें यहाँ भटकने के लिए छोडकर।” याना ने संदेह व्यक्त किया।
“नहीं, वह कभी ऐसा नहीं कर सकती।” वफ़ाई ने उस स्त्री के प्रति अपनी आस्था व्यक्त की। विक्टर अभी भी जीत को साथ लेते हुए आगे चल रहा था। वह स्त्री इतनी आगे निकाल गई थी कि वह दिखाई नहीं दे रही थी।
“विक्टर, कुछ क्षण रुक जाओ। वफ़ाई तूम भी रुक जाओ।”
“याना, रुकना तो मैं भी चाहती हूँ किन्तु...।”
“किन्तु कोई रुकेगा नहीं। जीत को बचाना है ना?” उस स्त्री ने सबको रुकने से रोका, “चलो जीत को मैं उठा लेती हूँ। आप लोग तेज चलते रहिए।” उसने सहजता से जीत को उठा लिया। अपने कंधे पर डाल कर तेजी से चलने लगी। वह इतनी तेज चल रही थी कि

मानो वह उड रही हो। वफ़ाई, याना और विक्टर भी तेज चलने का प्रयास करते चलते रहे।
एक स्थान पर वह रुकी। वह किसी गुफा का मुख था जो तीन फीट चौड़ा और साढ़े तीन फीट ऊंचा था।
वह वहाँ रुकी, थोड़ी झुकी और जीत के साथ भीतर प्रवेश कर गई।
“आप लोग भी भीतर आ जाइए।” गुफा के अंदर तीनों चले गए।
एक तरफ पत्थर की बड़ी सी शीला थी जिस पर कुछ बिछाया गया था, जीत को उस पर लेटा दिया। वह कुछ पत्तों को ले आई, “इन पत्तों को जीत की छाती पर घिसते रहना। कुछ ही क्षणों में जीत तंद्रा से जाग जाएगा।”
वफ़ाई जीत की छाती पर पत्तों को घिसने लगी। विक्टर और याना गुफा को देखने और समजने का प्रयास करने लगे।
सामने ही एक बड़ी सी शीला खड़ी थी, सात-आठ फीट ऊंची और पाँच फीट चौड़ी। जैसे किसी कक्ष की दीवार हो। वह स्त्री उसके पीछे चली गई।
याना और विक्टर ने एक दूसरे के सामने देखा, संकेतों में कुछ बात की और याना ने चित्रक चालू कर दिया। उस गुफा के प्रत्येक कोने को, गुफा की प्रत्येक वस्तु को वह अंकित करने लगी। विक्टर प्रत्येक वस्तु को ध्यान से देखने लगा।
गुफा के एक कोने पर एक और शीला पड़ी थी, तीन फिट चौड़ी और साढ़े छ: फिट लंबी।
“याना, यह तो किसी शैया जैसा लग रहा है। क्या यह स्त्री इस शैया पर सोती होगी?”
“हो सकता है। पर ओढ़ने के लिए तो यहाँ कुछ भी नहीं दिख रहा। और यह देखो, यह कुर्सी जैसा कुछ है। तो यह शीला किसी टेबल जैसी लग रही है। क्या वह इस का प्रयोग कुछ लिखने और पढ़ने के लिए करती होगी?” याना और विक्टर गुफा को देखने लगे।
“यहाँ एक कक्ष में वह सब कुछ है जो एक व्यक्ति को दिन भर चाहिए।”
“विक्टर, तुम सही कह रहे हो। और देखो, यह सब कुछ पर्वत की शिलाओं से ही बने हुए हैं। किसी और वस्तु का प्रयोग ही नहीं हुआ है।”
“यह तो ठीक है याना, किन्तु इस शीलाओं से बनी वस्तुएँ हिम से अलिप्त है। इन सब पर हिम गिरि नहीं है अथवा तो हिम जमी नहीं है। हिम के प्रभाव से यह सब मुक्त है। इन पथ्थरों में कुछ तो बात है।”
याना शीला से बनी कुर्सी की तरफ घूमी, शीला पर हाथ फेरने लगी।
“विक्टर, यहाँ आओ। इस पर अपना हाथ रखो।”
विक्टर याना के पास गया और शीला पर हाथ रख दिया।
“इतनी ठंड में भी यह शीला में उष्णता है।”
“यह तो खूब ठंडी होनी चाहिए थी। चलो और शिलाओं को भी देख लेते हैं।”
याना और विक्टर बाकी शिलाओं को स्पर्श करने लगे। सभी शिलाएँ उष्ण थी। शिलाओं का तापमान पहाड़ के तापमान से कहीं अधिक था।
“यह तो...।”
“अचंभित करने वाली बात है, याना।”
“इस पर तो बड़ी सी कथा बन सकती है। तुम एक एक पत्थर के पास जाओ और अपनी प्रतिक्रिया दो। मैं चित्रक में अंकित करती हूँ और यह स्टोरी स्टुडियो तक भेज देती हूँ।”
विक्टर शिलाओं की तरफ गया, याना ने चित्रक घुमाया। विक्टर ने एक शीला पर हाथ रखा और बोलने लगा, “हम लोग धरती से 17000 फिट की ऊंचाई पर हैं। चारों तरफ पहाड़ पर हिम जमी हुई है। पहाड़ के किसी अज्ञात स्थान पर यह गुफा है। इस गुफा तक हमें एक स्त्री लेकर आई है। उस स्त्री के विषय में बताने से पूर्व आइए हम इस गुफा को पूरी तरह देख लें, समझ लें। इस गुफा के अंदर कुछ ऐसी बात है जो सुनकर और देखकर हम विचलित हो गए हैं।
गुफा के बाहर का तापमान -15 से -17 तक होगा। किन्तु आप जिस पत्थर को देख रहे हो, उस पर मैं हाथ रखता हूँ तो यह शीला उष्ण लगती है। इसका तापमान क्या होगा? आइये देखते हैं इस शीला का तापमान।”
विक्टर ने हाथ के मौजे निकाल दिये और शीला पर हाथ रखा। उसने अपनी जेकेट से तापमान मापक यंत्र निकाला और शीला पर रख दिया। यंत्र पर तापमान 17 डिग्री बता रहा था।
“यह शीला का तापमान 17 डिग्री है। -15 से -17 डिग्री तापमान पहाड़ का है और इस शीला का तापमान 17 डिग्री है। दोनों तापमानों में 32 से 34 डिग्री का अंतर है। यह बात हैरान करने वाली है। मैं इस बात को कोई वैज्ञानिक रहस्य ही मान रहा हूँ। मैं इस के कारण नहीं जानता, किन्तु जो भी है किसी रहस्य से कम नहीं है। यह प्रश्न का उत्तर हम किसी वैज्ञानिक से जान सकते हैं।”
विक्टर याना की तरफ बढ़ा। “कैसा रहा? यदि यह बात हमारी चेनल पर आ गई तो?”
“तो क्या? भूचाल आ जाएगा।”
“तुम उसे चेनल को भेज दो।”
“मैं भेज देती हूँ।” याना चित्रक में मुद्रित कथा को भेजने की चेष्टा करने लगी।
“विक्टर, यह वीडियो भेजने में समस्या आ रही है। तुम जरा इसे देखो तो।”
“ठीक है।” विक्टर उसे भेजने का प्रयास करने लगा। किन्तु वह भी विफल रहा।
“याना, इस में संकेत नहीं आ रहे हैं। हम गुफा के अंदर हैं इसी कारण ऐसा हो रहा है। मैं कुछ दूर जाकर प्रयास करता हूँ।” विक्टर गुफा से दूर जाने लगा।
“विक्टर, रुक जाओ। तुम कहीं भी जाओ किन्तु तुम्हें वह संकेत नहीं मिलेंगे और ना ही तुम कुछ भेज पाओगे।” उस स्त्री की ध्वनि सुनकर विक्टर रुक गया। याना और वफ़ाई भी उसकी तरफ देखने लगे।
“ऐसा क्यूँ? अभी तो यहाँ पूरे संकेत आ रहे थे। थोड़ा दूर जाऊंगा तो...।”
“तो भी नहीं होगा। जब तक मैं नहीं चाहुं तब तक कुछ नहीं होगा।”
“क्या अर्थ है इन शब्दों का?” याना उत्तेजित हो गई।

“यहाँ के सारे संकेत मेरे नियंत्रण में है। मेरी इच्छा के विपरीत यहाँ कुछ नहीं होगा। मैं जानती हूँ कि तुम दोनों किसी जर्मन टीवी चेनल के लिए काम कर रहे हो और इस हिमाच्छादित पहाड़ियों में किसी जोगन को खोज रहे हो। उस पर कोई कथा बनाने के लिए ही तुम दोनों यहाँ आए हो।” उसने कहा।
“हाँ, यह सत्य है। क्या आप ही वह जोगन हो? यदि नहीं तो आप कौन हो? क्या आप हमें उस जोगन से मिला सकते हो?” याना ने उत्साह दिखाया।
“मैं कौन हूँ? वह जोगन कौन है? सब बता दूँगी। उस जोगन से मिला भी दूँगी। किन्तु मेरी कुछ बातों को मानना होगा।”
“क्या उसे मानना आवश्यक है?” विक्टर ने पूछा।
“आपके पास विकल्प नहीं है। यदि आप नहीं मानोगे तो इस गुफा से बाहर भी नहीं जा पाओगे। पूरा जीवन यहीं बीत जाएगा। किसी को ज्ञात भी नहीं होगा कि तुम दोनों कहाँ खो गए।”
“ऐसा तो नहीं हो सकता। हमने कई ऐसे दुर्गम पहाड़ों पर काम किया है जहां एक बार पहुँच गए तो लौटने के मार्ग खो जाते हैं। वहाँ से भी हम निकल आए हैं।” याना ने साहस दिखाया।
“प्रयास करके देख लो। यदि यहाँ से निकल पाओ तो तुम दोनों मुक्त हो जाओगे। यदि नहीं निकल पाये तो तुम दोनों को मेरी शरण में आना पड़ेगा।”
“हमें स्वीकार है।” याना और विक्टर दोनों ने एक साथ कहा।
अब तक मौन रहकर सब कुछ देख रही वफ़ाई ने कहा, “जीत की स्थिति अभी भी स्थिर है। किसी भी स्थिती में जीत को बचाना होगा।”
उस स्त्री ने आँखों के भाव से वफ़ाई को धैर्य और श्रध्धा रखने को कहा। वफ़ाई ने उस संकेत को पढ़ लिया। वह निश्चिंत हो गई।

याना और विक्टर गुफा से बाहर की तरफ जाने लगे। गुफा को पार कर वह आगे बढ़ने लगे। दिशाओं की धारणा करते हुए उस दिशा में चलने लगे जहां से उन्होंने गुफा में प्रवेश किया था। दोनों कुछ समय तक चलते रहे किन्तु गुफा का वह मुख, जहां उन्होंने बरफ को काटा था, उन दोनों को दिखाई नहीं दिया।
“अब तक तो वह प्रवेश स्थल आ जाना चाहिए था।” याना ने संशय प्रकट कीया।
“किंतु दूर दूर तक कहीं कोई संकेत ही नहीं मिल रहे है।”
“तुम अपना दिशा सूचक यंत्र निकालो। उसके सहारे हम उस स्थल को ढूंढ लेंगे।”
विक्टर दिशा सूचक यंत्र से दिशाओं को ढूँढने लगा, समझने का प्रयास करने लगा। किन्तु दिशाएँ कोई रहस्य बनकर उससे छल करने लगी।
“क्या हम भटक गए हैं?” विक्टर ने चिंता व्यक्त की।
“मैं नहीं जानती।”
“मैं भी तो नहीं जानता। मेरी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा।”
“तो क्या हमें लौट जाना चाहिए? उस स्त्री के सामने पराजय स्वीकार कर लें?” याना ने विक्टर की तरफ देखा।
“इस तरह से तो हम पूरा जीवन इसी पहाड़ी पर घूमते ही रहेंगे।”
“इसका अर्थ यह है याना की हम…।”
“अर्थ ढूँढने का यह अवसर नहीं है। हमें लौट जाना चाहिए। और उस स्त्री की बात मान लेनी चाहिए। यदि हम उसकी बात मान लेते हैं तो यहाँ से सकुशल लौट भी जाएंगे और हमारी पूरी कथा भी चेनल पर प्रसारित हो पाएगी। एक बार यह कथा प्रसारित हो गई तो …।”
“तो हम दोनों का नाम…।”
“अत्यंत प्रचलित हो जाएगा। हम प्रसिध्ध हो जाएंगे।” विक्टर प्रसन्न होकर हंसने लगा।
“गुमनाम होने से पहले हमें लौटना होगा।” याना ने हँसते हुए विक्टर को रोका।
“तो वापिस चलें? चलो।” दोनों लौटने लगे।
“लौटने का मार्ग तो तुम्हें ज्ञात ही होगा।” याना ने पूछा।
“ज्ञात तो है। नहीं, अरे, वह तो मैंने स्मरण ही नहीं रखा।”
“तुम ऐसा कैसे कर सकते हो विक्टर?” याना विचलित हो गई।
“मुझे क्या पता था कि हमें लौटना भी पडेगा। मैं तो यही मानता था कि हम किसी भी पहाड़ से मार्ग ढूंढ लेते हैं तो यहाँ भी….।”
“विक्टर, कुछ करो। किसी भी दिशा का मार्ग ढूंढ निकालो।”
विक्टर एक तरफ जाकर शीला के सहारे खड़ा हो गया।
“विक्टर, यहाँ से हम कैसे बाहर निकलेंगे? कौन हमें उचित मार्ग दिखाएगा?” याना भी विक्टर के समीप जाकर खड़ी हो गई।
“मैं तुम दोनों को उचित मार्ग पर ले जाऊँगी। तुम मेरे साथ चल सकते हो यदि मेरी बात मान लेते हो तो।”
याना और विक्टर ने उस ध्वनि की तरफ देखा। वह स्त्री उनके सामने खड़ी थी। उसके मुख पर शांति थी। वह जरा भी विचलित नहीं थी। और ना ही अपनी विजय का गर्व उसके मुख पर था। वह स्थितप्रज्ञ थी। सौम्य और शांत खड़ी थी।
याना और विक्टर विस्मय से भरे थे। दोनों ने एक दूसरे को देखा। दोनों की आँखों में किसी अकल्पनीयता के भाव थे। उस स्त्री ने दोनों को देखा, एक क्षण रुकी और चलने लगी। याना और विक्टर भी अनायास ही उस के पीछे पीछे चलने लगे। कुछ ही क्षणों में वह उस गुफा में आ गए।
वफ़ाई अभी भी जीत के पास बैठी थी। जीत निश्चेत अवश्य था किन्तु भय से मुक्त था। जीत की सांसें सामान्य हो चुकी थी। तथापि वफ़ाई चिंतित थी।
स्त्री रुक गई। याना और विक्टर भी।
“आप दोनों किसी भी शीला पर बैठ सकते हो।”
स्त्री बड़ी सी शीला पर बैठ गई। याना और विक्टर भी चुपचाप एक शीला पर बैठ गए। दोनों अब उस स्त्री की शरण में थे।
स्त्री ने आँखें बंध कर ली। गहरी सांस ली, सांस को क्षण भर के लिए रोका, फिर छोड़ दिया।
“क्या आप लोग जीत को बचाना चाहते हो?” स्त्री ने आँखें खोल दी, अपनी द्रष्टि को सामने वाली शीला पर स्थिर कर ली।
“हाँ।” वफ़ाई, याना और विक्टर तीनों ने एक साथ उत्तर दिया।
“हमारी प्राथमिकता क्या है? जीत का स्वस्थ होना है अथवा मेरी इस गुफा का रहस्य?” स्त्री ने याना और विक्टर को पूछा।
याना और विक्टर अपनी भूल से लज्जित हो गए। मौन ही बैठे रहे।
“हमें क्या करना होगा?” वफ़ाई ने उत्सुकता दिखाई।
“हम भी आपकी योजना के साथ हैं। हमारे लिए क्या आदेश है?” याना ने कहा।
तीनों व्यक्ति मौन हो गए, स्त्री के आदेश की प्रतीक्षा करने लगे। स्त्री मौन थी, स्थिर द्रष्टि से कहीं देख रही थी।

सब ने मौन के कुछ तरंगों को बहने दिया। समय का एक टुकड़ा एक क्षण के लिए रुकना चाहता था किन्तु वह विवश था। वह धीरे धीरे अपनी यात्रा करने लगा। अपने साथ मौन को लेकर चल पड़ा। समय का दूसरा टुकड़ा आया, अपने साथ वह कोई योजना लेकर आया। समय ने उस योजना को स्त्री के मन में प्रस्थापित कर दिया। स्त्री के मुख पर स्मित आ गया।
“याना और विक्टर, आप लोगों को एक काम करना होगा। करोगे क्या?” स्त्री के प्रश्न से तीनों व्यक्ति अपने अपने विचारों को छोड़ कर पुन: गुफा में आ गए।
तीनों ने अपने मुख के भावों से मौन सम्मति दे दी।
“आप की चेनल के लिए आप जो कथा मुद्रित करना चाहो, कर सकते हो, प्रसारित कर सकते हो। आप मेरे विषय में भी एक कथा बना कर प्रेषित कर सकते हो।”
एक क्षण के लिए वह रुकी, गहरी सांस ली और कहा, “किन्तु जीत को कुछ भी करके बचाना होगा।”
“हमें स्वीकार है। आप आदेश करें।” याना और विक्टर ने कहा।
“मेरे लिए क्या आदेश होगा?” वफ़ाई ने उत्साह दिखाया।
“जीत का रोग सामान्य नहीं है। हिम का एक टुकड़ा जीत के फेफड़े के अंदर घुस गया है जो जीत को सांस लेने में बाधा बना है। यह हिम के टुकड़े को वहाँ से निकालना होगा। यह काम सरल नहीं हैं। एक विकट शस्त्रक्रिया से यह संभव हो सकता है।” स्त्री ने कहा।
“कौन कर सकता है यह शस्त्रक्रिया? कहाँ होगी?” वफ़ाई उत्तेजित हो गई।
“जर्मनी में हो सकती है तो कोई समस्या ही नहीं है। हम जीत को वहाँ ले चलते हैं। कितना भी व्यय होगा हम प्रबंध कर लेंगें। आप पूरी योजना बताओ।” विक्टर ने कहा।
“उस डॉक्टर के विषय में भी बताती हूँ। हम जीत को लेकर उस डॉक्टर के पास नहीं जा सकते। हमें उस डॉक्टर को यहाँ तक लेकर आना होगा। और केवल डॉक्टर ही नहीं, उसके सारे साथियों को भी यहाँ तक लाना होगा, शस्त्रक्रिया कक्ष के साथ।”
“क्या आप जीत को पहले से ही जानती हो? आप को यह सब कैसे ज्ञात है?” याना ने प्रश्न किया।
“नहीं। मैं जीत को आज ही मिली हूँ। आप को भी आज ही मिली हूँ। केवल वफ़ाई से यह मेरा दूसरा मिलन है। मैं जीत ही क्या, किसी के भी विषय में कोई भी बात जान सकती हूँ। आप के विषय में भी। आप की चेनल के विषय में भी। उस डॉक्टर के विषय में भी जो जीत को बचा सकता है। किन्तु इस समय यह सब बातें उपयुक्त नहीं है। मैं सब कुछ बताउंगी, किन्तु उचित समय पर। इस समय तो हमें जो काम करना है उस पर ध्यान केन्द्रित करना होगा।” स्त्री ने उत्तर दिया।
“उस डॉक्टर, उसके साथी और सब साधन सामग्री के साथ उसे यहाँ तक कैसे लाया जा सकता है? क्या वह इस स्थल को जानता है?” विक्टर ने कहा।
“नहीं। वह डॉक्टर कुछ भी नहीं जानता। उसे यह भी नहीं पता कि दो चार दिवस पश्चात वह यहाँ आकर जीत की शस्त्रक्रिया करेगा।”
“दो चार दिवस में? यह सब कैसे होगा?”
“आप लोगों को अपने चेनल के माध्यम से एक प्रसंग आयोजित करना होगा।”
“कब?”
“कहाँ?”
“कैसे?”
“जीत एक चित्रकार भी है। जीत ने और वफ़ाई ने मिलकर कई चित्र बनाए हैं। चित्रों में संवेदना सुंदरता से अभिव्यक्त हुई है। आपको इन चित्रों की प्रदर्शनी का आयोजन करना होगा।”
“इस पहाड़ पर? हिम से भरी घातक शीतल हवाओं में? इन गुफाओं में?” विक्टर बोला।
“हाँ। इसी पहाड़ पर, इसी हिम के साथ, इसी गुफाओं में, इसी ठंडी घातक हवाओं में। कर पाओगे?” स्त्री ने आव्हान किया।
याना और विक्टर संभावनाओं को समझने का प्रयास करने लगे। वफ़ाई को कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था कि यह स्त्री क्या चाहती है? क्या करना चाहती है? वफ़ाई विस्मय को धारण किए मौन ही थी।
“यह सब संभव नहीं लगता मुझे तो।” याना ने कहा।
“असंभव को संभव कर चुके हो आप दोनों, अनेक बार। तो इस बात को भी संभव कर सकते हो।”
“तो आप हमारे विषय में...।”
“आपकी धारणा से अधिक जानती हूँ। अधिक ही नहीं पूरी जानकारी रखती हूँ।”
“यह सब कैसे कर लेती हो तुम?”
“सब बताऊँगी। उचित समय की प्रतीक्षा करो। अभी इस आयोजन की संभावनाओं को खोजो।”
“किन्तु कैसे होगा? और यदि हमने आयोजन कर भी लिया तो इससे जीत के उपचार का क्या संबंध? हमारा उद्देश्य तो जीत को बचाना ही है ना?” वफ़ाई ने मौन तोड़ा।
“वफ़ाई, तुमने दो बातें कही। एक, कैसे होगा? जब हम सोचना प्रारम्भ करते हैं कि यह असंभव सा कार्य कैसे होगा, उस क्षण से ही हम उसे पूरा करने का मार्ग ढूँढने लगते हैं। और जो ढूँढता है उसे तो ईश्वर भी मिल जाता है। इस कार्य का भी मार्ग मिल जाएगा। दूसरा, इससे जीत के उपचार का क्या संबंध? मेरी द्रष्टि से सीधा संबंध है।”
“पूरा विगत से बताइए। मैं और विक्टर भी यह बात समझने का प्रयास कर रहें हैं।”
“याना तुम और विक्टर भी जान लो। पोलैंड के एक छोटे से शहर में डॉक्टर गिब्सन और उसके साथी श्वसन तंत्र और फेफड़ों पर वर्षो से शोध कर रहे हैं। उन्होंने कई असंभव सी लगती शरत्र क्रियाएँ की है। जीत का उपचार भी डॉक्टर गिब्सन ही करेंगे। डॉक्टर गिब्सन के लिए यह कार्य असंभव नहीं है। जीत की शस्त्र क्रिया कठिन अवश्य है किन्तु असंभव नहीं।”
“किसी भी डॉक्टर के लिए उस के क्षेत्र में कार्य करना असंभव नहीं होता। असंभव तो होता है ऐसे बड़े डॉक्टरों को इस कार्य के लिए तैयार करना।” वफ़ाई ने कहा।

“उस से भी अधिक कठिन कार्य है डॉक्टर गिब्सन को यहाँ तक लाना। साथ में सभी साथी तथा सारे साधनों को भी यहाँ लाना होगा।” विक्टर ने कहा।
“सबसे कठिन बात तो यह है कि उसे हमें तीन-चार दिवस में ही यहाँ लाना होगा।” याना ने स्त्री के सामने प्रश्न भरी द्रष्टि से देखा।
उस स्त्री के मुख पर चिंता के कोई भाव नहीं थे। वह अभी भी शांत थी, सौम्य थी। उसके अधरों पर मोहक स्मित था।
“आप लोग जब प्रश्न करते हैं और उस पर प्रतिक्रिया करते हैं तब मुझे अच्छा लगता है क्यूँ कि तब आप लोग इस कार्य के विषय में, कार्य की कठिनाइयों के विषय में विचार करते हो। प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास करते हो। जो व्यक्ति प्रश्न के विषय में सोचता है, उसके उत्तर को ढूँढने का प्रयास करता है वही उस कार्य को कर पाता है।”
“अर्थात?”
“अर्थात तुम तीनों लोग यह कार्य कर पाओगे यह मेरा विश्वास है।” स्त्री ने कहा।
“तो बताओ अब क्या करना है? कैसे करना है?”
“डॉक्टर गिब्सन चित्रकला के बड़े जानकार है। उसकी दृष्टि बड़ी पारखी है। जीत और वफ़ाई के चित्र उसे अवश्य आकृष्ट करेंगे। आप को चित्र प्रदर्शनी के बहाने डॉक्टर गिब्सन को यहाँ तक लाना होगा। दूसरी बात, डॉक्टर गिब्सन कभी भारत नहीं आए। आज से तीन साल पूर्व उसने एक टीवी साक्षात्कार में भारत भ्रमण की और विशेष रूप से हिमालय भ्रमण की मनसा प्रकट की थी। हमें इन दोनों बातों के द्वारा डॉक्टर गिब्सन को यहाँ आने के लिए प्रेरित करना होगा।”
“किन्तु उसके साथी तथा उसका पूरा शस्त्रक्रिया कक्ष? वह यहाँ तक कैसे आएगा?”
“यही तो प्रश्न है जिसका उत्तर हमें ढूँढना है।” वह स्त्री बोली।
“तो आशा की कोई किरण…।” वफ़ाई ने आशंका प्रकट की।
किसी ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। कुछ क्षण मौन ही व्यतीत हो गए।
“मौन किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं हो सकता। हमें कोई न कोई मार्ग खोजना होगा।” याना ने मौन भंग किया।
“विक्टर और याना, यह कार्य आप लोगों को ही करना पड़ेगा। आप अपने चेनल के माध्यम से यह कर सकते हो।”
विक्टर और याना कुछ समय तक सोचते रहे, दोनों ने आपस में कुछ बातें जर्मन भाषा मे की और दोनों के मुख पर प्रसन्नता दिखने लगी।
“यह काम हो जाएगा। आज से पाँच दिवस पश्चात यहीं प्रदर्शनी भी होगी और जीत का उपचार भी।” याना ने कहा।
“तो ठीक है अभी से काम पर लग जाओ।”

****

विश्व की सभी TV चेनलों पर एक साथ अनेक कथा चलने लगी।
एक, जीत और वफ़ाई की कथा, जिस में जीत और वफ़ाई कहाँ मिले, कैसे मिले और दोनों में किस स्थिति में कुछ ही दिवसों में प्रेम हो गया।
दो, जीत तथा वफ़ाई ने बनाए अनेक चित्र और इन चित्रों की प्रदर्शनी, प्रदर्शनी का स्थल। यह सब बातें कला रसिकों में उत्कंठा जगा रही थी। अनेक जाने माने चित्रकार एवं चित्रों के सौदागर इस अनूठी प्रदर्शनी के लिए उत्सुक थे।
तीन, हिम के पहाड़ों के बीच अकेली रहती एक स्त्री। उस स्त्री के आसपास लोगों द्वारा रचे गए रहस्य के ताने बाने। दर्शकों की सबसे अधिक रुचि उस स्त्री की कथा में ही थी। चेनलों पर बार बार मांग हो रही थी उस स्त्री की कथा को पुन: प्रसारित करने के लिए। और चेनल्स भी उस मांग को ध्यान मे रखते हुए उसे अनेकों बार प्रसारित करने लगे। सारे संसार पर उस रहस्यमय स्त्री का जादू छा गया। सारा संसार परमाणु बम, यूध्ध्द, पेट्रोल कीमतें, राजनीति, हिंसा, आतंकवाद जैसी दैनिक रसप्रद बातों को भूल चुका था और केवल यह स्त्री के विषय में ही व्यस्त था। प्रत्येक गाँव, नगर और देश में बस एक ही चर्चा थी- हिम के पहाड़ों पर रहती अनेक रहस्यों से भरी एक स्त्री। लोगों ने उसे नाम दिया – जोगन।
चेनल्स पर जोगन कहती है, “मेरा नाम? जोगन का कोई नाम नहीं होता। मैं कौन हूँ? यहाँ क्या कर रही हूँ? इन ठंडे पहाड़ों के बीच में मैं कैसे जी रही हूँ? पहाड़ों के बीच भी गुफाओं की शीला उष्ण कैसे रहती है? इन का रहस्य जानना चाहता है यह संसार। मैं सब कुछ बताऊँगी।
मैं कोई रहस्य से भरी स्त्री नहीं हूँ। हाँ, लोग मुझे जोगन कहते है। आप भी मुझे जोगन कह सकते हो।
मेरे विषय में जीतने लोग उतनी बातें। कोई मुझे उड़ती जोगन, तो कोई देवी, तो कोई कामुक स्त्री कहता है। तो कोई कहता है उसने मुझे नग्न देखा है। कोई चमत्कार की बात करता है। मेरे विषय में अनेक कथाएँ प्रचलित हैं। अधिकतर सब दंतकथाएं है, किंवदंतिया है। कोई कहता है मैं कई सालों से यहां तप करती हूँ। कोई कहता है मैं यहाँ ही जन्मी हूँ। कोई कहता है मैं हिम से जन्मी हूँ। कोई कहता है कि प्रकृतिने स्वयं ही मुझे जन्म दिया है। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि मैं यहाँ सदियों से हूँ। कुछ लोग मेरा अस्तित्व हजारों वर्ष पुराना बताते हैं। कोई कहता है कि मैं इस ठंड में भी हिम से स्नान करती हूँ, नग्न। कोई कहता है कि मैं पहाड़ों में नग्न घूमती रहती हूँ। कभी कभी तो टोली बनाकर मुझे पकड़ने तथा मारने के लिए लोग यहाँ तक आने का प्रयास करते हैं। किन्तु वही लोग कहते हैं कि वह सब भटक जाते हैं। और मैं ही उसे पुन: मार्ग दिखती हूँ।”
“तो अंतत: तुम कौन हो, जोगन?” विक्टर पूछता है।
“इससे ना तो तुम्हारी ना तो मेरी स्थिति में कोई अंतर पड़ने वाला है। तो क्यूँ जानना चाहते हो?”
“लोगों को सत्य बताने के लिए।” याना उत्तर देती है।
“लोग और सत्य? याना, लोगों को कभी सत्य जानने की उत्कंठा नहीं होती, वह केवल रसप्रद कथाओं में ही व्यस्त रहते हैं। उन बातों से ही आनंद प्राप्त कर लेते हैं। उससे ही वह संतुष्ट होते हैं।”
“किन्तु हमारे जैसे लोग तो सत्य की खोज में यहाँ तक आ जाते है। हमें तो…।”
“यह खोज तुम्हारे सत्य की नहीं है विक्टर।”
“क्या तात्पर्य है इन शब्दों का?”
“तुम और याना किसी चेनल के लिए काम करते हो न? तुमने उससे एक अनुबंध किया है और इसी कारण तुम मुझे ढूंढ रहे थे। पिछले दो वर्षों में आप लोगों का यह चौथा अभियान है।”
“हाँ बिलकुल सत्य है। आप अंतर्यामी हो जोगन।”
“यदि कोई कार्य किसी और के लिए है, किसी अनुबंध के लिए है तो वह तुम्हारा नहीं है। तुम किसी और का कार्य कर रहे हो। सत्य की खोज तो स्वयं ही करनी पड़ती है। तुम्हारे लिए सत्य की खोज कोई अन्य नहीं कर सकता और ना ही तुम दूसरों के लिए।”
“तो तुम्हारा सत्य क्या है? मेरा और विक्टर का सत्य क्या है? क्या हम इस सत्य को कभी जान भी पाएंगे? अथवा अनेक रहस्य जो आज तक केवल रहस्य बनकर रह गए हैं वैसे तुम्हारा रहस्य भी…?”
“मेरा रहस्य जानना हो तो आप को मेरे पास आना होगा, मेरे साथ रहना होगा।”
“हम तो आपके पास आ चुके हैं, आपके साथ रहेंगे भी। तो क्या हम जान सकते हैं आपका रहस्य?”
“अवश्य। किन्तु यह रहस्य यदि बाकी दर्शकों को जानना हो तो उन लोगों को यहाँ आना पड़ेगा। चित्र प्रदर्शनी में सम्मिलित होना पड़ेगा।”
“तो आप भी यदि इस जोगन का रहस्य जानना चाहते हो तो इन हिम पहाड़ियों पर, 17000 फीट की ऊंचाई पर होने वाली चित्र प्रदर्शनी का हिस्सा बनिए। प्रत्येक रहस्य को जानिए, सत्य को जानिए। एक ऐसे सत्य को जो आपका अपना सत्य होगा।”
याना और विक्टर के इन शब्दों के साथ ही TV के पर्दे पर जोगन दिखाई पड़ती है, जो हिम से भरी पहाडीयों पर खड़ी है। पहाड़ों के विकट मार्ग पर चलती है, तेज चलने लगती है, उडने लगती है। अधिक तेज उड़ती है। और, किसी गुफा के अंदर चली जाती है। गुफा का मुख हिम से बंध हो जाता है। गुफा स्वत: बंध हो जाती है। गुफा के उस पार जोगन अद्रश्य हो जाती है, अपने साथ जुड़े रहस्यों के साथ।
प्रत्येक दर्शक कई क्षणों तक टीवी के पर्दे को देखते रहता है, जहां अभी अभी जोगन दिखाई दे रही थी।

&&&

“हमारी सभी कथाएँ tv चेनल्स पर छा गई है। सारा विश्व सब कुछ भूल कर बस यही देख रहा है।” विक्टर उत्साह से भरा था।
“किन्तु अभी हमारा कार्य अपूर्ण है।” याना ने कहा।
“तो अब आगे क्या करना होगा?” वफ़ाई ने जोगन की तरफ देखा।

“विक्टर, चित्र प्रदर्शनी का विशेष आमंत्रण डॉक्टर गिब्सन को भेज दो।” जोगन ने कहा।
विक्टर तथा याना ने जोगन की बात का अनुसरण किया।
“डॉक्टर गिब्सन को आमंत्रण मिल गया। हमें उसके प्रतिभाव की प्रतीक्षा करनी होगी।” याना ने बताया।
“इसके आगे?” वफ़ाई अधीर थी।
“हमें यह निश्चित करना होगा कि डॉक्टर गिब्सन प्रदर्शनी में सम्मिलित हो रहे हैं। इस बात के लिए हमें उसे शीघ्र ही मनाना होगा।” जोगन योजना बताने लगी। “प्रदर्शनी के लिए वह अपनी सम्मति प्रदान करें तत पश्चात ही जीत के रोग वाली कहानी चेनल पर चलानी होगी।”
“इस से क्या होगा?” याना ने पूछा।
“एक बार डॉक्टर यहाँ आने की पुष्टि कर दे तो उसकी यात्रा का पूरा प्रबंध कर लो। जीत की कहानी चेनल पर प्रसारित करते समय हम विश्व के तमाम डॉक्टरों को जीत की शस्त्रक्रिया करने की विनंती करेंगे। चेनल के माध्यम से डॉक्टरों तक और डॉक्टरों के माध्यम से डॉक्टर गिब्सन तक यह बात पहुंचाई जाएगी।”
“यदि डॉक्टर गिब्सन ने मना कर दिया तो?” विक्टर ने पूछा।
“तो सभी डॉक्टर्स उसे मना लेंगे कि वैसे भी तुम वहाँ जा ही रहे हो तो साथ साथ जीत का उपचार भी कर लो। कुछ नहीं तो उसका निदान ही कर लो।”
“डॉक्टर गिब्सन सबसे पहले डॉक्टर है, चित्रकला के प्रसंशक बाद में। वह अपना कर्तव्य भली भांति समझते हैं। यदि एक बार उसने जीत को इस स्थिति में देख लिया तो वह जीत का उपचार करने में विलंब नहीं करेंगे।”
“उत्तम योजना है। किन्तु डॉक्टर के साथी तथा शस्त्र क्रिया कक्ष यहाँ कैसे आएगा?“
“वह भी आ जाएगा। डॉक्टर गिब्सन के साथ ही हम उसके सारे साथियों को भी चित्र प्रदर्शनी के लिए आमंत्रित करेंगे। उनके के साथ ही सारा सामान भी आ जाएगा। मेरा विश्वास है कि डॉक्टर गिब्सन जीत का उचित और समय पर उपचार करेंगे ही।” जोगन के मुख पर अनूठी आभा थी।

“कहाँ है जीत?” आते ही डॉक्टर गिब्सन ने कहा।
“आप यात्रा से आए हो। थकान भी होगी। थोड़ा विश्राम कर लो, पश्चात जीत को देख लेना।” वफ़ाई ने कहा।
“किसी भी डॉक्टर के लिए विश्राम से अधिक महत्वपूर्ण होता है रोगी का उपचार। चलिये, जीत से मिलाईये मुझे।”
“याना, वफ़ाई, आप दोनों डॉक्टर के साथ रहिए। विक्टर तुम डॉक्टर के साथियों के लिए उचित व्यवस्था करो।” जोगन ने आदेश दिया।
“जैसी आज्ञा।” विक्टर ने कहा।
“डॉक्टर, आप भी हिन्दी जानते हो?” वफ़ाई ने पूछा।
“हिन्दी मेरी तीसरी मातृभाषा है।” डॉक्टर ने स्मित करते कहा।
“वह कैसे? तीसरी मातृभाषा कैसे हो सकती है?” याना ने पूछा।
“मेरी माता जर्मन है, तो जर्मनी मेरी प्रथम मातृभाषा हो गई। मेरे पिता पोलेंड से है, तो पोलिश मेरी दूसरी मातृभाषा हुई। मेरी दादी भारत से है। उससे मैंने हिन्दी सीखी है। तो हुई न हिन्दी मेरी तीसरी मातृभाषा?”
डॉक्टर के साथ वफ़ाई तथा याना हंस पड़े।
“तो यह जीत है?”
“हां डॉक्टर।”
डॉक्टर ने जीत को स्पर्श किया। कुछ समय तक वह जीत का अवलोकन करते रहे।
“कुछ ही समय में मेरे साथी शस्त्रक्रिया कक्ष तैयार कर लेंगे। उसके पश्चात जीत को वहाँ ले जायेंगे।” डॉक्टर चलने लगे।
“डॉक्टर, क्या लगता है? जीत...?” वफ़ाई अधीर थी, व्याकुल थी।
“वफ़ाई, धैर्य रखो। मेरा कक्ष तैयार हो जाने दो।”
“किन्तु, जीत ठीक तो हो जाएगा ना?” वफ़ाई चिंतित थी।
“जिसके पास वफ़ाई जैसा मित्र हो उसे ठीक तो होना ही पड़ेगा।” डॉक्टर के अधरों पर दिव्य स्मित था। उस स्मित में वफ़ाई को अनेक संकेत मिलने लगे। उसने भी स्मित से उत्तर दिया। वफ़ाई ने जीत के ललाट पर हथेली रख दी।

#$#$

“हम शीघ्र ही जीत की शस्त्रक्रिया करेंगे। जब तक शस्त्रक्रिया पूर्ण नहीं होगी, जब तक जीत स्वस्थ नहीं होगा, तब तक मैं तथा मेरे साथी चित्र प्रदर्शनी नहीं देखेंगे।” डॉक्टर गिब्सन ने अपना निश्चय व्यक्त कर दिया। यह सुनते ही वफ़ाई, याना, विक्टर और जोगन के मुख पर प्रसन्नता छा गई।
“एक घंटे पश्चात जीत का उपचार प्रारम्भ होगा।” डॉक्टर ने कहा।
“याना तथा विक्टर। आप दोनों डॉक्टर के साथ रहेंगे। उसके सभी साथियों का पूरा ध्यान रखेंगे। आप के पास एक घंटे का समय है। आप अपने सारे चित्रक, सारे साधन तैयार कर लो। जीत के उपचार की प्रत्येक क्षण का जीवंत प्रसारण होना है, अनेक चेनल के माध्यम से।”
“हम दोनों तैयार ही हैं।” विक्टर रोमांचित हो गया।
“सामान्य रूप से किसी भी शस्त्रक्रिया का जीवंत प्रसारण करने की अनुमति नहीं होती है। किन्तु यह एक विशेष घटना है, एक इतिहास रचा जा रहा है। अत: मैं जीवंत प्रसारण हेतु सम्मति प्रदान कर रहा हूँ।” गिब्सन ने कहा।
“डॉक्टर, आप बड़े अच्छे हैं।” जोगन ने कहा।
“वफ़ाई, तुम प्रदर्शनी का संचालन करोगी।” जोगन ने आदेश दिया।
“किन्तु, मैं जीत के साथ रहना चाहती हूँ। आप तो जानती हो...।” वफ़ाई अनुनय करने लगी।
“वफ़ाई, मैं तुम्हारी भावनाओं को समझती हूँ। किन्तु तुम यदि जीत के सामने रहोगी तो तुम दुर्बल हो जाओगी। इस समय तुम्हारे मन का दुर्बल होना किसी के भी हित में नहीं, विशेष रूप से जीत के।”
“जैसी आपकी आज्ञा।” अपने आक्रंद को छुपाती हुई वफ़ाई वहाँ से चली गई।

^&*

वफ़ाई ने अपने शब्दों को विराम दिया। चित्र प्रदर्शनी खुल गई।
विश्व भर से पधारे दो सौ से अधिक व्यक्ति से बनी भीड़ प्रदर्शनी देखने के लिए अधीर थी, उत्सुक थी। धीरे धीरे वह भीड़ अंधकार से प्रकाश की तरफ, रंगों से भरे चित्रों की तरफ गति करने लगी। भीड़ जैसे जैसे आगे बढ़ती रही, प्रकाश बढ़ता गया। अंतत: भीड़ पूर्ण प्रकाश से भरे कक्ष में प्रवेश कर गई। प्रवेश करते ही प्रत्येक कोने में बिखर गई, जैसे धरा पर गिरते ही प्रसर जाता पानी।
वफ़ाई तथा जीत के द्वारा रचे चित्रों को भीड़ देखने लगी। चित्रों की अनुभूति करने लगी। चित्रों पर चर्चा करने लगे। बड़ी सी भीड़ अब छोटी छोटी टोलियों में बंट गई। प्रत्येक टोली ने अपना स्वतंत्र विश्व रच लिया।
वफ़ाई इन सभी टोलियों का स्मित के साथ अभिवादन करने लगी। वफ़ाई के अधरों पर स्मित तो था किन्तु वह स्मित नैसर्गिक नहीं था। स्मित के पीछे पीड़ा थी, चिंता थी, व्याकुलता थी, व्यग्रता थी।

)()()(

शस्त्रक्रिया कक्ष में डॉक्टर गिब्सन तथा उसके साथी जीत का उपचार करने में व्यस्त थे। याना तथा विकटर उन सभी का ध्यान रख रहे थे। सब के लिए जलपान, विश्राम आदि का पूर्ण प्रबंध कर रखा था इन दोनों ने।
"डॉक्टर से कहो, थोड़ा अंतराल ले ले। कुछ जलपान तथा अल्पाहार ले ले।" याना ने डॉक्टर के एक साथी से कहा।
"याना, यह डॉक्टर गिब्सन है। जब तक शस्त्रक्रिया पूर्ण नहीं होगी, वह रुकेंगे नहीं।" उस साथी ने कहा।
"किन्तु यह तो लंबी प्रक्रिया है। कई घंटे लग सकते हैं इसमें। थोड़ा विराम कर लेते तो...।"
"इससे भी लंबी अनेक शस्त्रक्रियाएं हुई है किन्तु वह नहीं रुके। एक बार तो ढाई दिवस तक अविरत चलती रही, किन्तु वह रुके नहीं थे।"
"यह तो अद्भुत है। कैसे कर लेते हैं वह यह सब?"
"वह कहते हैं कि उसके अंदर यह शक्ति योग से आई है। उसका आत्मबल अनुपम है। विक्टर, डॉक्टर की दादी भारतीय है, ज्ञात है ना आप को? उस दादी से उसने यह सब सीखा है।"
"किन्तु आप सब तो विश्राम कर लो। आप लोग थक गए होंगे।" याना ने उसे आग्रह किया।
उसने स्मित दिया तथा कहा, "हम भी नहीं थकते।"
"ऐसा क्यों?"
"डॉक्टर की दादी से हम भी तो मिले हैं।" उसकी बात पर याना तथा विक्टर भी हंस पड़े।
"उस दादी से मुझे भी मिला देना।" याना ने कहा।
"याना, वह तो अब चल बसी।"
याना उदास हो गई। मौन हो गई। विक्टर ने उन क्षणों को बितने दि या।
"याना, चलो देखते हैं कि शस्त्रक्रिया का प्रसारण ठीक से चल तो रहा है ना। कहीं कोई व्यवधान तो नहीं आया इसमें?" विक्टर ने मौन भंग किया।
याना ने सब कुछ जांच लिया, "विक्टर, सब कुछ ठीक है। विश्व के सारे चेनल पर जीवंत प्रसारण हो रहा है।"
"और प्रद र्शनी का प्रसारण?"
"चलो वहाँ चलते हैं।"
दोनों प्रदर्शनी कक्ष में पहुँच गए।
"इस स्थान की क्या स्थिति है, वफ़ाई?"
"याना, विक्टर। जीत कैसा है? डॉक्टर क्या कर रहे हैं?" वफ़ाई अधीर हो गई।
"वफ़ाई, धैर्य रखो सब कुछ ठीक चल रहा है। तुम निश्चिंत रहो।"
"तुम सत्य कह रहे हो?"
"वफ़ाई, हमारा विश्वास करो।" विक्टर ने कहा।
"अब कहो, यहां क्या स्थिति है? दर्शकों की क्या प्रतिक्रिया है?" याना ने पूछा।
"यहाँ भी सब उचित रूप से चल रहा है। सभी दर्शक अपनी अपनी टोली में व्यस्त है।"
"प्रतीत होता है, प्रदर्शनी पसंद आ रही है सभी को।" विक्टर ने कहा, प्रदर्श नी में व्यस्त दर्शकों पर एक द्रष्टि डाली और स्मित किया।
"अपने मुख्यलाय से कोई संदेश? कई घंटे हो गए कोई बात नहीं हुई।" याना ने कहा।
"याना, कोई संदेश तो नहीं है। अपेक्षा है सब कुछ ठीक चल रहा है।"
"मैं संपर्क करती हूँ। जानते हैं कि संसार की क्या प्रतिक्रिया है।" याना ने मुख्यालय से संपर्क किया।
"याना, विक्टर। सब कुछ ठीक जा रहा है। सारा विश्व एक ही काम कर रहा है- यह जीवंत प्रसार ण को देख रहा है । लोगों में अत्यंत उत्साह है। उत्तेजना भी है। सेंकड़ों लोगों ने प्रदर्शनी में सम्मिलित होने का प्रस्ताव भी भेजा है।" मुख्यालय से किसी ने बताया।
"तो भेजदो सब कोयहाँ।" विक्टर ने कहा।
"यदि सब को वहाँ भेजने लगा तो तुम्हें यह प्रदर्शनी कई दिवसों तक चलानी पड़ेगी। बोलो स्वीकार है?"
"नहीं, नहीं। हम तो इसे शीघ्र ही समाप्त करने का विचार रहे हैं। तुम तो जानते हो कि यह दुर्गम प्रदेश में अनेक दिवसों तक यह प्रदर्शनी चलाना संभव नहीं है। कितना विकट है यह सब?" याना ने कहा।
"किन्तु यही विकट मार्ग, यही दुर्गम स्थान ही दर्शकों का आकर्षण का केंद्र है। यही कारण है कि अनेकों लोग वहाँ आना चाहते हैं।"
"किन्तु यह संभव नहीं है।"
"ठीकहै। याना, विक्टर, अपना ध्यान रखना।"
"और आप हमारे साथ संपर्क बनाए रखना।" मुख्यालय से संपर्क टूट गया।
"याना, हमें अब चलना चाहिए। डॉक्टर तथा उनके साथियों को हमारी आवश्यकता पड़ सकती है।" विक्टर ने कहा।
"याना, कुछ समय के लिए तुम यहाँ संभालो। विक्टर, मैं चलती हूँ तुम्हारे साथ। मेरा मन कर रहा है जीत को देखने का।" वफ़ाई ने विनती की।
"वफ़ाई, हम तुम्हारी व्याकुलता समजते हैं। किन्तु अभी तो यह संभव नहीं।" याना तथा विक्टर चले गए। जाते जाते वफ़ाई के तन से सारी ऊर्जा भी लेते गए।
कितनी विवश हूँ मैं? जीत वहाँ जीवन के लिए संघर्ष कर रहा है और मैं यहाँ हूँ। कुछ ही अंतर पर जीत है किन्तु मैं उसे देख नहीं सकती। उसके समीप नहीं जा सकती। उसके ललाट पर मेरे हाथों का स्पर्श नहीं कर सकती। उसे मेरे स्मित का आश्वासन नहीं दे सकती। यह कैसी विडम्बना है? कैसी विवशता है?

वफ़ाई, धैर्य रखना होगा तुम्हें। समय के कुछ टुकड़े व्यतीत हो जाने दो।
इतना धैर्य नहीं है मेरे पास। प्रत्येक क्षण मेरे सामने पहाड़ बनकर आता है और युगों तक ठहर जाता है। यह समय इतना धीरे धीरे क्यूँ चलता है? उसे कहीं पहुँचने की शीघ्रता नहीं है क्या? क्या कोई उसकी प्रतीक्षा नहीं कर रहा? कितना जड़ है यह समय?

82

“वफ़ाई।” किसी ने वफ़ाई को पुकारा। विचारों से जागृत होकर वफ़ाई ने उस ध्वनि की दिशा में द्रष्टि की।
“तुम? बशीर तुम यहाँ?” वफ़ाई उठ खड़ी हो गई और बशीर की तरफ जाने लगी। अचानक ही उसके चरण रुक गए। वह वहीं रुक गई।
“बशीर, यहाँ क्यों आए हो?”
“वफ़ाई, तुमसे मिलने आया हूँ मैं।”
“क्यों? क्या कुछ भी बचा है अब?”
“वफ़ाई...।”
“बशीर, तुम यहाँ से चले जाओ।”
“मेरी बात तो सुन लो।”
“तुम चले जाओ यहाँ से।”
“वफ़ाई। मेरी बात तो...।”
“कुछ नहीं सुनना मुझे। तुम बस यहाँ से चले जाओ।”
बशीर चला गया। वफ़ाई आक्रंद करने लगी।
हे ईश्वर। यह कैसी परीक्षा है मेरी? मुझे किस दुविधा में डाल दिया तुमने? एक तरफ जीत जीवन के लिए संघर्ष कर रहा है। दूसरी तरफ मेरे अंदर मृत हो चुकी भावनाओं को जीवित करने ना जाने कहाँ से बशीर आ गया। मुझे शक्ति प्रदान करना। मेरे अंदर कुछ भी टूटे ना। मेरे हाथ से कुछ भी छूटे ना इस बात का ध्यान रखना। मैं तेरी शरण में हूँ।
वफ़ाई ने आँखें बंध कर ली। अश्रुओं को बहने दिया। वह बहते रहे।
“वफ़ाई।” पुन: किसी की ध्वनि वफ़ाई के कानों पर पड़ी। कुछ समय तक वफ़ाई उसे मन का भ्रम मानकर स्थिर सी रही। ना तो उसने आँखें खोली ना ही कोई प्रतिक्रिया दी।
“वफ़ाई। वफ़ाई।” पुन: ध्वनि आई।
यह भ्रम नहीं हो सकता। कोई मुझसे बात करना चाहता है। मुझे देखना होगा।
वफ़ाई ने आँखें खोली। सामने एक स्त्री तथा एक पुरुष खड़े थे।
“वफ़ाई, मैं यह सारे चित्र खरीदना चाहती हूँ। क्या आप इन सभी की किंमत बता सकती हो?” उस स्त्री ने पूछा। वफ़ाई उस स्त्री की तरफ मुड़ी।
“सारे चित्र?” वफ़ाई ने पूछा।
“हाँ, सारे चित्र। आप सब का कुल मूल्य बताएं।” उसने कहा।
वफ़ाई कुछ क्षण तक जवाब नहीं दे सकी।
“वफ़ाई, क्या कोई समस्या है? यदि आप इसकी कीमत बढ़ाना चाहो तो, आप जो चाहे वह कीमत बता दो।” उस स्त्री के साथ आए पुरुष ने कहा।
“क्या मैं आपका नाम जान सकती हूँ?” वफ़ाई ने पूछा।
“क्या करोगी जान कर?”
“कोई तो नाम होगा आप का? यदि आप...।”
“मैं इस चित्रों की कीमत चेक से चुकाऊंगा तब नाम पढ़ लेना। अभी तो आप केवल कीमत बता दीजिये।”
वफ़ाई मौन हो गई।
“आप ने कीमत नहीं बताई, वफ़ाई।” पुरुष ने आग्रह किया।
“यदि किसी और ने इन चित्रों को खरीद लिया हो तो भी हम ही इन चित्रों को खरीदना चाहेंगे, उस से भी अधिक मूल्य दे कर। आप

केवल कीमत बता दीजिये। इन चित्रों को हमारे सिवा कोई और नहीं खरीदेगा।” स्त्री ने अपना निर्णय बता दिया।
“कल शाम तक यह प्रदर्शनी चलेगी। परसों इसकी नीलामी होगी। आप तब तक प्रतीक्षा करें।” वफ़ाई ने कहा।
“किन्तु हम आज ही इसे खरीदना चाहते हैं।”
“आज यह संभव नहीं है। आपको प्रतीक्षा करनी होगी, परसों तक।”
“क्यूँ नहीं हो सकता आज? हम ऊंची से ऊंची कीमत देंगे।”
“मैं आपकी इस इच्छा का सम्मान करती हूँ। प्रत्येक वस्तु केवल ऊंची कीमत से ही नहीं खरीदी जा सकती।” वफ़ाई ने कहा।
“हमारे प्रस्ताव का अस्वीकार कर आप हमारा अपमान कर रही हैं, वफ़ाई।”
“और यदि मैं इन चित्रों को आज ही बेच दूँ तो देश विदेश से यहाँ पधारे अतिथियों का अपमान होगा। यह सब कला को देखने आए हैं। उन्हें मन भर कला का आनंद लेने दीजिये।” वफ़ाई ने जवाब दिया।
“वफ़ाई।” वह पुरुष क्रोधित हो उठा। उस स्त्री ने उसे रोका, “शांत हो जाओ। हमें परसों तक प्रतीक्षा करनी चाहिए। हम प्रतीक्षा करेंगे।”
वह पुरुष और स्त्री दोनों वहाँ से चले गए। यह तमाशा देखने जमा हुई भीड़ बिखर गई। प्रदर्शनी देखने में व्यस्त हो गई।

^^^^^

संध्या ढल गई। प्रदर्शनी का प्रथम दिवस सम्पन्न हो गया। वफ़ाई दौड़ी-भागी जीत को देखने के लिए।
“याना, जीत कहाँ है? कैसा है? मुझे उसके पास ले चलो।” वफ़ाई व्याकुल थी।
“वफ़ाई, यहाँ आओ, बैठो। थोड़ा...।”
“विक्टर, यह कैसा न्याय है? सारा संसार, जिसका जीत से कोई सीधा संबंध नहीं है, जीत की शस्त्रक्रिया को जीवंत देख रहा है। क्षण क्षण की गतिविधि देख रहा है। मैं ही केवल ना तो जीत को देख सकती हूँ ना जीत के विषय में जान सकती हूँ। मेरे लिए जीत ही मेरा जीवन है और मुझे ही जीत से दूर रखा जा रहा है। क्यों?
याना, तुम तो एक स्त्री हो। तुम तो कुछ कहो।?
जोगन, आप भी मुझे वंचित रखना चाहती हो?” वफ़ाई ने पूरा आक्रोश व्यक्त कर दिया, वह खाली हो गई। उसकी तमाम शक्ति समाप्त हो गई। वह एक कोने में बैठ गई। नि:श्वास लेती रही। विलाप करती रही।
कुछ क्षणों तक कोई कुछ नहीं बोला, जोगन भी। समय के साथ वफ़ाई शांत हो गई।
“वफ़ाई, यह सूप पी लो।” याना ने वफ़ाई के माथे पर हाथ फेरा, केश को ठीक किया, गालों को स्पर्श किया। वफ़ाई ने याना की आँखों में देखा, उन आँखों में वह कोई संकेत ढूँढने लगी।
याना की आँखों के संकेत मुझे आश्वस्त कर रहे हैं। जीत अवश्य ही सकुशल होगा। मुझे धैर्य रखना होगा। मुझे प्रतीक्षा करनी होगी। मुझे स्वयं की भावनाओं पर नियंत्रण रखना होगा। मैं यह सब करूंगी। अवश्य करूंगी।
वफ़ाई ने स्वयं को वचन दिया। वह स्वस्थ होने लगी।
“वफ़ाई, यह पी लो।” याना ने आग्रह किया। वफ़ाई ने याना के बढ़े हुए हाथों से सूप लेते समय याना को एक स्मित दिया। याना ने भी स्मित दिया।
वफ़ाई सूप पिती रही। याना, जोगन तथा विक्टर मौन बैठे रहे। मौन समय जैसे किसी की प्रतीक्षा में हो वैसे स्थिर सा हो गया।

प्रतीक्षा समाप्त हुई। डॉक्टर गिब्सन शस्त्रक्रिया कक्ष से बाहर आए। सभी की अधीर आँखें डॉक्टर की तरफ घूमी, अनेक प्रश्नार्थ लेकर।
वफ़ाई के मन में विचार चल रहे थे, वह स्वयं से बातें करने लगी।
मैं कोई अधीरता नहीं दिखाउंगी। कोई उत्सुकता नहीं दिखाउंगी। मैं अपने वचन का पालन करूंगी। मुझे डॉक्टर की आँखों के संकेत को पढ़ना होगा। मैं उसकी आँखों में देखती हूँ।
डॉक्टर की आँखें भावशून्य क्यों है? उसमें कोई संकेत क्यों नहीं है? अथवा कोई संकेत है भी तो मैं उसे क्यों पढ़ नहीं पाती? मुझे यह आँखें दुविधा में डाल रही है। कोई संकेत दो मुझे डॉक्टर। मैं अब इतनी सबल हो चुकी हूँ कि कोई भी संकेत से विचलित नहीं हो सकती। डॉक्टर, तुम संकेत दो। दो, कुछ तो संकेत दो।
नहीं। मैं कोई प्रश्न नहीं करूंगी। कुछ भी नहीं पूछूँगी। समय स्वयं मुझे मेरे प्रश्नों का उत्तर देगा। मैं उस उचित समय की प्रतीक्षा करूंगी। जीत, मेरे अनेकों बार पूछने पर भी तुमने मुझे तुम्हारे रहस्यों को नहीं बताया था। मुझे धैर्य रखना तुमने ही तो सिखाया है। मैं धैर्य रखूंगी, मैं इतना तो साहस रखती ही हूँ। है ना जीत?
शस्त्रक्रिया सम्पन्न हो चुकी थी। याना तथा विक्टर अपने सामान को समेटने लगे। डॉक्टर सूप हाथ में लिये गुफा से बाहर चले गए। दूर सुदूर अंधकार में विलीन हो रहे पहाड़ों को देखने लगे। कोई गहन विचार में खो गए। उसके हाथ में रहा सूप ठंडा हो गया।
“डॉक्टर, आपने सूप नहीं पिया।” जोगन के शब्दों ने डॉक्टर की विचार यात्रा को भंग किया।
“जी।” डॉक्टर ने सूप के प्याले को अपने गालों से लगाया। “यह सूप तो हिम से भी अधिक शीतल हो गया।”
“मुझे दो। मैं दूसरा सूप देती हूँ।” जोगन ने कहा।
“नहीं, रहने दो।” डॉक्टर अभी भी क्षितिज में किसी बिन्दु को देख रहे थे।
“क्यों? गरम सूप यहीं है। मैं लाती हूँ आपके लिये।”
“इस सूप की भांति, हो सकता है, मैं दूसरे सूप को भी पीना भूल जाऊँ।”
“क्या बात है कि आप किसी गहन विचार में डूबे हुए हो? जीत कुशल तो है ना?” जोगन के प्रश्न को सुनकर डॉक्टर जोगन की तरफ मुड़े।
"जोगन, यह प्रश्न तो वफ़ाई को पूछना था। मुझे तो यह अपेक्षा थी कि वफ़ाई यह सब पूछेगी। मुझे कक्ष से बाहर आते देख वह अधीर हो जाएगी। जीत के विषय में अनेक प्रश्न पूछने लगेगी। मुझे विचलित कर देगी।”
“तो?”
“सदैव मैंने देखा है कि कक्ष से मेरे बाहर आते ही मुझे असंख्य प्रश्नों का सामना करना पड़ता है।”
“तब आप क्या करते हो?”
“मैं शस्त्रक्रिया सम्पन्न होते ही कुछ समय मौन हो जाता हूँ। मन ही मन मैं उन प्रश्नों का सर्जन करता हूँ जो प्रश्न मेरे बाहर निकलते ही मुझे पूछे जाने हैं। मैं उन प्रश्नों का उत्तर भी तैयार कर लेता हूँ। जब सभी प्रश्नों के उत्तर मुझे मिल जाते हैं तभी ही मैं कक्ष से बाहर आता हूँ।”
“तो डॉक्टर, आज भी आपने ऐसा ही किया होगा?”
“हाँ। मैंने अनेक प्रश्न तथा उनके उत्तर तैयार कर लिये थे। मैं उन सभी प्रश्नों की अपेक्षा लिये जब कक्ष से बाहर आया तब वफ़ाई मेरे सामने ही थी। मैंने जान बूझकर उससे दृष्टि नहीं मिलाई। मैंने उसे अनदेखा ही कर दिया था। मुझे अपेक्षा थी कि वह मेरे पीछे पीछे भागती आएगी। मेरे हाथों को पकड़ लेगी। मुझ पर प्रश्नों की वर्षा कर देगी। वह अधीर हो जाएगी, विचलित हो जाएगी, रोने लगेगी, क्रोध भी करेगी, अंतत: टूट जाएगी।”
“किन्तु वफ़ाई ने ऐसा कुछ भी नहीं किया।”
“हाँ, जोगन। आप ही कहो, कोई इतना स्वस्थ कैसे रह सकता है?”
“स्वस्थ तो मैं भी नहीं हूँ। समय के इतने लंबे काल से इन पहाड़ियों में रहकर मैं तपस्या कर रही हूँ। मैं एक जोगन हूँ जो प्रत्येक वेदना तथा संवेदना से अलिप्त होती है। किन्तु मैं भी इतनी स्वस्थ नहीं हूँ।”
“मैंने भी मेरी दादी से योग सीखा है किंतु मैं भी इतना स्वस्थ नहीं हूँ। मैं भी विचलित हूँ। इस छोकरी में कोई तो बात है जो उसे इतनी स्वस्थ रख पा रही है।”
“मुझे तो लगता है वफ़ाई से अधिक आप विचलित हो।”
“जोगन, यह डॉक्टरों वाली बात है। जब भी कोई डॉक्टर अपने रोगी का उपचार करता है तो वह उससे भावनात्मक रूप से जुड़ जाता है। डॉक्टर भी उसकी वेदना को अनुभव करने लगता है। उस वेदना ही हमारे अंदर संवेदना जगाती है। उसके आधार पर हम स्वयं को ढालते हैं।”
“वह कैसे?”

“जैसे रोगी कोई अज्ञात व्यक्ति नहीं हो किन्तु वह परिवार का सदस्य हो। जब हम रोगी को हमारे परिवार का सदस्य मानने लगते हैं तब हम हमारा सब कुछ उसके उपचार में समर्पित कर देते हैं। हम भी उसके साथ विचलित होने लगते हैं। इससे उपचार में गति आती है।”

“किन्तु वफ़ाई तो पूर्ण रूप से स्थिर है, धैर्य से भरी है। दूर दिख रहे इन पहाड़ों की भांति अचल है, अडग है। ऐसा क्यों होगा डॉक्टर?”

“जोगन, यही तो चिंता का विषय है। मैंने ऐसा होते हुए पहले कभी नहीं देखा। हमें उसके पास जाना होगा। उससे बात करनी होगी। यदि वफ़ाई ने अपनी संवेदना खो दी तो?” डॉक्टर ने सूप का प्याला नीचे रखा और अंदर की तरफ भागे। जोगन भी।

वफ़ाई अभी भी स्थिर सी थी। वह शस्त्रक्रिया कक्ष को अनिमेष देख रही थी। जैसे उसे उस बंध कक्ष से किसी के बाहर आने की प्रतीक्षा हो। कक्ष का द्वार भी पहाड़ों की भांति स्थिर था, अचल था। उस कक्ष से कोई बाहर नहीं आ रहा था।

जोगन ने वफ़ाई के मस्तिष्क पर हाथ रखा। वफ़ाई किसी स्वप्न से जागी हो ऐसे मुड़ी। उसकी आँखें शून्य से भरी थी। जोगन को देखते ही वह उससे लिपट गई। जोगन उसके केश में हाथ फेरने लगी। स्पर्श ने अपना काम कर दिया। दो चार क्षणों के पश्चात वफ़ाई के सभी बाँध टूट गए, बिखर गए। वह मुक्त आक्रंद करने लगी। जोगन ने उसे अपने आँचल में छुपा लिया। उसे रोने दिया। जोगन की छाती से जन्मे संवेदन वफ़ाई के अंदर प्रवाहित होने लगे। वफ़ाई शांत हो गई।

जोगन ने डॉक्टर की तरफ देखा, वफ़ाई ने भी।

डॉक्टर के मुख पर आभा थी, अधरों पर स्मित था, आँखों में बादल थे, गालों पर कुछ बिन्दु थे।

“वफ़ाई, मैं कल आ रहा हूँ प्रदर्शनी देखने।” डॉक्टर ने कहा।

“और जीत?” वफ़ाई ने पूछा।

“छत्तीस घंटे, सिर्फ छत्तीस घंटे।” डॉक्टर ने कहा और चले गए।

वफ़ाई तथा जोगन के मन में कोई प्रश्न अनुत्तरित नहीं रहा।

वफ़ाई रातभर जागती रही।

ईश्वर, अल्लाह, गोड। कितने नाम हैं तेरे? मुझे तेरे नाम से कोई संबंध नहीं। मुझे मेरे काम से संबंध है। तुम मेरा एक काम कर दो, बस। काम तो तुम जानते ही हो। हाँ, वही। तुम करोगे न?

अनेकों बार वफ़ाई इन शब्दों को बोलती रही।

मुझे विश्वास है कि तुम मेरी बात सुन रहे हो। किन्तु मैं यह बार बार इसलिए कह रही हूँ कि कहीं तुम्हें नींद आ गई तो तुम मेरी बात भूल जाओगे। आज ना तो मैं सोनेवाली हूँ ना तुम्हें सोने दूँगी। तुम्हें भी तो समझ आए कि किसी के लिए रात्रि भर जागते रहना क्या होता है?

रात्रि व्यतीत हो गई। दुसरे दिवस भी प्रदर्शन चलता रहा। डॉक्टर गिब्सन तथा उसके साथी चित्रों का आनंद लेते रहे, सबसे मिलते रहे।

डॉक्टर वफ़ाई के समीप जा बैठे।
“डॉक्टर, एक बात मेरे ध्यान पर आई है।”
“कहो वफ़ाई, क्या बात है?”
“आप यहाँ इतने सारे व्यक्तियों से मिले। सभी ने इन चित्रों के विषय में आपसे चर्चा की। किन्तु किसी ने भी आपसे जीत की शस्त्रक्रिया का उल्लेख तक नहीं किया। किसी ने अभिनंदन भी नहीं दिये।”
“वफ़ाई। यह सब लोग यहाँ चित्र देखने आए हैं। मुझे तो यह भी संदेह है कि वास्तव में सब चित्र देखने आए हैं अथवा इस स्थान के रोमांच का आनंद उठाने आए है? तुम्हारे तथा मेरे लिए जीत एक महत्वपूर्ण व्यक्ति है, इन सभी के लिए नहीं।”
“किन्तु, इस दुर्गम स्थान पर एक डॉक्टर इतना बड़ा काम करता है, सफल होता है। क्या इस बात का कोई महत्व नहीं? क्या यह घटना अद्भुत नहीं है?”
“यह तो अपना अपना द्रष्टिकोण है। अपनी अपनी रुचि है।”
“आप ठीक कह रहे हो।”
डॉक्टर चले गए। दूसरे दिवस की प्रदर्शनी भी सम्पन्न हो गई। भीड़ बिखर गई। वफ़ाई भी लौट आई।
“वफ़ाई, जीत को देखना नहीं चाहोगी?” विक्टर ने पूछा। याना तथा जोगन वफ़ाई की प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा करने लगे।
“नहीं। छत्तीस घंटे। मैं प्रतीक्षा करूंगी पूरे छत्तीस घंटे तक।” वफ़ाई का उत्तर सुनकर सभी मौन हो गए।
वफ़ाई की वह रात्री भी प्रार्थना में व्यतीत हो गई। भोर होने पर जोगन ने उससे कहा, “वफ़ाई, थोड़ा विश्राम कर लो।”
“इतनी प्रतीक्षा की है तो कुछ घंटे और सही।”
“कितनी कड़ी तपस्या कर रही हो तुम?”
“सुना है जितनी कड़ी तपस्या होती है, वरदान भी उतना ही उच्च होता है।” वफ़ाई ने स्मित दिया। जोगन ने भी।

#$#$#$

प्रदर्शनी का तीसरा एवं अंतिम दिवस प्रारम्भ हो चुका था। आज चित्रों की नीलामी होनी थी। दर्शक अत्यंत उत्सुक तथा उत्तेजित थे। बड़े बड़े सौदागर चित्रों की बोली लगाने को अधीर थे।
नीलामी की तैयारी पूर्ण हो चुकी थी। भीड़ की उत्तेजना अपने यौवन पर थी। वफ़ाई नीलामी के नियम बताने लगी। भीड़ शांत हो गई। एकाग्र होकर नियमों को सुनने तथा समझने लगी।
“तो इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए आप सब इन चित्रों की बोली लगाएंगे। यदि किसी को कोई बात स्पष्ट ना हुई हो तो अभी भी पूछ सकते हो। किसी को कोई प्रश्न अथवा संदेह है?” वफ़ाई ने भीड़ से पूछा।
भीड़ मौन थी। वफ़ाई ने पुन: पूछा। भीड़ अभी भी मौन। वफ़ाई ने तीसरी बार पूछा। भीड़ ने कुछ नहीं पूछा।
“तो हम प्रारम्भ कर रहे हैं नीलामी का। सर्व प्रथम जो चित्र मेरे दाहिने हाथ की पंक्ति में तीसरे स्थान पर लगा है उस चित्र की नीलामी होगी।”
याना उस चित्र के समीप जा खड़ी हो गई।
विक्टर नीलामी की इस सारी प्रक्रिया को चित्रक के माध्यम से सभी चेनल पर भेज रहा था। सारा संसार इस अनूठी नीलामी को देख रहा था।
भीड़ में से अनेक हाथ उठने लगे, बोलियाँ भी बोली गई।
“तो यह चित्र को खरीद रहे हैं....।” वफ़ाई के शब्द अधूरे रह गए।
“रुक जाओ। इस नीलामी को रोक दो।”
सभी उस ध्वनि की दिशा में देखने लगे। सबके लिए एक आश्चर्य लेकर आया था वह ध्वनि।
डॉक्टर गिब्सन ने चलित कुर्सी पर बैठे जीत को लेकर प्रवेश किया। पूरी भीड़ विचलित हो गई।
वफ़ाई ने जीत को देखा। जीत ने स्मित दिया, वफ़ाई ने भी।
जीत, मेरा मन करता है कि सब कुछ छोडकर मैं दौड़ आऊँ तेरे पास। तुझे मेरे आलिंगन में ले लूँ। इस संसार के सभी बंधनों को तोड़ दूँ। इस भीड़ को छोड़ दूँ।
जीत के मन में भी यही भाव चल रहे थे।
वफ़ाई जीत की तरफ चलने ही वाली थी कि उसे अपने चरणों को रोकना पड़ा।
भीड़ अनियंत्रित हो गई। कक्ष में अव्यवस्था व्याप्त हो गई। वफ़ाई ने स्थिति को समझा और अपने चरणों को रोक लिया।
“शांत हो जाइए। आप सर्व से मेरी प्रार्थना है कि आप अपना धैर्य बनाए रखें। हम नीलामी का कार्य आगे बढाते हैं। आप से प्रार्थना है कि आप शांत हो जाइए। मैं आपसे हाथ जोड़ पुन: विनती करती हूँ कि शांत हो जाइए।”
भीड़ धीरे धीरे वफ़ाई के शब्दों को सुनने लगी, समझने लगी। भीड़ शांत होने लगी। शांत हो गई।
“मित्रों। आप सभी यहाँ तक आए, इस प्रदर्शनी का आनंद लिया। इसके लिए मैं आप सभी का धन्यवाद करता हूँ। मुझे आशा है कि आप लोगों को निराशा नहीं हुई होगी।” सभा का दौर संभालते हुए डॉक्टर गिब्सन ने कहा।
“इस प्रदर्शनी का उदेश्य था कि जीत का उपचार हो तथा नीलामी से जीत के उपचार का खर्च निकाला जाय। जीत अब स्वस्थ हो चुका है। जीत के उपचार के खर्च हेतु मैं कोई राशि नहीं ले रहा हूँ। किन्तु मैं राशि के रूप में इन सभी चित्रों को ले रहा हूँ। यह सारे चित्र मैंने ले लिए हैं। अब कोई चित्र की नीलामी नहीं होगी। मैं आप सब से क्षमा चाहता हूँ।”
डॉक्टर के इन शब्दों ने भीड़ को पुन: विचलित कर दिया। भीड़ कि मानसिकता को भली भांति समजते थे डॉक्टर।
डॉक्टर के एक संकेत पर डॉक्टर के साथियों ने सभी चित्रों को सुरक्षित रूप से वहाँ से हटा लिया। भीड़ में आक्रोश जन्म लेने लगा। धीरे धीरे वह बढने लगा। भीड़ नियंत्रण खोने लगी। भीड़ उपद्रव करना चाहती थी किन्तु डॉक्टर के साथियों ने स्थिति को नियंत्रण में कर लिया। विवश भीड़ धीरे धीरे बिखरने लगी। भीड़ लुप्त हो गई। प्रदर्शनी कक्ष खाली हो गया।

वफ़ाई सभी बंधनों को तोड़कर दौड़ गई जीत के पास। जीत आँखें बंध कर बैठा था। वफ़ाई ने जीत के हाथ को अपने हाथ में लिया, अपनी छाती से लगाया, आँखें बंध कर ली।
“जीत, परीक्षा की क्षण व्यतित हो गई। तुम सकुशल तो हो ना?” जीत ने कोई शब्द नहीं कहे। मन ही मन विचार करता रहा।
वफ़ाई, मुझ में इतनी शक्ति नहीं कि मैं उठकर तुम्हें अपने आलिंगन में भर लूँ। तुम्हारा यह स्पर्श मुझे जीवन के शुभ संकेत दे रहा है।
वफ़ाई, मेरे माथे पर तुम हाथ रख दो। आज तुम मेरी दादी बन जाओ, मेरी मां बन जाओ, मेरी नानी बन जाओ। इसी तरह मुझे स्पर्श करते रहो। मेरे समीप ही रहो।
वफ़ाई ने जैसे जीत के मन की बात सुन ली हो, जीत के माथे पर अपने हाथों का मृदु स्पर्श करने लगी।
वफ़ाई, तुम आज भी मेरे मन की बात सुन लेती हो, समज लेती हो। तुम मुझे नया जीवन प्रदान कर रही हो। तुम्हारे स्पर्श में कोई संजीवनी है।
“जीत, तुम कुछ बोलते क्यों नहीं? आँखें खोलो जीत। मैं वफ़ाई, तुम्हारी वफ़ाई।”
“वफ़ाई। तुम्हारा स्पर्श मुझे हिम की शीतलता दे रहा है।” जीत ने आँखें खोली।
“वफ़ाई, तुम...।”जीत बोलते बोलते रुक गया।

“जीत, क्या हुआ? तुम रुक क्यों गए? कहो जो कहना हो।” वफ़ाई ने जीत से कहा।
“दिलशा...द, डॉक्टर नेल्सन....।” जीत आगे नहीं बोल सका। जीत के मन में प्रेम तथा धृणा के मिश्रित भाव प्रकट हो गए।
“क्यों याद कर रहे हो उन लोगों को?”
“वफ़ाई, मैं उन्हें याद नहीं कर रहा हूँ, वो लोग यहाँ तक आ गए हैं।”
“कहाँ है? यहाँ कोई नहीं है हम दोनों के उपरांत।”
“पीछे देखो, वफ़ाई।”
वफ़ाई पीछे घूमी। उसे एक स्त्री तथा एक पुरुष दिखाई दिये।
यह तो वही दो व्यक्ति है जो सारे चित्र किसी भी मूल्य पर खरीदना चाहते थे। जो मुझ से गुस्सा होकर चले गए थे। तो क्या यही है दिलशाद तथा डॉक्टर नेल्सन?
“जीत कैसे हो?” दिलशाद ने समीप आते हुए पूछा।
“डॉक्टर गिब्सन ने उपचार किया है जीत तुम्हारा। तुम शीघ्र ही स्वस्थ हो जाओगे।” डॉक्टर नेल्सन ने कहा।
“वफ़ाई, यह दिलशाद तथा यह डॉक्टर नेल्सन।”
“जी।” वफ़ाई ने कोई उत्साह नहीं दिखाया।
“जीत, हम वफ़ाई से मिल चुके हैं।” दिलशाद ने कहा।
जीत ने वफ़ाई को देखा।
“हाँ, जीत। प्रदर्शनी के प्रथम दिवस ही यह दोनों मेरे पास आए थे तथा सारे चित्र खरीदना चाहते थे।” “हमने यह भी कहा था कि आप जो चाहो वह मूल्य हम देने को तैयार हैं। किन्तु वफ़ाई नहीं मानी।” नेल्सन ने कहा।
“अब तो प्रदर्शनी भी पूरी हो चुकी है और सारे चित्र डॉक्टर गिब्सन ले गए हैं। इस बात की चर्चा अब व्यर्थ है।” वफ़ाई ने बात बदल

दी।
“वफ़ाई तुम ठीक कह रही हो। हमें उस बात को अब भूल जाना चाहिए। हमारे शब्दों के लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं।” दिलशाद ने तथा नेल्सन ने हाथ जोड़ लिए। वफ़ाई ने कोई प्रतिभाव नहीं दिया। जीत भी मौन ही रहा।
“जीत, तुम्हारे चले जाने के पश्चात हमने तुम्हें सम्भव प्रत्येक स्थान पर ढूंढा। तुम कहाँ चले गए थे?” नेल्सन ने कहा।
जीत मौन रहा।
“जीत, तुम घर लौट आओ। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही हूँ।” दिलशाद ने कहा। जीत मौन रहा।
“जीत, अब चलो भी तो। मुंबई चलते हैं। तुम्हारा बाकी उपचार मैं करूंगा। तुम पूर्ण रूप से ठीक हो जाओगे।” नेल्सन ने आग्रह किया।
जीत निरुत्तर रहा। वह वफ़ाई को देखता रहा। वफ़ाई ने आँखों से संकेत दिया, जैसे कह रही हो कि
जीत, दिलशाद तुम्हारी पत्नी है। उसके पास लौट जाओ।
जीत ने अधरों को चुस्त बंध कर लिया। अपने अंदर जैसे कोई घूंट को पी रहा हो। वह घूंट कड़वा था।
“जीत, हम कल ही मुंबई लौट रहे हैं। तुम तैयार हो जाओ।” दिलशाद ने कहा। वह जीत के समीप गई। जीत की चलित कुर्सी को ले जाने लगी।
“दिलशाद, रुक जाओ।” जीत चीख पड़ा।
“मैं कहीं नहीं जाने वाला।”
दिलशाद रुक गई।
“जीत, शांत हो जाओ।” वफ़ाई ने जीत के माथे पर मृदु स्पर्श किया। जीत धीरे धीरे शांत हो गया।
“जीत, तुम स्वस्थ हो रहे हो। तुम्हें बाकी उपचार की आवश्यकता है जो मुंबई में हो सकता है। तुम दिलशाद तथा नेल्सन के साथ मुंबई लौट जाओ।” वफ़ाई ने कहा।
“यह संभव नहीं है, वफ़ाई। मैं उसे छोड़ चुका हूँ। मैंने मेरे जीवन से उन पृष्ठों को हटा दिया है। मैं उसे पुन: नहीं जोड़ना चाहता।” जीत ने आक्रोश व्यक्त किया।
“जीत, ऐसे उत्तेजित होना तुम्हारे स्वस्थ्य के लिए अभी उचीत नहीं है। तुम शांत हो जाओ। हम कुछ समय पश्चात बात करते हैं।” नेल्सन ने कहा।
“नहीं। जो भी बात करनी है अभी ही करेंगे। मेरा निर्णय अटल है। मैं मुंबई नहीं आ रहा हूँ।” जीत ने कहा। जीत मौन हो गया, बाकी सब भी। समय के क्षण व्यतीत होने लगे।
सब मौन थे किन्तु सब के भीतर यूध्ध चल रहा था। सब उस यूध्ध को जितना चाहते थे किन्तु सब परास्त हो रहे थे।
अंतत: दिलशाद ने साहस जुटाया, बोली, “जीत, तुम मेरी उस एक बात से व्यथित थे। तुम मुझ पर रोषित थे। मैं जानती हूँ कि तुम किस बात पर गुस्सा हो। मैं मेरी उस भूल के लिए लज्जित हूँ, नेल्सन भी। तुम्हारे जाने के पश्चात मैंने तथा नेल्सन ने एक दूसरे को स्पर्श तक नहीं किया। पश्चाताप की अग्नि में हम दोनों जलते रहे हैं। हम दोनों तपस्या कर रहे हैं।”
“जीत, दिलशाद सत्य कह रही है। हमारी तपस्या तभी सफल होगी जब तुम दिलशाद के पास लौट आओगे। तुम लौट रहे हो ना, जीत?” नेल्सन ने कहा।
“नहीं।” जीत ने कहा।
“जीत, तुम्हें विश्राम कर लेना चाहिए। कितने थक गए हो तुम? इस बात को हम समय पर छोड़ दें तो?” वफ़ाई ने सुझाया।
“मैं भी तो यही कह रहा हूँ। यह समय ऐसी बातों के लिए उचित नहीं है।” नेल्सन ने कहा।
“मैं ठीक हूँ। मैं यह बात को टालना नहीं चाहता। इस विषय पर मेरा निश्चय मैं बता चुका हूँ। मैं मुंबई नहीं लौटूँगा।” जीत ने कहा।
“बाकी उपचार के लिए जीत का मुंबई जाना आवश्यक है। जीत, तुम मेरी बात मान लो, मुंबई लौट जाओ” वफ़ाई ने कहा।
“मैं अनेक बार ना कह चुका हूँ। बस, आगे और कोई चर्चा नहीं होगी इस बात पर।” जीत क्रोधित हो गया। वफ़ाई उसके माथे पर हाथ फेरती रही।
“वफ़ाई, हमें जोगन से बात करनी चाहिए। वह हमें इस प्रश्न का समाधान देगी। हम में से कोई उसकी बात टाल नहीं सकता ।” दिलशाद ने कहा।
“यह उत्तम सुझाव है, दिलशाद। चलो हम जोगन से बात करते हैं।”
सब जोगन के पास गए।
“आप सब चाहते हैं कि मैं इस पर मेरा निर्णय कहूँ। आप सब मेरा निर्णय मानोगे यह मेरे लिए सम्मान की बात है। किन्तु यह आप सब के व्यक्तिगत जीवन से जुड़ा प्रश्न है तो इसका निर्णय भी आप सब को ही लेना चाहिए। मैं आप से यह स्वतन्त्रता छिन नहीं सकती। आप सब मिलकर उचित निर्णय करें ।” जोगन जाकर एक पत्थर पर बैठ गई।
“बात तो अधिक उलझ गई। अब क्या करें?” नेल्सन ने कहा।
“आप सब मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो।” जीत ने कहा।
कुछ समय वाद विवाद चलता रहा। कोई किसी निर्णय पर सहमत नहीं हुआ।
“यह बातें अंतहिन है। ऐसे तो कोई बात नहीं बनेगी। हमें कोई तो निर्णय करना होगा।” दिलशाद ने कहा।
“आप वाद विवाद करते रहो। मुझे जोगन के पास ले चलो।” जीत ने कहा।
वफ़ाई ने जोगन की तरफ देखा। वह चीख पड़ी।
“जीत, नेल्सन, दिलशाद। देखो, जोगन को देखो....।”
सब जोगन को देखने लगे।
“यह क्या? जहां जोगन थी वहाँ जोगन के आकार की हिम की प्रतिमा कैसे आ गई? जोगन कहाँ है?” दिलशाद भी चीख पड़ी।
“जोगन की हिम प्रतिमा पिघल रही है। पानी का झरना बन बहने लगी है। यह क्या हो रहा है?” हिम प्रतिमा के समीप जाते हुए

नेल्सन ने कहा।
“जोगन, जोगन...।”
“तूम कहाँ हो जोगन?”
“जोगन, जोगन, जोगन।”
जोगन की हिम प्रतिमा पिघलती रही, सब उसे पुकारते रहे किन्तु वह कहीं नहीं मिली। उस क्षण के पश्चात किसी ने जोगन को नहीं देखा। कोई नहीं जानता कि जोगन कौन थी? कहाँ से आई थी? कहाँ चली गई? अपने साथ एक रहस्य लेकर वह विलीन हो गई।
दिगमूढ़ से जीत, वफ़ाई, दिलशाद तथा नेल्सन स्थिर से खड़े रहे, मौन हो गए। कोई कुछ कह नहीं सका। जैसे सब के भीतर से प्राण चले गए हो, केवल शरीर रह गया हो।
समय का दीर्घ टुकड़ा बीत गया।

86

“वफ़ाई, तुम यहाँ हो?” इन शब्दों ने मृत से चारों शरीरों में जीवन का संचार कर दिया।
चारों ने ध्वनि की दिशा में देखा। दिलशाद, नेल्सन तथा जीत उस अपरिचित से व्यक्ति को देखते रहे, परिचय का कोई अंश खोजते रहे।
वफ़ाई उन्हें देखकर विचलित हो गई। उसके मन में अनेक भाव उठने लगे, अनेक प्रश्न उठने लगे। वफ़ाई बहुत कुछ कहना चाहती थी, अंदर से खाली हो जाना चाहती थी किन्तु वह मौन रही।
“वफ़ाई, चलो मेरे साथ। कुछ ही क्षणों में हमें लौटना है।” उस युवक ने कहा।
वफ़ाई के धैर्य का बांध टूट गया, “नहीं बशीर। हमें नहीं तुम्हें लौटना है। मैं तुम्हारे साथ नहीं आ रही हूँ।”
“वफ़ाई, हठ नहीं करते।”
“मैं हठ नहीं कर रही हूँ, मैं मेरा निर्णय बता रही हूँ।”
“प्रत्येक व्यक्ति अपने घर लौट रहा है, तुम्हें भी।”
“घर? कैसा घर?”
“वफ़ाई, हमारा घर। इन पहाडीयों की उस सुदूर चोटी पर बसे गाँव में हमारा घर...।”
“उन चोटियों पर अब मेरा कोई घर नहीं है।”
“वफ़ाई, तुम मेरी पत्नी हो।”
“थी। बशीर कभी मैं तुम्हारी पत्नी थी। किन्तु तुम उस संबंध को विच्छेद कर चुके हो।”
इन शब्दों को सुनकर जीत, नेल्सन तथा दिलशाद अचंभित हो गए।
“वफ़ाई, क्या बात है? कहो।” जीत ने कहा।
“मैं बताता हूँ, जीत।” बशीर जीत के समीप गया।
जीत उसे प्रश्न भरी द्रष्टि से देखने लगा।
“वफ़ाई मेरी पत्नी है। कुछ दिनों पहले हम दोनों का निकाह हुआ था। हमारा जीवन प्रारम्भ हो उससे पहले ही वफ़ाई कच्छ के अभियान पर निकल गई। अब जब वह लौट आई है तो मैं उसे अपने साथ ले जाना चाहता हूँ। बस इतनी सी बात है। जीत, वफ़ाई तुम्हारी मित्र है, तुम समझाओगे तो वह अवश्य मान जाएगी।” बशीर ने जीत से विनती की।
जीत बशीर के शब्दों को समझने का प्रयास करता रहा।
वफ़ाई ने इतने दिनों तक इस बात का कभी उल्लेख तक नहीं किया। वफ़ाई विवाहित थी तो उसने मुझ से यह बात गुप्त क्यों रखी? वफ़ाई के उस मौन का क्या संकेत था?
जीत ने वफ़ाई के सामने देखा।
“जीत, मैं सब कुछ बताती हूँ।” वफ़ाई रुकी, साहस जुटाया और बोली, “बशीर ने जो कहा वह सत्य है। मेरा उसके के साथ निकाह हुआ था। किन्तु मुझे कच्छ अभियान पर जाना पड़ा। इस अभियान पर मुझे भेजने में बशीर का भी हाथ था।” वफ़ाई ने बशीर पर एक तीव्र द्रष्टि डाली। बशीर विचलित हो गया।
“बशीर, तुम चाहते तो मेरा साथ दे सकते थे। उन लोगों से विरोध कर सकते थे। किन्तु तुम मौन रहे और मुझे अभियान पर निकलना

पड़ा।"
"हाँ, मैं उन लोगों से डर गया था। हमारे सुख के लिए ही मैं मौन रहा था।"
"यदि तुम मेरा साथ देते तो मैं सब से लड़ लेती।"
"मैं मेरे उस मौन पर लज्जित हूँ।"
"तब भी मैंने तुम्हें क्षमा कर दिया था।"
"वफ़ाई, तो चलो घर लौट चलते हैं।"
"उस बात पर तो मैंने तुम्हें क्षमा कर दिया था किन्तु उस के पश्चात भी तुम भूल करते रहे।"
"?"
"मेरे जाने के पश्चात तुमने कभी मेरा संपर्क नहीं किया। मैं कहाँ हूँ, किस हाल में हूँ यह भी नहीं पूछा। जैसे तुम मुझे भूल गए हो। जैसे तुम्हें मेरी कोई चिंता ही ना हो।"
"मैं मानता हूँ। मेरी उस भूल के लिए भी मुझे क्षमा कर दो वफ़ाई।"
"उस भूल को भी मैं भूल चुकी थी। क्षमा कर चुकी थी।"
"तो चलो घर लौट जाते हैं।"
"वफ़ाई, यदि तुम बशीर को क्षमा कर चुकी हो तो लौट जाओ न अपने घर?" जीत ने कहा।
"क्यों इतने उतावले बनते हो? अभी बात पूरी तो होने दो।" वफ़ाई ने कहा।
"अब क्या बात बाकी है वफ़ाई?" जीत तथा बशीर दोनों एक साथ बोल पड़े।
"जीत, तुम्हें याद है, मैं रात के अंधेरे में तुम्हारे लेपटोप से मेरी सारी तस्वीरें चुराकर भाग निकली थी। तुमने स्वयं ही मुझे विदा किया था।"
"हाँ वफ़ाई। तो?"
"मैं तुम्हें छोड़कर जा चुकी थी, फिर लौटकर कभी नहीं आने के लिए।"
"किंतु तुम लौट आयी थी। क्यों?"
"यह प्रश्न तुमने मुझे अनेक बार पूछा था।"
"और तुम उसका उत्तर टाल जाती थी।"
"आज समय आ चुका है उस प्रश्न का उत्तर देने का, जीत।"
"वफ़ाई, मैं उस बात को भूल चुका हूँ।"
"जीत, मैं उसे नहीं भूली हूँ। और भूल भी कैसे जाती?"
"वफ़ाई, पुरानी बातों को छोड़ दो। चलो घर लौट चलो।" बशीर ने कहा।
"बशीर, कुछ बातें सदैव रहती है, कभी पुरानी नहीं होती। जीत, उस रात मैं तुमसे दूर जा चुकी थी। मैं मेरा अभियान छोड़कर घर लौट रही थी। मेरी मां, बशीर तथा मेरे गाँव, मेरा पहाड़। इन सब से मिलने के लिए मैं अधीर थी। मैं मन के भीतर अनेक कल्पनाएँ धारण करती हुई तुम से दूर जा रही थी उसी समय मेरे मोबाइल पर मुझे बशीर का संदेश मिला। मैं अधीर होकर उन संदेशों को पढ़ने लगी। उसे पढ़ते ही मेरी तमाम कल्पनाएँ ध्वस्त हो गई। मैं भीतर से टूट गई।" वफ़ाई ने दीर्घ साँस ली।
"क्या था उन संदेशों में?" जीत ने पूछा।
"तलाक़। तलाक़। तलाक़।" वफ़ाई ने कहा।
"क्या?"
"हाँ जीत। वह संदेश थे तलाक़ के। तीन संदेश भेजे थे बशीर ने। तीनों में तीन तीन बार तलाक़ लिख भेजा था।"
"वफ़ाई, वह तो....।" बशीर आगे नहीं बोल पाया।
"बशीर, तुम मुझे तलाक़ दे चुके हो। मेरा और तुम्हारा सम्बंध समाप्त हो चुका है।" वफ़ाई ने बशीर की आँखों में तीव्र दृष्टि से देखा। बशीर उसे सह नहीं सका।
"बशीर, क्या यह सत्य है?" जीत ने पूछा। बशीर ने मूक सम्मति दी।
वफ़ाई, जीत तथा बशीर मौन हो गए।
"जीत, तुम तो चल रहे हो ना हमारे साथ मुंबई?" डॉक्टर नेल्सन ने स्थिर से समय को प्रवाहित करने का प्रयास किया।
"जीत, तुम तो लौट जाओ मुंबई। कोई तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है वहाँ।" वफ़ाई ने कहा।
"वफ़ाई, मेरा वहाँ कोई नहीं है। मैं नहीं जाने वाला।"
"तो तुम क्या करोगे?"
"मैं वहीं मेरे अज्ञात स्थान को लौट जाऊँगा। तुम मेरे साथ चलोगी वफ़ाई?"
"नहीं।"
"क्यों? वफ़ाई तुम ऐसा क्यों कह रही हो?"
"जीत, तुम मुझे हिम सुंदरी कहते हो ना? मैं हिम सुंदरी नहीं, मैं स्वयं हिम ही हूँ। तुम जानते ही हो कि सूरज के निकलते ही हिम पिघलने लगता है। वह अपना आकार और अस्तित्व दोनों खो देता है। हिम की नियति यही है। मुझे पिघलना होगा।"
"हिम को ज्ञात नहीं है कि वह जिसे स्पर्श कर ले उसे कितनी शीतलता मिलती है, कितनी शांति मिलती है?"
"किन्तु हिम को तो तपना ही पड़ता है। उसे स्वयं को खोना पड़ता है। मैं भी पिघल रही हूँ। बह रही हूँ। मेरा अस्तित्व पिघल रहा है।"
"हिम पिघलकर कहाँ जाता है? नदी बनकर बहता है। पहाड़ को छोड़कर वह धरती तक बह जाता है। तुम्हें भी इस पहाड़ को छोडना होगा। नदी बनकर बहना होगा। मेरे साथ धरती तक चलना होगा।"
वफ़ाई हिम से आच्छादित पहाड़ों में कहीं खो गई, पिघल कर बह गई। जीत पहाड़ पर से गहरी घाटी में गिरते झरनों को देर तक

देखता रहा, वफ़ाई के अस्तित्व को खोजता रहा।
“वफ़ाई, मेरी मृत्यु में तुम मेरे साथ रह सकती हो तो मेरे जीवन में मेरे साथ क्यूँ नहीं रह सकती?” जीत ने वफ़ाई से पुछ।
जीत के इस प्रश्न का उत्तर वफ़ाई के पास नहीं था।
वफ़ाई ने आँखें बंद कर ली। वफ़ाई के ह्रदय का हिम पिघल रहा था जो आँखों के मार्ग से बहने लगा।
“वफ़ाई, आँखें खोलो...।” वफ़ाई ने आँखें खोली। वफ़ाई दिलशाद को, तथा बशीर को ढूँढने लगी। दिलशाद घाटी के मोड तक जा चुकी थी। वह नेल्सन के साथ घाटी के मोड पर मूड गई। एक कथा पिघलते हिम के साथ पहाड़ की चोटियों से झरना बनकर घाटियों में प्रवाहित हो गई। बशीर कहीं दूर किसी शिला पर मूर्ति की भाँति बैठा था। दूसरी कथा एक प्रतिमा बनकर पहाड़ में विलीन हो गई।

*****

“यह सब तो ठीक है, किन्तु तुम कौन हो?” तुमने मुझसे पूछा।
“आप कौन हो? आप कहाँ हो? मुझे आप दिखाई क्यूँ नहीं देते? मैं आपसे पुछ रहा हूँ।”
“मैं एक व्यक्ति हूँ जो भीड़ से अलग हो चुका हूँ। तुमने ही तो मुझे भीड़ से अलग किया था। तुम मुझे जानते हो। अब यह बताओ की तुम हो कौन?”
“तुम्हारी यह स्वतन्त्रता के लिए तुम्हें धन्यवाद। अब कभी भी किसी भीड़ का हिस्सा मत बनना।”
“किन्तु तुमने अभी भी मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। कहो न कौन हो तुम?”
“तुम मुझे भूल जाओ। मैं कौन हूँ इस बात का कोई महत्व नहीं है। मेरा काम था आप को वफ़ाई और जीत की कथा सुनाना, जो मैंने कर दिया। मुझे आप को भीड़ से निकालकर एक व्यक्ति बनाना था, जो सम्पन्न हुआ। मेरा दायित्व भी सम्पन्न हुआ। चलिये मैं चलता हूँ। आप भी चलिये।”
“जाते जाते एक वचन देते जाओगे क्या?”
“मांगो, संभव हुआ तो पूरा भी करूंगा।” मैंने आँखें बंद कर ली और कान सचेत।
“फिर कभी कोई कहानी हाथ लग जाये तो सबसे पहले मुझे पुकार लेना, मैं सब कुछ छोडकर आ जाऊंगा तुम्हारे पास।”
“मैं नहीं जानता कि फिर कोई कहानी कब मेरे हाथ लगेगी। किन्तु यह वचन देता हूँ कि सबसे पहले यह कहानी मैं तुम्हें ही सुनाऊँगा।”
मैंने आँखें खोली। हवा की एक तरंग मुझे छु कर निकल गई। मैंने पहाड़ पर दूर तक देखा। वफ़ाई, याना, विक्टर, जोगन, दिलशाद, जीत, डॉक्टर नेल्सन, डॉक्टर गिब्सन, उसकी पूरी टीम और तुम। कहाँ चले गए सब? पहाड़ पूरी तरह से अकेला था, मेरी तरह।

संपन्न